1998 से निरंतर प्रकाशित

RNI No. MPHIN/2017/73838

ISSN 2581-446X

वर्ष-3, अंक-3, दिसम्बर 2019-जनवरी 2020 ₹ 25/-

निरंतर प्रकाशन का 22वाँ वर्ष
102वाँ अंक

कला समय

कला, संस्कृति और विचार की त्रैमासिक पत्रिका

श्री गुरु नानक देव जी का 550 वाँ
प्रकाश पर्व विशेषांक

संपादक
भँवरलाल श्रीवास

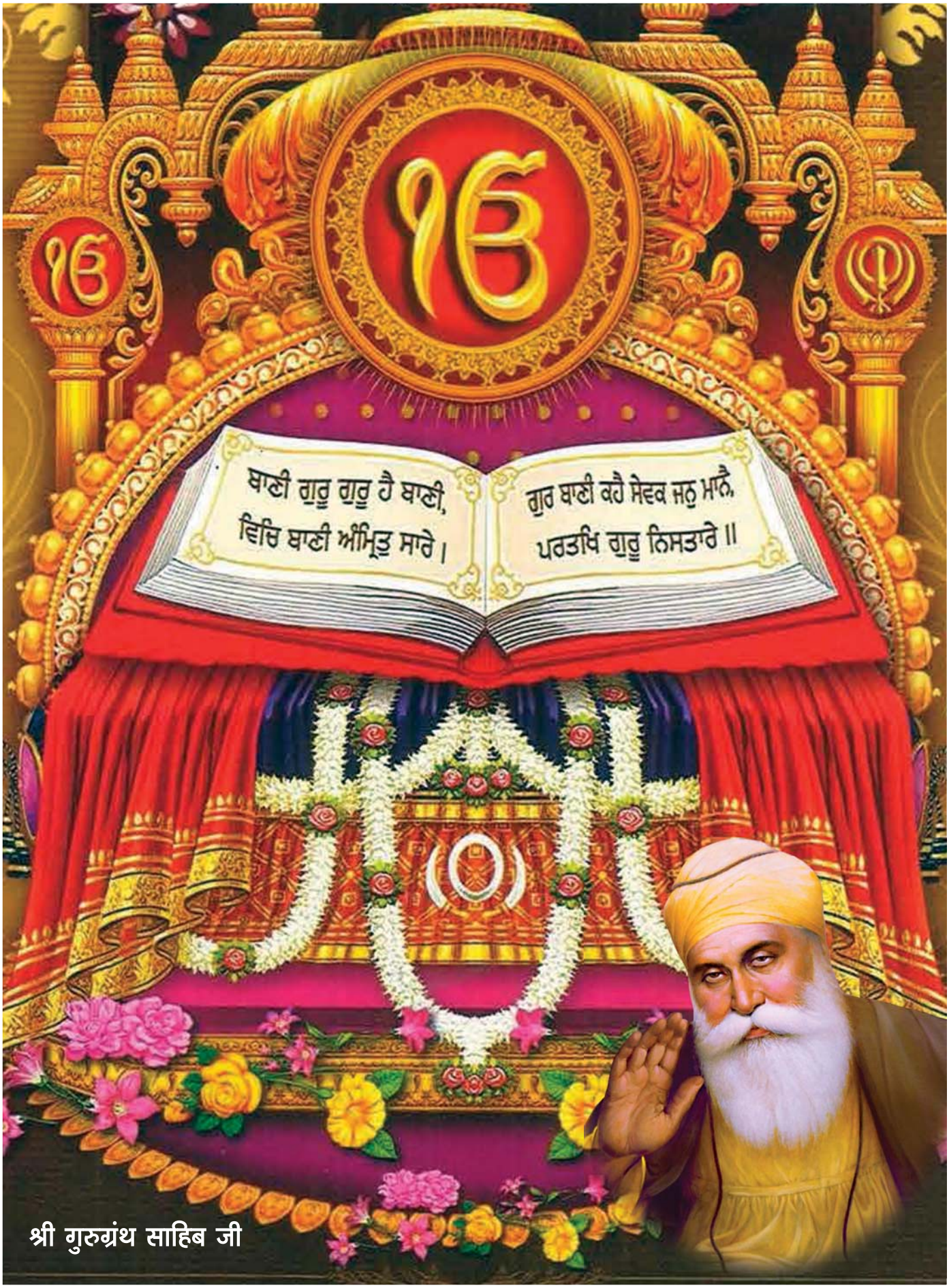

श्री गुरुग्रंथ साहिब जी

1998 से निरंतर प्रकाशित
RNI NO. MPHIN/2017/73838

कला समय पत्रिका अब वेबसाइट पर उपलब्ध
www.kalasamaymagazine.com

ISSN 2581-446X
(वर्ष : 22+3) पूर्णांक-102,
वर्ष-3, अंक-3, दिसम्बर 2019-जनवरी 2020

माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल म.प्र. द्वारा पुरस्कृत
श्री भारतेन्दु समिति कोटा (राज.) द्वारा 'साहित्यश्री' सम्मान एवं
साहित्य मण्डल श्री नाथद्वारा (राज.) द्वारा 'सम्पादक रत्न' सम्मान से सम्मानित
म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन भोपाल (म.प्र.) द्वारा 'सप्तपर्णी सम्मान' से पुरस्कृत

कला समय

कला, संस्कृति और विचार की द्वैमासिक पत्रिका

संरक्षक
नर्मदा प्रसाद उपाध्याय
डॉ. महेन्द्र भानावत
पं. विजय शंकर मिश्र
श्यामसुंदर दुबे
पं. सुरेश तातेड़
कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय

परामर्श
लक्ष्मीनारायण पयोधि
ललित शर्मा
राग तेलंग
प्रो. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग'
प्रो. सुधा अग्रवाल
डॉ. कुंजन आचार्य
डॉ. देवेन्द्र शर्मा

सांस्कृतिक प्रतिनिधि
चेतना श्रीवास
डॉ. वर्षा नालमे
उमेश कुमार पाठक
बंशीधर 'बंधु'
पं. देवेन्द्र वर्मा

वेबसाइट प्रबंधन
मयंक अग्रवाल

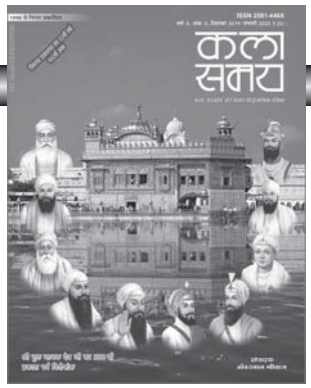

विशेष अनुरोध

सम्माननीय पाठकों से विशेष अनुरोध है कि 'कला समय' का यह अंक गुरु नानक देव, दसों गुरुओं, श्री गुरुगृंथ साहिब जी और उनमें सभी धर्मों के संतों की वाणियाँ, सबद गुरु, शब्द ब्रह्म की भावना के साथ श्लोक, पद, चित्र प्रस्तुत अंक में प्रकाशित है। जो धर्म विशेष की भावनात्मक आस्था का आधार है। पत्रिका को पढ़ने के बाद कृपया इसकी पवित्रता को आदर और सम्मान बनाकर रखें।

शुभकामनाओं सहित...

- संपादक

संपादक
भँवरलाल श्रीवास
bhanwarlalshrivas@gmail.com
94256 78058

सह संपादक
डॉ. मधु भट्ट तैलंग

उप संपादक
राहुल श्रीवास

संपादक मंडल
रामेश्वर शर्मा 'रामूभैया'
साहित्य
हरीश श्रीवास
कला
डॉ. मुक्ति पाराशर
संस्कृति
नरिन्दर कौर
प्रबंध

कानूनी सलाहकार
जयंत कुमार मेढ़े (एडवोकेट)

सहयोग राशि

वार्षिक	: 150 /-	(व्यक्तिगत)
	: 175 /-	(संस्थागत)
द्वैवार्षिक	: 300 /-	(व्यक्तिगत)
	: 350 /-	(संस्थागत)
चार वर्ष	: 500 /-	(व्यक्तिगत)
	: 600 /-	(संस्थागत)
आजीवन	: 5,000/-	(व्यक्तिगत)
	: 6,000/-	(संस्थागत)

(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाइन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा कला समय के नाम से उक्त पते पर भेंजे)

संपादकीय एवं सदस्यता सहयोग संपर्क -
जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016
फोन : 0755-2562294, मो.-94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com
वेबसाइट : **www.kalasamaymagazine.com**

ऑनलाइन सुविधा : 'कला समय' का बैंक खाता विवरण
ओरियण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स की शाखा **(IFSC : ORBC0100932)** में **KALA SAMAY** के नाम देय, खाता संख्या **A/No. 09321011000775** में नगद राशि जमा कराने के बाद रसीद की फोटोकॉपी अपने पूर्ण पते के साथ हमें भेज दें।

कला समय पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, यह जरूरी नहीं कि संपादक, प्रकाशक, मुद्रक उनसे सहमत हों। पत्रिका से सम्बन्धित समस्त विवाद, भोपाल न्यायालय के अधीन ही रहेंगे।
सम्पादन, संचालन, प्रबंधन एवं प्रकाशन- अवैतनिक/अव्यवसायिक

विशेष नोट : © सर्वाधिकार सुरक्षित 'कला समय' प्रबंधन यह स्पष्ट करना आवश्यक समझता है कि 'कला समय' में प्रवेशांक फरवरी-मार्च 1998 से लेकर अब तक प्रकाशित होने वाली समस्त सामग्री या सामग्री के अंश के पुनर्प्रकाशन तथा पुनरुत्पादन के सर्वाधिकार कॉपीराइट अधिनियम के अंतर्गत 'कला समय' के पास सुरक्षित हैं। अत: कोई भी व्यक्ति या संस्था 'कला समय' की इस सामग्री या इस सामग्री के अंश का उपयोग प्रबंधन की पूर्वानुमति के बिना न करें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा दृष्टि ऑफसेट, 36-37, प्रेस काम्पलेक्स, जोन नं-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- भँवरलाल श्रीवास

550 वाँ प्रकाश पर्व के हस्ताक्षर

कमलनाथ

डॉ.कुलदीप चंद अग्निहोत्री

नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

डॉ. मनमोहन सहगल

लाजपत आहूजा

डॉ. महेन्द्र भानावत

डॉ. मृगेन्द्र राय

डॉ. देवेन्द्र दीपक

डॉ. श्री कृष्ण जुगनू

रामप्रकाश त्रिपाठी

डॉ. रेशमी पांडा मुखर्जी

डॉ. चरनजीत कौर

इस बार

- संपादकीय / 5
  गुरु नानक देव जी की लोक चेतना
- आलेख / 6
  गुरु नानक देव का जीवनवृत्त एवं विचार / डॉ. अमरसिंह वधान
- साक्षात्कार / 9
  मानव शरीर परमात्मा का गुरुद्वारा है / डॉ. अमरसिंह वधान
- आलेख
  समाज से राष्ट्र तक, धर्म से आध्यात्म तक: दस सिक्ख.../ डॉ. रेशमी पांडा मुखर्जी / 11
  श्री गुरुग्रंथ साहिब में रागमाला: भारतीय परम्परा... / नर्मदा प्रसाद उपाध्याय/ 15
  परंपराशील कावड़ में गुरु नानक देव जी का जीवन दर्शन/ डॉ. महेन्द्र भानावत / 19
  संत-सिपाही - गुरु गोविन्द सिंह / लाजपत आहूजा/ 21
- ब्लॉग / 26
  भारत को जागृत किया गुरु नानक देव जी ने/कमलनाथ
- संस्मरण / 27
  लंगर दा परसाद / डॉ. सुमन चौरे
- आलेख
  गुरु नानक देव की जयंती का 550वाँ प्रकाश पर्व प्रदेश की खुशहाली और समाज में सद्भाव की अरदास /अदिति पटेल/ 29
  नानक की तत्वमय लोक व्याप्ति / डॉ. श्री कृष्ण जुगनू/ 32
- मध्यांतर / 34
  नाज़िम हिकमत की कविताएँ, अनुवाद : मणि मोहन
  डॉ. राधेश्याम शुक्ल के गीत / 35
  संतोष चौबे की कविताएँ / 36
  महेश कुमार शर्मा 'शर्मन' की ग़ज़लें / 37
- आलेख
  हाड़ौती की लोक संस्कृति में गुरू नानक और गुरु ग्रन्थ साहिब /ललित शर्मा/38
  कला / डॉ. मनमोहन सहगल/39
- रेडियो फीचर / 44
  अमृत-पुत्र नानक /डॉ. देवेन्द्र दीपक
- आलेख
  प्रकाश के अजस्र गवाक्ष हैं - गुरु नानक देव / रामप्रकाश त्रिपाठी/48
  मानवता के प्रतीक श्री गुरु नानक देव जी /डॉ. चरनजीत कौर/ 50
  श्री गुरू नानक वाणी की युगीन प्रासंगिकता .../डॉ. योगिता महेश शर्मा / 52
  गुरु ग्रंथ साहिब में सिक्ख गुरुओं से इतर संत कवि /डॉ. मृगेन्द्र राय / 54
  गुरमति संगीत: दिलरूबा वाद्य के संदर्भ में /प्रभदीप सिंह /59
  अंतिम यात्रा /डॉ.कुलदीप चंद अग्निहोत्री/ 60
  अमृत देश की दो अमृताएँ / डॉ. बिनय षडंगी राजाराम/63
- स्मृति शेष
  गान गायक का नहीं व्यापार उसकी विकलता है / पं. विजयशंकर मिश्र/ 65
  स्मृति शेष: डॉ. धर्मवीर भारती / डॉ. विभा सिंह /69
- समवेत / 71
  सम द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी: संगीत, प्रकृति एवं पर्यावरण / गायन एवं पखावज प्रस्तुति से झूमे श्रोता / संगीत सरिता ने मनाया पंडित जगदीश मोहन स्मृति संगीत समारोह / विश्व हिन्दी दिवस पर साहित्यकार सम्मान, पुस्तक लोकार्पण एवं काव्यगोष्ठी
- पत्रिका के बहाने / 74

-: विशेष संपादकीय सहयोग :-

डॉ. अमर सिंह वधान
चंडीगढ़ (पंजाब)

ज्ञानी गुरभेज सिंह
नानकसर गुरूद्वारा, भोपाल (म.प्र.)

शब्द संयोजन एवं आकल्पन - गणेश ग्राफिक्स, भोपाल, 9981984888 | **आवरण चित्र** - गूगल से साभार | **अंतिम आवरण चित्र** - गूगल से साभार | **छायाचित्र** - मनीष सराठे, सुनील सेन | **रेखांकन** - मनोहर काजल | **सहयोग** - धन सिंह, लता श्रीवास | **आवरण सज्जा** - मनोज माकोड़े, गणेश ग्राफिक्स

गुरु नानक देव जी की लोक चेतना

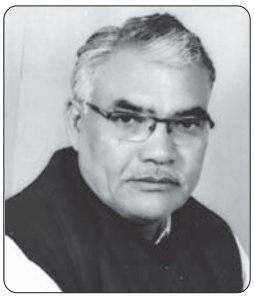

“ गुरुग्रंथ साहिब का संदेश है 'पवन गुरु, पानी पिता, धरती माता' को सभी मनुष्यों तथा प्रकृति को परमात्मा का सृजन मानने वाले इस महाग्रंथ में मानवता के गुणों के सम्मान पर जोर दिया गया है। इसमें अंधविश्वास, कर्मकांड़, मूर्ति पूजा, वर्ण व्यवस्था, छूआछूत तथा जाति प्रथा जैसे कुप्रथाओं को मानवता के विरुद्ध करार दिया तथा स्त्रियों, दलितों, पिछड़ों को सामाजिक समानता देने के लिए पुरजोर आवाज उठाई गई है। गुरु ग्रंथ साहिब का काव्य उच्चकोटि का है इसके पदों में संगीत, लय, ताल, राग आदि का ध्यान रखा गया है। यह वाणी 31 प्रधान रागों में बँटी हुई है। गुरु ग्रंथ साहिब उन सभी रसों का सहज निचोड़ है इसीलिए प्रस्तुत संकलन देश-कालातीत सर्व-जन-हिताय रचना कहा जा सकता है। ”

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।4-7।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।4-8।।

- श्रीमद्भगवद्गीता

भारत वर्ष में जो धार्मिक जागृति हुई, कबीर की तरह नानक देव साहब भी उसी जागृति के पुष्प थे। देश-विदेश में घूमकर उन्होंने अपने समय के बड़े-बड़े योगियों और साधकों की संगति भी थी। गुरु नानक ने जो पन्थ चलाया, वही सिक्ख-पथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। तत्कालीन सन्त-धारा के अनुसार गुरु नानक भी निराकारवादी थे। वे अवतार वाद जात-पांत और मूर्तिपूजा को नहीं मानते थे। गुरुदेव सहाब की वेष-भूषा और रहन-सहन सूफियों जैसी थी। गुरु नानक का ईश्वर निराकार पुरुष है।'वह स्थान- विशेष में रहकर सिंहासनासीन होने वाला नहीं है, बल्कि सर्वात्म-भाव से अणु-अणु के भीतर ओत-प्रोत है और उसके सार्वभौमिक नियमों का पालन विश्व के प्रत्येक पदार्थ द्वारा, स्वभावत: होता जा रहा है। उनकी सबसे बड़ी शिक्षा यह थी कि परमात्मा विश्व के कण-कण में व्याप्त है। इसलिए निखिल सृष्टि को ब्रह्ममय समझकर उसे प्रणाम करो। सिक्ख-धर्म में गुरु नानक से लेकर गुरु गोविन्द सिंह तक दस गुरु हुए, जिनके नाम क्रमश: गुरु नानक देव, गुरु अंगद देव, गुरु अमरदास, गुरु रामदास, गुरु अर्जुन देव, गुरु हरगोविंद, गुरु हरराय, गुरु हरकृष्णराय, गुरु तेजबहादुर और गुरु गोविन्द सिंह हैं। प्रत्येक गुरु अन्त समय में, अपने उत्तराधिकारी को अपना पद सौंपकर उसे पंथ का गुरु घोषित कर दिया करते थे। गुरुगोविन्द सिंह ने अपने अंतिम समय में उन्होंने ग्रन्थ को ही पन्थ का गुरु घोषित किया और यह आज्ञा दे दी कि अब से कोई व्यक्ति गुरु नहीं होगा। गुरु ग्रन्थ साहिब के वाणिकारों में छ: गुरु साहिबान गुरु नानक देव, गुरु अंगद देव, गुरु अमरदास, गुरु रामदास, गुरु अर्जुन देव, गुरु तेगबहादुर और पन्द्रह समकालीन संत हैं इनमें संत कबीर, नामदेव, रविदास, जयदेव, रामानंद, त्रिलोचन, धन्ना, सेन, पीपा, भीखन, सधना, बेनी, परमानंद, शेख फरीद, सूरदास तथा ग्यारह भाट कवि कलसहार, जालप, कीरत, सल्ल, भल्ल, नल्ल, मथुरा, गयंद, भीखा, बल्ल, हरबंस सहित तीन गुर सिख की भी वाणी सम्मीलित है वे बलवंड, सत्ता और बाबा सुंदर जी, जब गुरु-परम्परा का अन्तकर वाणी के रुप में ही 'गुरु' की स्थापना की, श्री गुरु ग्रंथ साहिब को ही अपना गुरु सिखमत मानता है। प्रत्येक गुरुद्वारे में नित्य प्रात: और सांयकाल गुरुग्रंथ साहिब का पाठ कीर्तन तथा प्रार्थना की जाती है प्रसाद बाँटा जाता है। कई गुरुद्वारों में तो रोज लंगर (सामूहिक भोजन) भी चलाए जाते हैं।

गुरुग्रंथ साहिब का संदेश है 'पवन गुरु, पानी पिता, धरती माता' को सभी मनुष्यों तथा प्रकृति को परमात्मा का सृजन मानने वाले इस महाग्रंथ में मानवता के गुणों के सम्मान पर जोर दिया गया है। इसमें अंधविश्वास, कर्मकांड़, मूर्ति पूजा, वर्ण व्यवस्था, छूआछूत तथा जाति प्रथा जैसे कुप्रथाओं को मानवता के विरुद्ध करार दिया तथा स्त्रियों, दलितों, पिछड़ों को सामाजिक समानता देने के लिए पुरजोर आवाज उठाई गई है। गुरु ग्रंथ साहिब का काव्य उच्चकोटि का है इसके पदों में संगीत, लय, ताल, राग आदि का ध्यान रखा गया है। यह वाणी 31 प्रधान रागों में बँटी हुई है। गुरु ग्रंथ साहिब उन सभी रसों का सहज निचोड़ है इसीलिए प्रस्तुत संकलन देश-कालातीत सर्व-जन-हिताय रचना कहा जा सकता है। वाणीकारों द्वारा जाति भेद तथा वर्ण भेद का निपत विरोध एवं ऐक्य में विश्वास भारतीय ''वसुधैव कुटुम्बकम'' के सिद्धांत को इंगित करता है। गुरु परम्परा में लंगर-पद्धति तथा शब्द कीर्तन विश्व भ्रातृत्व के द्योतक हैं। गुरु के लंगर में जाति भेद नहीं होता सब एक संग पंक्ति में बैठकर भोजन-पान करते हैं। संत कबीर साहब की ही तरह नानक देव सहाब को भी उनके देहावसान के बाद श्रद्धालुओं ने हिन्दु-मुस्लिम दोनों समुदायों के शिष्यों ने उनके शरीर के स्थान पर मिले 'श्रद्धासुमन' को ही शरीर मानकर उनका अंतिम संस्कार किया गया। यही सच्चे संत थे प्रति शिष्यों की सच्ची श्रद्धांजलि है। श्री गुरु नानक देवजी के 550 वें प्रकाश पर्व पर मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री कमलनाथ जी ने प्रकाश पर्व को पूरे प्रदेश में धूमधाम से मनाने और सरकारी कार्यालयों को रोशनी से सजावट करने के निर्देश दिए। सभी इमारतों को राष्ट्रीय पर्व की तरह सजाया गया इस अवसर पर मुख्यमंत्री जी ने कई जनकल्याणकारी योजनाओं का निर्णय लिया जो शायद म.प्र. के इतिहास में पहला अवसर था।

इस अंक में संपादकीय सहयोग विशेष रुप से डॉ. अमरसिंह वधान एवं ज्ञानी गुरभेज सिंह का मिला हम उनके हृदय से आभारी हैं। सभी रचनाकारों का भी हम हृदय से धन्यवाद देना चाहते हैं। उन्होंने इस विशेषांक को महत्वपूर्ण विशेषांक बनाने में हमें समय सीमा में अपनी रचनात्मकता से अंक को समृद्धता प्रदान की हम अनके प्रति आभारी हैं। पत्रिका की अपनी सीमा के कारण भी अगर कोई सामग्री छूट रही है तो हम विश्वास दिलाते हैं कि भविष्य में उन सामग्रीयों का उपयोग किया जायेगा। इस अंक के माध्यम से गुरुनानक देव से महाग्रंथ श्री गुरुग्रंथ साहिब तक विश्व भ्रातृत्व और बसुधैव कुटुम्बकम के संदेश, सिद्धांत, दृष्टि से पाठकों को ज्ञान पहुँचाना है न की किसी धर्म की भावना का अनादर उद्देश्य नहीं है। आपकी प्रतिक्रियाओं का हमें हमेशा की तरह इंतजार रहेगा।

नववर्ष और बसंत पंचमी की हार्दिक मंगलकामनाएँ।

-भँवरलाल श्रीवास

आलेख

एक परिचय

गुरु नानक देव का जीवनवृत्त एवं विचार

डॉ. अमरसिंह वधान

सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक का जन्म तलवंडी (पाकिस्तान) में 15 अप्रेल, 1469 ई. को हुआ। उनके विषय में ऐसी जनश्रुति है कि जब उन्होंने इस जगत् प्रवेश किया, उस समय वे रोए नहीं, बल्कि एक मधुर मुस्कान के साथ इस संसार में आए। बचपन से ही गुरु नानक दानी स्वभाव के थे। द्वार पर आए व्यक्ति को कोई न कोई वस्तु उठाकर दान कर देते थे। जब खेलने जाते तो खेलते-खेलते इनकी प्रवृत्ति भक्ति की ओर लग जाती। गुरु नानक के ऐसे लक्षण उनके माता-पिता को अखरने लगते। उन्हें नानक के भविष्य की चिंता रहने लगी। गुरु नानक के पिता का नाम कालू मेहता एवं माता का नाम तृप्ता था। एक बड़ी बहन बीबी नानकी थी। 1475 ई. में जब नानक 6वर्ष के थे, तब उन्हें गोपाल पंडित के पास पढ़ने भेजा गया। सन् 1478ई. में उन्हें संस्कृत सीखने के लिए पण्डित ब्रजनाथ शर्मा के पास भेजा गया। सन् 1480 ई. में 11 वर्ष की आयु में बालक नानक को फारसी सीखने के लिए मौलाना कुतुबद्दीन के पास भेजा गया। कहा जाता है कि इसी अवस्था में इन्होंने 'सीहरफी' की रचना की। गुरु नानक की प्रतिभा का लोहा उनके सभी गुरुओं ने माना। गुरु नानक के साहित्य का अध्ययन करने पर जितनी भाषागत एवं भावगत परिपक्वता परिलक्षित होती है, वह बिना विशद अध्ययन किए संभव नहीं। जाहिर है कि वे उच्चकोटि के विद्वान थे।

चिंतनशील प्रवृत्ति के कारण गुरु नानक हिन्दू तथा मुसलमान दोनों जातियों के संतों की संगति में अपना समय व्यतीत करते थे। अन्धविश्वासों तथा मिथ्याचारों से उन्हें सख्त नफ़रत थी। इस प्रकार एकान्तप्रिय रहने से उनके पिता कालू मेहता इस बात की चिन्ता में रहते थे कि भविष्य में नानक अपनी आजीविका कैसे कमाएगा? प्रकृति के माध्यम से ईश्वरानुभूति में गुरु नानक की प्रगाड़ता उत्तरोत्तर बढ़ती गई। परिवार के लोगों ने इसे किसी भीषण रोग का लक्षण समझकर वैद्य को बुलाया। जब वैद्य ने उनकी नाड़ी पकड़ने की चेष्टा की तो नानक ने वैद्य को अपने आन्तरिक प्रेम की वास्तविक स्थिति स्पष्ट की-

'वेदु बुलाइया वेदगी पकड़ ढंढोले बांह।
भोला वेदु न जाणई करक कलेजे मांहि।।'

इस पर वैद्य ने कालू को विश्वास दिलाया कि उसके पुत्र को किसी की सहानुभूति की आवश्यकता नहीं, बल्कि वह तो दूसरों का सहयोगी बनेगा। गुरु नानक के पिता ने नानक को व्यवसाय में लगाने का विचार किया कारण यह कि वे गुरु नानक को संसारी बनाना चाहते थे। इसलिए बीस रुपयों की राशि देकर व्यापार करने को कहा। गुरु नानक ने वह राशि रास्ते में मिले भूखे साधुओं के खान-पान पर खर्च कर दी, क्योंकि उनकी भूख से गुरु नानक की आत्मा तड़प उठी थी। उनकी दृष्टि में यही सच्चा सौदा था।

फिर गुरु नानक सांसारिक व्यवहार के प्रति उदासीन रहने लगे। इसलिए इनके पिता ने सन् 1487 ई. में अपने पुत्र की शादी पक्खोवाल गाँव, ज़िला गुरदासपुर के मूलचोना की सुपुत्री सुलक्खनी से कर दी। 1494 ई. में उनके घर बाबा श्रीचन्द और 1496ई. में बाबा लक्ष्मीदास नामक दो पुत्र पैदा हुए। पारिवारिक मोह भी नानक को सांसारिकता में प्रवृत्त न कर सका। दु:खी और असंतुष्ट पिता को शान्त करने के लिए बड़ी बहन नानकी ने उन्हें अपने पास बुला लिया। नानकी अपने पति जयराम के साथ सुल्तानपुर में रहती थी, जो नवाब दौलत खाँ के यहाँ उच्च पद पर आसीन थे। सन् 1485 में गुरु नानक को मोदीखाने में भण्डराध्यक्ष नियुक्त किया गया। कहा जाता है कि यहाँ भी वे सफल नहीं हो पाए। गिनती करते समय जब तेरह तक पहुँचते थे तो 'तेरा' अर्थात् सब कुछ ईश्वर का ही है, इसी धुन में खो जाते थे। शाह के पास इस अनियमितता की खबर पहुँच गई। ऐसी जनश्रुति है कि जाँच करने पर हिसाब में कोई भी कमी नहीं पाई गई।

सन् 1497 की एक अन्य घटना है। अन्य लोगों की भाँति गुरु नानक पास की बेई नदी में प्रात:काल स्नान के लिए जाते थे और वहीं किनारे पर बैठकर प्रार्थना करते थे। एक दिन वे बेई नदी में स्नान के लिए गए और तीन दिनों तक निकट की एक गुफा में समाधिस्थ रहे। प्राय: सभी लोगों ने यह विश्वास कर लिया कि गुरु नानक नदी की तेज जलधारा में डूब गए हैं। लेकिन गुरु नानक तो ईश्वरीय भक्ति में लीन थे। उन्हें तभी ईश्वरीय आह्वान और प्रकाश की प्राप्ति हुई ताकि वे अपना सन्देश फैलाएँ और समाज पर आए हुए संकटों को

दूर करें। सचेत होने पर प्रबुद्ध गुरु नानक गुफा से बाहर आए और उनके मुख से ये शब्द निकले-'न कोई हिन्दू है न मुसलमान।' इसका अर्थ उनके विचारानुसार यह था कि सभी मानवमात्र है, उसी महान शक्ति की सन्तान हैं। इसका दूसरा अर्थ यह भी था कि हिन्दू तथा मुसलमान दोनों ने अपने धर्मों के सिद्धान्तों की अवहेलना की है। इसलिए वे सच्चे अर्थों में हिन्दू अथवा मुसलमान नहीं रहे। गुरु नानक के अध्यात्म तथा दर्शन में उनकी विभिन्न दिशाओं में की गई यात्राओं का बहुत महत्व है। 1499 ई. में गुरु नानक ने अपनी पहली यात्रा (उदासी) प्रारम्भ की और वे सुल्तानपुर से लाहौर गए। वहाँ से कुछ दिनों बाद ऐमनाबाद में भाई लालो के पास ठहरे। इसके पश्चात् स्यालकोट गए, फिर तलवंडी। सन् 1501 में गुरु नानक ने पूर्व में हिन्दू धार्मिक केन्द्रों और तीर्थ स्थलों का भ्रमण किया चुनियाँ, कुरुक्षेत्र, पेहोवा और करनाल होते हुए वे हरिद्वार पहुँचे और वहाँ से दिल्ली गए। कहा जाता है कि वहाँ वे कबीरदास से भी मिले थे। इसके बाद वे बक्सर, छपरा आदि स्थानों से होते हुए पटना पहुँचे। वहाँ से राजगीर और गया गए। फिर मंघीर, भागलपुर, मालदा, मोरशीदीबाद, वर्दमान, ढाका आदि होते हुए कामरूप पहुँचे। इसके पश्चात् वे सिलहट, सच्चर, मणिपुर और लोशाह गए। वापसी के दौरान वे अग्रतला, चन्दनपुर, कोलकाता, कटक, जगन्नाथपुरी, जब्बलपुरी, चन्देरी, झाँसी, ग्वालियर, भरतपुर, रेवाड़ी, गुड़गाँव, जगराऊँ आदि स्थानों पर होते हुए सन् 1510 में सुल्तानपुर लौट आए।

मुख्य तीर्थ स्थानों में गुरु नानक ने अपने श्रोताओं में प्रचार का एक अद्भुत ढंग अपनाया। मिसाल के तौर पर हरिद्वार में उन्होंने उगते सूर्य को जल अर्पित करते देख उन्हें इस प्रथा की सारहीनता बताई। उन्होंने पश्चिम दिशा की ओर गंगा जल उछालना शुरू कर दिया। लोगों द्वारा पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि मैं पंजाब में अपने खेतों को पानी दे रहा हूँ। लोगों को हँसते देख उन्होंने कहा कि जब मेरा दिया हुआ जल इस पृथ्वी पर स्थित मेरे खेतों को नहीं पहुँच सकता, तो तुम लोगों द्वारा चढ़ाया जल पितृलोक में कैसे पहुँचेगा। इस उत्तर ने हिन्दू तीर्थ यात्रियों की आँखें खोल दीं।

दूसरी यात्रा के दौरान गुरु नानक के साथ सईदो और गेबो दो जाट शिष्य थे। इस यात्रा के दौरान गुरु जी ने मुख्य रूप से कसूर, भटिंडा, बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर, अजमेर, पुष्कर, नसीराबाद, लोधीपुर, आबू, अहमदनगर, उज्जैन, होशंगाबाद, नरसिंहपुर, नागपुर, फतेहाबाद, गोलकुण्डा, हैदराबाद, बिदर, पण्ढारपुर, तेन्जोर, त्रिचलापल्ली, नागापट्टक, रामेश्वर, संगलादीप, कोयंबटूर, कालीकट, गोवा, रत्नागिरि, नासिक, पंचवटी, बढ़ौता, भावनगर, जूनागढ़, पारिबन्दर, द्वारिका, उमरकोट, टांडा, शूजाबाद, उच, तुलाम्बा आदि स्थानों में भ्रमण किया तलवंडी में अपने माता-पिता से मिलकर 1514 ई. में वे सुल्तानपुर पहुँचे। इस अवसर पर गुरु नानक की पोशाक दूसरे ढंग की थी। सिर पर एक लंबी रस्सी को पगड़ी के रूप बांधा, एक हाथ में मोटा डण्डा और दूसरे में भिक्षा पात्र। जहाँ रुकते खड़ाऊँ पहनते। चोगा पहले जैसा ही था। विवादास्पद प्रश्नों का वे उल्लेखनीय ढंग से हल निकालते। इस काल में उनका उद्देश्य प्रसिद्ध बौद्ध तथा जैन तीर्थ स्थलों को देखना था। लंका में उन्होंने शिवनाम को अपना शिष्य बनाया। लौटते समय दो अमीर क्षत्रिय दुनीचन्द और करोड़ीमल उनके शिष्य बने।

अपनी तीसरी यात्रा के अंतर्गत गुरु नानक ने मुख्य रूप से नूरपुर, कांगड़ा, डलहौजी, ज्वालामुखी, धर्मशाला, मणिकरण, रिवाल्सर, नादौन, सकेत, मंडी, कुल्लू, चंबा, बिलासपुर, काहलूर, कीरतपुर, सपाटू, गढ़वाल, मसूरी, चकरोता, श्रीनगर, बदरीनारायण, मानसरोवर, भीमकोट, रानीखेत, अल्मोड़ा, नैनीताल, गोरखमाता, पीलीभीत, गोरखपुर, धौलागढ़, पशुपति, महादेव (नेपाल), तमलुंग, लाच्चे, दार्जिलिंग, तराशीशु, जोंग (भूटान), लखीम, ब्रह्मकुंड, शिवपुर, रानीगंज, जनकपुर, सीलामड़ी, काशीपुर, जालन्धर आदि स्थानों पर गए। सन् 1517 में करतारपुर लौट आए। इस बार इस यात्रा के साथी एक लुहार और दूसरा रंगरेज था। इस यात्रा के दरमियान गुरु नानक का योगियों और सिद्धों से वार्तालाप हुआ।

करतारपुर कुछ समय रहने के बाद गुरु नानक पश्चिम की ओर अपनी चौथी यात्रा पर रवाना हुए। इस यात्रा के दौरान उन्होंने ऐमनाबाद, बजीराबाद, गुजरात, रोहतास, पिण्ड डंगरवान, ढेरां इजभाईलखान, ढेरा घाज़ीखान, शिकारपुर, हैदराबाद, कराची, मक्का, मदीना, बगदाद, तेहरान, जलालाबाद, पेशावर, हसन अब्दल, पुन्छ, स्यालकोट आदि स्थानों का भ्रमण किया सन् 1521 में जब बाबर ने ऐमनाबाद पर आक्रमण किया, तब गुरु नानक वहाँ लौटे। इसके बाद वे करतारपुर लौट आए और अपना शेष जीवन वहीं व्यतीत किया अपने जीवन के इस भाग में वे अचल, बटाला, मुलतान, हरिद्वार आदि स्थानों पर भी गए।

गुरु नानक की उपर्युक्त यात्राओं के संक्षिप्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि गुरु नानक जन कल्याणार्थ भारत के कोने-कोने तक तो गए ही, लेकिन अरब देशों, अफगानिस्तान, तिब्बत और लंका निवासियों को भी सत्यता की राह दिखाई। संभव है कि ऐसे स्थान जहाँ गुरु नानक ने यात्राएँ की हैं, अभी प्रकाश में आने शेष हों, क्योंकि गुरु नानक के जीवन वृत्त का आधार पुरातन जन्मसाखियाँ ही हैं। उन्होंने अपना शेष जीवन एक किसान की तरह बिताया। फिर उन्होंने अनुभव किया कि जिस संकल्प को लेकर जनजीवन में उन्होंने परिवर्तन लाना चाहा, उसकी नींव में अभी परिपक्वता नहीं आई है। अत: अपने आन्दोलन को चलाए रखने के लिए उन्होंने अपने जीवन काल में ही भाई लहणा जी को 14 जून, 1539 को अपनी आत्मिक ज्योति को उनमें प्रज्वलित कर गुरु गद्दी प्रदान की। अंतिम समय निकट जानकर गुरु नानक ने गुरु गद्दी भाई लहणा जी को देकर उनका नामकरण गुरु अंगद देव स्थापित कर दिया गुरु गद्दी देने के समय अपनी सारी रचनाओं का संग्रह तथा अन्य भक्तों का वाणी संग्रह भी अर्पित कर दिया। इस प्रकार उन्होंने गुरु पद की स्थापना की। गुरु अंगद देव को गुरु गद्दी पर बिठाने के ठीक पाँच दिन बाद 1539 ई. में गुरु नानक देव ज्योति-ज्योति में लीन हुए।

गुरु नानक के समय का राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिवेश बहुत उथल-पुथल वाला था। समाज में अव्यवस्था, अराजकता, भ्रष्टाचार, बाह्य आडंबर, रूढ़िवादिता, नैतिक पतन एवं मानसिक दास्ताँ का बोलबाला था। समाज में नारी का दर्जा बहुत गिरा हुआ था। चारों ओर का वातावरण दूषित था जिसमें लोग विवशता की अवस्था में जकड़े हुए किसी ऐसे संबल की आवश्यकता अनुभव कर रहे थे, जो उन्हें इस दुष्चक्र से मुक्ति दिला सके। गुरु नानक ने अपने युग के यथार्थ रूप को निकट से देखा था। उन्होंने प्रभु भक्ति का आश्रय लेकर भारतीय जनता में अटूट विश्वास जागृत किया और जनसाधारण को धर्म मर्यादा सम्मत आचरण का संदेश दिया।

उल्लेखनीय है कि गुरु नानक की वेशभूषा का वर्णन जन्म साखियों एवं अन्य पुस्तकों में मिलता है। लेकिन यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि गुरु नानक ने किसी एक ही वेशभूषा को नहीं अपनाया, अपितु स्थान एवं अवसरानुसार वे वेशभूषा बदलते रहे। हिन्दू तीर्थ स्थलों पर जाते समय उन्होंने हिन्दुओं के पहरावे को अपनाया। इस्लाम धर्म के लोगों को मिलते समय वे काजियों की वेशभूषा धारण करते थे। इसी तरह नाम-योगियों के स्थानों में जाते समय योगी रूप को धारण करते थे। अपनी यात्राओं के दौरान वे प्राय: मुसलमान फकीरों एवं सूफ़ियों की भाँति ढीला एवं लंबा चोगा पहनते थे। इसका रंग हिन्दू एवं योगियों के भगवे रंग जैसा होता था। कमर में सफेद कमरबंद, सिर पर मुसलमानी टोपी, टोपी के चारों तरफपगड़ी बाँधते थे और कभी-कभी हड्डियों की माला भी गले में डाल लिया करते थे। वे हाथ में कभी-कभी डंडा एवं भिक्षापात्र भी रखते थे। साथ में ग्रन्थ तथा दरी भी रखते थे, जिसका प्रयोग गोष्ठियों में किया करते थे।

आश्चर्य नहीं कि गुरु नानक का दैवी व्यक्तित्व था। रूपाकृति अतिसुन्दर तथा मोहक थी। जो भी उनके संपर्क में आया, वह उनकी आकर्षण शक्ति से प्रभावित हुए बिना न रह सका। गुरु नानक ने संसार के लोगों को एक ही परमात्मा के ऐश्वर्य, सर्वशक्तिमानता और सर्वव्यापकता का संदेश दिया उन्होंने परमात्मा रस आस्वादन कराकर सांसारिक प्रलोभनों एवं वासनाओं से मुक्ति दिलाने का मार्ग प्रशस्त किया उनके उपदेश समस्त मानवता के लिए हैं। उन्होंने मिथ्या कर्मकाण्ड पर प्रहार किया, लेकिन कभी किसी धर्म पर नहीं। अन्य धर्मों के प्रति उनकी सहिष्णुता एवं सहानुभूति की भावना सर्वथा आधुनिक थी। गुरु नानक दूरदृष्टि वाले सुधारक थे और उनका एक मात्र उद्देश्य पीड़ित मानवता का उद्धार करना था। उन्होंने ऐसे समय की परिकल्पना की, जिसमें कोई छोटा-बड़ा, ऊँचा-नीचा नहीं था। उनकी मान्यता थी कि प्रभु की दृष्टि में सभी प्राणी समान हैं।

गुरु नानक पूर्ण योगी एवं आदर्श गृहस्थ थे। उन्होंने जनता के सामने जीवित उदाहरण रखा कि गृहस्थी में रहकर भी किस प्रकार प्रलोभनों और आकर्षणों से बचा जा सकता है। संपूर्ण मानव जाति उन्हें अपना मित्र और रक्षक बनाने के लिए आवाज़ दे रही थी। गुरु नानक उच्चकोटि के तत्व चिंतक, समाज सुधारक और मानवीय संवेदनाओं के चितेरे थे। कविता या वाणी लिखना उनका लक्ष्य नहीं था, बल्कि उनकी भावनाओं एवं अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का माध्यम था। उनकी संपूर्ण वाणी गेय है। इनकी वाणी में सरसता, माधुर्य, प्रवाहमयता, लय आदि का स्वत: ही समावेश हो गया है। गुरु नानक के काव्य में श्रृंगार, वीर, रौद्र, वीभत्स, करुण, शान्त आदि अनेक रसों का प्रयोग मिलता है। लेकिन उनकी वाणी का प्रधान शान्त रस ही है। वे बहुभाषाविद् थे। उन्होंने अपने उपदेश पंजाबी भाषा के अतिरिक्त प्रत्येक देश के लोगों की बोली में दिए। उनका उद्देश्य जन साधारण तक अपना ईश्वरीय संदेश पहुँचाना और जलते हुए संसार को ठंडक देना था। यही वजह है कि स्थानीय बोलियों और भाषाओं में प्रचलित बोलचाल के शब्द उनके काव्य में आ गए हैं।

गुरु नानक ने संसार का त्याग न करके उसमें ही रहकर निर्लिप्त भाव से काम करने का उपदेश दिया उन्होंने सत्य के आचरण पर विशेष बल दिया वे समस्त सृष्टि को और उसके प्रत्येक प्राणी को उस परमपिता की सन्तान मानते थे। उनका धर्म (सिख धर्म) पूर्णतया मानवता पर आश्रित है। उन्होंने धर्म के उस स्वरूप को जनता के सामने रखा जो सर्वजन सुलभ हो और जो वर्ण, जाति, वर्ग आदि से परे मानव की आत्मा से सीधा सम्बन्ध रखता हो। साथ ही योग मार्ग का वास्तविक रूप समझाया और सन्यास के स्थान पर कर्मयोग की महत्ता स्थापित की। गुरु नानक ने उच्चकोटि तथा शाश्वत महत्व की रचनाओं का सृजन किया जपुजी, सिद्ध गोष्ठी, ओंकार, पट्टी, बारहमासा, थिति, पहरे, सोदर, अलाहणियाँ, आरती, कुचज्जी, सुचज्जी, अष्टपदियाँ, वार काव्य (आसा दी वार, माझ की वार), चौपदे अथवा शबद, छंत। (छन्द), सोलहे, श्लोक आदि प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। ये अलग-अलग रागों में हैं।

इतना और कि गुरु नानक का अवतरण समूची मानव जाति के लिए एक वरदान सिद्ध हुआ। एक नूतन प्रेम, नई प्रेरणा तथा नया पथ उपलब्ध हुआ। गुरु नानक ने अज्ञानान्धकार में प्रसुप्त विश्व को जागृत किया एकता, समानता एवं भाईचारे का शाश्वत संदेश दिया उन्होंने कभी भी स्वयं को ईश्वर का पैगंबर, परमात्मा का आकार या गुरु नहीं कहा। उन्होंने प्रत्येक दर्शन को छुआ, हरेक प्रतिमान को टटोला, सभी भ्रमों पर विचार किया अन्त में कुछ लकीरें हमारे लिए खींचीं, कुछ दिशाएँ भी हमें दी। ये दिशाएँ हमें सब मुसीबतों, सब अंधेरों, सब झमेलों और सब दु:खों से छुटकारा दिला सकती है। गुरु नानक के जलवे में परमात्मा का प्रकाश था, हृदय में इंसानी दर्द था। वे तो कलियुग के पीर बनकर आए थे, साधारण भाषा में सीधे-सादे लोगों से सीधी भाषा में बातें करने आए थे। उन्होंने जोर से आवाज दी, कुछ दौड़ कर उनके 'नानक नाम जहाज पर चढ़ गए। हँसकर उन्हें गले लगा लिया। गुरु नानक का निजी विश्वास था कि सभी मार्ग एक ही मंजिल की ओर जाते हैं, दिशा ठीक होनी चाहिए। लोगों के हृदय को बदलकर उन्हें उत्तम गुणों की ओर प्रेरित करने वाले इस महान संत की आध्यात्मिक सुगंध आज भी सृष्टि के कण-कण में सुरभित है।

- 3150, सेक्टर 24-डी, चंडीगढ़-160023
मो. 9876301085

मनि जीतै जगु जीतू ।।

- गुरु नानक देव

मनै मारगि ठाक न पाइ, मनै पति सिउ परगटु जाइ।।

- गुरु नानक देव

ना कछु किया न करि सका, ना करने जोग सरीर,
जो कछु किया साहिब किया, ता तें भया कबीर।

पतिबरता मैली भली, गले काँच की पोत।
सब सखियाँ में यों दिपै, ज्यों सूरज की जोत।।

प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा परजा जेहि रुचे, सीस देह लै जाय।।

- कबीर

ऐसी वाणी बोलिए, मन का आप खोये।
औरन को शीतल करे, आपहुं शीतल होए।।

- कबीर

संदर्भः गुरु नानक का 550 वाँ प्रकाश वर्ष

साक्षात्कार

प्रसिद्ध कवयित्री, लेखिका, संगीतज्ञ एवं समाज सेविका डॉ. निर्मल वालिया से
विख्यात साहित्यकार डॉ. अमरसिंह वधान की बातचीत

मानव शरीर परमात्मा का गुरुद्वारा है

21वीं सदी की अत्यंत चर्चित महिला साहित्यकारों में डॉ. निर्मल वालिया का नाम अग्रगण्य है। वे एक मशहूर कवयित्री, गद्यकार, उपन्यासकार, दार्शनिक एवं समाज सेविका हैं। उनका हृदय कोमल एवं पारदर्शी है, मस्तिष्क जिज्ञासु है, आँखें खोजी हैं और भाव-विचार बहता नीर है। उनका समूचा रचना-कर्म चेतना के उत्कर्ष से नियोजित है। उन्होंने आत्मा की अनुभूति से साक्षात्कार किया है, तो उनकी शुभ्र चेतना सत्य के संदेश का सशक्त माध्यम बनी है। उन्होंने अपनी कृतियों में बहसों, विमर्शों एवं प्रश्नों के नए द्वार खोले हैं।

● **आपने 'कसक', 'सत्य पथ', 'गुरु प्रकाश', 'मन परदेसी', 'वैराग' जैसी उत्कृष्ट आध्यात्मिक कृतियों की रचना की है। अध्यात्म-दर्शन की ओर आपका झुकाव कैसे हुआ ?**

– मेरा मानना है कि बिना किसी कारण के कोई कार्य नहीं होता और जो कुछ होता है, अच्छे के लिए ही होता है। वैसे मेरा मुझ में कुछ नहीं है, जो कुछ है वह प्रभु की कृपा से है। हाँ, इतना जरूर है कि जीवन संघर्ष की तासीर को मैंने सहा है, भोगा है, गहराई में अनुभव किया और इसे हंडाया है। बचपन से ही गुरुद्वारे में दर्शनार्थ जाना, पाठ-कीर्तन सुनना, वाहिगुरु का नाम जपना मेरी दैनिक चर्या रही है और आज भी है। हृदय शुद्ध-निर्मल है, एकाग्रता से प्रभु स्मरण करती हूँ। दिव्य शक्ति को कई बार अनुभव किया है और कई दशकों से गुरुद्वारे में सच्ची लगन से सेवा कार्य में स्वयं को समर्पित किया हुआ है। वही ईश्वरीय शक्ति मुझे प्रेरणा देती है और उसी के हुक्म से स्वच्छ-श्वेत कागज पर अपने शुद्ध मन से विशुद्ध विचार उतार देती हूँ। इससे उदित होने वाली सप्तरंगी किरणें साहित्य की कई विधाओं को जगमगा देती हैं। इनके मूल में भी तो प्रभु कृपा ही है। धार्मिक, आध्यात्मिक एवं दार्शनिक ग्रन्थों में मेरा अध्यात्म और दर्शन मणि की तरह चमकता है। देखिए, यह मानव शरीर तो परमात्मा का गुरुद्वारा है।

● **गुरु नानक सिख धर्म के संस्थापक हैं। आपके विचार में धर्म क्या है ?**

– यह मानी हुई बात है कि समग्र सृष्टि धर्म रूपा है। धर्म के बिना किसी वस्तु का वस्तुत्व स्थिर नहीं रह सकता। जैसे अग्नि का धर्म जलाना है और पानी का धर्म ठंडक देना है, उसी प्रकार मनुष्य का धर्म मननशीलता, शुद्ध आचरण एवं परमात्मा से जुड़ना है। धर्म ही मनुष्य को पशुत्व से पृथक कर उसे एक श्रेष्ठ मानव की कोटि में लाता है। धर्म का आश्रय लेकर मनुष्य अपने लौकिक एवं पारलौकिक कर्तव्यों को निभाता है। श्रीराम, श्रीकृष्ण, युधिष्ठिर, सिख गुरुओं एवं महापुरुषों ने अपना-अपना धर्म ही निभाया था। मनुष्य की विशिष्टता दिखाने वाली यदि कोई वस्तु है तो वह धर्म है। धर्म व्यक्ति को दूसरों पर श्रद्धा और विश्वास करना सिखाता है। धर्म व्यक्ति का संतुलन है।

● **सिख धर्म में सत्य, अहिंसा करुणा और प्रेम प्रखर मानव मूल्य हैं। आप इनकी विवेचना किस तरह करेंगी ?**

– सीधे-सीधे शब्दों में 'सत्य' का अर्थ है- परमसत्ता का अस्तित्व। वेदों में सत्य को ही पृथ्वी का आधार माना गया है। सत्य धर्म को चिरंतनता-निरंतरता प्रदान करता है। सत्य सदैव चमकीला होता है। 'अहिंसा' से तात्पर्य है कि मन, वाणी और कर्म से किसी भी जीव के प्रति हिंसात्मक, कष्टप्रद एवं दुःखदायी कार्य न करना। अहिंसा एक प्रबल महाव्रत है जिसका पालन करना अत्यन्त कठिन है। अहिंसा के पथ पर चलने के लिए निष्कपट और निस्वार्थ भाव से प्रेम की आवश्यकता होती है। 'करुणा' अहिंसा का मूल स्रोत है। करुणा अन्तःकरण की सात्विक प्रवृत्ति है, जो दूसरों का दुःख देखकर मन में उत्पन्न होती है और मनुष्य को दूसरे के प्रति सहृदय बनाती है। 'प्रेम' मन का कोमल एवं अपनत्व भाव है। व्यक्ति का व्यक्ति के प्रति आग्रह अथवा आत्मीयता प्रेम ही है। निस्संदेह, सत्य, अहिंसा, करुणा और प्रेम सिख धर्म के शाश्वत मूल्य हैं।

● **गुरु नानक की प्रसिद्ध रचना 'जपुजी' जिस मूलमंत्र से प्रारम्भ होती है, उसका अर्थ क्या है ?**

– सिखों की धर्म पुस्तक 'श्री गुरु ग्रन्थ साहिब' गुरु नानक देव की प्रसिद्ध रचना 'जपुजी' से आरंभ होती है। प्रत्येक सिख के लिए प्रतिदिन प्रातः काल उसके पाठ का विधान है। 'जपुजी' के आरंभ में मूलमंत्र है, जो कि सिख पंथ का मूल मंतव्य है। इसका भावार्थ इस प्रकार है- ईश्वर मात्र एक है। उसका नाम सत् है, वह सर्वव्यापक रचयिता है, वह निर्भय है, निर्वैर है। उसका अस्तित्व काल से अप्रभावित है। वह कभी जन्म नहीं लेता, वह स्वम्भू है और उसकी प्राप्ति गुरु की कृपा से ही संभव है।

● **सिख मत में 'गुरु' के स्वरूप एवं उसके गुणों की व्याख्या किस प्रकार की गई है ?**

– सिख शिक्षाओं के अनुसार ईश्वर अजन्मा है, अतः सिख गुरु ईश्वर के अवतार नहीं माने जाते। वे अपने लिए अनुभव द्वारा ज्ञान प्राप्त जीव के अतिरिक्त

किसी विशेष पद का दावा नहीं करते। उन्होंने उस लक्ष्य को प्राप्त किया है, जिसे सब खोजते हैं। गुरु के आदेशों का पालन करने वाला शिष्य भी आध्यात्मिक उन्नति के उसी शिखर पर पहुँचता और परमानन्द का भोग करता है, जो गुरु को उपलब्ध हुआ होता है। गुरु रामदास भी कहते हैं कि गुरु के आदेशों का पालन करने वाला सिख गुरु के साथ एकत्व स्थापित कर लेता है। फिर गुरु और शिष्य में कोई अन्तर महसूस नहीं होता। गुरु नानक ने कहा है कि जो महत्वपूर्ण अनुभव तुम्हें सत्य में स्थिर कर सके, अनिर्वचनीय की चर्चा करवाए तथा 'शब्द' के माध्यम से तुम्हें परमात्मा में लीन करवा सके, उसे गुरु स्वीकार करो। सच्चा स्वामी केवल सत्य से ही प्रेम करता है। जब मनुष्य किसी सच्चे गुरु से मिलता है तो वह उसे प्रभु चरणों में ले जाता है और उसकी सेवा में प्रवृत्त करता है। अंत में वह उसे ईश्वर में ही विलीन कर देता है। सद्गुरु एक में सभी तथा सभी में एक देखता है। जब तक मनुष्य गुरु की शिक्षाओं का अभ्यास न करे, वह गुरु का महत्व नहीं जान सकता। गुरु तो मनुष्य को ईश्वर के सदन तक ले जाने वाला निर्देशक है।

● **गुरु नानक ने जनसाधारण की भाषा को ही अपनी रचनाओं का माध्यम क्यों बनाया ?**

– दरअसल, गुरु नानक एक ऐसे संसार के लोगों को जीने की राह दिखाना चाहते थे, जिसमें हिन्दू और मुस्लिम धर्मों द्वारा बताए गए पुराने रास्ते अपर्याप्त थे तथा अधिकतर लोगों की शांति और प्रतिष्ठा के लिए सर्वथा विनाशकारी थे। उनकी भाषा उनकी वाणी में प्रयुक्त मिथकीय संदर्भों को उठाने एवं व्यक्त करने में सक्षम थी। उन्होंने भाषा को सरल, सहज, सरस एवं संगीतमय बनाते हुए अपने विचार व्यक्त किए।

● **क्या सिख धर्म में भिक्षाटन (भीख माँगना) की प्रवृत्ति है ?**

– मेरी मान्यता है कि भीख वृत्ति मूलत: समाज के पूँजीवादी ढाँचे की देन है। इसलिए गुरु नानक ने मायाधारी (पूँजीपति) या धनाड्य की भर्त्सना की है। उन्होंने पूँजीपतियों को शिक्षा दी कि वे जरूरतमंद को दान दें। गुरु नानक तथा अन्य सभी सिख गुरुओं ने भीख माँगने की वृत्ति को एक सामाजिक बुराई कहकर इसकी निन्दा की। उन्होंने अपने साथी हिन्दू संतों की इस बात के लिए कड़ी आलोचना की कि वे लोगों से प्राप्त भिक्षा पर जीते हैं। गुरु जी ने लोगों को श्रम का सम्मान करने की शिक्षा दी। उनके अनुसार संन्यासी और उपदेशक को भी माँगना नहीं चाहिए– 'अचिन्त मिले तो खाए। अर्थात् उसे उसी में संतोष करना चाहिए जो बिना माँगे और सोचे उसे अकस्मात प्राप्त हो। गुरु का सच्चा सिख कभी भी भीख नहीं माँगता।

● **गुरुवाणी में 'परम मनुष्य' किसे कहा गया है ?**

– पाश्चात्य विचारक नित्शे ने अपने दर्शन में परम मनुष्य की जो कल्पना की है, वह व्यावहारिक कम, सैद्धान्तिक ज्यादा है। जबकि गुरु नानक ने गुरुमुख अर्थात् आदर्श पुरुष का चित्रण अधिक कलात्मक सौन्दर्य एवं व्यावहारिकता से किया है। गुरु जी कहते हैं, 'जाति वरन से भए अतीता, ममता लोभु चुकाइया'। अर्थात् गुरुमुख जाति और वर्ग के भेदों से परे रहता है और स्वार्थ भाव तथा लोभ का निराकरण करता है। वे आगे कहते हैं कि वह पुरुष साकार भगवान है, जिस पर सुख–दु:ख का कुछ भी प्रभाव नहीं होता। लोभ, मोह और अहंकार उसे वश में नहीं कर सकते। गुरु अमरदास एवं गुरु अर्जुन देव ने भी इसी आशय के शब्द कहे हैं।

● **गुरु नानक ने स्त्री को केन्द्र में रखकर 'कुचज्जी' और 'सुचज्जी' नामक दो रचनाएँ लिखी हैं। इनके माध्यम से गुरु जी क्या संदेश देते हैं ?**

– गुरु नानक ने सूही राग में 16पक्तयों की 'कुचज्जी' शीर्षक कविता रची है। असल में, 'कुचज्जी' बुरे ढंगों–तौर तरीकों वाली स्त्री को कहते हैं। प्रभु भक्त जब परमात्मा को प्राप्त नहीं कर पाते तो इसे अपना दोष समझते हैं। इसी तरह एक स्त्री अपने पति के प्रेम को जीतने के लिए जब असफल होती है तो वह अपना ही दोष निकालती है। इसके विपरीत 'सुचज्जी' अच्छे गुणों वाली स्त्री को कहते हैं। सुचज्जी परमात्मा रूपी पति के मिलाप का आनन्द प्राप्त करती है। वह अपने गुणों पर गर्व नहीं करती, बल्कि मिलाप को प्रभु प्रियतम की बख्शिास समझती है। प्रभु की रजा में प्रसन्न रहती है और दु:ख–सुख की परवाह नहीं करती। सुचज्जी स्त्री अपनी इच्छा को प्रभु के हुक्माधीन कर देती है।

● **गुरु नानक और उनके प्रिय संगी–साथी भाई मरदाना के पारस्परिक सम्बन्धों के विषय में आप क्या कहना चाहेंगी ?**

– आश्चर्य नहीं कि भाई मरदाना का नाम सिख जगत् में बड़े आदर के साथ लिया जाता है। गुरु नानक की संगति में रहकर उन्होंने अध्यात्मक के शिखर को स्पर्श कर लिया था। भाई मरदाना गुरु जी के मधु स्वर, मृदु व्यवहार, मानव प्रेम, प्रेरक एवं सार्थक वाणी तथा ईश्वर के प्रति उनके सच्चे प्रेम के कारण उन्हें बहुत चाहते थे। भाई मरदाना धर्म और पेशे से मुसलमान मरासी थे। वे गुरु नानक से 10 वर्ष बड़े थे। खुदा ने उन पर कला और संगीत की विशेष मेहरबानी की थी। वे अपने समय के मर्मज्ञ रबाबकार थे। जब गुरु नानक भजन गाते तो भाई मरदाना उनके साथ रबाब बजाते। गुरु जी को ईश्वरीय वाणी आने का जब अहसास होता तो वे भाई मरदाना से कहते, 'भाई मरदानिया वाणी आई है, रबाब बजाना शुरु करो'। तब भाई मरदाना संगीतमयी धुनों को गुरु साहिब के शब्द भाव के अनुसार एकसुर करके अलौकिक एवं प्रभावी समय बाँध देते। आसपास का परिवेश संगीतमय हो उठता। श्रोतागण रूहानी संगीत से मंत्र मुग्ध हो जाते। इसी रूहानी संगीतात्मकता ने सज्जन ठग, कौढ़ा आदमखोर एवं नूरशाह जादूगर को उनकी क्रूरताओं का एहसास कराकर उन्हें इन्सान बनाया तथा सत्य मार्ग पर चलने की शिक्षा दी। अपने जीवन के तकरीबन 47 वर्ष तक भाई मरदाना बड़ी निष्ठा एवं आज्ञाकारिता से गुरु नानक के अंग–संग रहे। उनके द्वारा रचित तीन श्लोक श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के बिहागड़ा राग में संगृहीत गुरु रामदास की वार की 12वीं पौड़ी पृष्ठ 553 में 'मरदाना' शुभ शीर्षक से अंकित हैं। इन तीन श्लोकों की वजह से भाई मरदाना को सिख मत एवं समाज में उच्च स्थान प्राप्त है।

● **21 वीं सदी एवं भावी समय में गुरु नानक वाणी की क्या प्रासंगिकता है ?**

– गुरु नानक की वाणी शाश्वत है, अत: इसकी प्रासंगिकता भी कालजयी है। इस वाणी में क्रांतिकारी वैश्विक जीवन दृष्टि है, सच्चे एवं परिपूर्ण विश्व मानव की कल्पना है। इसमें विश्वबन्धुत्व एवं हिन्दू–मुस्लिम एकता का संदेश है और मानव–जाति तथा समाज का पथ–प्रदर्शन करने की ज्योति भी।

– 3150, सेक्टर 24–डी, चंडीगढ़–160023, मो. 9876301085

■

आलेख

समाज से राष्ट्र तक, धर्म से आध्यात्म तक: दस सिक्ख गुरुओं का अवदान

डॉ. रेशमी पांडा मुखर्जी

गुरु नानक जी ने मक्का में कहा था, 'हिंदू अथवा मुसलमान अपने में कोई ऊँचा-नीचा नहीं है। धर्म अथवा मजहब किसी व्यक्ति को उंचा और नीचा नहीं बनाता, बल्कि व्यक्ति का वास्तविक जीवन उसे ऊँचा और नीचा बनाता है। सिख धर्म वास्तव में जीवन में त्याग और अनुशासन का पाठ पढ़ाता है। सिख धर्म समाज और देश के लिये जीने और बलिदान की सीख देता है। सिख धर्म मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा का बीड़ा उठाता है। अत: इस धर्म को साकार करने, संगठित करने, प्रसारित करने और युगों तक अग्रसित होने के लिए अपना सर्वस्व त्याग करने वाले उन दस गुरुओं को जानना, समझना और आत्मसात करना श्रेष्ठ मूल्यों की उपलब्धि मानी जा सकती है। प्रस्तुत लेख में उन दस महान सिख गुरुओं के सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक और राजनैतिक अवदान पर विचार करने की एक प्रचेष्टा है।

'काइया महलु मंदरु धरु हरि का तिसु महि राखि जोति अपार' अर्थात शरीर के भीतर ही परमात्मा की अपार ज्योति का निवास मानने वाले परम श्रद्धेय और कालजयी युगनिर्माता **गुरु नानक देव जी** ने सिख धर्म का प्रवर्तन किया था। अपने जीवन में देश विदेश के लगातार भ्रमण के दौरान आपने अपनी वाणी और ज्ञान का प्रचार करते हुए जीवन के सच को अनुभव किया और जन-जन तक इसे पहुँचाने का बीड़ा उठाया। नानक बचपन से ही अपने कर्मों व वाणी के द्वारा प्रमाणित कर चुके थे कि साधारण जग के धंधों में उनको रमाया नहीं जा सकता और न ही सांसारिक जाल में फँसाकर उनके दिव्य तेज को धूमिल किया जा सकता है। जब वे पशु चराने जंगल गए तो देवदूत उनके ढोरों को चराने लगे और एक सफेद साँप अपने फन फैलाए सूर्य की किरणों से नानक जी की रक्षा करने लगा जिसे देखकर राय बुलार हतप्रभ हो गए थे। इस प्रकार की कई घटनाओं ने प्रमाणित कर दिया था कि नानक को दुनिया की सौदेबाजी के धंधों में बाँधकर रखना असंभव था। नानक अपने जीवन में अजस्र यात्राओं के दौरान परमात्मा के संदेश का प्रचार करते हुए गरीबों और निम्न वर्ग की उन्नति का प्रयास करते रहे।

कुरुक्षेत्र, पाकपटन, जगन्नाथपुरी, पंजाब, सुल्तानपुर, मुल्तान, मानसवरोवर, हरिद्वार, कर्तारपुर, दक्षिण भारत, बीजापुर, नरसिंहपुर, श्रीलंका, मक्का, बगदाद आदि अनगिनत स्थलों की यात्रा के दौरान आपने बाबर से लेकर सिकंदर लोधी तक को प्रभावित किया। जादूगरनी पर जादू, भयंकर ठग को धर्म प्रचारक बनाना, रीठा को मीठा बनाना, हमज़ा गौस का परिष्कार, मियां मिट्ठा, दुनीचंद और करोड़िया पर प्रभाव आदि अनेकानेक घटनाओं के माध्यम से आपने सच्चाई, ईमानदारी, त्याग और धर्मप्रवणता की सीख दी। आपने अपने ग्रंथों जैसे- असा की वार, जपूजी आदि में माया-मोह तथा त्रिदेव की संकल्पना का खंडन करते हुए जीव में ही परमात्मा के वास की शिक्षा दी। आप सद्गुरू के महत्व का प्रचार करते हुए धन, जाति, ज्ञान, कर्मकांड, परिवार, विद्या, आध्यात्मिकता, रूप-योवन सम्बन्धी अहंकार का सिरे से विरोध करते हैं। आपने मन, आत्मा, योग, हरि-प्राप्ति, कर्म, ज्ञान, वैराग्य, विवेक, भक्ति पर जो विचार रखे उस पर भारतीय उपनिषदों श्रीमद्भागवत, भगवद्गीता आदि का प्रभाव देखा जा सकता है। गुरुनानक जी के व्यक्तित्व की झांकी प्रस्तुत करते हुए डॉ. जयराम मिश्र जी अपने ग्रंथ गुरु नानकदेव जीवन और दर्शन' में लिखते हैं कि आप सद्गुरू, दार्शनिक व पैगम्बर, योगी व गृहस्थ, क्रांतिकारी व सुधारक, कवि व संगीतज्ञ, देशभक्त, विश्वबंधु, अनुपम प्रेमी, वीर व निर्भय, विनम्र व मृदु, दृढ़ संकल्पी व कर्मठ, बहुभाषाविद, विनोदी और प्रत्युत्पन्नमति सम्पन्न थे। गुरुगद्दी सौपने के पावन क्षण का लेखक जयराम मिश्र यों वर्णन करते हैं- **गुरुमहाराज** ने भलीभाँति समझ लिया कि परमात्मा के शाश्वत से मिलने का दिन समीप आ रहा है। उन्होंने **गुरु अंगददेव** को गुरुगद्दी पर प्रतिष्ठित किया, बाबा बुड्ढा ने केशरिया तिलक उनके मस्तक पर लगाकर उन्हें अभिषिक्त किया। गुरु नानकदेव ने पाँच पैसे और एक नारियल समर्पित कर बाबा लहना को गुरु अंगददेव के रूप में अभिनंदन किया, उनके चरणों में प्रणाम किया। इस प्रकार गुरु नानक गुरु अंगद में प्रविष्ट होकर दूसरे नानक हुए।

पिता फेरुल और माता रामो के क्षत्रिय परिवार में जन्मे लहना निरंतर सात-आठ वर्षों तक गुरु नानक जी की एकानिष्ठ सेवा और भक्ति के कारण गुरु अंगद के रूप में गुरुगद्दी पर प्रतिष्ठित हुए। 2 सितंबर 1539 को गुरु अंगद करतारपुर छोड़कर

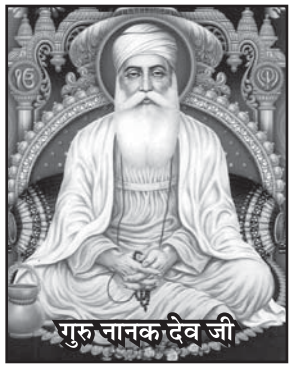
गुरु नानक देव जी

गुरु अंगद देव जी

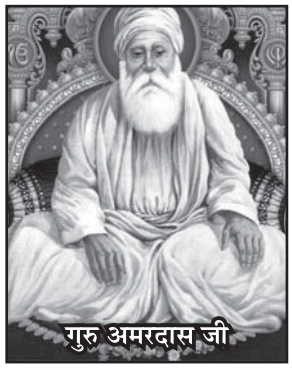
गुरु अमरदास जी

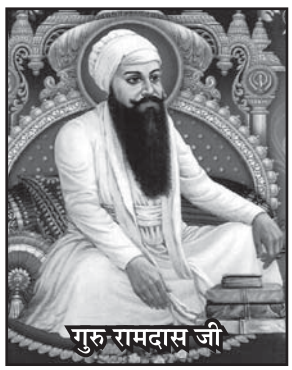
गुरु रामदास जी

खंदुर साहिब गाँव आ गए क्योंकि गुरु नानक जी के दोनों पुत्र श्रीचंद और लक्ष्मीचंद स्वयं को गुरु नानक जी की गुरुगद्दी के असल वारिस घोषित कर चुके थे। इस मनमुटाव से दूर गुरु नानक जी के वचनों और दर्शन का पालन करते हुए गुरु अंगद सिख समाज की उन्नति और दान-धर्म के कार्यों में संलग्न हो गए।

कहा जाता है कि शेरसाह सूरी से कन्नौज के युद्ध में मुँह की खाने पर हुमायूँ खंदुर साहिब पहुँचे जहाँ गुरु अंगद से उनकी मुलाकात हुई। बादशाह के आगमन पर गुरु ने उन्हें सलाम नहीं किया क्योंकि वे संगत में गुरु नानक जी के वचनों का श्रवण-मनन कर रहे थे। बादशाह के प्रति गुस्ताखी मानकर हुमायूँ ने गुरु अंगद को ललकारा तो गुरु ने उनसे शांत भाव में यही कहा कि जहाँ तुम्हें अपना शौर्य दिखाना था वहाँ से तो तुम मैदान छोड़कर भाग आए और यहाँ एक निहत्थे गुरु पर अपनी वीरता दिखाने आए हो। हुमायूँ कालांतर में गुरु अंगद के पास आशीर्वाद लेने आते हैं और गुरु ने उनसे यही कहा था कि आगे चलकर तुम्हें अपनी राजगद्दी वापस अवश्य मिलेगी। गुरु अंगद को गुरुमुखी लिपि के प्रचार-प्रसार का श्रेय मिला जिसे वर्तमान समय तक पंजाबी साहित्य व भाषा की लिपि सर्वसम्मति से स्वीकारा गया है। गुरुमुखी लिपि का आविर्भाव गुरु अंगद से पूर्व हो चुका था पर उसके विकास और व्यापक प्रचार में आपका विशेष अवदान है। आपने मल्ल अखाड़े आरंभ किए जहाँ कुश्ती के माध्यम से शारीरिक दृढ़ता के साथ आध्यात्मिक विषयों पर चर्चाओं और प्रार्थना सभाओं की भी व्यवस्था की जाती थी। इन अखाड़ों में नशे, तम्बाकू सेवन, बुरी आदतों से युवा वर्ग को दूर रखने पर बल दिया जाता। कुश्ती के साथ अन्य खेलों को भी इन अखाड़ों में प्रोत्साहित किया जाता। आपने 63 श्लोक लिखे जिन्हें

गुरुग्रंथ साहब में सम्मिलित किया गया। आपने सिख गुरुद्वारों में लंगर की व्यवस्था को सुदृढ़ किया जिससे सामूहिक भोजन, समानता और एकता की भावना को बल मिला। आपने सेवादारों को परोपकार, सेवा निष्ठा और विनम्रता का पाठ पढ़ाया। आप आजीवन भ्रमण के माध्यम से गुरु नानक जी के उपदेशों का प्रचार-प्रसार करते रहे।

29 मार्च 1552 को देह त्यागने से पूर्व गुरु अंगद ने **गुरु अमर दास** को गुरुगद्दी पर प्रतिष्ठित किया जिन्होंने अपने सेवाभाव व आध्यात्मिक शुद्धता के माध्यम से गुरु अंगद को अभिभूत कर दिया था। कहा जाता है कि गुरु अंगद की पुत्री बीबी अमरो से अमरदास गुरु नानक जी की वाणी सुनकर इतने प्रभावित हुए कि साठ वर्ष की उम्र में गुरु अंगद से मिलकर आपने सिख धर्म ग्रहण किया। गुरु अमरदास ने गुरुद्वारों में प्रशिक्षित मंजी की नियुक्ति आरंभ की जिसका आज तक पालन किया जाता है। मंजी गुरुद्वारे का मुख्य व्यवस्थापक होता है। आपने पोथी के रूप में अपने उपदेशों व वाणी को संग्रहित किया जिससे आगे चलकर आदिग्रंथ के निर्माण में सहयोग दिया। आपने सिखों में नामकरण, विवाह अर्थात आनंद कारज, अर्थी ले जाने के रिवाजों को नियमित व व्यवस्थित किया तथा दिवाली, माघी, बैसाखी जैसे पर्वों को आगे बढ़ाया। आप अपने अनुयायियों को सूर्योदय से पर्व उठकर नित्य कर्म से निवृत्त होकर ध्यान करने का उपदेश देते थे।

गुरु अर्जुन देव जी

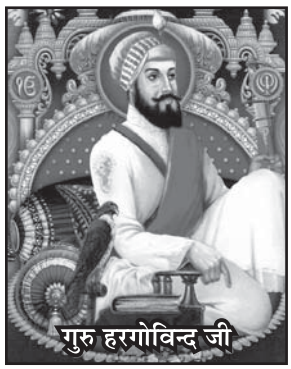
गुरु हरगोविन्द जी

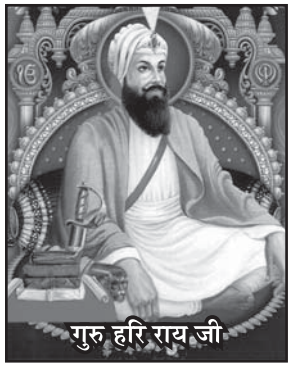
गुरु हरि राय जी

गुरु हरिकृष्णा जी

आप अपने उपदेशों में व्यक्ति को सत्यव्रती होने, अपने आप पर नियंत्रण रखने, केवल भूख लगने पर परिमित आहार ग्रहण करने, पुण्यात्माओं की संगत में रहने, ईश्वरोपासना, सेवाभाव, दूसरों के धन के प्रति विरक्ति रखने का मार्ग सुझाते। आपने पर्दा प्रथा और सती प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया आपने क्षत्रियों को निरीहों के रक्षार्थ लड़ने की प्रेरणा दी। आपने जातिभेद मिटाकर लंगर में भोजन ग्रहण करने की प्रथा को और सुदृढ़ किया तथा सामूहिक कार्यों को और अधिक आगे बढ़ाया। आपने गोइंदवल में 84 सीढ़ियों के गहरे कुँए की खुदाई का काम आरंभ किया जिसे बावली कहा गया। सिख जनमसाखियों के अनुसार आपने अकबर को लंगर में बैठकर सबके साथ भोजन करने का उपदेश दिया और सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता का पाठ पढ़ाया। आपने अकबर को हरिद्वार जाने वाले तीर्थ यात्रियों को करमुक्त करने के लिए राजी किया आपने सिखों के कई तीर्थ स्थलों का निर्माण किया तथा स्वर्ण मंदिर के लिए जगह का चुनाव किया आपने 95 वर्ष तक गुरुगद्दी संभाली और मृत्यु से पूर्व अपने दामाद भाई जेठा को अपना उत्तराधिकारी बनाया जिन्हें आगे चलकर गुरु रामदास के नाम से पुकारा गया।

गुरु रामदास ने वर्ष 1574 से 1581 तक गुरुगद्दी संभाली तथा गुरु अमरदास के पुत्रों के विरोध से बचने के लिए आपने गुरु का चाक नामक स्थान को अपनी कर्मभूमि बनाई। आपने मंजियों की नियुक्ति को और अधिक व्यवस्थित किया तथा सिख धर्म के प्रसार के लिए आर्थिक कोष की व्यवस्था की। आपके 638वाणी गुरुग्रथ साहब में संकलित है तथा आप भारतीय शास्त्रीय संगीत व राग-रागिनियों के ज्ञान के लिए प्रख्यात थे। आपने अपनी वाणी में यही कहा कि 'हे मानव! अहंकार रूपी विष तुझे मार डालेगा। तू अपनी काया के स्वर्णिम रंग को स्वार्थ के कारण धूमिल कर रहा है।' आपने आनंद कारज के लिए निर्मित वाणियों में सुखी गृहस्थी के उपायों को संकलित किया तथा पति-पत्नी के स्वस्थ संपर्क आदि कई विषयों पर महत्वपूर्ण मंत्र दिए। गुरु रामदास ने मसंद व्यवस्था आरंभ की जिसमें गुरु से दूर रहने वाले सिख नेता आपस में संपर्क स्थापित करते हुए मंदिर निर्माण के लिए आर्थिक सहायता इकट्ठा करते।

गुरु रामदास ने अपने तृतीय व कनिष्ठ पुत्र **गुरु अर्जुन** को अपना उत्तराधिकारी बनाया तथा यहाँ से आगे चलकर सभी सिख गुरु वंश परंपरागत रूप में चुने गए। गुरु अर्जुन को अपने ज्येष्ठ भ्राता

प्रीतिचंद का विरोध सहना पड़ा और वे प्राणों की बलि देने वाले प्रथम सिख गुरु सिद्ध हुए गुरु अर्जुन ने आदिग्रंथ के प्रथम संकलन को औपचारिक रूप में व्यवसिथित किया जो आगे चलकर गुरुग्रंथ साहब के रूप में प्रतिष्ठित हुआ आपने बड़ी मात्रा में सिख साहित्य की रचना की जो सुखमनि साहब के नाम से प्रसिद्ध है। आपने कई निर्माण कार्यों को पूरा किया जिनमें सेतोखसर और गंगसर, तरनतारन नगर की स्थापना आदि प्रमुख हैं। वे सिख परिवार में जन्म लेने वाले प्रथम गुरु है क्योंकि उनके पूर्व के चारों गुरुओं ने स्वयं को हिंदू धर्म से सिख धर्म में परिवर्तित किया था।

आपने दरबार साहब के निर्माण कार्य को सम्पन्न किया और आदि ग्रंथ को हरिमंदिर में प्रतिष्ठित किया आपने गुरु रामदास द्वारा आरंभ की गई, मसंद व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ किया और सिखों से गुजारिश की कि वे अपनी आय का दसवाँ भाग दान करें जिसे सिख संस्थान को विकसित करने के लिए खर्च किया जाए। इसे दसवंद कहा जाता जिसे गुरुद्वारों के निर्माण, लंगरों की व्यवस्था आदि में खर्च किया जाता। आप एक प्रसिद्ध व दक्ष कवि थे जिन्होंने करीब 2218वाणी रचे जिनको आदिग्रंथ में सम्मिलित किया गया। आपकी भाषा पर ब्रजभाषा और संस्कृत का प्रभाव भी देखा जा सकता है। कहा जाता है कि जब आपने आदि ग्रंथ को हरिमंदिर में प्रतिष्ठित किया तब बादशाह अकबर को सूचना मिली की उसमें इस्लाम के विरुद्ध तथ्य हैं। अकबर ने आदिग्रंथ की एक प्रति मँगवाई। गुरु अर्जुन ने एक थाली में इस संदेश के साथ आदिग्रंथ की प्रति भेजी कि इसमें केवल सत्य, शांति और चिंतन है जो संपूर्ण मानवता के लिए उपकारी है। गुरु अर्जुन को मुगल बादशाह जहाँगीर ने कैद कर लिया तथा जबरन इस्लाम कबूल करने के आदेश दिए। गुरु अर्जुन देव के विरोध करने पर उन पर अकथ्य अत्याचार किया गया जिससे उनकी मृत्यु हो गई। आपके बलिदान को शहीदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। गुरु अर्जुन के बलिदान को एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना माना जाता है जिसे घेरकर इतिहासकारों में कई मत-विरोध हैं।

गुरु तेगबहादुर जी

गुरु गोविन्द सिंह जी

गुरु अर्जुन की मृत्यु के पश्चात ग्यारह वर्ष की आयु में **गुरु हरगोविंद** को गुरुगद्दी सौंपी गई। गुरु हरगोविंद को जहाँगीर ने कई सालों तक ग्वालियर के किले में कैद कर रखा क्योंकि आपके पिता पर 2 लाख रुपयों का जो जुर्माना लगाया गया था वह वसूल नहीं हुआ था। काफी वर्षों बाद जब जहाँगीर को लगा कि गुरू हरगोविंद हानिकारक नहीं है तब उन्हें कैद से मुक्त किया गया। कैद से निकलते समय आपने जो चोला पहना था उसमें 52 टाँके लगे थे और आपने किले में कैद किए गए लगभग 52 राजाओं को अपने साथ मुक्त करवाया था। गुरु हरगोविंद ने सर्वप्रथम सिख संप्रदाय में सैन्य निर्माण आरंभ किया ताकि सिख संप्रदाय को आक्रमणों से बचाया जा सके। आपने हरमंदिर के सामने अकाल तख्त की स्थापना की जो आज तक खालसा समुदाय के लिए सर्वोपरि श्रद्धा का स्थान माना जाता है आपने दो तलवार रखने की प्रथा आरंभ की जो आध्यात्मिक शक्ति और भौतिक शक्ति का प्रतीक है जिसे क्रमश: पीरी और मीरी कहा जाता है। आप अपने पिता के निर्देशों का पालन करते हुए अपने आसपास सदा सिख सैनिकों की सेना रखते थे। आपके लिए 52 संख्या का बड़ा महत्व था। इसलिए आप अपने आसपास 52 सैनिकों की टुकड़ी तैनात रखते थे।

आपने सिख संप्रदाय को जुझारू बनने की प्रेरणा दी और उस समय सेना की संख्या बढ़कर तीन हजार तक पहुँच गई जिसमें घुड़सवारों की भी एक बड़ी संख्या शामिल थी। आपने बादशाह शाहजहाँ की सेना से चार युद्ध किए और इस्लाम के आक्रमण का कड़ा मुकाबला किया। गुरु हरगोविंद ने मुख्यत: तीन प्रसिद्ध युद्ध किए जो रोहिल्ला, करतारपुर और अमृतसर के युद्ध के नाम से जाने जाते हैं। शाहजहाँ ने सिख संप्रदाय को कमजोर करने के लिए हरगोविंद के बड़े पौत्र धीरमल को सिख गुरु के रूप में प्रतिष्ठित किया जो मुगल राज्य के पक्ष में अपनी मत प्रचारित करता था। पर गुरु हरगोविंद ने मृत्यु से पूर्व धीरमल को पूरी तरह से खारिज करते हुए अपने पौत्र **गुरु हरराय** को सातवाँ गुरु बनाया।

गुरु हरराय ने दारा शिकोह के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाए हुए थे। पर दारा को मौत के घाट उतारने के बाद औरंगजेब ने गुरु हरराय से प्रश्न किया कि क्यों उन्होंने दारा की मदद की जिनके पूर्वजों ने आपके पूर्वज की हत्या की थी ? तब गुरु हरराय ने उत्तर दिया था कि यदि कोई व्यक्ति एक हाथ से फूलतोड़ता है और दूसरे हाथ से उसे दे देता है तो उसके दोनों हाथों में ही फूल की सुगंध फैल जाती है। आपने सिखों में सबद कीर्तन, अखंड कीर्तन, जोतियाँ दी कीर्तन की प्रथा आरंभ की जिसमें सिख धर्म गुरुओं की वाणी को गाया जाता था। गुरु हरराय को धीरमल द्वारा चलाए गए उस दूसरे सिख मत के विरोध को सहना पड़ा और इन दो संप्रदायों में विभक्त होने वाले सिख समुदाय को एक बनाए रखने की चुनौती को स्वीकार करना पड़ा। आपने भाई जोध, भई गोंडा, भाई नत्था, भाई फेरू, भगत भगवान, भाई भगत आदि को मंजियों के नेतृत्व का भार संभालने का निर्देश दिया जिससे सिख समुदाय व उसकी आय को टुकड़ों में बँटने से बचाया जा सके। आपने अपने पाँच वर्षीय पुत्र **गुरु हरकिशन** को गुरुगद्दी सौंप दी।

गुरु हरकिशन को बाल गुरु कहा जाता है जो पाँच वर्ष की आयु में गुरु बने और माता की चपेट में आकर आठ वर्ष से पहले ही चल बसे। आपने मृत्यु शय्या पर बाबा बकाले का उच्चारण किया था जिसे सिखों ने अपने अगले गुरु के स्थान के रूप में मानते हुए आपके चचेरे दादा **गुरु तेग बहादुर** को आपका उत्तराधिकारी बनाया।

गुरु तेगबहादुर को ढूँढने का श्रेय बाबा मख्खन शाह अबाना को जाता है गुरु तेगबहादुर ने 116सबद, 15 राग और 782 वाणियों की रचना की। आपने ईश्वर की प्रकृति, मानव शरीर, हृदय, दुख, सम्मान, सेवा, त्याग, मृत्यु आदि से सम्बन्धित श्लोक लिखे। 'जो नर दुख में दुख नहीं माने, सुख स्नेह पर जो कोई कंचन माटी... जैसी वाणियों में आपने नश्वर सम्पत्ति के प्रति मनुष्य के

लोभ के परिणाम को दर्शाया है। आपने ढाका से लेकर असम, बिलासपुर से लेकर कश्मीर तक देश के विभिन्न क्षेत्रों में भ्रमण करते हुए गुरु नानक जी के उपदेशों का प्रचार किया। आपने बिलासपुर की रानी चंपा द्वारा दी गई भूमि पर आनंदपुर साहब की स्थापना की। 24 नवंबर 1675 को लाल किले के पास गुरु तेगबहादुर का इस्लाम न कबूल करने, कश्मीरी पंडितों और गैर मुसलमानों को बचाने के जुर्म में बड़ी नृशंसता के साथ औरंगज़ेब के आदेश पर सरेआम सर कलम कर दिया गया। आपको पिंजरे में कैद कर आपकी आँखों के सामने आपके तीन साथियों भाई मतिदास के टुकड़े भाई दयाल दास को खौलते हुए पानी में फेंककर और भाई सती दास को जिंदा जलाकर इस्लाम न कबूल करने पर मौत के घाट उतारा गया। गुरु तेगबहादुर का बलिदान उनके साहस और दृढ़ता का प्रतीक था। चाँदनी चौक में सीसगंज साहिब गुरुद्वारे का निर्माण गुरु तेगबहादुर के हत्या स्थल पर किया गया। गुरु तेगबहादुर जबरन धर्म परिवर्तन, मुसलमानों के नृशंस अत्याचार के विरुद्ध बहादुरी से लड़ने के लिए युगों तक स्मरण किए जाएँगे।

गुरु तेगबहादुर के पुत्र **गुरु गोविंद सिंह** दसवें गुरु के रूप में उनके उत्तराधिकारी बने। आप आध्यात्मिक नेता होने के साथ-साथ योद्धा, कवि और दार्शनिक थे जिन्होंने अपने चार पुत्रों में से दो को युद्ध में और दो को मुगलों द्वारा मौत के घाट उतारने पर भी विचलित नहीं हुए। आपने बैसाखी के उत्सव के दौरान कठिन परीक्षा लेते हुए 'पंज प्यारे को संगठित कर खालसा का निर्माण किया और उन्हें सिंह की उपाधि दी आपने केश, कृपाण, कड़ा, कंघा और कच्छा के पाँच 'क' का प्रचलन खालसा के लिए अनिवार्य माना। आपने अनुशासन के कड़े नियम खालसा योद्धाओं के लिए बनाए जिसमें तंबाकू सेवन की मनाही, हलाल माँस न खाना, गद्दारी और विश्वासघात की प्रवृत्ति से दूर रहने के नियम बनाए। आपने अन्य जातियों से भी पुरुषों और स्त्रियों को खालसा के रूप में नियुक्त करते हुए लिंग, जाति, वर्ण, वर्ग के बंधनों को तोड़ा।

आपने औरंगज़ेब के शोषण व अनाचारों के विरुद्ध खालसा को संगठित किया औरंगजेब द्वारा लागू किए गए। जाजिया कर, गैर मुस्लिम तीर्थ यात्रियों पर लगाए गए कर, भड्डर कर आदि का कड़ा विरोध किया। आपने मसंद व्यवस्था को पूरी तरह से खत्म कर दिया क्योंकि उसमें भ्रष्टाचार के बीज पनप चुके थे। परंतु आपके समय से ही खालसा और नानक पंथियों के रूप में दो भाग सिखों में विकसित होने लगा। आपके द्वारा रचित दसम ग्रंथ में खालसा के लिए दैनिक जीवन में अपनाए जाने वाले कर्तव्यों से लेकर हिंदू पुराणों, महाभारत की कथाओं और मुगल बादशाहों के खतों का भी संकलन है। आपने अपने जीवनकाल में बड़ी बहादुरी से 13 युद्ध लड़े यथा भगनानी, नदौन, गुलेर, आनंदपुर के दो युद्ध, निर्मोहगढ़, चमकौर के दो युद्ध, मुक्तसार, सरसा आदि। वजीर खान द्वारा भेजे गए अफगान-जमशेद खान ने नांदेड के पास गुरु गोविंद सिंह की सेना में घुसकर गुरु की छावनी में प्रवेश कर उन पर प्राणघाती हमला किया। गुरु गोविंद सिंह ने उसे मार गिराया पर थोड़े ही दिनों में हृदय के नीचे लगी उस चोट ने उनके प्राण ले लिए। गुरु गोविंद सिंह के साथ ही दस सिख गुरुओं की परंपरा समाप्त हुई और आगे चलकर आदि ग्रंथ के द्वितीय संकलन के रूप में गुरुग्रंथ साहब की ही हरिमंदिर में प्रतिष्ठित हुई। गुरुमुखी लिपि में विभिन्न भाषाओं जैसे लहंदा, ब्रजभाषा, खड़ी बोली, संस्कृत, सिंधी, फारसी में रचे गए गुरु ग्रंथ साहब में 1,430 अंग, 6,000 सबद संकलित हैं जिन्हें उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में गाया जाता है। गुरु ग्रंथ साहब में ईश्वरीय न्याय पर आधारित

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी

शोषण रहित समाज गठन की संकल्पना प्रस्तुत करते हुए विश्व बंधुत्व के तत्वों को प्रतिष्ठित किया गया। निष्कर्षस्वरूप में कहा जा सकता है कि दस सिख गुरुओं का जीवन-संघर्ष, कर्मनिष्ठा, ज्ञान, आत्म-त्याग, अदम्य साहस और सत्य के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने सिख धर्म को मानवीय मूल्यों को जीवित रखने व न्याय-रक्षार्थ प्राणों की परवाह न करने के श्रेष्ठतम व उच्चतम मानदंड का पुख्ता आधार प्रदान किया। इन गुरुओं की परंपरा को ऐतिहासिक, सांस्कृतिक व सामाजिक दृष्टि से अध्ययन का विषय बनाना चाहिए। प्रख्यात शिक्षाविद् डॉ. अमरसिंह वधान के शब्दों में- गुरुमुख सामुहिक मोक्ष या मानवीय अस्तित्व को श्रेष्ठतर बनाने में विश्वास रखता है। सिक्ख गुरुओं ने एक ऐसा समाज या संस्था बनाई, जो गुरु नानक से गुरु गोविंदसिंह तक लगभग 200 वर्षों तक निरंतर प्रशिक्षण पथ-प्रदर्शन तथा निरीक्षण में पनपती रही और अंततः खालसा कहलाई। खालसा संगठन ही गुरुमत तथा गुरुदर्शन की पराकाष्ठा है।'

- 2-ए, उत्तरपल्ली, सोदपुर, कोलकाता-700110
मो-09433675671

■

आलेख

श्री गुरुग्रंथ साहिब में रागमाला: भारतीय परम्परा की अनमोल विरासत

नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

संगीत ध्वनि का ऐसा रागात्मक रुपांतरण है जिसके कारण मनुष्य की पहचान बनती है। यह केवल मनुष्य की निधि है पक्षियों के कलरव में संगीत है लेकिन ध्वनि में बँधते हुए भी वह केवल कलरव कहलाता है। पक्षी इस कलरव को परिभाषित नहीं कर सकते। जबकि मनुष्य अपनी ध्वनि के ऐसे रुपांतरण को परिभाषित कर सकता है जिसकी परिणति सधे स्वर व ताल में होती है। स्वर और ताल का यह संविलियन मनुष्य को एक ऐसे आनंद से भर देता है जिसे राग कहते हैं। यह अनुभूति भी है और अभिव्यक्ति भी।

राग भारतीय मन का स्वभाव है तथा रागात्मकता एक संस्कार के रूप में हमारे मनों में बसती है।

राग के जन्म को लेकर अनेक मान्यताएं हैं। यह कहा जाता है कि सृष्टि के सृजन के पूर्व अंतरिक्ष में स्वर चारों ओर व्याप्त थे तथा सर्जक ब्रह्मा, विष्णु पालक और संहारक शिव ये तीनों संगीत प्रेमी तथा संगीतकार थे। ब्रह्मा द्वारा उत्पन्न संगीत को शिव ने रूप दिया। यह भी कहा जाता है कि माता पार्वती की भुजाओं और कलाईयों में पड़ी चूड़ियों की झंकार से संगीत उत्पन्न हुआ। यह भी कहा जाता है कि संगीत ब्रह्मा तथा माता सरस्वती की देन है।

यह मान्यता है कि भगवान शंकर ने पाँच रागों की रचना की तथा छठवें राग कौशिक का पार्वती ने सृजन किया। शिव ने पूर्व की ओर मुख कर भैरव, पश्चिम की ओर मुख कर हिण्डोल, उत्तर की ओर मुख कर मेघ, दक्षिण की ओर मुख कर दीपक तथा आकाश की ओर मुख कर श्री राग का सृजन किया ब्रह्मा ने 30 रागिनियों का निर्माण किया।

ईसा से 400 वर्ष पूर्व भरत ने अपने 'नाट्यशास्त्र' में संगीत का विशद विवेचन किया। रागमाला अंकनों के प्रख्यात अध्येता क्लास एबलिंग का मानना है कि नाट्यशास्त्र पाँच भरतों का कार्य है। भरत नामक कोई एक व्यक्ति नहीं हुआ। ये पाँच भरत हैं- दत्तिल, नन्दी, कोहिल, भरत और मतंग तथा इनका काल 200 से 500 वर्ष ईसा पूर्व का है।

भरत के 'नाट्यशास्त्र' में राग-रागिनियों का उल्लेख नहीं है लेकिन श्रुतियों के स्वरों का उल्लेख है। राग शब्द की उत्पत्ति दत्तिल या नारद द्वारा 2री से 8वीं सदी में रचित रागसागर में परोक्ष रूप से मिल जाती है। रागों के वर्गीकरण का प्रथम उल्लेख नारद के संगीत मकरंद' में मिलता है, जिसमें प्रत्येक राग परिवार में छ: रागों का उल्लेख है। मतंग के 'बृहद्देशी में राग शब्द का प्रयोग हुआ है तथा इस ग्रंथ में रागों के रसों के विषय में चर्चा की गई है। इसका रचनाकाल 4थी से 7वीं सदी के बीच का है। रागों के प्रथम गायक 84 वज्रायण सिद्ध भी माने जाते हैं। इनमें पहला सरहपा था। ये सिद्ध रागों के अंतर्गत पद्य रचना करते थे, इनका समय 7वीं सदी का था।

'राग' रंज धातु से बना है। रंज धातु के दो अर्थ हैं, रंग देना तथा प्रसन्न करना। राग वह है जो चित्त को अपने भाव से पूरी तरह रंग दे और इस रंगने की परिणति प्रसन्नता में, आनन्द में हो। राग की परिभाषा यही है 'योगम ध्वनि विशेषस्तु स्वर्ण वर्ण विभूषिता। रंजको जनचित्तानाम सरागयतथतो उदयि। संस्कृत शब्द राग ग्रीक, पर्शियन, ख्वारेज़मियन जैसी अनेक भाषाओं में भी पाया जाता है। वहाँ इसे रक्स्ट, रंग व रक्त आदि नामों से पुकारा जाता है।

प्रख्यात संस्कृविद् मोनियर विलियम्स के अनुसार राग का अर्थ रंगने से है। इसका अर्थ उल्लास के अनुभव से भी है तथा इसका प्रयोग संगीत में विशेष रूप से होता है। इसका उल्लेख भगवत गीता में भी हुआ है तथा मैत्री उपनिषद् के श्लोक 3.5 तथा मुण्डकोपनिषद् के श्लोक 2.2.9 में इसका उल्लेख है। मुण्डकोपनिषद् में इसे आत्मा के सम्बन्ध में वर्णन करते हुए, आत्मब्रह्म तथा प्रकृति के संदर्भ में प्रयुक्त किया गया है तथा यह कहा गया है कि आत्मा का कोई रंग नहीं होता मैत्री उपनिषद् में इसका प्रयोग आंतरिक गुण तथा मानसिक अवस्था के संदर्भ में किया गया है। इस शब्द का प्रयोग बुद्ध धर्म में भी है जहाँ यह आनंद के अनुभव की इच्छा के संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है।

मध्यकाल के प्रख्यात संगीत मनीषी तथा 'संगीत दर्पण' के रचनाकार पंडित दामोदर के अनुसार ऐसा संयोजित स्वर समूह जो सुनने में हृदय पर मधुर प्रभाव छोड़ता हो, वह राग कहलाता है। मतंग ने भी राग को रंजक अर्थात मन को आनंद देने वाला कहा है। यह मन का रंग अर्थात् मनोभाव है। राग ध्वनि में निबद्ध एक चिंतन है।

छ: प्रमुख राग हैं, भैरव, मालकौंस, हिण्डोल, दीपक, श्री व मेघ। ये प्राय: राग-क्रम में स्वीकृत हैं। किंतु रागिनियों की संख्या एवं नाम में क्षेत्रीय प्रभाव के कारण अंतर स्पष्ट होता है। इनमें से भैरवी, श्री और मालकौंस सुबह, शाम या तीसरे पहर गाए जाते हैं। शेष तीन, तीन ऋतुओं के राग हैं जैसे दीपक गर्मी का, मेघ बरसात का तथा हिण्डोल सर्दियों का। अब दीपक राग नहीं गाया जाता यह सम्भवत: तानसेन के बाद समाप्त हो गया।

राग रागिनियों के इस क्रम में क्रांतिकारी मौलिक परिवर्तन सिक्ख धर्म के प्रवर्तक गुरु नानकदेव के समय में हुआ जिसकी निरंतरता आगे भी जारी

रही। गुरुग्रंथ साहिब का सम्पादन ईस्वी सन् 1604 में गुरु अर्जुनदेवजी ने किया उन्होंने सिक्ख सम्प्रदाय के वेदव्यास कहे जाने वाले श्री गुरुदासजी को अपने पास बैठाकर श्री 'गुरुग्रंथ साहिब लिखवाया। यह लेखन 30 अगस्त 1604 को पूर्ण हुआ तथा 1 सितम्बर 1604 को श्री गुरुग्रंथ साहिबजी का पहला प्रकाश श्री हरमिंदर साहिब अमृतसर में किया गया तथा बाबा बुड्ढाजी को पहले ग्रंथी के रूप में नियुक्त किया गया जिन्होंने अपने 152 वर्ष के आयुकाल में सिक्ख सम्प्रदाय के छः गुरु साहिबान को गुरु गददी पर बैठाकर उनका तिलक किया था।

विद्वानों का मानना है कि आदि ग्रंथ की तरह कोई संग्रह संभवतः गुरु नानकदेवजी के समय से ही तैयार किया जाने लगा था तथा गुरु अमरदास के पुत्र के यहाँ भी प्रथम चार गुरुओं के पत्रादि सुरक्षित थे। यह समस्त सामग्री भाई गुरुदास के द्वारा, पाँचवे गुरु के निर्देशानुसार लिपिबद्ध की गई तथा गुरु गोविंद सिंहजी ने गुरुग्रंथ साहिब को वह स्वरूप दिया जो आज वर्तमान है।

गुरुग्रंथ साहिब में हमें राग-रागिनियों का विवरण मिलता है। वास्तव में गुरु नानकदेवजी ने सन् 1469 से 1539 तक उन धार्मिक मूल्यों का प्रचार किया जो उनके सिद्धांतों के अनुकूल थे तथा भक्ति लहर के तहत उन्होंने भक्ति की एक नई प्रणाली स्थापित की जिसे गुरमत संगीत कहा जाता है। इसका विकास गुरु नानकदेवजी की रचना अनुकूल निश्चित किए रागों से होता है। इस संगीत में देशी एवं मार्गी संगीत का मेल है तथा उनका विशेष विभाजन किया गया है। इस संगीत के विकास में एक रबाबी भाई मरदाना ने गुरु नानकजी को बहुत सहयोग दिया। गुरु नानकदेवजी ने भक्त मरदाना को साथ लेकर भिन्न-भिन्न स्थानों पर चार उदासी की तथा रब्बी वाणी के कीर्तन का आरंभ निश्चित संगीत प्रणाली के तहत किया जो गायन शैली, रहाओ, अंक तथा घर जैसे संगीत संकेतों की धारणा है। गुरु नानकदेवजी के बाद के सभी गुरु साहिबान ने इसके विधिपूर्वक प्रयोग को अनिवार्य कर दिया तथा यह सिक्खों की कीर्तन प्रथा के रूप में विकसित हुआ।

गुरमत संगीत के तहत सिक्ख गुरुओं ने राग के महत्व के सम्बन्ध में भी अपने कथन कहे। उदाहरणार्थ-

राग नादि मन दूजे भाई।
अंतर कपट महा दुरव पाई।।

(श्री गुरुग्रंथ साहिब, प्रभाती, महला 1, पृ. 1342)

धन्न सु राग सुरंगड़े।
आलापत सभ तिरव जाए।।

(वही, वार, रामकली, महला 5, पृ. 958)

गुरु अर्जुनदेवजी ने रागों के सम्बन्ध में कहा कि राग की प्रकृति, रस तथा धुन की रचना इस तरह होनी चाहिए कि उससे शब्द का आंतरिक भाव उजागर हो जाए-

ओंकार एक धुनि एकै एकै राग अलापे।
ऐका देसी ऐक दिरवावे ऐको रहिआ बियापे।।

(वही, रामकली, महला 5)

गुरमत संगीत की यह विशेषता है कि उसमें जटिलता नहीं है। सहज वाणी में यह राग सुनाई देते हैं। इनमें शब्द प्रमुख है तथा भाव की अभिव्यक्ति के लिए समूह वाणी को रागों के साथ संकलित कर उसे मौलिक रूप से संगीत में निबद्ध किया गया है इसलिए राग पहले प्रगट होता है। यह राग कलात्मक अहंकार से चूँकि मुक्त होता है इसलिए इसमें शब्द की शुद्ध अभिव्यक्ति होती है। गुरुग्रंथ साहिब की वाणी है-

इकि गावत रहे मनि सादु न पाई।
हऊमै विचि गावहि बिरथा जाई।। (वही)

सिक्ख संगीत के महान विशेषज्ञ उस्ताद प्यारेसिंह के शिष्य भाई बलजीत सिंह नामधारी ने यह व्यक्त किया है कि गुरुग्रंथ साहिब में 31 राग हैं तथा 31 मिश्रण राग हैं। उन्होंने उन रागों की भी पहचान की है जो इन सूचियों में हैं किन्तु जो अब विलुप्त हो गए हैं तथा जिन्हें गाया नहीं जाता जैसे राग सुहिललित। इसी प्रकार राग दीपक भी अब गाया नहीं जाता। यह कहा जाता है कि राग दीपक एक अत्यंत शक्तिशाली राग है तथा एक बार इसके साकार हो जाने के बाद इसे नियंत्रित करना चूँकि बहुत कठिन होता है जो किसी उस्ताद कलाकार के द्वारा किया जाना ही संभव होता है इसलिए तानसेन के समय के बाद नहीं गाया गया। कुछ विद्वान यह मानते हैं कि उन्नीसवीं सदी से इसका उस्तादों के द्वारा सिखाया जाना बंद कर दिया गया। संगीत के विशेषज्ञों का यह कहना है कि इस प्रकार के विलुप्त रागों के सम्बन्ध में उस्तादों के द्वारा ही निर्णय अपने समय में लिए गए होंगे।

उदाहरणार्थ गुरुग्रंथ साहिब में भैरव राग प्रथम राग है जिसकी पाँच रागिनियाँ हैं इनमें से केवल एक रागिनी भैरवी को आज गाया जाता है। यद्यपि बिलावली व बंगाली को भी गाया जाता है लेकिन उनका गायन बहुत कम होता है। राग भैरव के आठ पुत्रों में से आज केवल पंचम, देसाख व ललित की जानकारी है।

सिक्ख विद्वानों का मानना है कि आज भाई समुंदसिंह, भाई अवतारसिंह तथा भाई बक्शीशसिंह जैसे कीर्तनिए नहीं हैं जो सबद को निश्चित रागों में गाया करते थे। अब बहुत सीमित संख्या में ऐसे भाई शेष हैं जो इस प्रकार का कीर्तन करते हैं। इनमें भाई बलजीतसिंह का नाम प्रमुख है वे गुरु संगीत अकादमी नामक संस्था के माध्यम से गुरु संगीत की परम्परा को जहाँ एक ओर निरंतर रखने का प्रयास कर रहे हैं वहीं दूसरी ओर वे चाहते हैं कि यह महान संगीत गुरुद्वारों से निकलकर पूरे लोक के समक्ष प्रस्तुत हो ताकि इस महान सिक्ख संगीत से जगत परिचित हो सके।

गुरुग्रंथ साहिब के अंत में राग और रागिनियों की सूची दी गई है

यद्यपि यह सूची गुरुग्रंथ साहिब में संदर्भित रागों की पूर्ण सूची नहीं है। उल्लेखनीय है कि रागमाला परम्परा में मुष्यत: छ: प्रमुख राग होते हैं तथा प्रत्येक की पाँच पत्नियाँ होती हैं जिन्हें रागिनी कहा जाता है तथा प्रत्येक मुख्य राग के आठ पुत्र होते हैं। रागमाला परम्परा में रागपुत्रियों की भी व्यवस्था है। यद्यपि इस अवधारणा के अनुसार गुरुग्रंथ साहिब में रागमाला क्रम नहीं है किन्तु रागमाला की परम्परा के परिप्रेक्ष्य में ही इसमें रागों की अवधारणा की गई है।

श्री गुरुग्रथ साहिब में 31 राग मिलते हैं जो मुख्य रागों के रूप में ततकरे में अंकित किए गए हैं। इन रागों को शुद्ध, छायालग और संकीर्ण रागों के अंतर्गत विभाजित किया गया है।

शुद्ध राग वे हैं जिनमें किसी अन्य राग का प्रभाव नहीं है तथा जिनका अपना स्वतंत्र व स्पष्ट स्वरूप है। श्री गुरुग्रंथ साहिब में ततकरे के अंतर्गत 31 प्रमुख शुद्ध राग आते हैं जैसे- सिरी, माझ, गउड़ी, आसा, गुजरी, बिहागड़ा, वडहंस, सोरठि, धनाश्री, तिलंग, सूही, बिलाबल, रामकली, मारु, तुखारी, भैरव, बसन्त, सारंग, मलार तथा प्रभासी।

छायालग राग वे कहे जाते हैं जिनमें दो भिन्न रागों के स्वर मिले हुए होते हैं अर्थात् किसी एक राग की प्रधान छाया इन पर होती है। जिस प्रधान राग की छाया होती है वही मुख्य राग है तथा उसी के नाम से उन्हें जाना जाता है। जैसे गउड़ी-गुआरेरी, गउड़ी-चेती, आसा-काफी , सूही-काफी, बसंत-हिन्डोल और प्रभाती-दखनी आदि।

संकीर्ण राग वे हैं जिनमें किसी मुख्य राग के अंतर्गत दो या दो से अधिक राग मिश्रित होते हैं। गुरमत संगीत में राग गउड़ी पूर्वी दीपकी संकीर्ण राग है।

गुरमत संगीत में उक्त तीन प्रकार के रागों के अलावा मुख्य रागों के अंतर्गत रागों के अन्य स्वरूप भी मिलते हैं जैसे गउड़ी-दखनी, वहडंस-दखनी, बिलाबल- दखनी, मारु-दखनी, रामकली - दखनी तथा प्रभाती-दखनी।

गुरु नानकदेवजी ने दक्षिण भारत का भी भ्रमण किया था इसलिए अनेक ऐसे दक्षिणी राग इस संगीत पद्धति में हैं जो उत्तर भारतीय संगीत में नहीं मिलते। गुरुग्रंथ साहिब में सनातनी काव्य रूपों के लिए शुद्ध रागों का भी प्रयोग किया गया है अष्टपदी में प्रयुक्त करने के लिए श्री, माझ, गउड़ी, गूजरी, रामकली व प्रभाती रागों को लिया गया है। गुरमत संगीत में लोक रागों को भी प्रयुक्त किया गया है जैसे माझ, आसा, आसा-काफी, बिहागड़ा, तिलंग, सूही, मारु व तुखारी। इनके अलावा ऋतुओं से सम्बन्धित राग भी इस संगीत में हैं जैसे राग बसंत तथा राग मल्हार। गुरुग्रंथ साहिब में समाज के विभिन्न वर्गों के प्रिय राग भी हैं जैसे सिद्धों और जोगियों का प्रमुख राग, रामकली प्रयुक्त किया गया है।

विभिन्न विद्वानों ने गुरुग्रंथ साहिब में समाविष्ट रागों के सम्बन्ध में विस्तार से विचार किया है। डॉ. चरनसिंह ने यह अभिमत व्यक्त किया है कि गुरमत का संगीत समस्त प्रचलित संगीत प्रणालियों से भिन्न है तथा इस संगीत के आदि प्रतिष्ठाता गुरु नानकदेव है व गुरुग्रंथ साहिब के 31 रागों में से 19 राग पहले से प्रयुक्त है।

गुरुबाणी में जपुजी साहिब के अलावा शास्त्रीय रागों व लोक रागों को समन्वित किया गया है। गुरुग्रंथ साहिब में मुख्य 31 रागों की तरतीब के क्रम में सिरी रागु सबसे पहले है। इसके पश्चात माझ, गउड़ी, आसा, गूजरी, देवगंधारी, बिहागड़ा, वडहंसु, सोरई, धनासरी, जैतसरी, टोडी, बैराड़ी, तिलंग, सूही, बिलावल, गौड़, रामकली, नाराइन, माली गउड़ा, मारु, तुखारी, केदारा, भैरव, बसंत, सारंग, मलार, कानड़ा, कलिआण, प्रभाती तथा जैजैवंती आते हैं।

विभिन्न गुरु साहिबान ने विभिन्न रागों में अष्टपदियों की भी रचना की। श्री गुरु नानकदेवजी, श्री गुरु अमरदासजी, श्री गुरु रामदासजी और श्री गुरु अर्जुनदेवजी के द्वारा रचित 'सुखमनी साहिब' जैसी श्रेष्ठ काव्यमयी तथा संगीतमयी रचना में 24 अष्टपदियाँ हैं जिन्हें गउड़ी राग के अंतर्गत रखा गया है। प्रथम गुरु श्री गुरु नानकदेवजी ने 102 अष्टपदियों को भी विभिन्न रागों में पिरोया है।

गुरमत संगीत में वीर गाथाओं को भी रागों में बांधा गया है। इसमें आसा, मल्हार तथा माझा आदि रागों में इन वारों की रचनाएं मिलती हैं। गुरमत संगीत में छंत जो संस्कृत के छंदस शब्द से उदभूत है को भी विभिन्न रागों जैसे राग गउड़ी गउड़ी-पूर्वी, आसा, वडहंस, धनासिरी, बिलाबल-दखनी तथा तुखारी में निबद्ध किया गया है। इस संगीत में अलाहुणी अर्थात् गुणगान भी विभिन्न रागों में बाँधे गए हैं। श्री गुरु नानकदेवजी तथा श्री गुरु अमरदासजी ने यह प्रयोग किया है। राग वडहंस में गुरु नानकदेवजी ने एक अलाहुणी निबद्ध की है। इसके गायन की विशेष परम्परा कीर्तन के रूप में भी मौजूद है। श्री गुरुग्रंथ साहिब में नौ अलाहुणियाँ मिलती हैं जिनमें से पाँच श्री गुरु नानकदेवजी की तथा चार श्री गुरु अमरदासजी की हैं। विद्वानों ने गुरुग्रंथ साहिब में विभिन्न प्रकार से जो विभिन्न राग प्रयुक्त किए गए हैं उनका विस्तार से विवेचन किया है। गुरुबाणी संगीत में आलाप का विधान है। यह संगीत आध्यात्म से पूरित है।

विभिन्न गुरुओं के द्वारा जिन रागों का जितने शबदों में प्रयोग किया गया है इसके सम्बन्ध में भी विद्वानों ने शोध कर इसे स्पष्ट किया है। गुरु नानकदेवजी ने गुरमत संगीत के विकास के लिए करतारपुर को कीर्तन केन्द्र के

रूप में स्थापित किया। गुरुबाणी के गायन के लिए उन्होंने जो राग निर्धारित किए उनके सम्बन्ध में विवाद है। कुछ विद्वान इन्हें 19 मानते हैं, कुछ 26तथा कुछ प्रचलित व अप्रचलित रागों को मिलाकर उनकी संख्या 38मानते हैं। गुरु नानकदेवजी ने कुल 976सबद अंकित किए जिनमें गउड़ी, दक्षिणी, वडहंस, बिलावल दक्षिणी, रामकली दक्षिणी, मारु दक्षिणी तथा प्रभाती दक्षिणी रागों का प्रयोग किया इनके अलावा कुछ ऐसे रागों को भी अपनाया जिनका उल्लेख उत्तर भारतीय संगीत की परम्परा में नहीं मिलता जैसे गौड़ी दीपकी, गौड़ी पूर्वी दीपकी, गौडी गुआरेरी, माझ, सूही, तिलंग, काफी आदि।

श्री गुरु अंगददेवजी ने 62 श्लोकों में अपनी बाणी की रचना की तथा सिरी, आसा, माझ, सोरठ, सूही, रामकली, मारु, सारंग तथा मल्हार रागों में अपनी बाणी को निबद्ध किया कुछ विद्वान मानते हैं कि गुरु अंगददेवजी ने 9 रागों में 63 रचनाएँ निबद्ध की। श्री गुरु अमरदासजी ने 263 रचनाएँ 18रागों में रचीं। ये हैं सिरी, माझ, गउड़ी, आसा, गुजरी, बिहागड़ा, वडहंस, सोरठ, धनासरी, सूही, बिलावल, रामकली, मारु, भैरव, बसंत, सारंग, मल्हार तथा प्रभाती। श्री गुरु रामदासजी ने पहली बार शास्त्रीय गायन शैली पड़ताल का प्रयोग किया तथा 7 रागों में 19 पड़तालों की रचना की। उन्होंने सभी 31 रागों में बाणी की रचना की तथा गुरमत संगीत का केन्द्र हरमिंदर साहब को बनाया। श्री गुरु अर्जुनदेवजी ने गुरुग्रंथ साहिबजी का सम्पादन किया। उन्होंने 44 रागों में बाणी की रचना की। इनमें से 38का विवरण है ये हैं, सिरी, माझ, गउड़ी, गउड़ी पूर्वी, आसा, गुजरी, बिहागड़ा, वडहंस, सोरठ, देवगंधारी, धनासरी, जैतसिरी, तोड़ी, बैराड़ी, तिलंग, सूही, बिलावल, गौड़, रामकली, नट-नारायण, माली गौड़ा, मारु-तुखारी, तुखारी, केदार, भैरव, बसंत, सारंग, मल्हार, कानडा, कल्याण, प्रभाती, गउड़ी-गुआरेरी, गउड़ी-चेती, गउड़ी-बैरागण, गउड़ी-मालवा, गउड़ी-माला, आसा-काफी तथा आसावरी।

उन्होंने कीर्तन परम्परा को एक नया आयाम दिया तथा शास्त्रीय व लोक संगीत के आधार पर रचनाएँ की। उनके समय में गुरमत संगीत का बहुत विकास हुआ।

गुरु तेगबहादुरजी ने 118शबद की रचना 17 रागों में की। उन्होंने जैजैवंती राग की रचना कर उसे गुरमत संगीत में शामिल किया उनके प्रमुख राग हैं गउड़ी, आसा, देवगंधारी, सोरठ, जैजैवंती, तोड़ी व मारु आदि। गुरु गोविन्दसिंहजी ने रामकली, सोरठ, कल्याण, काफी, बिलावल, तिलंग व देवगंधारी जैसे रागों में

अपनी रचनाओं को निबद्ध किया।

इस विवरण से यह स्पष्ट होता है कि गुरुग्रंथ साहिब में रागों का मौलिक रूप से प्रयोग किया गया है तथा गुरु नानकदेवजी के समय से ही यह प्रवृत्ति रही है कि कीर्तन की प्रधानता हो तथा वह ऐसे संगीत से युक्त हो जो व्यक्ति को शांति प्रदान कर सके। गुरु नानकदेवजी ने यह प्रयास किया कि लोक रागों को भी जोड़ा जाए ताकि उस समय का लोक उनकी शिक्षाओं को सहजता से ग्रहण कर सकें। उनका प्रयास था कि सिक्ख धर्म लोकोन्मुखी हो तथा आभिजात्य से परे रहे। वे भारत को जोड़ने वाले महान संत थे। इसलिए उन्होंने दक्षिण भारत के रागों को भी गुरुबाणी में समन्वित किया तथा उनकी यह समन्वय की परम्परा, आगामी गुरुओं के द्वारा इतने प्रभावी ढंग से निभाई गई कि लोक प्रत्येक युग में गुरुबाणी के अलौकिक आध्यात्मिक प्रभाव से प्रेरित होकर अपने कर्म के माध्यम से धार्मिक सहिष्णुता के साथ-साथ शौर्य प्रदर्शन के पृष्ठ भी भारतीय इतिहास में जोड़ता रहा।

श्री गुरुग्रथ साहिब इस दृष्टि से हमारी धार्मिक परम्परा का एकमात्र ऐसा महान ग्रंथ है। जिसमें धर्म की सहिष्णुता, रागात्मकता के माध्यम से अभिव्यक्त होती है।

श्री गुरुग्रंथ साहिब ऐसा इकलौता ग्रंथ है जिसकी बाणी में विभिन्न रागों का सौरभ विद्यमान है तथा यह सौरभ ऐसा है जिसके अनुभव से हमें सदैव सम्पृक्त बने रहना है। श्री गुरुग्रंथ साहिब की बाणी हमारे आध्यात्म और संगीत की वह दुर्लभ समन्वय भूमि है। जिस पर सामाजिक एक्य के वृक्ष निरंतर पल्लवित होते रहे हैं तथा होते रहेंगे।

– 85, इंदिरा गांधी नगर आर.टी.ओ. कार्यालय के पास इंदौर (म.प्र.),
मो. 9425092895

■

आलेख

परंपराशील कावड़ में गुरु नानक देव जी का जीवन दर्शन

डॉ. महेन्द्र भानावत

भारत देश परंपराओं का देश है। यहाँ बहुत सी ऐसी परंपराएं जीवित हैं जिनसे हमारे देश की पहचान बनी हुई है। राजस्थान के मेवाड़ अंचल में कावड़ नामक काष्ठ-शिल्पकला किसी समय लोकानुरंजन के साथ-साथ धार्मिक आस्था का एक सशक्त माध्यम रही जिसके कारण भक्तजन घर बैठे विविध तीर्थों, लोकसज़्मत देवी-देवताओं, आदर्श महापुरूषों एवं भक्तों के दर्शन कर पुण्य अर्जित करता था लेकिन वह कावड़ आज अपने लक्ष्यों में सिमट कर ड्राईंग रूम की शोभा बनती जा रही है।

भारतीय लोककला मंडल के माध्यम से पहली बार काष्ठकला के इस चल मंदिर पर मेरा ध्यान आकृष्ट हुआ। प्रसंग था, बस्सी में आयोजित लोकनाट्य ज़्याल के अध्ययन-सर्वेक्षण का। चित्तौड़ के तुर्रा ज्यालों के उस्ताद चैनराम की ज़्याल मंडली द्वारा रात्रि 10 बजे से सुबह 7 बजे तक भारी सफलता के साथ तुर्रा ज़्याल को न केवल बस्ती के लोगों ने देखा अपितु आसपास के गाँवों के भी बड़ी संख्या में लोग उमड़ पड़े थे।

कलामंडल के संस्थापक देवीलाल सामर और मैंने दूसरा दिन वहाँ के खैरादियों द्वारा निर्मित काष्ठ शिल्पांकन देखने में व्यतीत किया इन शिल्पों में कावड़ और कठपुतली ने हमारा ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया और हम उनके अध्ययन-अनुसंधान में लग गए। यह बात सन् 1960 के मार्च माह की है जब वहाँ भूराजी, नाथूजी, बालूजी, कजोड़जी, भगवानजी, मोहनजी, लखमाजी, छोगाजी और छगनजी जैसे बड़े दक्ष और कलापारखी नामी शिल्पकार थे। इनके द्वारा निर्मित कावड़ें, कठपुतलियाँ, गणगौर, ईसर, खांडे, वेवाण, मोर चोपड़े, पुतलियाँ, मुखौटे एवं गंजफा टिकटियाँ देखने और इनके बारे में ठीक से जानने का मेरा यह प्रथम अवसर था।

यहीं हमने तय किया कि यहाँ से कोई शिल्पकार यदि कलामंडल में सेवा देना चाहे तो हम काष्ठ की इस परंपरा को संरक्षित करते हुए इसका व्यापक फैलाव कर सकेंगे। यह सोच हमने छगनजी से बात कर उनके युवा पुत्र मांगीलाल को कलामंडल में नौकरी देकर सर्वाधिक रूप में कावड़ और कठपुतली का संरक्षण किया और मांगीलाल द्वारा इस काष्ठकला में अनेक प्रयोग किए जो आज भी चलायमान हैं।

लोकानुरंजनकारी एवं लोकधर्मी चित्रांकन से युक्त कावड़ में भगवान राम के जीवन को आदर्श रूप में ग्रामीणजनों में चर्चित करने के लिए कावड़िया भाट गाँव-गाँव, घर-घर जाकर भक्ति-भावना जगाता है। एक फीट की यह कावड़ अपने में आठ-दस कपाटों की रचना है। इसके हर कपाट के दोनों ओर भगवान राम के जन्म से लेकर अयोध्या लौट आने तक के अत्यन्त ही मनोरम एवं चित्ताकर्षक चित्रांकन देखने को मिलते हैं। यही कारण है कि कावड़ को भगवान राम की कावड़ कहते हैं। इसका एक नाम रामजी की पटड़ी भी सुनने में आता है। धीरे-धीरे चित्रांकन में अन्य देव एवं भक्त जुड़ते गए।

कावड़िया भाट कावड़ वाचन के समय भक्तों के सन्मुख बैठकर कावड़ का एक-एक पाट खोलता हुआ हर चित्र को मोरपंख से छुआता है। विशिष्ट गायकी में अर्थ देता है। वाचन पूर्व वह कहता है- यह भगवान रामचन्द्रजी की कावड है सो ध्यान लगाकर सुनें और सभी तीर्थों का फल पावें।

वाचन का कुछ दरसाव इस प्रकार है-

(क) यह राम लछमण की जोड़ी, छण में लंका तोड़ी।

(ख) राजा जनक के स्वयंवर में सब ने जोश आजमाया पर कोई शिव धनुष तोड़ना तो दूर, हिला तक नहीं पाया किन्तु वाह रे राम, दशरथनंदन, जगत के वंदन, तुमने देखते-देखते उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

(ग) सारे राजा हारे, राम बने सब की आँखों के तारे।

(घ) हनुमान ने गजब दिखाई, आग लगा के लंका जलाई।

(च) दस माथा बीस भुजा है रावण की।

(छ) सत मत छोड़ो रे नरां सत छाड्यां पत जाय।

(ज) यह देखो धन्ना भगत की खेती, बोवे तुज़्बा निपजे मोती।

(झ) ये सेन भगतजी नाई, हजामत भगवान की बनाई।

यह कावड़ धर्म करने, भगवान के दर्शन करने और पुण्य कमाने का आदर्श माध्यम रही। घर बैठे मुज़्य-प्रमुख तीर्थों, धार्मिक पुरूषों, लोकभक्तों तथा लोकदेवताओं के दर्शन कर लोग अपना जीवन धन्य करते हैं और भेंट-पूजा के रूप में अपनी-अपनी हैसियत के अनुसार दान-दक्षिणा देते हैं। कोई खेत, कोई कुँआ, कोई ऊँट, गाय, बैलगाड़ी तो कोई पहनने का सरोपाव और पाग-पहरावणी देता है। इससे कावड़िया की घर-गृहस्थी चलती है। पूरी कावड़ वाचन के बाद राम सीता लक्ष्मण के दर्शन कराए जाते हैं।

कावड़ बँचवाने के पीछे कार्य सिद्धि की भावना भी मिलती है। मंगल एवं शुभ घटना पर भी कावड़ बँचवाई जाती है। पुत्र जन्म होने पर, विवाह होने पर, बीमारी तथा प्राकृतिक विपदाओं से मुक्ति पाने पर भी सुख-शांति एवं शुभ-मंगल के लिए कावड़िया को आमंत्रित किया जाता है।

कावड़ की प्रचीनता के सम्बन्ध में कहा जाता है कि उज्जैन के राजा विक्रमादित्य के दरबार में कंक नामक दरबारी कवि था जिसे किसी बड़ी गलती के कारण वहाँ से पलायन करना पड़ा। तब वह उज्जैन से राजस्थान के चित्तौड़ जिले के बस्सी गाँव आया। यहाँ उसने काष्ठ शिल्पी खाती जाति के कलाकारों से हाथ-पाँव विहीन धड़पुतली बनवाई और उसका खेल प्रारम्भ किया बाद में इस परंपरा में जो कठपुतली नचाने वाले हुए वे अपने को कंक के वंशज कंकाली कहने लगे।

कंकाली भाटों के दो परिवारों में एक परिवार ने अलग से अपना अस्तित्व बनाए रखा और उसने कठपुतली की बजाय कावड़ बाँचना प्रारम्भ किया। कालान्तर में कावड़ बाँचने वाले कावड़िया भाट कहलाए और ये अपने को कंकाली नहीं कहकर काली के उपासक कहने लगे।

कावड़ पर मेरी पहली पुस्तक सन् 1976में भारतीय लोककला मण्डल से प्रकाशित हुई। इसके बाद मैं निरन्तर कावड़ पर कुछ और जानकारी के लिए कावड़ वाचकों की तलाश में रहा तो पता चला कि कावड़िया भाटों ने कावड़ बाँचना बंद कर दिया है। उनकी जाति-पंचायत ने कावड़ नहीं बाँचने का निर्णय ले लिया है। ऐसा कावड़ के साथ ही नहीं, अन्य विधाओं के कलाधर्मियों के साथ भी हुआ। इसके पीछे समय के बदलाव एवं विकास की धारा रही। लोक और उनके जाति-संगठन समझने लगे कि यदि किसी जाति या समाज को विकास करना है तो उसे अपने परंपरागत तौरतरीकों और नाच-गान जैसी प्रवृत्तियों से मुक्त होना होगा। इस विचार से मुझे कावड़ को लेकर कुछ प्रयोग करने की प्रेरणा मिली। मुझे लगा कि प्रौढ़ शिक्षा, महिला चेतना, ग्रामीण विकास, अल्प बचत, रोजगार, स्वास्थ्य, पर्यावरण आदि के कोई विषय हों, कावड़ के प्रयोगधर्मी रूपों से आमजन को शिक्षित, प्रशिक्षित एवं चेतनामय बनाया जा सकता है।

सेवानिवृत्ति के बाद भी माँगीलाल मिस्त्री ने कावड़ में सर्वाधिक प्रयोग किए। मिस्त्री ने परंपरागत एक फीट की कावड़ के अलावा छोटी से छोटी माचिस के आकार की कावड़ से लेकर बड़ी से बड़ी साढ़े सात फीट तक की कावड़ बनाई। प्रयोग के रूप में रामजीवन के साथ कृष्णजीवन को भी जोड़ दिया इसके अलावा महात्मा गांधी, आचार्य विनोबा, राणाप्रताप, मीरांबाई, वीर दुर्गादास, देवनारायण, गवरी, वीर तेजाजी, करणीमाता, गणेश, दशामाता, पृथ्वीराज चौहान, मूमल महेन्द्र, ढोला मारू, गणगौर, कल्लाजी राठौड, आचार्य महाप्रज्ञ आदि की करीब सौ से अधिक कावड़े बनाकर इस कला को जीवन्त रखा। इसी क्रम में माँगीलाल मिस्त्री और उनके पुत्र बालकृष्ण बसायती ने गुरु नानक के जीवन चरित्र को दर्शाती सवा फीट लंबी, सवा नौ इंच चौड़ी तथा सवा पाँच इंच मोटाई लिए कावड़ तैयार की। इसमें गुरु नानक देवजी के जीवन प्रसंगों से जुड़े 47 घटना-चित्रों का दरसाव इस प्रकार है-

(1) नानक का आविर्भाव, (2) जन्मपत्री, (3) बाललीला, (4) पंडित को उपदेश, (5) मौलवी से फारसी पठन, (6) उपनयन संस्कार, (7) पशुचारण, (8) सर्प की छाया, (9) सच्चा सौदा, (10) वैद्य से विमर्श, (11) मोदी बनना, (12) विवाह, (13) मरदाना शिष्य, (14) बेई प्रवेश, (15) सच्ची नमाज, (16) उपदेश यात्रा, (17) भाई लालो, (18) सबसे ऊँची जाति, (19) मलक भागा, (20) सज्जन ठग, (21) सूर्यग्रहण पर कुरूक्षेत्र की यात्रा, (22) हरिद्वार भ्रमण, (23) जूठा और पवित्र, (24) वाराणसी में पंडित चतुरदास को उपदेश, (25) गया के ठग पंडित को उपदेश, (26) सालिसराय चौधरी, (27) कामरूप की सुंदरियाँ, (28) बसवा रवे उजड़ जाए, (29) जगन्नाथपुरी गमन, (30) रूहेलखंड जाना, (31) तालवंडी वापसी, (32) कोढ़ी का उद्धार, (33) पीर रमजा गौस, (34) मिया मिट्ठेशाह, (35) दूनीचंद करोड़पति, (36) कोढ़ी राक्षस, (37) राजा शिवनाभ, (38) रीठे मीठे करना, (39) सुमेर पर्वत और सिंध, (40) मक्के का हज, (41) बगदाद यात्रा, (42) बाले कंधारी हंकारी, (43) बाबर का हमला, (44) मेला अचल बटाला, (45) मुलतान के पीर, (46) करतापुर में परचा, (47) ज्योति में ज्योति का सम्मिलन।

मिस्त्री की बनी कावड़ें विदेशों के कई संग्रहालयों की शोभा बनी हुई हैं। उदयपुर में आने वाले पर्यटक भी मिस्त्री की कावड़ कला से प्रभावित होते हैं किन्तु अब कावड़ का वह परंपरागत स्वरूप नहीं रहा। जो कावड़ ग्रामीणजनों में मनबहलाव और धर्म-पुण्य कमाने का कलर टीवी बनी हुई थी वह अब ऊँचे लोगों के ड्रॉइंग रूम में कैद होकर चार चाँद लगा रही है।

यह प्रसन्नता का विषय है कि कावड़ शोधकर्मियों एवं विद्वानों की नजरों में भी महत्वपूर्ण बनी है। उदयपुर के सुखाड़िया विश्वविद्यालय से रामसिंह भाटी ने कावड़ पर पीएचडी की उपाधि के लिए स्तुत्य कार्य किया वहीं मुम्बई की इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफटेक्नोलोजी से नीना सबनानी ने मूल्यवान शोधकार्य किया है। इसके लिए नीना चार-छह बार उदयपुर आई और मेवाड़ के बस्सी तथा मारवाड़ तक के कई गाँवों में घूमकर कावड़ निर्माताओं एवं कावड़ वाचकों को ढूँढ निकाला और एक उत्तम प्रकाशन भी अंग्रेजी में दिया जो प्रामाणिक ग्रंथ के रूप में पहचान बना पाया।

- 352, श्रीकृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर 313001
मो. 9351609040

■

आलेख

संत-सिपाही - गुरु गोविन्द सिंह

लाजपत आहूजा

भारतीय इतिहास के कई ऐसे सुनहरे पृष्ठ हैं जिसकी मिसाल विश्व इतिहास में नहीं मिलती। इन्हीं स्वार्णिम अध्यायों में से एक सिखों के दसवें और अंतिम गुरू, गुरूगोविन्द सिंह और उनका जीवन हैं। अंतिम इसलिए कि उन्होंने स्वयं यह घोषित किया कि आगे से कोई व्यक्ति नहीं बल्कि 'गुरू ग्रंथ ही पंथ का गुरु होगा। अति विवादास्पद और वर्तमान में जेल में बंद कथित बाबा राम-रहीम ने गुरूगोविन्द सिंह जैसी वेशभूषा और यहाँ तक कि बाज कंधे पर बैठाकर प्रदर्शन का जब प्रयास किया तो समूचे पंजाब और पथ में इतना जबरदस्त विरोध हुआ कि उनको माफी माँग कर पीछे हटना पड़ा।

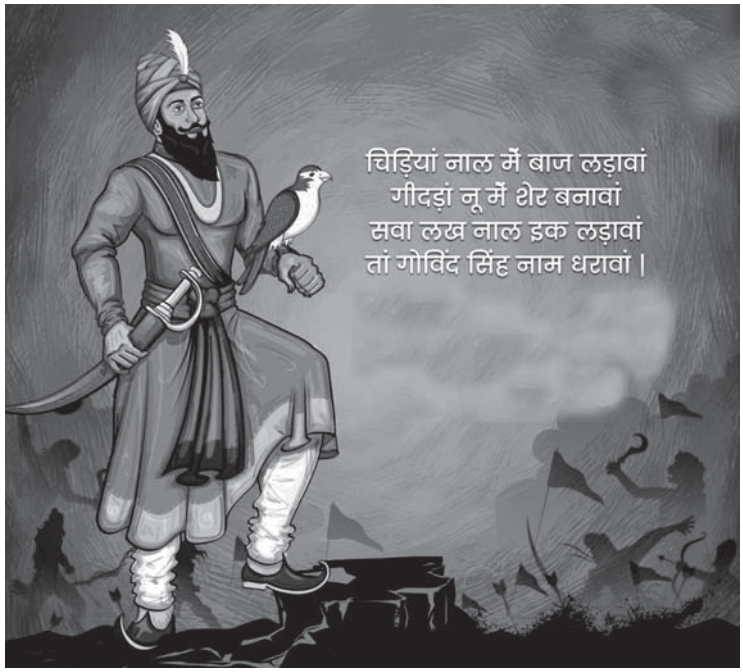

16वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और सत्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में जात-पांत से ऊपर एक समता मूलक समुदाय का नेतृत्व, 'भक्ति और शक्ति, के पुंज, गुरु गोविन्द ने किया। उन्होंने खालसा पंथ की स्थापना 1699 में बैसाखी के दिन कर समूचे पंथ को एक ताकतवर कौम में बदल डाला। वक्त और हालात ने एक आध्यात्मिक नेता को महान योद्धा में बदला। धर्म (जिसमें हिन्दुओं को धर्म परिवर्तन से बचाना भी शामिल हैं) की खातिर उन्होंने मुगलों और उनके साथियों के साथ 14 युद्ध लड़े। इनमें उनके चार कम आयु के पुत्र भी शहीद हुए। दो पुत्रों को जिंदा दीवार में चुनवा दिया गया और दो रणक्षेत्र में नायकों की तरह लड़ कर मृत्यु को प्राप्त हुए। बलिदानी गुरू गोविन्द सिंह को इसलिए 'सर्वस्वदानी, भी कहा जाता है।

वे स्वयं एक श्रेष्ठ कवि, लेखक, मौलिक चिंतक और संस्कृत-पर्शियन सहित कई भाषाओं के ज्ञाता थे। चमकौर की लड़ाई के बाद उनका औरंगजेब को लिखा पत्र विश्व इतिहास की अनूठी घटना है। 'तलवार और कलम, के अद्भुत योद्धा के खत ने क्रूर औरंगजेब को ऐसा आइना दिखाया कि वह हिल उठा। इस पत्र को जफरनामा या फतहनामा के नाम से जाना जाता है। गुरू गोविन्द सिंह द्वारा दी गई शौर्य की जीवनी शक्ति सिखों और पंथ की स्थाई पहचान बन गई।

गुरुओं की बलिदानी परम्परा

पाकिस्तानी लेखक हारून खालिद ने लिखा है सिखों के इतिहास में गुरूनानक और गुरु गोविन्द सिंह सबसे प्रबल व्यक्तित्व है। ये ऐसे इतिहास पुरुष रहे हैं कि गुरूनानक ने जहाँ पंथ की स्थापना की वहीं गुरू गोविन्द सिंह ने मिशन को पूरा किया। यह गुरू गोविन्द सिंह ही थे जिन्होंने पंथ को मंजिल तक पहुँचाया और कौम को वह शक्ल दी जिससे वे देश दुनिया में आज पहचाने जाते हैं। गुरूनानक ने पहले हमलावर मुगल बाबर के कृत्यों की खिलाफत कर इस संघर्ष की बुनियाद रख दी।

खुशवंत सिंह ने 'सिखों के इतिहास में लिखा है कि गुरुनानक ने अपने पुत्रों को तरजीह न देकर गुरु अंगद को अपना उत्तराधिकारी बनाया। वे शारीरिक रूप से स्वस्थता पर बल देने वाले गुरू थे। उनके अनुयायियों के लिए प्रतिदिन सुबह व्यायाम और खेलकूद में भाग लेना अनिवार्य था। हर केन्द्र में कुश्ती के लिए अखाड़ा खोला जाना जरूरी किया गया। इस परम्परा ने आगे आने वाले गुरूओं के लिए ऐसा शारीरिक रूप से सक्षम शिष्यों का बल खड़ा करने में मदद मिली। उन्होंने भी अपने पुत्रों को न चुनते हुए 73 वर्षीय अमरदास को तीसरे गुरु के रूप में चुना। इन्होने गुरु नानक द्वारा शुरू की गई। लंगर परम्परा को संस्थागत रूप दिया। लंगर खाने वालों में 'अकबर' भी शामिल था। कहते हैं उन्होंने कुछ गाँवों का राजस्व भी गुरू की बेटी के नाम किया।

गुरु अमरदास ने भी अपने बेटों को न चुनते हुए अपने दामाद रामदास को चुना। वे काफी पहले से ही पंथ की व्यवस्थाओं के प्रति समर्पित थे। गुरु रामदास ने खुद के बनाए तालाब के आसपास शहर बसाया जो कालान्तर में सिखों की धार्मिक राजधानी, अमृतसर कहलाया। हम आज स्वर्णमंदिर के रूप में इसे जानते है। गुरू रामदास ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में पुत्रों में सबसे छोटे अर्जुन दास को चुना जो गुरु अर्जुन कहलाएं।

गुरु अर्जुन ने सबसे पहला काम तालाब के बगल में इमारत को पूरा

करने का हाथ में लिया। हरमिंदर साहब के नाम मशहूर इस इमारत की आधारशिला लाहौर से खासतौर पर बुलाए गए पीर मिंया मीर ने रखी। इसके चार दरवाजे चार वर्णों के प्रतीक माने गए। हरमिंदर साहब के भवन का कार्य अगस्त 1604 में पूरा हुआ। यहाँ गुरु ग्रंथ साहब की प्रतिष्ठा की गई। पहले ग्रंथी बने भाई बुद्धा।

पहले बलिदानी गुरू अर्जुन

अकबर की मृत्यु के बाद और जहाँगीर के मुगल सम्राट बनते ही मुगलों की नीति गुरुओं के प्रति एकदम से बदली। शेख अहमद सरहिन्दी जो खुद को हजरत मोहम्मद के बाद इस्लाम का दूसरा पैगम्बर होने का दावा करता था, गुरु अर्जुन से भारी द्वेष रखता था। उसने जहाँगीर को गुरू अर्जुन के विरुद्ध एक कड़ी चिट्ठी लिखी। जहाँगीर ने इन खबरों को बहाना बनाया कि उसके पुत्र खुसरों की बगावत में गुरू अर्जुन की मदद और आशीर्वाद था। हालाँकि यह सच्चाई से दूर थे। गुरु अर्जुन उनसे मिलने आए खुसरों से वैसे ही मिले थे जैसे किसी अन्य आंगुतकों से मिले थे। उन्होंने खुसरों की वैसी कोई मदद नहीं कि शायद शुभकामनाएं दी हों जैसा कि गुरु करते हैं।

जहाँगीर ने हुक्म दिया कि गुरु अर्जुन को उनके सामने पेश किया जाए। उनके परिवार को पकड़ लिया जाए, उनकी सारी संपत्ति राजसात कर ली जाए। उन्हें तड़फा-तड़फा कर मौत दी जाए। पंजाब के सर्वाधिक उदधृत किए जाने वाले कवि, गुरु अर्जुन यातनाओं से इतने कमजोर हो गए कि 30 मई 1606में कारागार के साथ रावी नदी की तेजधार में नहाते समय बहकर बलिदान हो गए। मुखर कवि की आवाज हमेशा के लिए खामोश हो गई और बलिदानी गुरूओं की परम्परा ऐसी चली कि वह अंतत: शोलों में बदल गई। उनके बलिदान ने पंजाबी राष्ट्रीयता की नई लहर पैदा कर दी।

ग्वालियर किले का बंदी

गुरू अर्जुन की इस प्रकार हुई हत्या ने लोगों को विक्षोभ से भर दिया। ग्यारह साल के उनके पुत्र हरगोविन्द नए गुरू बने। उनके साथ थे दो वरिष्ठ, भाई बुद्धा और गुरूदास। अपने गुरू की मौत का बदला लेने के लिए तैयार। गुरू हरगोविन्द सिंह ने अपने श्रद्धालुओं से कहा कि उन्हें पैसे की बजाय घोड़े और हथियार भेंट करें। उन्होंने हरमिंदर साहब में अकाल तख्त की स्थापना की। वहाँ युद्ध और नायकत्व के तराने गूँजने लगे। कौम का यह बदलाव छिपा नहीं रहा और मुगल सम्राट तक इसकी खबरें पहुँची। जहाँगीर ने गुरू अर्जुन पर लगाए गए जुर्माने की वसूली के नाम पर गुरु की गिरफ्तारी के आदेश और उनकी निजी सेना को भंग करने का हुक्म सुनाया। गुरू हरगोविन्द सिंह को गिरफ्तार कर ग्वालियर के किले में नजर कैद रखा गया, वहाँ वे करीब एक साल रहे। उनकी स्मृति में आज भी ग्वालियर किले का गुरूदवारा अपने लंगर के लिए मशहूर है। रिहाई के बाद गुरू हरगोविन्द ने फिर से अपनी फौज का पुनर्गठन किया इस बार इसमें लड़ाकू पठान भी शामिल थे। इस बीच उन्होंने हिमालय की तलहटी में उपहार में मिले स्थान पर कीरत नगर भी बसाया। उनके और मुगलों के बीच टकराहट जहाँगीर की मृत्यु के बाद शाहजहाँ के सम्राट बनते ही हुई।

शाहजहाँ 1628में अमृतसर के पास था। उसके सैनिकों की गुरू के लोगों साथ झड़प हुई। सेना की एक टुकड़ी गुरू हरगोविन्द को गिरफ्तार करने भेजी गई। यह टुकड़ी जब गुरू के ठिकाने पर पहुँची तो वहाँ उनकी बेटी की शादी की तैयारी थी, पर वे वहाँ नहीं थे। उन्होंने शादी का सामान लूटा और छक कर खाना खाया। वे जब वापस हुए तो रास्ते में ही थोड़ी दूर गुरू के सैनिकों ने उन पर हमला किया। इस लड़ाई में उनका मुखिया मुखलिस खान मारा गया। दो साल बाद फिर वाहिटा के करीब संघर्ष हुआ जिसमें मुगल सैनिकों को मुँह की खाना पड़ी। इसके एक साल बाद गुरू हरगोविन्द सिंह को पकड़ने के लिए कुख्यात पैंदा खान के नेतृत्व में मुगल फौज भेजी गई। इस लड़ाई में गुरू के दो पुत्र तेग बहादुर और गुरुदिता भी शामिल थे। गुरु तेग बहादुर बाद में सिखों के नवें गुरु बने। इस लड़ाई का भी वही हाल हुआ। मरने वालों में पैंदा खान भी शामिल था। इसके बाद उन्होंने अपना मुख्यालय कीरतपुर में कर लिया, उनका निधन 1644 में हुआ। पुत्रों की मृत्यु या विराग की व्यक्तिगत त्रासदियों के बीच उन्होंने गुरुदिता के दूसरे पुत्र हरराय को अपना उत्तराधिकारी चुना।

गुरु हरराय ने कीरतपुर छोड़ दिया। अगले 13 साल उन्होंने सिरमूर राज्य के एक छोटे से गाँव में गुजारे। मुख्य केन्द्रों से दूर रहने के कारण अभियान थोड़ा धीमा पड़ा। 1658में वे कीरतपुर लौटे। उनका दोस्ताना शाहजहाँ के बड़े पुत्र दाराशिरोह के साथ हो गया। बाद में शाहजहाँ के उत्तराधिकारी की लड़ाई में दाराशिरोह पराजित हुआ। औरंगजेब के लिए इतना ही काफी था। उसने गुरु हरराय को दिल्ली बुलाया। उन्होंने अपने बड़े बेटे रामराय को भेजा। उसने चाटुकारिता से औरंगजेब को संतुष्ट भी कर लिया। औरंगजेब ने उसे दिल्ली में ही रोक लिया। ऐसा माना जाता है कि उसका मकसद सिख गुरूओं के मामले में अपना मोहरा तैयार करना रहा होगा। इसके विपरीत गुरु हरराय ने अपने उत्तराधिकारी अपने छोटे बेटे हरिकिशन को चुना। औरंगजेब को यह नहीं भाया तो उसने शिशु गुरू हरिकिशन को भी दिल्ली बुलवा भेजा। थोड़ी हिचकिचाहट के बाद गुरू हरिकिशन दिल्ली आए। उन्हें मिर्जा राजा जयसिंह के यहाँ रूकाया गया है। यहाँ गुरू हरिराय को चेचक हो गई और मृत्यु से पूर्व उन्होंने अपने लोगों को कहा कि अगला गुरु गाँव बकाला में रहने वाले बुर्जुग होंगे। बकाला के यह बाबा थे। तेगबहादुर औरंगजेब के मध्यस्थता की मंशा पर पानी फेरते हुए, गुरू हरगोविन्द के पुत्र तेग बहादुर सिखों के नवे गुरू बने।

शीश दिया पर इस्लाम नहीं कबूला

गुरू तेगबहादुर का कटा सिर और बाकी धड़ अलग औरंगजेब के हुक्म से दिल्ली के चाँदनी चौक में टंगा रहा। हुक्म यह भी था कि कोई उनके शरीर को छुएगा नहीं। उनका कसूर था इस्लाम कबूलने से साफइंकार। फरियाद लेकर आए कश्मीरी पंडितों के प्रतिनिधि के रूप में खुद को पेश करने की सजा थी यह। गुरू ने यह बलिदान उनके लिए दिया। उसी स्थान पर आज शीशगंज गुरूद्वारा है। गुरु तेगबहादुर को हिन्दुओं का नेता मानकर ही औरंगजेब ने यह क्रूर कदम उठाया।

क्रूरता की इस चरम सीमा में धर्म के लिए दी गई इस शहीदी ने भी नए जियालों को जन्म दिया। एक दिन दिल्ली में ऐसा अंधड़ आया कि दिल्ली ढक गई। धुँध छटी तो गुरु का शीश भी गायब था और शरीर भी। एक जियाला हिन्दु जैता उसे ले गया और गुरु के पुत्र और दसवें गुरु, गोविन्द सिंह को आनंदपुर में सौंपा। उनका अंतिम संस्कार चिंगारियों को शोलों में बदलने का साक्षी बना। जैता को गुरू के 'सच्चे पुत्र, की पदवी दी गई।

गुरू तेगबहादुर ने गुरूपद पर आने के बाद सघन भ्रमण खासकर पूर्वी भारत का किया था। जगह-जगह उन्होंने सिख संगत कायम की। उन्होंने

अपने क्षेत्र के सभी वर्गों हिन्दू, सिख संगत, मुसलमानों के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाए। इसके साथ ही वक्त को भाँपते हुए उन्होंने कौम का सैन्यकरण भी जारी रखा। वे सिखों के आध्यात्मिक के साथ सैन्य नेतृत्व करने वाले गुरू बने। यही गुण और प्रवृत्ति गुरु गोविन्द सिंह में आगे चलकर अपनी चरम सीमा में पाये गए। इस बलिदानी पृष्ठभूमि में दशमेश गुरू ने पंजाबी राष्ट्रीयता को नया आकार दिया।

नवें नानक- गुरू गोविन्द सिंह

गुरु ग्रंथ साहब जिसमें सब गुरुओं की वाणी है और सबका उल्लेख नानक के रूप में ही है। इस प्रकार नवें नानक हैं- गुरू गोविन्द सिंह। गोविन्द राय 9 साल के ही थे जब उनका पिता का कटा हुआ सिर अंतिम संस्कार के लिए उनके पास पहुँचा था। इस हालातों के बीच बाल गुरु हिमालय के निकट, यमुना किनारे के गाँव पांवटा में आ बसे। उनके यहाँ रहते ही यह स्थान बड़े नगर में बदल गया।

पांवटा में गुरू गोविन्द सिंह ने हिन्दी और पंजाबी के साथ संस्कृत और पर्शियन की शिक्षा ली। यहीं उनके अंदर का कवि और बहादुर सैनिक बाहर आया। उन्होंने चार भाषाओं में लिखना शुरू किया कई बार तो एक ही कविता में चारों भाषाओं का प्रयोग किया शस्त्र और शास्त्र दोनों में पारंगत बनते गुरू गोविन्द सिंह ने उपनिषद, गीता, भागवत, महाभारत कई आख्यान उन्होंने खुद अपनी भाषा में लिखे। दशमेश ग्रंथ नाम की प्रसिद्ध कृति में दुर्गा और राक्षसों के युद्ध का वीरतापूर्ण वर्णन मुर्दों में भी जान फूँक देने जैसे थे।

सवा लाख से एक लड़ाऊँ

सन् 1699 की बैसाखी गुरू गोविन्द सिंह ने अपने पिता द्वारा स्थापित आनंदपुर में जिस चमत्कारिक रूप से मनाई वो 'धर्मयुद्ध, के लिए तैयार सेनानायक ही सोच सकता है। इसमें हिन्दुओं के सभी वर्णों के लोग शामिल हुए।

खुले मैदान में हजारों श्रद्धालुओं के बीच गुरु ने म्यान से तलवार निकाली और बोले कि भगवती की आज्ञा हुई है कि धर्म और देश की रक्षा के लिए शीश की बलि दो। जो अकाल पुरख और गुरू को शीश भेंट करना चाहता हैं वह आगे आएँ। राष्ट्र में नए खून और नये उत्साह की शुरूआत करें। आश्चर्य, एक-एक करके पाँच युवक उठे। गुरु उन्हें अंदर तम्बू में ले गए और रक्तरंजित तलवार लेकर बाहर आए। यह गुरू की परीक्षा भर थी। वह पाँचों सुरक्षित थे और तलवार पर मानव रक्त नहीं था। गुरु के साथ पाँचों बाहर आए और ये 'पंज पियारो, कहलाए। खालसा, पंथ की स्थापना हुई। गुरु गोविन्द राय से गोविन्द सिंह और सभी सिंह, हो गए।

गुरु गोविन्द सिंह का इस मौके पर दिया गया सम्बोधन खास उल्लेखनीय है। उन्होंने कहा कि सारी ऊँच-नीच मिटाकर एक हो जाएँ। घुले-मिले। एक साथ खाएँ-पिए। 'पंजपियारो ने एक ही बर्तन से अमृत चखा। अमृत यानी बताशे मिला पानी और उसमें तलवार की छुअन। इससे क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ और एक नए 'बहादुर बल, का निर्माण हुआ।

कहा जाता है कि एक बार पहाड़ी राजाओं ने गुरु गोविन्द सिंह पर व्यंग किया था कि जिन चिड़ियों और बिल्लियों (अर्थात छोटी समझी जाने वाली जातियों) के भरोसे आप गर्व महसूस कर रहे हो वे शेरों का मुकाबला नहीं कर पायेंगी। इस पर गुरू ने ऐतिहासिक उत्तर दिया था-

'सवा लाख से एक लड़ाऊँ
चिड़ियों से मैं बाज तुड़ाऊँ
बिल्लियों से शेर मराऊँ
तभी गोविन्द सिंह नाम धराऊ।

इतिहास साक्षी है कि उन्होंने ये करके भी दिखाया।

पराक्रम गुरू गोविन्द सिंह का

संत योद्धा को इस्पाती बहादुरी का मौका 1686की भंगानी की लड़ाई में जल्दी ही मिला। गुरु की गतिविधियों से चिंतित पहाड़ी राजा खासकर बिलासपुर के राजा भीमचन्द ने गुरु को पावटा में ही घेरना चाहा। अपने वीर साहित्य से बलिदान की चेतना वे दुर्गापूजा नाटक, चैबीस अवतार और अपनी आत्मकथा 'विचित्र नाटक, से लगा ही चुके थे। भंगानी की लड़ाई में उन्हें कम संख्या वाले गुरु के साथियों से मुँह की खानी पड़ी।

अपने कई प्रयासों में विफल पहाड़ी राजाओं ने भीमचंद के नेतृत्व में औरंगजेब से मदद माँगी। औरंगजेब को यह भी सुझाया गया कि गुरु गोविन्द सिंह का असली निशाना वो खुद हैं। गुरु अपने पिता की मौत का बदला मुगल साम्राज्य से लेना चाहते हैं। दक्षिण में उलझे औरंगजेब ने अपने दो पाँच हजारी मुगल सरदारों- पैंदा खान और दीन बैग को गुरू को पकड़ने के लिए भेजा। पहाड़ी राजाओं की सेनाएँ भी उनके साथ मिल गई। पंज प्यारों के नेतृत्व में गुरू की सेना ने बहादुरी और दक्षता के साथ ऐसी लड़ाई लड़ी कि उनके छक्के छूटने लगे। इस हालात में पैंदा खान ने गुरू गोविन्द सिंह को आमने-सामने की लड़ाई के लिए ललकारा। गुरु ने चुनौती मंजूर करते हुए पहले हमला करने का मौका पैंदा खान को दिया। पैंदा खान का एक तीर गुरू की पगड़ी को छूता हुआ और दूसरा भी करीब से निकल कर बेकार हो गया, अब गुरू की बारी थी। उनका तीर पैदा खान को घातक माप से लगा और वो घोड़े से गिर कर खत्म हो गया। गुरु के सैनिकों के पराक्रम ने दीन बैग के पाँव भी उखाड़ दिए और वह भी घायल हुआ। उनकी फौजें भाग खड़ी हुईं।

पहाड़ी राजा कुछ समय बाद फिर इकठ्ठे हुए और आनंदपुर और उसके किलों पर धावा बोला। आनंदपुर का घेरा कई दिन चला। इसका कड़ा प्रतिकार उन्हें मिला। गुरू के सैनिक छोटे-छोटे गुटों में लौहगढ़ के किले से बाहर आकर उन्हें भारी नुकसान पहुँचाते रहे। गुरू के 14 वर्षीय बेटे ने भी अद्भुत शौर्य दिखाया। अंततः घेराबंदी समाप्त करने को बाध्य हो गए। बाद में भी बिलासपुर के राजा ने कोशिशें जारी रखीं। कुछ हमलों का हश्र तो यह निकला कि मुसलमान सरदार गुरु के साथ हो गए। आखिर में उन्होंने फिर औरंगजेब की शरण ली। पंजाब के भी दक्षिण बन जाने की खबरों से चिंतित औरंगजेब ने इस बार सरहिन्द, लाहौर और कश्मीर के सूबेदारों के नाम आनंदपुर पर हमला और गुरु पर कब्जे का फरमान जारी किया। इस हमले को जिहाद का नाम दिया गया। इस कारण कई भाड़े पर लड़ने वाले मुस्लिम सिपाही भी इसमें शामिल हो गए। इस प्रकार लगभग दो लाख की सेना ने आनंदपुर पर हमला बोल दिया।

गुरू गोविन्द ने हमले की सूचना पाकर अपने यहाँ के सभी कवियों को रवाना किया और युद्ध की रणभेरी बजा दी। शाही सेना ने आनंदपुर को घेर लिया। बड़ी सेना के सामने दिन भर घनघोर लड़ाई चली। अजीत सिंह के दस्ते की जबरदस्त हमले के कारण पहला दिन कम सेना के बावजूद मैदान सिंहों के हाथ रहा। एक महीना युद्ध चला। अंत में सिंह सेना आनंदपुर के अंदर घिर गई। अब रसद धीरे-धीरे खत्म होने लगी। अब सिंह सेना के दस्ते रात में हमला

बोलते और रसद आदि ले आते। शाही सेना पीछे हटकर अपनी चौकसी बढ़ाती रही। जब सिंह सेना के युद्ध के बिना भूखा मरने की स्थिति आने लगी वो कुछ लोग विचलित हो गए। उन्होंने गुरु से जाने की अनुमति माँगी। गुरू ने कहा मुझे लिखकर दे दो कि न मैं तुम्हारा गुरू हूँ और न तुम मेरे सिंह, फिर चले जाओ। कुछ लोग चले गए। उधर शाही फौजों की भी खुले में सात महीने से रहते-रहते हालत खराब हो रही थी। औरंगजेब को सारी खबर थी। उसे यह बिल्कुल उम्मीद नहीं थी। वह जानता था कि घेराव जितना लम्बा खिचता है फौज की तकलीफें उतनी ही बढ़ती हैं। इलाके की जनता में घृणा बढ़ती है सो अलग। उसने एक चिठ्ठी खुद अपने हाथ से लिखकर गुरु गोविन्द सिंह को एक काजी के हाथ भिजवाई। चिठठी में कुरान शरीफ की कसम उठाकर यकीन दिलाया गया था कि वे चाहे तो दक्षिण उनके पास चले आए या कहीं और जाकर रहने लगे। उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाया जाएगा। शाही वकार को कायम रखने के लिए इस वक्त आपका किला खाली करना जरूरी है।

चमकौर की ऐतिहासिक लड़ाई

गुरु ने औरंगजेब के प्रस्ताव पर विश्वास न होते हुए भी सभी की राय से आनंदपुर छोड़ने का निर्णय लिया। दुश्मन ने भी युद्धबंदी की घोषणा कर दी। 20 मार्च 1704 को आधी रात को गुरु गोविन्द सिंह परिवार, पंजप्यारे और बचे खुचे सैनिकों के साथ आनंदपुर से कीरतपुर की ओर चल पड़े। फिर कुरान की कसम तोड़कर गुरू पर चमकौर में हमला किया गया। सवा लाख से एक लड़ाऊँ की गर्जना फिर साकार हुई। इससे पहले एक टुकड़ी गुरूमाता और उनके दो पुत्र बर्फजैसे ठंडे पानी की नदी में उतरकर कुछ सिख सैनिकों के साथ निकले। गुरु गोविन्द सिंह कुल जमा 40 सैनिकों के साथ 'चमकौर की हवेली, में पहुँचे। उनके दो पुत्र अजीत सिंह और जुझार सिंह उनके साथ थे। चमकौर को दुश्मन ने घेर लिया, मुठ्ठी भर सैनिकों ने अपने लहू और अकल्पनीय वीरता के साथ वह लड़ाई लड़ी जिसकी कोई मिसाल विश्व के इतिहास में नहीं मिलती। गोला-बारूद खत्म होने पर सिंह पाँच-पाँच के जत्थे में बाहर निकले। दो जत्थों की अगुआई उनके बेटे अजीत सिंह और जुझार सिंह ने की। बहुत से शत्रुओं को मौत के घाट उतारकर वीरगति को प्राप्त हुए। रात होते-होते चमकौर में दशमेश के साथ पाँच सिंह रह गए। इन पाँचों ने मिलकर गुरूमत पारित किया कि गुरू गोविन्द सिंह चमकौर से जाएँ। गुरु को उन्हीं की व्यवस्था का हवाला देते हुए वहाँ से जाने का आदेश दिया गया। गुरु खालसा दूसरा आदेश यह दिया गया कि तीन सिख गुरू के साथ जाएँ और बाकी दो मुकाबले पर डटे रहे।

चमकौर में रूकने वाले एक सिंह की शक्ल गुरू गोविन्द सिंह से मिलती थी। गुरू निकले और निकलते-निकलते भी शत्रुओं को हड़बड़ी में डालकर कई सैनिकों की मौत सुनिश्चित की। सुबह फिर हमला हुआ। गुरु के हमशक्ल को देखकर उन्हें लगा कि गुरू समाप्त हो गए। उनकी यह खुशी जल्दी ही काफूर हो गई। सरहिन्द के नवाब वजीर खान ने गुरू की तलाश में कई दस्ते दौड़ाए।

छोटे सिंहों ने इस्लाम नहीं जान देना कबूल किया

चमकौर से गुरू से बिछड़े गुरुमाता और दो बच्चे अपने एक रसोईये के साथ थे। उसकी नीयत खराब हुई और उसने इन्हे सरहिन्द के सूबेदार वजीर खान के हवाले कर दिया। नौ बरस का जोरावर सिंह और सात बरस के फतह सिंह से सूबेदार ने पूछा कि अगर इस्लाम कबूल कर लोगे तो ठाठ-बाठ की जिंदगी बिताओगे नहीं तो सिर कलम कर दिए जाएँगे।

नन्हें बच्चों का जवाब था कि हमें धर्म गवाकर जीना मंजूर नहीं। सिर जाए तो जाए साडा सिखी सिदक न जाए। उनका जवाब सुनकर वजीर खाँ ने उन्हें कत्ल करने का हुक्म दिया। वहाँ मौजूद मलेर कोटला के नवाब के एतराज पर उस दिन तो उनकी मौत टल गई। दो दिन बाद फिर वहाँ सवाल दोहराया गया, नन्हे सिंहों का वही इंकार था। इस बार जालिम वजीर खान ने उन्हें जिन्दा दीवार में चिनने का हुक्म दिया। हँसते-हँसते बच्चे शहीद हो गए। गुरुमाता ने इस खबर को सुनकर अपने प्राण त्याग दिए।

मुक्तसर की शहीदी आत्माएँ

चमकौर से निकले गुरु ने कई स्थानों से होकर नए सिरे से सिखों को संगठित किया नवाब सर हिन्द को जब यह खबर मिली कि गुरू दीना गाँव में है तो वह बारह हजार की फौज के साथ हमले के लिए निकल पड़ा। इधर गुरूगोविन्द सिंह ने रणनीतिक दृष्टि से खिदराने का रेगिस्तान, को युद्ध के लिए चुना। वहाँ के एकमात्र तालाब पर उन्होंने अपने मोर्चे जमाएँ।

इस युद्ध में एक और अनूठी बात हुई कि जो कुछ सैनिक पहले गुरू को छोड़कर चले गए थे वे माई भागों के नेतृत्व में लौटे। इस बहादुर महिला ने पुरुष भेष धारण किया हुआ था। यह टुकड़ी भी खिदराने आ पहुँची। माई भागों तथा एक और नायक महासिंह ने जत्थों में लड़ाई की। बिना हार-जीत की चिन्ता के पंथ के लिए बलिदान देने को उत्सुक इन लड़ाकों ने घमासान लड़ाई की। तीन हजार शत्रु सैनिक खेत रहे। शाही फौज पीछे हट गई। लड़ाई बंद होने पर जब गुरू माई भागों के जत्थे के घायलों को देखने गए। कुछ की साँसें बाकी थी। महासिंह ने अपने अंतिम समय में गुरू से कहा कि- एक ही साध हैं कि पहले का हमारा लिखा फाड़ दो। गुरू ने वह चिठ्ठी निकाली और टुकड़े-टुकड़े कर दी। तब जाकर महासिंह ने अंतिम साँस ली। इन शहीदों की याद में उस जगह का नाम मुक्तसर रखा गया। अब वहाँ जो गुरूद्वारा है वह शहीदगंज कहलाता है और बहुत बड़ा कस्बा बन गया है।

विश्व का ऐतिहासिक पत्र- जफरनामा

मुक्तसर की लड़ाई के बाद गुरू गोविन्दसिंह जिस स्थान पर पहुँचे वह आज दमदमा साहब कहलाता है। यहाँ गुरू काफी समय रहे। यही उन्हें अपने चारों बेटों के शहीद होने का समाचार मिला। इस मौके पर गुरु ने कहा-

इन पुत्रन के शीश पर, वार दिए सुत चार
चार मुए तो क्या हुआ, जीवित कई हजार।

औरंगजेब के नाम पर्शियन भाषा में वे एक लम्बा पत्र लिख रहे थे उसे उन्होंने यहाँ पूरा किया यह पत्र जफरनामा कहलाया। यही उन्होंने आदि ग्रन्थ पूरा करवाया।

जफरनामे में 111 पद थे जिसके द्वारा औरंगजेब को आइना दिखाया गया। जफरनामा उनके आध्यात्मिक, नैतिकबल और दर्शन का भी उदाहरण है। जफरनामे की शुरूआत गुरु गोविन्द सिंह ने पर्शियन में इस प्रकार की-

मुझे तेग, छुरा, नेजे और ढाल की कसम

मुझे युद्धक्षेत्र में प्राणों की बलि देकर शहीद हो जाने वाले वीर पुरुषों की कसम और रणभूमि में तेज दौड़ने वाले घोड़ों की कसम।

जफरनामे में औरंगजेब को लोमड़ी बताते हुए ऐसे शख्स के रूप में चित्रित किया गया है जो अपने मकसद के लिए कुरान की झूठी कसम तक खा

लेता है। उन्होंने कहा ऐसे व्यक्ति का पतन निश्चित होता है। जफरनामे की कुछ बातें औरंगजेब को अंदर चुभी होंगी तभी उन्होंने गुरु को मिलने बुलाया। उसने वादाखिलाफी और मासूम बच्चों की हत्या पर अफसोस भी व्यक्त किया।

गुरुगोविन्द पुष्कर होते हुए जा रहे थे कि उनको औरंगजेब की मृत्यु की खबर मिली। मृत्यु के बाद सत्ता संघर्ष में मुहम्मद मुअज्जम ने स्वयं को बहादुर शाह के नाम से बादशाह घोषित किया। उसने गुरू गोविन्दसिंह से मदद माँगी। बहादुर शाह औरंगजेब के सुन्नीमत के विपरीत शिया था और अपने चाचा दारशिरोह की तरह उदार सूफी था। गुरु गोविन्द सिंह उसके साथ आगे आए। आगरे के पास भाई के साथ युद्ध में विजय बहादुर शाह के हाथ लगी। आगरा आकर उसने गुरू का सत्कार किया उनके बीच धर्म, दर्शन, कानून आदि पर वार्तालाप चलता रहा। बाद में बहादुर शाह उन्हें एक बड़ी सेना का कमांडा बनाकर मराठों से लड़ने भेजना चाहा तो इंकार कर उनसे अलग होकर वे नांदेड़ पहुँचे। इस बीच एक और बड़ा काम हुआ। गुरु माधोदास बैरागी के डेरे पर पहुँचे उन्हें अमृत छकाया। यह बंदा इतिहास में बंदा बैरागी के नाम से मशहूर हुआ। गुरू ने बंदा बैरागी को पंजाब रवाना किया और खुद दक्षिण में रूक गए। इसी बंदा ने बाद में सरहिन्द की ईंट से ईंट बजाई और युद्ध में नवाब वजीर खाँ का सिर धड़ से अलग कर दिया।

गोदावरी के किनारे रूके गुरु को एक दिन एक गुलखाँ नामक पठान ने धोखे से घायल कर दिया। गुरु श्रद्धालुओं से प्रतिदिन मिलते थे। हमलावर को मार गिराया गया पर गुरू गोविन्द सिंह शारीरिक रूप से नहीं रहे। 7 अक्टूबर 1708को जब उनका निधन हुआ उस समय उनकी आयु मात्र 42 वर्ष थी। न डरने की उनकी बात और परम्परा सदा जीवित रहेगी। वे कहते थे–

दे शिव, वर मोहि यई, शुभ कर्मन ते कबहू न टरौं,
न डरौ अरि सों जब जाय लरौं, निश्चय कर अपनी जीत करौं।

– ए-42, एमराल्ड पार्क सिटी, एम्स के पास, भोपाल
मो. 9425008479

■

गुरुमुखी लिपि

गुरुमुखी लिपि चित्र

सोरो सूकरक्षेत्र। सिख गुरु नानक देव जी 1508 ई. में यहाँ पधारे थे। उनके बाद 1643 ई. में हरगोबिन्द साहब भी पधारे थे। ये लिपि चित्र गुरुमुखी में है। उन्हीं गुरु परम्परा द्वारा प्रदत्त यह चित्र वर्तमान में यह ग्रंथावली श्री रामवल्लभ व्यास, श्री सुरेन्द्र वल्लभ व्यास के पास सुरक्षित है। जो सिख धर्म के अनुयायियों की एक निधी है।

प्रस्तुति : उमेश पाठक, सोरो सूकरक्षेत्र (उ.प्र.)

ब्लॉग

भारत को जागृत किया गुरु नानक देव जी ने

कमलनाथ

गुरुनानक देव जी मानवता में विश्वास रखने वालों और नि:स्वार्थ भाव से मानवता की सेवा में समर्पित लोगों के लिए अनन्य प्रेरणा-स्रोत रहे हैं। हम इस महान संत की 550वीं जयंती मनाते हुए आध्यात्मिक रूप से स्वयं को धन्य समझते हैं।

नानक शाह फकीर जी की शिक्षाएं आज और भी ज्यादा प्रासंगिक हो गई हैं क्योंकि मनुष्य स्वरचित दु:खों का सामना कर रहा है। सामाजिक, सांस्कृतिक एकता की भावना को खतरों का सामना करना पड़ रहा है और मानवीय मूल्यों में मनुष्य का विश्वास बुरी तरह डगमगा गया है। वर्षों पहले गुरुनानक देव जी ने इस तरह की स्थितियों की चेतावनी दी थी और सुधारवादी कदम भी सुझाए थे।

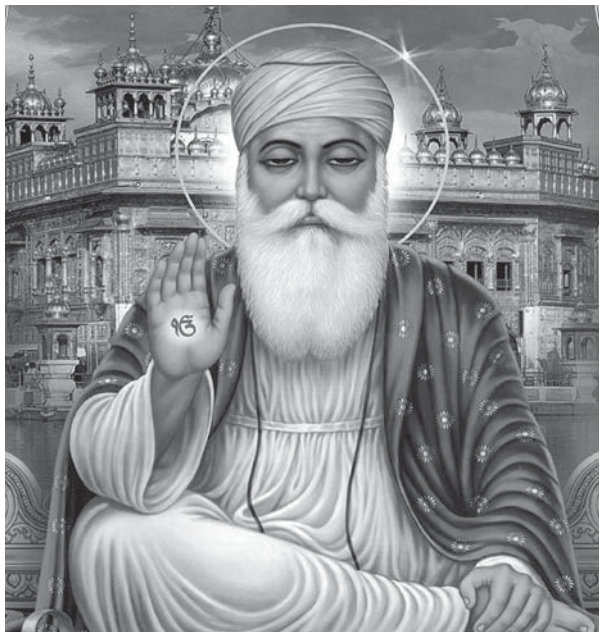

भारत के गौरवान्वित नागरिकों के रूप में हम गुरुनानक देव जो को अपने मार्गदर्शक और दार्शनिक के रूप में पाकर खुद को भाग्यशाली मानते हैं। आज, जब दुनिया में सांस्कृतिक विविधता के लिए नापाक ताकतों और कट्टरपंथी सोच ने खतरे पैदा किए हैं, हम अपने मार्गदर्शक के रूप में गुरुनानक देव जी की बानी पाकर धन्य हैं। वे सिर्फ सिख समुदाय के गुरु नहीं है। वे मानवता के महान आध्यात्मिक शिक्षक हैं क्योंकि वे मन और हृदय के विकारों से मुक्ति पर जोर देते हैं। गुरुनानक देव जी सामाजिक-धार्मिक और सांस्कृतिक सदभाव के प्रतीक हैं। गुरू नानक देव जी और भाई मरदाना का साथ अनूठा उदाहरण है। यह सांस्कृतिक एकता को रेखांकित करता है। दो महान पुण्यात्माएँ परस्पर आध्यात्मिक गहराई से एकाकार थी। भाई मरदाना गुरूजी से 10 साल बड़े थे और अपने अंतिम समय तक उनके साथ रहे। उन्होंने निरंकार की महिमा का गायन करते हुए दो दशकों तक एक साथ आध्यात्मिक यात्रा की। गुरूनानक देव जी गाते थे और भाई मरदाना उनके साथ रबाब पर संगत करते थे। वे विलक्षण रबाब वादक थे। यहाँ तक कि उन्होने इसे छह-तार वाला यंत्र बनाकर इसमें सुधार किया। उनका जन्म एक मुस्लिम परिवार में हुआ था। संगीत का उनका ज्ञान श्री गुरू ग्रंथ साहिब में स्पष्ट झलकता है। उसे विभिन्न रागों में निबद्ध किया गया है। भाई मरदाना का उल्लेख श्री गुरू ग्रंथ साहिब में भी है। भाई गुरूदास जी ने लिखा है-

'इक बाबा अकाल रूप दूजा रबाबी मरदाना'

दुनिया को यह जानने की जरूरत है कि- '**आदि सच, जुगादि सच, है भी सच, नानक होसी भी सच।**' इसका सीधा-सा अर्थ यह है कि ईश्वर एक परम सत्य, सर्वव्यापी है। सिवाय उसके कुछ भी वास्तविक नहीं है, वह सर्वकालिक है, अनन्त था, अनन्त रहेगा।

ज्ञान के ऐसे शब्दों से गुरुनानक देव जी ने भारत के लोगों को जागृत किया। उर्दू के दार्शनिक कवि अल्लामा इकबाल ने कहा है-

'फिर उठी आखिर सदा तौहीद की पंजाब से,
हिंद को एक मर्द-ए-कामिल ने जगाया ख्वाब से'

(एक बार फिर पंजाब से एक दिव्य आवाज उठी जिसने उद्घोष किया कि ईश्वर एक है। एक सिद्ध पुरुष गुरुनानक देवजी ने भारत को जगाया।)

गुरुनानक देव जी और भाई मरदाना ने कीर्तन की परंपरा शुरू की, जो आध्यात्मिक जागृति का माध्यम साबित हुई है। समानता के विचार को प्रदर्शित करने के लिए, उन्होंने लंगर के आयोजन की परंपरा शुरू की। वर्षों बाद हम समझ पाए हैं कि यह एक क्रांतिकारी धार्मिक सुधारवादी कदम था।

गुरुनानक देव जी ने भारत को आध्यात्मिक भव्यता दी। उन्होंने कहा कि आंतरिक जागृति ही मूल्ववान वस्तु है। उन्होंने घोषणा की कि सभी समान हैं और सभी दिव्य ऊर्जा से भरपूर हैं। अपनी आध्यात्मिक यात्राओं के माध्यम से गुरुनानक देव जी ने भारत को जागृत किया और इसकी महिमा को ऊँचाइयाँ दी। गुरुनानक देव जी ने जो उपदेश दिया उसका पालन किया। उन्होंने अपने बोले प्रत्येक शब्द को आत्मसात किया और सामाजिक सुधार लाए। मानवता की भलाई के लिए हमारे पास उनके दर्शन की सबसे अच्छी सीख है। उन्होंने कहा- हमेशा सच्चाई के पक्ष में रहे और मानवता की सेवा के लिए तैयार रहें। हमेशा पाँच बुराइयों को दूर करें- काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। गुरु ज्ञान का सच्चा स्रोत होते हैं। गुरु पर विश्वास रखें। आइए हम अपने दैनिक जीवन में गुरुनानक देव जी की शिक्षाओं, वैश्विक भाईचारे व सांस्कृतिक अखंडता को मजबूत करने के लिए सदैव तैयार रहें।

- लेखक मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री है

म.प्र. जनसंपर्क संचालनालय की पत्रिका म.प्र. संदेश से साभार

■

संस्मरण

लंगर दा परसाद

डॉ. सुमन चौरे

एक साहित्यिक आयोजन में मेरा महेश्वर जाना हुआ था। लौटने का टिकट खण्डवा से ट्रेन द्वारा भोपाल का था। महेश्वर से खण्डवा किसी भी रास्ते से जाएँ, जाना तो सड़क मार्ग से ही था।

कार्यक्रम पूरा ख़त्म होने के कुछ पूर्व ही मैं कार्यक्रम स्थल से निकली। बस स्टैण्ड पर पहुँची। देखा, वहाँ बहुत भीड़ थी। टिकट बुक कराने के लिए बस टिकट बुकिंग ऑफिस की खिड़की पर गई, तो वहाँ से जानकारी मिली– 'मेले का समय है। अत: टिकट–बुकिंग समाप्त हो गई है, जो गाड़ी मिले, उसमें बैठ जाएँ, टिकट गाड़ी में ही कण्डक्टर काट देगा।' हर दस–पन्द्रह मिनट पर सरकारी और निजी गाड़ियाँ गुज़र रही थी, पर वे छत तक भरी हुईं थीं। ओंकार महाराज का मेला नर्मदा तट स्थित ओंकारेश्वर में भरता है। उस दिन कार्तिक पूर्णिमा थी, ओंकार पूर्णिमा थी। बहुत प्रतीक्षा के बाद एक बस रुकी। शायद उसमें से एक–दो सवारियाँ उतरी। मैंने कण्डक्टर से अनुरोध किया, मेरा टिकट खण्डवा से भोपाल का है, आप बैठा लेंगे तो शायद, मैं अपनी गाड़ी पकड़ पाऊँगी। उसने कहा, बहनजी, चढ़ जाइए। आपके पास कैसी और कितनी ताकत है, उस हिसाब से आपको ही अपने बैठने की व्यवस्था करनी पड़ेगी।

मैंने कहा, एक घण्टे का रास्ता तो है ही, बड़वाह में ही उतार देना, वहाँ से मुझे सुपर फास्ट बस में जगह मिल जायेगी।

मैं गाड़ी में चढ़ तो गई; किन्तु स्थिति ऐसी थी कि अनाज के बोरे में भी दानों के बीच कुछ जगह रहती है, यहाँ तो हवा आने तक की जगह नहीं थी। सब एक दूसरे पर लदे–बदे पड़े थे। उसके बावजूद भी लोग रास्ते में हाथ देते थे, तो कण्डक्टर कहता, रोक दो डिरावर साहब, छत पर चढ़ा लेंगे। कभी सवारियों के झुण्ड को देखकर ड्राइवर गाड़ी रोककर कण्डक्टर से कह देता, 'इनको भी लटका लो। ऐसे अब चालीस सीट की सवारी वाली गाड़ी में, छत सहित कुल अस्सी–नब्बे लोग रहे होंगे। इन हालात में मुझे तो अपनी ट्रेन छूटती नज़र आ रही थी। इतने में ही जैसे–तैसे बड़वाह बस स्टैण्ड आया। मैंने कण्डक्टर को जोर से आवाज़ देकर कहा, भाई, मुझे उतार। अब मेरी गाड़ी तो निकल ही चुकी होगी, तो क्यों में बोरे का अनाज बनकर जाऊँ।

कण्डक्टर ने बड़वाह के बस स्टॉप पर गाड़ी रुकवाई। किसी अन्य व्यक्ति की मदद से मैं उस स्थान पर पहुँची, जहाँ वे गाड़ियाँ खड़ी होती थीं, जो इन्दौर के बाद सीधे खण्डवा ही रुकती थी। शायद, बस–कण्डक्टर इन्दौर से खण्डवा का पूरा किराया लेकर किसी ज़रूरतमंद को बड़वाह के लिए बैठा लेते हों...। मैं ऐसा सोच ही रही थी कि इतने में ही एक ए.सी. बस वहाँ आकर रुकी। कण्डक्टर नीचे उतरा और उसने बस से एक सवारी उतारी। झट से मैंने कण्डक्टर को इंदौर से खण्डवा तक का पूरा किराया दिया और बस में चढ़ गई। मैंने अपने भाई के घर महेश्वर से ही फ़ोन पर मेरे खण्डवा आने की सूचना दे दी थी। तब मोबाइल फ़ोन का चलन न के बराबर था और मेरे पास भी ऐसा कोई फ़ोन नहीं था।

मुझे खण्डवा निकट आते दिखा। मैं चैतन्य हुई। खण्डवा नगर में जहाँ से गाड़ी प्रवेश करती है, तो वह उस नाके पर रुकती है। मैंने देखा, वहीं मेरा भतीजा खड़ा था। मैंने उसे आवाज़ दी, तो मेरी सीट की खिड़की पर आकर उसने कहा, 'मौसी, यहीं उतर जाइए, शहर के अन्दर से बस जाएगी और तीन–चार जगह रुकेगी। आपकी गाड़ी का सिगनल हो चुका है। इसीलिए मैं यहाँ आपको लेने आया हूँ।' मैं वहीं उतर गई। भतीजा मुझे अपनी गाड़ी पर बैठाकर ले गया, स्टेशन वहाँ से दो–ढाई किलोमीटर दूर था।

रास्ते में एक ताँगे वाले से पूछने पर उसने बताया कि वह मेरी गाड़ी सचखण्ड, नांदेड़–अमृतसर की सवारी ही लेकर आ रहा है। गाड़ी की सूचना सुनकर भतीजा बोला, 'मौसी, अब घर चलें, सुबह किसी गाड़ी से बैठा देंगे। इस गाड़ी का मिलना तो असंभव–सा है। पुल चढ़ने–उतरने में भी दस मिनट लग जायेंगे।' मैंने उससे कहा, 'देखो बेटा, मुझे सुबह हर हाल में भोपाल पहुँचना ही है। स्टेशन ही चलते हैं। अगर यह गाड़ी निकल भी गई होगी तो किसी अन्य गाड़ी का टिकट लेकर प्रयास करेंगे चढ़ने का।'

हम स्टेशन पहुँचे। बाहर से ही एक कोच पर हमारी गाड़ी का नाम 'सचखण्ड' लिखा दिखा। रेलवे सूचना भी चल रही थी, नाँदेड़–अमृतसर एक्सप्रेस प्लेटफार्म नम्बर पाँच पर खड़ी है। यह सोचते हुए मैंने तेज़ी से कदम बढ़ाए कि गाड़ी मिलेगी तो ज़रूर, रुकना ठीक नहीं है। इस बीच एक कुली ने बताया, 'गाड़ी पच्चीस मिनट से खड़ी है, अब चलने को है।' हम प्लेटफार्म पर पहुँचे। एसी कोच पुल से बहुत दूर आगे लगे हुए थे। हमने टीसी से पूछा, 'कहीं भी चढ़ जाएँ क्या?' टीसी ने कहा, 'आपका कोच जहाँ हो, वहीं, उसी में चढ़िए, अभी गाड़ी रुकेगी।

हड़बड़ाहट में मैं अपने कोच में चढ़ी, डिब्बे में बहुत हलचल हो रही थी। अब अपनी सीट पर पहुँचना भी कठिन हो रहा था। मैं वहीं किसी एक सीट पर बैठ गई। मुझे जानकारी हुई कि नानक जयन्ती की वज़ह से खण्डवा के

गुरुद्वारे से लंगर का भोजन गाड़ी में प्रसाद के रूप में बँट रहा है। गाड़ी नाँदेड़ के साहिब गुरुद्वारे के भक्तों और दर्शनार्थियों को लेकर आ रही है। तब तक मैंने अपनी सीट खोज ली। वह भी बड़ी मुश्किल की पूरी असुविधा पूर्ण सीट थी– 'साइड मिडिल'। यह 'साइड मिडिल' बर्थ अभी–अभी का एक नया नाम था, रेल मंत्री की ईज़ाद थी यह बर्थ।

इस पूरे कोच में मैं अकेली महिला थी। मेरे बैठते ही एक वयोवृद्ध सरदारजी ने पूछा, 'किथ्थे जाणा है पैणजी ? 'मैंने कहा, 'भोपाल।' फिर किसी एक दूसरे सरदारजी ने पूछा– 'कब्बे आवेगा ?' मैंने बताया, 'रात के अभी बारह बजे। तीसरा प्रश्न था, अक्केली होजी, साथ में कोई मरद बंदा है ? मैंने कहा, 'अकेली ही हूँ।' इतने बड़े डिब्बे में मैं अकेली महिला थी, कुछ मन डरा तो, पर मैंने साहस कर विषय परिवर्तन कर कहा, अरे यह क्या हुआ ? साइड में मिडिल बर्थ, इंसान तो फँस ही जाए। यह तो मंत्री जी ने सरदारों की तौहीन कर दी। इस गाड़ी में लगभग सभी सरदारजी लोग ही तो चढ़ते हैं, देश की आन–बान–शान, ऊँचे पूरे सरदारजी और बर्थ इतनी छोटी, अब मैं भी चढ़ूँ तो कैसी ?'

मंत्री जी और सरदारों की बात सुनकर लोगों को बड़ा मज़ा आ गया चार–छह सरदार भाई मेरे पास आकर बोले– 'वो पैणजी, डर मत, बैठ। पैले तो लंगर दा परसाद पा।' तब तक गाड़ी में बाल्टी लेकर कुछ सरदारजी आ गए। वे सबको खिचड़ी परोस रहे थे। वे मेरे पास भी आए। मैंने भी अपना खाली डिब्बा खोला, उसमें खिचड़ी ली और हाथ में रोटियाँ। मेरे लिए तो सच में नानक देव जी का वह प्रसाद अमृत था। मेरे पास खाने को कुछ था भी नहीं। मैं तो महेश्वर से इस आशा में चली थी कि खण्डवा में भाई के घर जाकर भोजन करूँगी, फिर स्टेशन आऊँगी; किन्तु मेले की वजह से बसों में जगह नहीं मिल पाई और सीधे स्टेशन आना पड़ा था, बस देर से मिली, तो घर भी नहीं जा पाई थी। सब डिब्बों में लंगर का प्रसाद बँटा, तब जाकर गाड़ी चली। एक वृद्ध सरदारजी मेरे पास आकर बैठे। उन्होंने मुझसे पूछा, 'पैणजी, अक्केली रात में किथ्थे से आसी, किथ्थे जासी ?' उन्होंने विनोद में कुछ और भी प्रश्न किए। मैंने उन्हें बताया, 'यहाँ से कुछ दूरी पर महेश्वर नामक एक तीर्थ स्थान है। वहाँ पर हर वर्ष कार्तिक पूर्णिमा को एक कवि सम्मेलन होता है, मैं उसी में गई थी।' कुछ और लोग मेरे नज़दीक आकर बैठ गए। उन्होंने बड़े अचरज से पूछा, 'तुस्सी कविता बाँचदा पैणजी ?' मैंने कहा, 'हाँ।' तब और कुछ लोगों की जिज्ञासा मेरे प्रति बढ़ी। किसी ने पूछा, 'अच्छा, तो तुस्सी राइटर हो–ज्जी ?' बहुत चर्चा चली। बीच में किसी ने कहा, 'पैणजी, तुस्सी तो तल्ले बैठो और कविता बाँचो।' फिर तो उन्होंने मुझे अपने साथ ही भोजन करवाया और फिर बड़ी बढ़िया चर्चा–वार्ता चली। मैंने भी उनसे उनके नाँदेड़ हुज़र साहिबजी की चर्चाएँ सुनी।। श्रद्धा, भक्ति और आस्था का सैलाब उमड़ रहा था। मन गुरु कृपा में रमने लगा।

एक वयोवृद्ध बड़े सरदारजी उन सबके मुखिया थे। उन्होंने कहा, 'पैणजी, तल्ले बर्थ पर फैल जाओ। हमारे जवान बंदे जाग रहे हैं। भोपाल आवेगा, तो तुस्सी जगा देंगे। कोई बंदा लेण आवेगा।' मैंने बताया, 'मेरे पति मुझे लेने आएँगे। मैं सोई तो नहीं, युवा सरदारों की मस्ती का आनन्द लेती रही। बारह बजने को आए। जाने क्या हुआ, गाड़ी कुछ तो बीच–बीच में रुकती रही और इटारसी के पहले जंगल में पौने दो घण्टे खड़ी रही। बड़े सरदारजी भाई ने पूछा– 'पैणजी, दो बजण वाले हैं। तेरा टेशन तो अभी नहीं आया। अब इतनी रात हम तेरे को टेशन पर नहीं उतारेंगे, कोई लेण नहीं आया होयगा तो तेरे को हम अमृतसर अपने घर ले जायेंगे। फिर दो सरदार बंदे पहुँचा जाएँगे तेरे को, तेरे घर।' मैं हँसती रही। फिर वे बोले, तेरा मन नई मानदा तो हममें से कोई दो सरदार उतर कर तेरे के तेरे घर छोड़कर आवेंगे और काल दूसरी ट्रेन से अमृतसर आ जावेंगे। बस, इन्हीं प्रश्नोत्तर और हास–विनोद के चलते लगभग तीन बजे गाड़ी भोपाल स्टेशन पर रुकी। मुझे जगाने टीसी भी आ गया। मैं उतरने को खड़ी हुई, तो लगभग छह सरदार भाई मेरे आगे पीछे डिब्बे से निकल कर नीचे उतरे और पूछा, पैणजी, इस भीड़ में किथ्थे है तुम्हारा सरदार ? इतनी देर में मेरे पति मेरे पास आ गए। बड़े सरदार भाई ने कहा, पैणजी, जब तक हमें तसल्ली नहीं होवेगी, तब तक हम तेरे को टेशन पर अकेले नहीं छोडेंगेजी।' मैने अपने पति से हँसकर बात की। सरदार भाई ने मेरे पति से पूछा, 'ये कौण है, तुस्सी जाणते क्या ?' मेरे पति ने भी बड़े विनोद से कहा, 'आपके जीजा की पत्नी, आपकी पैण।' फिर भी उन्होंने कहा, 'इतनी–सी बात पर भरोसा करके हम इसे टेशण पर आधी रात में नई छोड़ेंगेजी। आप तो बताओ, 'ये किथ्थे से आ रई है, क्या करण गई थी'। मेरे पति ने बताया, 'यह महेश्वर में कवि सम्मेलन में कविता पाठ करने गई थी। खण्डवा से ट्रेन में चढ़ी। टिकट मैंने ही बुक कराया था। तभी सब सरदार भाई ठहाका मारकर हँस पड़े। पर बड़े सरदार भाई बोले, 'अगर आप हमारी बात का सही जुबाब नई देते, तो हम दो सरदार आपके साथ जरूर जाते या पिच्छा गाड़ी में चढ़ा लेते जी, पर अकेले स्टेशण पर नहीं छोड़ते। मेरे पति ने उनका हाथ पकड़कर अपने सिर से लगाया और बोले, आप हमारे घर चलो। हमारा अहोभाग्य। आप लोग तो देश और मानव जाति के रक्षक है। आप तो हिन्द की आन, बान और शान हो। मानवता के पुजारी, इंसानियत की मिसाल हो।

एक सरदार भाई ने मेरे पति को यह भी बताया– 'पैणजी को हमने लंगर का परसाद भी खिलाया और ये डिब्बा में परसाद घर के लिए भी लाई है। तुस्सी भी खा लेना।' इतने में गाड़ी चलने को हुई, सब गाड़ी में चढ़ गए। हमने उन्हें बिदा किया हम खड़े–खड़े उन्हें तब तक देखते रहे, जब तक गाड़ी हमारी नज़रों से ओझल नहीं हो गई। हम घर आए। हम श्री गुरु नानक देव जी के प्रसाद में उनके साक्षात् दर्शन कर रहे थे। हमें अन्दर से एहसास हुआ– 'अच्छे लोगों से धरती अभी भी भरी पड़ी है। उन सरदार भाइयों का मेरे पास न तो नाम है, न धाम है, न पता है, पर वे सब मेरी आत्मा में आज भी जस के तस बसे हुए हैं। ऐसे महान् सरदार, जो भगवान् नानक देव जी के सच्चे चेले हैं, सद्गुरु देव के सच्चे भगत है, मै उन्हें कैसे भूल सकती हूँ। उन्हें बार–बार मेरा नमन।

–13, समर्थ परिसर, ई–8एक्सटेंशन, बावड़िया कला, पोस्ट ऑफिस त्रिलंगा,
भोपाल– 462039 (म.प्र.), मो. 9424440377

म.प्र. जनसंपर्क संचालनालय की पत्रिका म.प्र. संदेश से साभार

■

आलेख

गुरु नानक देव की जयंती का 550वाँ प्रकाश पर्व प्रदेश की खुशहाली और समाज में सद्भाव की अरदास

– अदिति पटेल

मुख्यमंत्री श्री कमल नाथ ने महान संत गुरुनानक देव की 550वीं जयंती के पुण्य अवसर पर मध्यप्रदेश की समृद्धि, सम्पन्नता, विकास और खुशहाली के साथ-साथ समाज के सभी वर्गों और सर्वधर्मों के अनुयाइयों के बीच समभाव के लिए अरदास की। मुख्यमंत्री श्री नाथ ने गुरुनानक देव की 550वीं जयंती पर आयोजित प्रकाश पर्व पर भोपाल के हमीदिया रोड स्थित नानक सर गुरुद्वारा पहुँचकर पवित्र श्री गुरुग्रंथ साहिब के सामने माथा टेका और प्रदेश के सभी लोगों के मंगल, कल्याण और खुशहाल जिंदगी की प्रार्थना की। उन्होंने जन और समाज से गुरुनानक देव के, सिद्धांतों और आदर्शों को अपनाते हुए उनके दिखाए मार्ग पर चलने का आव्हान किया।

इस अवसर पर गुरूद्वारा प्रबंधक कमेटी के सचिव अमरीक सिंह ने मुख्यमंत्री श्री कमल नाथ के प्रति कृतज्ञता जाहिर करते हुए कहा कि मध्यप्रदेश के इतिहास में पहली बार है जब गुरुनानक देव जयंती के प्रकटोत्सव पर आयोजित प्रकाश पर्व पर सभी शासकीय इमारतों पर रोशनी करके प्रकाश पर्व को वास्तविक अर्थ दिया गया है। श्री सिंह ने जबलपुर में 20 करोड़ रुपए की लागत से संग्रहालय एवं अनुसंधान की स्थापना किए जाने और सिख-समाज के हित में लिए गये अनेक महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए मुख्यमंत्री श्री कमल नाथ के प्रति आभार व्यक्त किया।

मुख्यमंत्री श्री कमल नाथ का नानक सर गुरुद्वारा में शाल-श्रीफल से सम्मान किया गया।

मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना में करतारपुर साहिब शामिल

राज्य शासन द्वारा मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना की सूची में करतारपुर साहिब (पाकिस्तान) को शामिल किया गया है। अध्यात्म विभाग द्वारा मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना नियम 2012 में संशोधन कर वर्तमान तीर्थ-स्थलों की सूची में करतारपुर साहिब को जोड़ने सम्बन्धी आदेश जारी किए गए।

मुख्यमंत्री श्री कमल नाथ ने 550वें प्रकाश पर्व पर दी नागरिकों को बधाई

मुख्यमंत्री श्री कमल नाथ ने सिख धर्म के संस्थापक संत गुरुनानक देव जी के 550वें प्रकाश पर्व के अवसर पर नागरिकों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ दी हैं।

श्री कमल नाथ ने शुभकामना संदेश में कहा कि संत गुरुनानक देव जी ने मानवता की सेवा करने का जो संदेश वर्षों पहले दिया था, उसका महत्व आज और ज्यादा बढ़ गया है। उन्होंने कहा था कि सभी मनुष्य समान हैं, चाहे वे किसी भी धर्म, जाति, सम्प्रदाय में जन्मे हों। श्री कमल नाथ ने कहा कि आज इसी संदेश को आगे बढ़ाते हुए समाज में धार्मिक और सांस्कृतिक सौहार्द्र स्थापित करने की आवश्यकता है।

जनसम्पर्क मंत्री पी.सी. शर्मा ने गुरुनानक देव जी की जयंती पर दी बधाई

जनसम्पर्क मंत्री श्री पी.सी. शर्मा ने गुरुनानक देव जी के 550वीं जयंती के अवसर पर गुरुनानक जी के योगदान का स्मरण करते हुए सिख भाइयों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि गुरुनानक देव जी दार्शनिक, समाज सुधारक, कवि, गृहस्थ और योगी थे। उनकी शिक्षा और विचार सभी को ईमानदार और सदाचारी बनना सिखाते हैं। गुरुनानक जी का सार्वभौमिक संदेश 'सभी मानव जाति को एक मानो' अपने आप में महत्वपूर्ण है। मंत्री श्री शर्मा ने कहा कि गुरुनानक देव जी की शिक्षा का पालन करते हुए सिख समुदाय मानवता की सेवा में अपना योगदान दे रहा है।

मुख्यमंत्री श्री कमल नाथ को गुरुद्वारा के मुख्य ग्रंथी ज्ञानी गुरभेज सिंह ने शाल भेंट कर सम्मानित किया। गुरु द्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रमुख सरदार परमवीर वजीर ने मुख्यमंत्री श्री नाथ को स्मृति चिन्ह भेंट किया।

कमेटी द्वारा जनसंपर्क मंत्री श्री पी.सी. शर्मा और मीडिया समन्वयक श्री नरेन्द्र सलूजा का भी शाल भेंटकर सम्मान किया गया।

मुख्यमंत्री श्री कमल नाथ ने कहा कि श्री गुरुनानक देव जी के 550वें प्रकाश पर्व को मनाने के लिए गठित यह समिति स्थाई रूप से काम करेगी।

हमारी मंशा है कि समिति सिर्फ प्रकाश पर्व के आयोजन तक सीमित न रहे, बल्कि इसके बाद भी निरंतर सक्रियता से सिख समाज के बीच काम करती रहे। श्री कमल नाथ ने समिति के संयोजक एवं सदस्यों से आग्रह किया कि वे प्रदेश में निवासरत सिख समाज के लोगों से निरंतर सम्पर्क करें और उनकी समस्याओं तथा सुझावों से सरकार को अवगत कराएँ। इसके आधार पर सरकार निर्णय लेगी।

श्री गुरुनानक देव जी की स्मृति में जबलपुर में बनेगा संग्रहालय ओर शोध संस्थान

मुख्यमंत्री श्री कमल नाथ की अध्यक्षता में गठित समिति की बैठक में निर्णय लिया गया है कि श्री गुरुनानक देवजी के 550वें गुरुप्रकाश पर्व पर जबलपुर में 20 करोड़ रुपए की लागत से सिख संग्रहालय और शोध केन्द्र बनाया जाएगा। इसके साथ ही श्री गुरुनानक देव जी की यादों से जुड़े प्रदेश के छह प्रमुख सिख धर्म स्थलों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए 12 करोड़ रुपए दिए जाएँगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि श्री गुरुनानक देव जो की यादों से जुड़े मध्यप्रदेश में भोपाल स्थित टेकरी साहिब, इंदौर के इमली साहिब, बेटमा साहिब, ओंकारेश्वर स्थित गुरुद्वारा, उज्जैन का गुरुनानक घाट गुरुद्वारा एवं जबलपुर के ग्वारी घाट गुरुद्वारे में विकास कार्य एवं सुविधाओं के विस्तार के लिए राज्य सरकार 2-2 करोड़ रुपए देगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि श्री गुरुनानक देव जी की यादों से जुड़े इन स्थलों को धार्मिक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा।

मुख्यमंत्री श्री कमल नाथ ने बताया कि श्री गुरुनानक देव जी के 550वें प्रकाश पर्व पर 12 नवम्बर को प्रदेश के प्रमुख शासकीय कार्यालयों, मंत्रालय और विधानसभा पर भी विद्युत सज्जा करने, प्रदेश के सभी गुरुद्वारों में विशेष साफ-सफाई के साथ सभी आवश्यक प्रबंध और गुरुद्वारों के पहुँच मार्गों को दुरुस्त करने के निर्देश दिए। प्रकाश पर्व पर प्रदेश में स्वास्थ्य शिविर लगाने और सेमिनार आयोजित करने का निर्णय हुआ। प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों में श्री गुरुनानक देव जी के नाम पर पीठ की स्थापना की जाएगी। श्री गुरुनानक देव जी की याद में खेलकूद प्रतियोगिताएँ आयोजित करने का भी फैसला लिया गया। श्री कमल नाथ ने कहा कि यह तो अभी शुरुआत है, सिख गुरुओं की यादों को चिरस्थायी बनाने के लिए और सिख समाज की बेहतरी के लिए कई कार्य करेंगे।

प्रकाश पर्व को समर्पित विशेष ट्रेनें

श्री गुरुनानक देव जो के 550वें प्रकाश पर्व के लिए शासन द्वारा गठित समिति के संयोजक नरेन्द्र सलूजा ने बताया कि मुख्यमंत्री श्री कमल नाथ के निर्देश पर श्री गुरुनानक देव जी के 550 वें प्रकाश पर्व को समर्पित विशेष ट्रेन अगले चरण में प्रसिद्ध सिख धार्मिक तीर्थ स्थल महाराष्ट्र के नांदेड़ स्थित सचखंड साहिब, पंजाब के आनंदपुर साहिब व दमदमा साहिब व हिमाचल प्रदेश के पोटा साहिब के लिए चलेगी।

यात्रा का कार्यक्रम

1. सचखंड साहिब, नांदेड़ (महाराष्ट्र) के लिए इंदौर से 28नवंबर को यह विशेष ट्रेन चलेगी।
2. पंजाब स्थित आनंदपुर साहिब के लिए विशेष ट्रेन जबलपुर से 9 दिसंबर को चलेगी।
3. पोंटा साहिब, हिमाचल प्रदेश के लिए भोपाल के हबीबगंज से विशेष ट्रेन 15 दिसंबर को चलेगी।।
4. दमदमा साहिब, पंजाब के लिए विशेष ट्रेन रीवा से 21 दिसंबर को चलेगी।

ट्रेन यात्रा का कार्यक्रम

- नांदेड के लिए ट्रेन 28नवंबर को इंदौर से रवाना होगी। एक दिसंबर को ट्रेन की वापसी होगी। देवास, उज्जैन व सीहोर में ट्रेन का स्टॉपेज रहेगा।
- पंजाब के आनंदपुर साहिब के लिए ट्रेन जबलपुर से 9 दिसंबर को रवाना

पटना साहिब के लिये पहली विशेष तीर्थ दर्शन ट्रेन

जनसम्पर्क तथा धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व मंत्री श्री पी.सी. शर्मा ने 3 नवम्बर, 2019 को हबीबगंज रेल्वे स्टेशन से सिख तीर्थ पटना साहिब के लिए पहली विशेष तीर्थ दर्शन ट्रेन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। ट्रेन से भोपाल, सागर, रायसेन, होशंगाबाद जिले के 1000 से अधिक श्रद्धालु तीर्थ यात्रा पर रवाना हुए।

मंत्री श्री शर्मा ने तीर्थ यात्रियों से कहा कि मुख्यमन्त्री श्री कमल नाथ ने तीर्थ दर्शन योजना में सभी धर्मों के धार्मिक स्थल को सम्मिलित किया है। श्री शर्मा ने ट्रेन के सभी कोच में पहुँचकर तीर्थ यात्रियों का फूल मालाओं से स्वागत किया। साथ ही ट्रेन में अटेंडर स्टाफऔर चिकित्सक से मिले तथा रसोई आदि की व्यवस्था का निरीक्षण किया। इस अवसर पर श्री नरेन्द्र सलूजा, पार्षद श्री योगद्र सिंह चौहान और श्री अमित शर्मा सहित बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

दरबार साहिब के दर्शन की चाहत हुई पूरी

'बोले सो निहाल सतश्री अकाल', 'वाहे गुरु दी खालसा वाहे गुरु दी फतह' के जय घोष तथा ढोल-नगाड़ों की गूँज के साथ पिछले दिनों मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना की स्पेशल ट्रेन जब जबलपुर से अमृतसर के लिए रवाना हो रही थी तब यहाँ के मुख्य रेल्वे स्टेशन का नजारा पंजाबी रंग में रंगा दिखाई दे रहा था। यात्रा पर गए सभी बुजुर्गों ने गुरुनानक देव साहिब के 550वें प्रकाश पर्व के अवसर पर दरबार साहिब के दर्शन कराने की उनकी वर्षों की मनोकामना पूरी करने पर मुख्यमंत्री श्री कमल नाथ की खुले-दिल से तारीफकी है। इस स्पेशल ट्रेन को प्रदेश के वित्त मंत्री श्री तरुण भनोत ने सुबह तकरीबन 8बजे पूजा-अर्चना कर मुख्य रेल्वे स्टेशन के प्लेटफार्म क्रमांक-छह से रवाना किया। तीर्थ यात्रा में शहर के ऐसे कई बुजुर्ग भी शामिल हुए जो वर्षों से इस पवित्र स्थल की यात्रा का सपना संजोए थे, लेकिन परिवार के सदस्यों की व्यस्तता के कारण यह पूरा नहीं हो पा रहा था।

ऐसे ही तीर्थ यात्रियों में श्रीमती रामकुमारी खेत्रपाल ने दरबार साहिब के दर्शन करने की चाहत पूरी करने के लिए मुख्यमंत्री श्री कमल नाथ की तारीफ की। उन्होंने कहा कि श्री कमल नाथ की वजह से ही हमें अपने पवित्र धाम के दर्शन का अवसर मिल रहा है। शक्ति नगर निवासी 65 वर्षीय मेवा सिंह ने भी स्वर्ण मंदिर में अरदास पूरी करने की ख्वाहिश के लिए मुख्यमंत्री के प्रति आभार जताया।

मदन महल निवासी सरदार त्रिलोचन सिंह ने मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना में जबलपुर से अमृतसर की तीर्थ यात्रा के लिए स्पेशल ट्रेन रवाना करने का निर्णय लेने के लिए श्री कमल नाथ को साधुवाद दिया। सरदार त्रिलोचन सिंह ने कहा कि जबलपुर में सिक्ख समाज बड़ी संख्या में

है और वहाँ से अमृतसर की तीर्थ यात्रा के लिए ट्रेन रवाना कर सरकार ने अच्छा कदम उठाया है। इससे सिक्ख धर्म को मानने वाले कई परिवारों के बुजुर्गों की स्वर्ण मंदिर के दर्शन करने और परिक्रमा करने की कामना पूरी हो रही है। अमृतसर की तीर्थ यात्रा पर गई श्रीमती कमला जैसवानी और स्वर्णप्रीत कौर ने भी अन्य सभी तीर्थ यात्रियों की तरह सिक्खों के प्रमुख तीर्थ स्थल अमृतसर के लिए स्पेशल ट्रेन रवाना करने पर सरकार को साधुवाद दिया। श्रीमती स्वर्णप्रीत कौर ने दीपावली के पर्व पर इस विशेष यात्रा का अवसर प्रदान करने के लिए सिक्ख संगत की ओर से मुख्यमंत्री श्री कमल नाथ को तहेदिल से शुक्रिया अदा किया।

-आनंद जैन

होगी। ट्रेन 12 दिसंबर को वापस आएगी। इसका स्टापेज नरसिंहपुर इटारसी, होशंगाबाद रहेगा।

- पोंटा साहिब के लिए ट्रेन भोपाल के हबीबगंज स्टेशन से 15 दिसंबर को रवाना होगी। ट्रेन की 18दिसंबर की वापसी होगी। ट्रेन का स्टॉपेज विदिशा, दतिया, ग्वालियर रहेगा।
- दमदमा साहिब के लिए ट्रेन रीवा से 21 दिसंबर को रवाना होगी। ट्रेन 24 दिसंबर को वापस आएगी। इस ट्रेन का स्टॉपेज सतना, कटनी, सागर रहेगा।

मुख्यमंत्री श्री कमल नाथ के निर्देश पर पूर्व में भी 22 अक्टूबर को जबलपुर से एक विशेष ट्रेन दरबार साहिब अमृतसर के लिए जा चुकी है, साथ ही 3 नबंबर को दूसरी विशेष ट्रेन भोपाल से बिहार के पटना साहिब के लिए जा चुकी है। इसके बाद अगली विशेष ट्रेन पाकिस्तान स्थित सिखों के प्रसिद्ध धार्मिक स्थल करतारपुर साहिब के लिए जाएगी।

बैठक में समिति के सदस्यों ने मुख्यमंत्री का इस बात के लिए आभार व्यक्त किया कि वे पहले मुख्यमंत्री है जिन्होंने न केवल श्री गुरूनानक देव जी के प्रकाश पर्व को भव्य रूप से मनाने का निर्णय लिया बल्कि प्रदेश भर के सिख प्रतिनिधियों को बुलाकर सीधी चर्चा की। होशंगाबाद से आए जसपाल सिंह भाटिया ने मुख्यमंत्री गो-संरक्षण प्रोजेक्ट के लिए इटारसी में गौ-शाला निर्माण के लिए अपनी एक एकड़ भूमि देने की घोषणा की। बैठक में बताया गया कि श्री गुरुनानक देव जी के प्रकाश पर्व को समर्पित करते हुए इंदौर में शेरे पंजाब, सिखों के महाराजा रणजीत सिंह की प्रतिमा स्थापित की जाएगी।

बैठक में केन्द्रीय गुरुसिंह सभा मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ के अध्यक्ष श्री गुरदीप सिंह भाटिया, सचिव केन्द्रीय गुरूसिंह सभा मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ श्री सुरजीत सिंह टुटेजा, इंदौर गुरु सिख सभा के महासचिव सदस्य श्री जसबीर सिंह गांधी, उज्जैन के श्री सुरिन्दर सिंह अरोरा, अध्यक्ष गुरुसिंह सभा भोपाल श्री परमवीर सिंह वजीर, अध्यक्ष गुरुसिंह सभा सागर श्री सतिंदर सिंह होरा, सदस्य जबलपुर श्री नरेन्द्र सिंह पांधे, अध्यक्ष गुरुद्वारा फूलबाग, ग्वालियर श्री गुरुचरण सिंह आजमानी, सदस्य खरगोन श्री मंजीत सिंह चावला, सदस्य होशंगाबाद श्री जसपाल भाटिया, सदस्य रीवा श्री गुरमीर सिंह मंगू, सदस्य श्री दिलीप राजपाल, सचिव मढ़ाताल गुरुद्वारा जबलपुर श्री गुरुदेव सिंह रील, श्री तेजपाल सिंह पाली भोपाल एवं श्री संतोष सिंह सोहल ग्वालियर ने बैठक में अपने सुझाव रखे और मुख्यमंत्री के इन ऐतिहासिक निर्णयों के लिए आभार माना।

मध्यप्रदेश जनसंपर्क की पत्रिका
मध्य प्रदेश संदेश से साभार

■

आलेख

नानक की तत्वमय लोक व्याप्ति

डॉ. श्री कृष्ण जुगनू

सिद्धों, नाथों और गुरुओं का प्रभाव भारतीय जन जीवन में कुछ इस तरह व्याप्त रहा है कि लोकनीति और राजनीति भी उनसे अलग नहीं रही। अवतारवाद के साथ जिस धर्म स्थापना की बात कही जाती है, वह लोक का नियमन है और इस लोक अभ्युदय के लिए विभूति का आगमन या उदय एक नियम सम्मत घटना होती है। गुरुओं से इस तरह की अनेक घटनाएँ जुड़ी हैं जो उनके मत के महत्व और सत्व के अपनत्व की परिचायक होती हैं। शासकों, सामंतों और प्रभु वर्ग ने गुरुओं को शीर्ष आदर दिया है।

नव नाथ से आगे दस गुरु:

हमारे यहाँ नौंवी तिथि, नन्दगृह आनंद, नव कुलीनाग, नागनाथन जैसी मान्यताओं के साथ नाथ जुड़े रहे हैं और आगे दस गुरु की मान्यता सिख प्रभाव के साथ व्याप्त होती रही हैं। नाथों ने आचार और आचरण में अपनाई गई वाणियों को शब्द नाम दिया, गुरुओं ने भी वही नाम दिया। यह शब्द केवल वर्णों का पुंज नहीं है बल्कि ज्ञानात्मक निर्देश भी हैं। हमें याद रखना चाहिए कि सिद्ध अपना शबद देते हैं। सिद्ध मातृका से आगे नाथों का जाया, उपजाया शबद किसी भी श्लोक, ऋचा और मंत्र से अधिक सम्मान्य होता है। यह अनुष्ठान से धारण किया जाता है और फिर जीवन के प्रत्येक कार्य शबदमय होते हैं। सारे शबद गोरख के कहे अनुसार होते हैं और विष निवारक औषधि की तरह काम करते हैं। ये धारकों को आग पर भी नचा देते हैं और कानों में चीरे की विधि से निरापद मुद्रा धारण करवा सकते हैं। ऐसे सैकड़ों शबद मैंने इकटठे किए हैं जिनमें ऊँ के बाद सीधे गुरु को सम्मान है और अंत में नाथ आदेश है। गुरुओं ने हर विशेषता को जनता के लिए परीक्षित कर माना और सहज बात को स्वीकारने की बात कही। अंगों के रूप में शब्दों को ग्रंथित किया. और हर आचरण की सिद्धि शब्दों से संभव है, यह विश्वास किया।

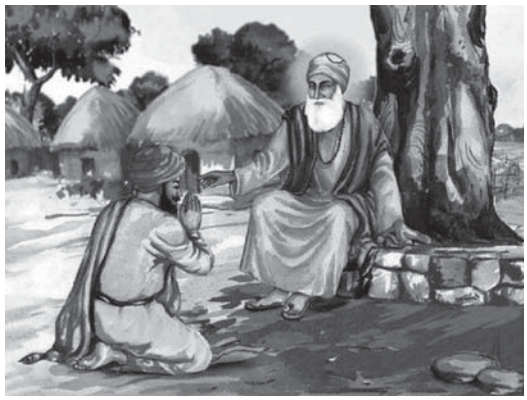

भारतीय जन जीवन में नानक के मत की प्रतिष्ठा में नाथों से शास्त्रार्थ की जो मान्यता है, वह अधिक पुरानी तो नहीं लेकिन यह जरूर बताती है, नाथोत्तर अवधि को गुरुओं ने प्रभावित किया सब समाज सुधारकों, महा पुरुषों की गोरख नाथ के साथ गोष्ठियाँ हैं। कबीर, दत्तात्रेय और नानक तो क्या, शिव और गणेश की भी गोरख संग गोष्ठी हैं। नानक और गोरख गोष्ठी में चमत्कार से अधिक आत्मिक प्रसंग है। (गाँव-गाँव गोरख, नगर नगर नाथ, आर्यावर्त संस्कृति संस्थान, दिल्ली, तृतीय अध्याय)

न्यारे, निराले आख्यानों में नानक:

नानक के जन आख्यान पूरे दक्षिण एशियाई देशों में सालों से लोकप्रिय रहे हैं। एक बार नानक एक गाँव के बाहर पहुँचे। वहाँ एक झोपड़ी बनी हुई थी। उसमें जो आदमी रहता था उसे कुष्ठ-रोग था। गाँव के सारे लोग उससे नफरत करते; कोई उसके पास नहीं आता था! कभी किसी को दया आ जाती तो उसे खाने के लिए कुछ दे देते अन्यथा भूखा ही पड़ा रहता! नानक देव उस कोढ़ी के पास गये और कहा- भाई हम आज रात तेरी झोपड़ी में रहना चाहते है अगर तुम्हें कोई परेशानी ना हो तो? कोढी हैरान हो गया क्योंकि उसके तो पास भी कोई आना नहीं चाहता था फिर उसके घर में रहने के लिए कोई राजी कैसे हो गया?

कोढ़ी अपने रोग से इतना दुखी था कि चाह कर भी कुछ ना बोल सका, सिर्फनानक देव जी को देखता ही रहा। लगातार देखते-देखते ही उसके शरीर में कुछ बदलाव आने लगे पर कुछ कह नहीं पा रहा था।

नानक ने मरदाना को कहा- रबाब बजाओ! नानक ने उस झोपड़ी में बैठ कर कीर्तन करना आरम्भ कर दिया, कोढ़ी ध्यान से कीर्तन सुनता रहा। कीर्तन समाप्त होने पर कोढ़ी के हाथ जुड़ गए जो ठीक से हिलते भी नहीं थे। उसने नानक देव जी के चरणों में अपना माथा टेका।

नानक ने कहा- और भाई ठीक हो यहाँ गाँव के बाहर झोपड़ी क्यों बनाई है? कोढ़ी ने कहा- मैं बहुत बदकिस्मत हूँ मुझे कुष्ठ रोग हो गया है। मुझसे कोई बात तक नहीं करता। यहाँ तक कि मेरे घर वालों ने भी मुझे घर से निकाल दिया है। मैं नीच हूँ इसलिये कोई मेरे पास नहीं आता।

उसकी बात सुन कर नानक देव जी ने कहा- नीच तो वो लोग है जिन्होंने तुम जैसे रोगी पर दया नहीं की और अकेला छोड़ दिया। आ मेरे पास मैं भी तो देखूँ, कहाँ है तुझे कोढ़? जैसे ही कोढ़ी नानक देव जी के नजदीक आया तो प्रभु की ऐसी कृपा हुई कि कोढ़ी बिल्कुल ठीक हो गया। यह देख वह नानक देव जी के चरणों में गिर गया।

गुरु ने उसे उठाया और गले से लगा कर कहा- प्रभु का स्मरण करो और लोगों की सेवा करो, यही मनुष्य के जीवन का पहला कार्य है।

नानक की लोक व्याप्ति:

नानक देव अपने प्रेरक प्रसंगों से जन-जन में जाने गए हैं और नानक देव को जानने की जिज्ञासा उनकी कुछ जीवंत घटनाओं के माध्यम से शांत हो सकती हैं। कुछ बहुत प्रसिद्ध प्रसंग है और वे नानक के तत्व भाव को समझने में मदद करते हैं।

रोती माता और बच्चा:

यह बाबा नानक देव के बचपन की बात है एक दिन वे दूसरे मोहल्ले में चले गये। एक घर के बरामदे में महिला बैठी थी और रो रही थी। नानक ने उससे रोने की वजह पूछी। महिला की गोद में एक नवजात बच्चा था। महिला ने रोते हुए कहा– ये मेरा बेटा है मैं इसके नसीब पर रो रही हूँ; कहीं और जन्म ले लेता तो कुछ दिन जिंदा रह लेता पर इसने मेरे घर जन्म लिया और अब ये मर जायेगा। नानक जी ने पूछा– किसने कहा कि यह मर जाएगा ? महिला ने जवाब दिया कि अब से पहले उसके जितने बच्चे हुए कोई नहीं बचा।

नानक जी ने बच्चे को गोद में उठाया और कहा– इसे तो मर जाना है ना ? आप इस बच्चे को मेरे हवाले कर दो महिला ने हामी भर दी और नानक जी ने बच्चे का नाम मरदाना रखा। नानक जी बोले– अब से यह मेरा है मैं अभी इसे आपके पास छोड़ रहा हूँ आगे जब इसकी जरूरत पड़ेगी मैं इसे ले जाऊँगा। यह कहकर नानक जी बाहर चले गए। उस बच्चे की मृत्यु नहीं हुई; यह बच्चा आगे चलकर नानक जी का परम मित्र और शिष्य बना।

लोभी आदमी और कुँए का पानी:

गुरु नानक देव अपने शिष्यों के साथ यात्रा किया करते थे। एक बार वह एक गाँव से गुजर रहे थे। उन्हें प्यास लगी, उन्हें पहाड़ी पर एक कुआँ दिखाई दिया। गुरु नानक ने शिष्य को पानी लेने के लिए भेजा लेकिन कुँए का मालिक लालची और धनी था वह पानी के बदले पैसे लिया करता था। शिष्य उस आदमी के पास तीन बार पानी माँगने गया और तीनों बार उसने इनकार कर दिया। तब गुरु नानक देव जी ने कहा कि ईश्वर हमारी मदद जरूर करेगा।

बताया जाता है कि इसके बाद नानक जी जहाँ खड़े थे वहीं मिट्टी खोदना शुरू कर दिया। थोड़ा ही खोदा था कि वहाँ से अचानक साफ पानी निकलने लगा। गाँव वाले भी यह देखकर हैरान रह गये। कुँए के मालिक को यह देखकर बहुत गुस्सा आ गया उसने अपने कुँए की तरफ देखा तो हैरान रह गया। कुँए का पानी कम होता जा रहा था जबकि नानक जी द्वारा किए गए गढ्ढे से पानी की धारा बह रही थी। गाँव वाले भी वहाँ पहुँचकर पानी लेने लगे।

कुँए के मालिक ने बाबा नानक को जोर से पत्थर फेंका लेकिन उन्होंने हाथ आगे किया तो पत्थर हाथ से टकराकर वहीं रुक गया। यह देख कुँए का मालिक नानक जी के चरणों पर आ गिरा तब गुरु जी ने उसे समझाया किस बात का घमंड ? तुम्हारा कुछ नहीं है कुछ करके जाओगे तो लोगों के दिलों में हमेशा जिंदा रहोगे।

नानक जी के आशीर्वाद का रहस्य:

गुरु नानक देव जी अपने शिष्यों के साथ एक गाँव पहुँचे। इस गाँव के लोग एक–दूसरे से दुर्व्यवहार करते थे। गाँव के लोगों ने नानक जी के साथ भी बुरा बर्ताव किया उनकी हँसी भी उड़ाने लगे। गुरु नानक देव जी ने गाँव वालों को दुर्व्यवहार ना करने के लिए समझाने की कोशिश की लेकिन उन पर कोई असर नहीं हुआ। जब गुरु जी वहाँ से जाने लगे तो उन्होंने लोगों को आशीर्वाद दिया– एक साथ एक जगह पर रहो।

नानक जी आगे एक दूसरे गाँव पहुँचे। वहाँ के लोगों ने उनकी खूब सेवा की। जब गाँव को छोड़ने का वक्त आया तब नानक जी ने आशीर्वाद में कहा– तुम सब उजड़ जाओ, उनके शिष्य हैरान रह गये। शिष्यों ने गुरु नानक देव जी से सवाल किया तब उन्होंने कहा– एक बात हमेशा ध्यान रखो सज्जन व्यक्ति जहाँ भी जाता है वह अपने साथ सज्जनता और अच्छाई लेकर जाता है। वह जहाँ भी रहेगा अपने चारों ओर प्रेम और सद्भाव का वातावरण बनाकर रखेगा। इसलिए मैंने सज्जन लोगों से भरे गाँव के लोगों को उजड़ जाने को कहा ताकि वे जहाँ भी जाएँ प्रेम का वातारण बनाकर रहें।

काबा में बाबा नानक की सीख:

धर्म प्रचार और समाज से बुराइयों को दूर करने के लिए नानक देव विदेशों की भी यात्रा करते थे ऐसे में एक दिन वह मक्का भी पहुँचे दिन भर घूमने के कारण नानक देव थक गये थे, लिहाजा सो गये। उसी समय इस्लाम को मानने वाले कुछ लोग वहाँ पहुँचे। उन्होंने नानक जी को जगाया और क्रोध में बोले कि तू कौन काफिर है जो अल्लाह के घर की तरफ पैर करके सो रहा है ? नानक जी ने शांति से जवाब दिया– मैं दिन भर का थका हुआ हूँ इसलिए सो गया और मुझे तो हर ओर ईश्वर नजर आता है तुम्हीं बताओ किस ओर पैर करके सोऊँ ?

इस पर उन लोगों को और गुस्सा आ गया। उन्होंने नानक जी के पैर पकड़कर काबा से उल्टी दिशा में घुमा दिया। जैसे ही वे नानक जी का पैर घुमाकर सीधे खड़े हुए उन लोगों ने देखा कि अब जिधर नानक जी के पैर थे काबा उसी ओर था। उन्हें लगा भ्रम हुआ उन लोगों ने फिर नानक जी का पैर उल्टी दिशा में घुमा दिया लेकिन फिर से काबा उसी ओर दिखने लगा जिस ओर नानक जी के पैर थे। अब उन्हें समझ आ गया था कि नानक जी कोई साधारण इंसान नहीं हैं लिहाजा उन लोगों ने माफी माँगी। इस घटना का जिक्र गुरु ग्रंथ साहिब में भी है।

पुरोहित और सच्चा यज्ञोपवित:

यह किस्सा भी नानक जी के बचपन से जुड़ा है उनके पिता कल्याणराय जी ने उनका यज्ञोपवीत करवाने के लिए अपने इष्ट सम्बन्धियों और परिचितों को निमंत्रित किया। बालक नानक को आसन पर बिठाकर जब पुरोहितों ने उन्हें कुछ मंत्र पढ़ने को कहा तो उन्होंने उसका प्रयोजन पूछा। पुरोहित समझाते हुए बोले– तुम्हारा यज्ञोपवीत संस्कार हो रहा है धर्म की मर्यादा के अनुसार यह पवित्र सूत का डोरा प्रत्येक हिंदू को इस संस्कार में धारण कराया जाता है। धर्म के अनुसार यज्ञोपवीत संस्कार पूर्ण होने के बाद तुम्हारा दूसरा जन्म होगा इसलिए तुम्हें भी इसी धर्म में दीक्षित कराया जा रहा है।

तब नानक जी ने सवाल किया– मगर यह तो सूत का है क्या यह गंदा न होगा ? इस पर पुरोहितों ने कहा कि यह तो साफ भी हो सकता है फिर नानक जी ने पूछा– और टूट भी सकता है न ? इस पर पुरोहित बोले– हाँ पर नया भी तो धारण किया जा सकता है। नानक जी ने फिर कुछ सोचकर कहा– अच्छा मृत्यु के बाद यह भी तो शरीर के साथ जलता होगा ? यदि इसे धारण करने से भी मन आत्मा शरीर और स्वयं यज्ञोपवीत में पवित्रता नहीं रहती तो इसे धारण करने से क्या लाभ ? पुरोहित और अन्य लोग इस तर्क का उत्तर न दे पाये। तब बालक नानक बोले– यदि यज्ञोपवीत ही पहनाना है तो ऐसा पहनाओ कि जो न टूटे न गंदा हो और न बदला जा सके। जो ईश्वरीय हो, जिसमें दया का कपास हो, संतोष का सूत हो, ऐसा यज्ञोपवीत ही सच्चा यज्ञोपवीत है। पुरोहित जी क्या आपके पास ऐसा यज्ञोपवीत है ? सब अवाक रह गए क्योंकि किसी के पास इसका कोई उत्तर नहीं था। साधकजनों बाबा नानक का जीवन झील न बन कर तो आजीवन दरियावत बहता रहा।

– 40 राजश्री कॉलोनी, विनायक नगर, उदयपुर 313001 (राजस्थान)

नाज़िम हिकमत की कविताएँ

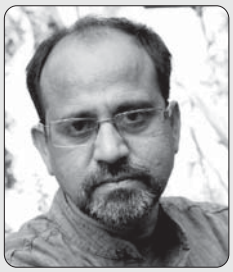

अनुवाद : मणि मोहन

प्रो. मणि मोहन अनुवाद के क्षेत्र में लंबे समय से सक्रिय हैं। अनुवाद के अलावा वे समकालीन हिंदी कविता के समर्थ कवि भी है। अनुवाद के माध्यम से वे हमें विश्व साहित्य की विरासत और हलचल से अवगत कराते रहते हैं।
सम्प्रतिः शा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय गंज बासौदा में अंग्रेजी के प्राध्यापक। मो.- 09425150346

नाज़िम हिकमत महत्वपूर्ण तुर्की कवि है और दुनियाँ की तमाम भाषाओं में उनकी कविताएँ अनुदित होकर विश्व पाठक तक पहुंची हैं। निजी तौर पर वे मेरे भी प्रिय कवियों में से एक हैं। उनकी अनेक कविताओं का मैंने भी अनुवाद किया है और महसूस किया है कि उनकी कविता आपको अनुवाद के लिए आमंत्रित ही नहीं बल्कि मजबूर करती है। पोस्ट वर्ल्ड वॉर परिदृश्य में उनकी कविताएँ (प्रेम कविताएँ भी) उस समय को हमें समझने में मदद करती हैं। विश्व कविता का अनुवाद करते हुए एक और बात जो मैंने महसूस कि वो यह कि इन तमाम बड़े कवियों (नेरुदा हो या नाज़िम हिकमत) का जीवन संघर्ष भी बड़ा रहा है जिसे पढ़ा जाना चाहिए, बल्कि कहूँ तो इनकी कविता पढ़ने से पहले इनके जीवन को पढ़ा जाना चाहिए। कविता को समझने के सूत्र यहीं कहीं बिखरे हुए आपको मिल जाएंगे। नाज़िम हिकमत को अपने ही मुल्क से बार-बार विस्थापित किया जाता रहा, जेल में डाला जाता रहा। विस्थापन की इस पीड़ा के समानान्तर ही अपने मुल्क के प्रति जो अनुराग और अतीतराग है, वह अद्भुत है।

पिंजरे में बन्द शेर

लोहे के पिंजरे में कैद इस शेर की तरफदेखो
जरा गहराई से झाँको इसकी आँखों में:
गुस्से से चमकते हुए
जैसे दो नग्न खंजर।
पर वो कभी भी अपना स्वाभिमान नहीं खोता
हाँलाकि उसका गुस्सा
आता है, जाता है
जाता और आता है।
पट्टे के लिए कहीं जगह नहीं दिखेगी तुम्हें
उसकी मोटी झबरी अयाल के इर्द-गिर्द।
हाँलाकि चाबुक के निशान
अभी भी चमक रहे हैं।
उसकी पीली पीठ पर
उसके लम्बे पैर
खुलते हैं, बन्द होते हैं।
ताँबे के शिकंजे के आकार में।
उसकी अयाल के बाल एक-एक कर उठते हैं।
उसके गर्वित सिर के इर्द-गिर्द

उसकी नफरत आती है, जाती है।
जाती और आती है।
कैदखाने की दीवार पर
मेरे भाई की परछाई
हिलती है।
ऊपर-नीचे
ऊपर और नीचे

मैं तुमसे प्रेम करता हूँ

मैं तुमसे प्रेम करता हूँ
जैसे खाता हूँ नमक लगी रोटी को
जैसे तेज बुखार के साथ जागता हूँ रात को
और मुँह से नल लगाकर पानी पीता हूँ
जैसे खोलता हूँ कोई भारी पैकेट
डाकिया से लेकर बिना अंदाज़ा
धुकधुकी, खुशी और संदेह के साथ
मैं तुमसे प्रेम करता हूँ
जैसे उड़ता हूँ समुद्र के ऊपर
हवाई जहाज में बैठकर पहली बार
जैसे कुछ बहता है मेरे भीतर
जब धीरे-धीरे घिरता है अँधेरा इस्तम्बूल में
मैं तुमसे प्रेम करता हूँ
जैसे शुक्रिया अदा करता हूँ ईश्वर का
हमारे होने का।

हमारी स्त्रियों के चेहरे

मरियम ने ईश्वर को जन्म नहीं दिया था।
मरियम ईश्वर की माँ नहीं है।
मरियम एक माँ है अन्य माँओं की तरह।
मरियम ने एक बेटे को जन्म दिया था
एक बेटा, अन्य बेटों के बीच ।
इसीलिए मरियम इतनी सुंदर है सभी तस्वीरों में
इसीलिए मरियम का बेटा
हमारे इतने करीब है,
जैसे अपने ही बेटे।
हमारी स्त्रियों के चेहरे
हमारी ही वेदनाओं की किताब है।
हमारे दुःख, हमारी गलतियां
और रक्त जो हम बहाते हैं।
निशान बना देते हैं उनके चेहरों पर
हल की तरह।
और हमारी खुशियाँ चमकती हैं।
स्त्रियों की आँखों में
जैसे सुबहें झिलमिलाती हैं झीलों में।
हमारी कल्पनाएँ दिखती हैं स्त्रियों के चेहरों पर
जिन्हें हम प्यार करते हैं।
हम उन्हें देखें या नहीं, वे हमारे सामने होती हैं।
बेहद करीब हमारे यथार्थ के
और बेहद दूर।

■

गीत

डॉ. राधेश्याम शुक्ल के गीत

डॉ. राधेश्याम शुक्ल

जन्म : 1942, ग्राम सेमरा, वाराणसी, उ.प्र.
प्रकाशन : पंखुरी-पंखुरी भरता गुलाब, त्रिविधा, एक बादल मन, त्रिकाल के गीत, कैसे बुनें चदरिया साधो, ज़रा सी प्यास रहने दे, देश राग ये सभी गीत संग्रह, दोहा संग्रह एवं ग़ज़ल संग्रह है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन
392, एम. जी. ए., हिसार (हरियाणा) 125001
दूरभाष : 9466640106

वर्तमान सियासी दौड़ में देश

फिर, सवालों के शहर में,
उठी शंकाएँ।
खंडहरों में,
आहटें है सल्तनत की
होड़ इतिहासी शिला पर,
दस्तख़त की।
लिख रहीं ख़त रोशनी को,
बुझी उल्काएँ।
शोर की लिपि में,
हवाओं की जुबानी,
छप रही है वक्त की
अंधी कहानी।
छल रही है राजपथ को,
नयी संज्ञाएँ।
हर दरो-दीवार पर,
आसीन भय है,

आँधियों के लौट आने का
समय है।
दिन हुए चंगेज,
सारी लाँघ सीमाएँ।

उमर बिता 'परदेस'

उमर बिता 'परदेस'
सदाशिव, जन्मभूमि आए।
सबसे मिले, मगर उनसे कोई भी नहीं मिला,
रात उनींदी, 'अनदेखी; से
करती रही गिला।
जल-जल बुझती चिलम,
रात भर फिर-फिर सुलगाए।
दिन भर, पहचानों की पोथी,
उलट-पुलट पढ़ते, ऊब गए-
रिश्तों की मनचाही मूरत गढ़ते।
ठंडी राख कुरेदी,चिनगी एक नही पाए।
नाम 'आदमी' के,
संवेदनहीन मिले चेहरे,
ऊँट चुराते मिले,
भद्रजन भी निहुरे-निहुरे।
तरसी बूढ़ी उमर,
कि कोई बोले-बतियाये।
महुवा, आम, नीम बँसवारी
खोजे नहीं मिले,
पुरखों के आशीष ढूँढ़ते,
पग-पग पाँव छिले।
इसको कभी कभी उसको,
सुधियों ने गुहराये
उमर बिता 'परदेस'
सदाशिव जन्मभूमि आए।

'जीवन' कितनी दूर

दर्दीला अखबार बाँच कर,
सुबह उदास हुई।
नित्य नय फतवे उछालते,
शब्दों का व्यापार
हर बस्ती हो गई कि जैसे
हो मछली बाज़ार।
धमधूसर परिवेश झेलते,
तेवर लचर हुए,
'खून' और 'आँसू' से लगभग
हम बेअसर हुए।
'जीवन' कितनी दूर
'मौत' अब कितने पास हुई।
खुली हुई आँखों में भी है,
उतरा मोतिया बिन्द,
धूप-रोशनी सब पर छाई,
नए किस्म की धुन्ध।
खेल-तमाशे, नये-पुराने,
कितने बाजीगर,
इन्हें ढो रही ऊब-ऊब कर,
छोटी-बड़ी उमर।
सभी आपाहिज हुए,
शहर में घटना खास हुई।

■

कविता

संतोष चौबे की कविताएँ

संतोष चौबे

जन्म : 1955, खंडवा (म.प्र.)
प्रकाशन : हल्के रंग की कमीज, रेस्त्रां में दोपहर, नौ बिन्दुओं का खेल, बीच प्रेम में गांधी, राग केदार, क्या पता कॉमरेड मोहन, जल तरंग तथा कथा मध्यप्रदेश एवं कथा देश का प्रकाशन एवं संपादन। रंग संवाद पत्रिका के प्रधान संपादक। रबिन्द्रनाथ टैगोर वि.वि. के चांसलर।
पता : प्लॉट नं. 7-8, सेवॉय सावन कॉलोनी, होशंगाबाद रोड, भोपाल-47
दूरभाष : 9826256733

नयी स्त्री की कविता

नयी स्त्री की कविता
उसकी आंखो में रहती है,
आंखो में रहते हैं सपने
और उन सपनों को पूरा करने की आशा
शायद आशा ही बदलती है अद्‌भुत रोशनी में
और रह रह कर चमकती है उन आंखो से.
अभी बाकी था दुनिया को जीतना
बाकी था डूबना प्रेम में
बाकी था प्रथम प्रेम का हास्यास्पद अटपटापन
और उसके साथ जीवन गुजारने की आकांक्षा.
कभी लगता कविता उसकी देह में है
जब वह चलती लहराकर नदी की तरह
या खिलखिलाती
सुबह की उजास की तरह
कविता उसकी देह से निकल
सब ओर बिखर जाती.
कभी लगता कविता उसके दिमाग में है
जब वह दुनिया के बारे में पाये
पहले पहले संज्ञान को
सलीके और बुद्धिमानी से
सबके सामने रखती नजर आती
जब वह जीत रही होती दुनिया
तमाम विपरीत परिस्थितियों के बीच
लहराती परचम
अपनी नौकरी, सफलता और प्रसिद्धि के
तब वह साक्षात् कविता ही नजर आती.
अब ये कहना शायद गद्यात्मक होगा
कि प्रत्येक नयी स्त्री को
कभी न कभी
तब्दील होना ही होता है पुरानी स्त्री में.
कितना भी छुपायें
यह पुरानापन उसकी उन्हीं आंखो से झांकता है
जिनसे झलकती थी कभी झिलमिल रोशनी.
फिर एक बार
कविता देती है गद्य को चुनौती
फिर एक नयी स्त्री आती है
बिल्कुल ताजा कविता की तरह.

पुरानी स्त्री की कविता

पुरानी स्त्री की कविता
उसके मन में रहती है.
मन में रहती है
बचपन की धुंधली सी याद
जैसे ओस में नहाये शीशे से झांकती कोई तस्वीर
माँ का उदास चेहरा
और उस चेहरे के पीछे छुपे
अगाध प्रेम और अतिशय चिंता.
शाला के दिनों की सहेलियाँ
और उनके साथ गुजरे बेसुध दिन
प्रथम प्रेम का गहरा अवसाद
और प्रेमी का भूलता सा चित्र
संदूक की तह में रखी कुछ चिट्टियाँ
और पुरानी किताबों के सफों में दबे कुछ पत्र.
नवविवाहित पति से पहले पहल किये
प्यार की लहराती लपट
और फिर उसके क्रमशः दूर जाने के सारे छल-कपट
तमाम कठिनाईयों के बीच चलती जिंदगी
और जिंदगी के छोटे बड़े संघर्ष
गिरने-उठने, बिखरने-सिमटने के कई-कई दृश्य
और उन दृश्यों के बीच उभरता आत्मा का उत्कर्ष.
अपनी माँ की तरह
वह भी करती है अपने बच्चों की चिंता
मनाती है उनके साथ खुशी
और इस तरह रखती है उन्हें
हवा की तरह हल्का
ढूंढती है अपने ही मन में
अपने रहने के लिये एक स्वायत्त जगह
और फिर फिर इसी दुनिया में लौट आती है.
पुरानी स्त्री की कविता
मृत्यु पर्यंत
उसके मन में ही रही आती है
बस पढ़ सकते हैं आप उसे किसी दिन
जब वह गुनगुनी धूप में अकेला बैठने के लिये
बरामदे में कुर्सी बिछाती है
या बचपन की किसी सहेली से बरसों बाद मिलने पर
बोलती बतियाती है.
जब कठिनाईयों के सामने वह चट्टान सी तन जाती
है या असीम दुख के क्षणों मे सबसे छुपकर
किसी कोने में
दो बूंद आंसू गिराती है.
बस ऐसे कुछ लमहों को छोड़
पुरानी स्त्री की कविता
कहीं लिखी नहीं जाती है
वह तो बस उसके मन में ही रही आती है.

■

ग़ज़ल

महेश कुमार शर्मा 'शर्मन' की ग़ज़लें

महेश कुमार शर्मा 'शर्मन'

जन्म : 28 नवम्बर, 1974, जालंधर, पंजाब
प्रकाशन : कलम की जुबाँ से (ग़ज़ल संग्रह), नए रास्ते नई मंज़िलें (संकलन), सपनों से हकीकत तक (संकलन), अपनी ज़मीं अपना आसमां (संकलन), पंजाब स्कूल शिक्षा की पाठ्य पुस्तकों के लिए निबंध लेखन।
पता: 234, अर्बन एस्टेट, कपूरथला, पंजाब-144601
दूरभाष : 9988110278

(एक)

क़लम की जुबां से सुनाता रहा हूँ,
दिलों की शमां को जलाता रहा हूँ।
क़लम की इबादत करूँ मैं हमेशा,
झुका सर इबारत बनाता रहा हूँ।
कहीं की कहीं पर नहीं जोड़ता मैं,
छुए दिल वही धुन बजाता रहा हूँ।
वफ़ा की, ज़फ़ा की, अदब की, सज़ा की,
फुगां भी क़लम से बताता रहा हूँ।
फ़सल ना उगी प्यार की उस ज़मीं पर,
खुले हाथ सरसों जमाता रहा हूँ।
सही है हरिक बात ही ग़ैर की भी,
सभी को गले से लगाता रहा हूँ।
दिलाते रहे लोग 'शर्मन' दिलासे,
ग़मों को धुएँ में उड़ाता रहा हूँ।

(दो)

मुहब्बत रंग लाये तू गुले-गुलजार हो जाये,
इशारा हाँ भरा तेरा मिले इजहार हो जाये।
चली ही जा रही है बीच सागर की हवाओं में,
कभी डूबे न यह कश्ती कि तू पतवार हो जाये।
सदा गाता रहूँ मैं गीत तेरी ही मुहब्बत के,
हमारी ख्वाब में भी ना कभी तकरार हो जाये।
खुदा बख्शे हमारी बात में ऐसी शफ़ा हमदम,
खड़े हों हम जहाँ भी उस जगह सरकार हो जाये।
बजें बाज़ार में डंके हमारी नेकनामी के,
फ़क़त ले लो हमारा नाम सच दरकार हो जाये।
करें जो बात हम उसका महत्व हो ज़माने में,
जुबां से बोल डालें जो वही अख़बार हो जाये।
खुदा का साथ है हरदम तभी 'शर्मन' सुरक्षित है,
रहम उसका मिले तो दास भी फ़नकार हो जाये।

(तीन)

लगा दो ज़ोर पूरा अब विफ़ल कोशिश न हो जाये,
कि तेरे सामने ही ग़ैर की साजिश न हो जाये।
जमाकर पैर अपने आज तुम आगे बढ़ो साथी,
कहीं चमके न बिजली ज़ोर से बारिश न हो जाये।
सहा अब जुल्म ना जाए चले आओ ग़दर वालों,
सुलगता है बड़ा शोला कहीं आतिश[1] न हो जाए।
करो सबका भला ग़र हो सके दिल से दुआयें दो,
कमा लो प्यार की दौलत कहीं गर्दिश[2] न हो जाए।
अगर जीना खुशी से चाहते हो तो नज़र रखना,
ज़रूरत से ज्यादा ही कहीं ख्वाहिश न हो जाए।
सलीके से रहें जो लोग महफिल में रमक[3] उनकी,
नज़ाक़त से उठायें जाम भी जुम्बिश[4] न हो जाए।
मिलें जो शोहरतें तो सर झुकाना और भी 'शर्मन',
फ़क़त करना मुहब्बत भूल से नाज़िश[5] न हो जाए।

(चार)

टहनियाँ पत्तियाँ तितलियाँ हैं यहाँ,
फूल खिलने लगे मस्तियाँ हैं यहाँ।
करवटें सिलवटें आहटें बांकपन,
सरसराते बदन बिजलियाँ हैं यहाँ।
हसरतें नफरतें फ़ासले दरतियां,
दब रही छुप रही सिसकियाँ हैं यहाँ।
पदवियाँ ताकतें वो नशा राज का,
जो बदलती गईं हस्तियाँ हैं यहाँ।
शौक से प्यार से गर्ज़ से दंड से,
काम करने लगीं बस्तियाँ हैं यहाँ।
पतलियों मोटियों की चली एक ना,
आज फंसने लगी मछलियां हैं यहां।
देख शर्मन' कहाँ राहतें रहमतें,
बिन रज़ा डूबती कश्तियाँ हैं यहाँ।

1. आग, 2. संकट, 3. लहर, तरंग, 4. हरक़त गति, 5. गर्व, घमंड

आलेख

हाड़ौती की लोक संस्कृति में गुरू नानक और गुरु ग्रन्थ साहिब

ललित शर्मा

गुरू नानक देव भारतीय भक्ति साधना एवं संस्कृति के ऐसे लोक संत है जो अपनी बाल्यावस्था से साकेतवास तक परमात्मा की साधना और लोक के विराट जन-जन से जुड़े रहे। इस आशय से उनका सर्वाधिक प्रबल पक्ष उनकी लोक धर्म साधना की यात्रा रही। इस लोकयात्रा में उन्होंने भारतीय भूमण्डल के साथ उससे बाहर के भी कई क्षेत्रों की यात्रा की। उनकी धार्मिक भक्ति यात्राओं को सिख पंथ में 'बाबा नानक की उदासियां' कहा जाता है। उन्होंने अपनी ऐसी पैदल यात्राओं में तत्कालीन समय की उलझती मानवता व आमजन को उद्धार का मार्ग सुझाया। उन्होंने उस समय के सत्ताधीशों को अपनी दिव्य भक्ति साधना की शक्ति से ललकारा और आमजनों, आदिवासियों तथा वंचितों को भाईचारे का जो संदेश दिया वह युगों-युगों से आज तक भी बड़ा लासानी है। गुरू नानक की धर्म यात्राएँ सदैव पैदल ही रहीं। इसी क्रम में उन्होंने अपनी यात्राओं में राजस्थान के अनेक मध्ययुगीन कस्बों, नगरों को भी अपने पवित्र पदों से नापा था। परन्तु अभी भी बहुत कम विद्वान इस तथ्य से परिचित होंगे कि गुरू नानक हाड़ौती क्षेत्र के झालावाड़ के निकट स्थित गागरोन और झालरापाटन में भी इसी यात्रा के दौरान आए थे। इस आशय के प्रमाण भी गुरूमुखी भाषा की पुस्तक में रेखांकित मिलते हैं।

दस्तावेजों के अनुसार गुरूनानक देव जोधपुर से होकर (हाड़ौती के) झालरापाटन पहुँचे। उस समय अठ्ठारह राजे अधीनस्थ थे। यह क्षेत्र भक्त पीपाजी का है। यहाँ पर पीपाजी के भक्तों तथा संत संगियों ने गुरू नानक की सेवा सुश्रवा की। तब गुरू ने सबको सत्य का मोहक उपदेश दिया और उन सभी भक्तों ने नानकजी की वाणी सुनकर भक्ति साधना का लाभ उठाया।

दस्तावेज में आगे यह रेखांकित है कि यहाँ से गुरूदेव गुड्डा शहर (गागरोन) गए जहाँ पर एक 'हरिजी नामी' नामक महात्मा ने उनके दर्शन किए तथा वे गुरूजी को पीपाजी की गुफा में लेकर गए वहाँ उन्होंने नानकजी की प्रेम और श्रद्धा से अपूर्व सेवा की तब नानकजी ने उन महात्मा को बाह्य झंझावतों से हटकर 'अकालपुरख सतनाम' परमात्मा की ओर ध्यान करने का सदुपदेश दिया। इस आशय से यह सहज ही ज्ञात होता है कि गुरू नानकदेव के हाड़ौती में उक्त स्थलों पर आने व उपदेश देने का मुख्य कारण यह भी है कि मध्यकाल में उक्त दोनों स्थल धर्म, भक्ति और लोक संस्कृति के बड़े प्रसिद्ध केन्द्र भी थे।

गुरू नानक की इन उदासियों के अतिरिक्त सिख पंथ के सर्व प्रसिद्ध धर्मग्रन्थ 'श्री गुरू ग्रन्थ साहिब' में पूर्व रेखांकित गागरोन के राजर्षि संत पीपाजी का भी एक पद समादृत है। यह गुरूमुखी लिपि में इस पद को आज भी लोकजगत में बड़ी प्रसिद्धी है। राग धनाक्षरी में रचित संत पीपाजी के इस पद को गुरू अर्जुनदेव ने गुरु ग्रन्थ साहब का सम्पादन करते समय सामदृत किया था।

इस पद से यह जाना जाता है कि लोक संत पीपाजी, बाहरी आडम्बरों, थोथे कर्मकाण्डों और लोक में व्याप्त रूढ़ियों के प्रवल विरोधी थे। उनका मानना था कि 'ईश्वर निर्गुण, निराकार, निर्विकार और अनिर्वचनीय है। यह भीतर-बाहर, घट-घट में व्याप्त है। वह अक्षत है और जीवात्मा के रूप में प्रत्येक जीव में व्याप्त है। उनके अनुसार 'मानव मन (शरीर) में ही सारी सिद्धियाँ और वस्तुएं व्याप्त हैं।' उनका यह चिन्तन 'यत्पिंडे तत्ब्रम्हाण्डे' के विराट सूत्र को मूर्त करता है और तभी वे अपनी काया में ही समस्त निधियों को पा लेते है। फिर किसी बाहरी मन्दिर या तीर्थ, पूजा की उन्हें कोई आवश्यकता नहीं रह जाती है। 'श्री गुरू ग्रन्थ साहब' में समादृत गागरोन (झालावाड़) की इस महान विभूति का यह अनुपम पद इसी भावभूमि पर खड़ा हुआ भारतीय भक्ति साधना के साहित्य का कण्ठाहार माना जाता है।

श्री गुरू ग्रन्थ साहिब' में गुरूमुखी लिपि में रेखांकित संत पीपाजी का यह पद निम्न प्रकार है-

कायउ देवा कायउ देवल, काइअऊ जंगम जाती।
कायअऊ धूप दीप नेईवेदा, काइअऊ पूजउ पाती।।
कायआ बहुषंड षोजते, नवनिधि पाई।
ना कछु आईबो न कछु जाइबो, राम की दुहाई।।
जो ब्रह्मण्डे सोई प्यंडे, जो सोषे से पावे।
पीपा प्रणवे परमततु है, सतगुरू होई लषावें।।

(अंग 695, ग्रन्थ साहिब (आदिग्रन्थ, राग धनाक्षरी, पद सं. 1)

उक्त पद को हिन्दी साहित्य एवं आमजन में इस प्रकार समादृत किया गया है-

अनत न जाऊं राजा राम की दुहाई।
कायागढ़ खोजता मैं नौ निधि पाई।।
काया देवल काया देव, काया पूजा पांती।
काया धूप दीप नईबेद, काया तीरथ जाती।।
काया माहै अड़सठि तीरथ, काया मांहे कासी।
काया माहे कंवलापति, बैकुंठवासी।।
जे ब्रंह्मण्डे सोई प्यंडे, जो खोजे सो पावै।
पीपा प्रणवै परमततरे, सद्गुरू मिलै लखावै।।

इस पद में संत पीपाजी यह संदेश देते है कि- ईश्वर जगत के कण-कण में व्याप्त है। अत: वे उसे खोजने कहीं नहीं जाते। उन्होंने तो ईश्वर की भक्ति साधना कर अपनी काया में ही नौ निधियाँ प्राप्त की हैं। अत: वे यह मानते हैं कि काया में ही मन्दिर, देवता, पूजा का समग्र विधान, धूप बत्ती, तीरथ सहित काशी व 68तीरथ हैं और इसी में बैकुंठ धाम वाला परमात्मा है। वे कहते हैं कि जो ब्रह्माण्ड में है वही शरीर के पिण्ड में है। बस उसे भक्ति साधना से खोजने की आवश्यकता है और इस खोज का परम ज्ञानस्त्रोत सद्गुरु ही है।

- अनहद जैकी स्टूडियो, 15-मंगलपुरा, झालावाड़ (राज.)-326001
मोबा. 9829896368

■

आलेख

कला

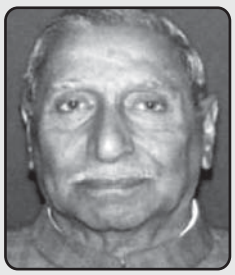

डॉ. मनमोहन सहगल

मानव ने आदिकाल से ही प्रकृति से संघर्ष करते हुए जो कुछ संस्कार रूप में सौंदर्य-बोध प्राप्त किया है, उसका अन्तर्भाव 'कला' में विद्यमान है। पाषाण युग से लेकर अत्याधुनिक युग तक मानव द्वारा उत्तरोत्तर उन्नतिशील भौतिक उपकरणों की खोज से सभ्यता का एक कृत्रिम क्षेत्र उसके हाथ लगा, उसी को सप्राण करने में जिस कौशल का सहयोग उसे मिला, वही कला है। इसमें मनुष्य की शक्ति और बौद्धिकता की अपेक्षा मनोरमता तथा संवेदना निहित रहती है। निसर्गत: मनुष्य निर्माण का ही इच्छुक नहीं, वह सुंदर निर्माण चाहता है। इससे उसके मनस् को तुष्टि एवं मनोवेगों को अभिव्यक्ति मिलती है। अपने भीतर की उत्कृष्ट सौंदर्य-चेतना का विकास मनुष्य ने 'कला' के माध्यम से किया है। कलाएं कई प्रकार की हो सकती हैं। हमारे शास्त्रकारों ने बहुधा कलाओं की लम्बी सूचियां बना कर उनकी संख्या निर्धारित करने के प्रयास किए हैं । अधिकतर प्राचीन शास्त्रों ने कलाओं की संख्या 64 मानी है। 'प्रबंधकोष' आदि में 72, कलाओं की सूची दी गई है, 'ललित विस्तार' में 86कलाएं उपलब्ध हैं । प्रसिद्ध काश्मीरी पंडित क्षेमेन्द्र ने अपने ग्रंथ 'कला-विलास' में सबसे अधिक संख्या में कलाएं गिनाई हैं-64 जनोपयोगी, 32 चतुर्लक्ष्य सम्बन्धी, 32 मात्सर्य-शील- प्रभाव-मान सम्बन्धी, 64 स्वेच्छाचारिता सम्बन्धी. 64 वेश्याओं सम्बन्धी, 10 भषज. 16कायस्थ तथा 100 सार कलाएँ उसमें वर्णित हैं। सबसे अधिक प्रामाणिक सूची 'काम-सूत्र' की है। इनमें से कोई भी संख्या स्वीकार कर ली जाए, एक बात निश्चित है कि कला का लक्ष्य सर्वत्र एक ही रहता है-सौंदर्यानुसंधान अथवा रसानुभूति।

प्राय: ललित एवं उपयोगी कलाएं भी अन्योन्याश्रित होती हैं। 'प्रत्येक कला में आंशिक रूप से सभी कलाओं का उपयोग सम्भव है। संगीत में स्वर प्रधान है, काव्य में शब्द, परन्तु श्रेष्ठ काव्य में गेयता का कम उपयोग नहीं है। संगीत स्वतंत्र कला है, परन्तु कविता में वह शब्द रस-परिपोषक बनकर ही सार्थक होती है। प्राचीनों ने गीत, नृत्य और वाद्य का संगीत के भीतर ही समावेश किया था क्योंकि उनका मूलाधार है गतिमानता। यही गतिमानता छंद-पद्धति से प्रकट होती है। चित्रकला की भाषा है 'रंग' अथवा 'रेखा' परन्तु वाङ्मय में शब्द चित्रों का कम महत्व नहीं है। शिल्प को तो मूक काव्य ही कहा जा सकता है- 'उत्कृष्ट कला में दु:खवाद को कोई स्थान नहीं है, क्योंकि कला जीवन के प्रति आस्था को पुष्ट करती है और जीवन के प्रति आस्था मनुष्य के प्रति आस्था का दूसरा नाम है। कलाकार का विशद एवं गहन मानव-प्रेम ही उसे देवत्व प्रदान करता है। कलाकार मूर्त्त के 1. गायन 2 वादन, 3 नर्तन, 4. नाट्य 5. आलेख्य (चित्र लिखना), 6. विशेषक (मुखादि पर पत्र लेखन), 7चौक पूरना, अल्पना 8. पुष्प शय्या बनाना. 9. अंगरागादि लेपन, 10. पच्चीकारी, 11. शयन रचना, 12. जलतरग बजाना (उदक वाघ) 13. जलक्रीड़ा. 14. रूप-सज्जा, (मेक-अप). 15. माला गूंथना, 16मुकुट बनाना, 17. वेष बदलना, 18. कर्णभूषणादि बनाना, 19. इत्रादि सुगंध द्रव्य बनाना, 20. आभूषण धारण, 21 इन्द्रजाल, 22. असुंदर को सुंदर बनाना, 23. हाथ की सफाई (हस्तलाघव) 24. रसोई कार्य-पाक कला. 25. आपानक (शर्बत बनाना), 26, सूची कर्म, सिलाई 27. कलाबत्तू 28पहेली बुझाना, 29 अंत्याक्षरी, 30. बुझौवल, 31. पुस्तक, वाचन, 32. नाटक प्रस्तुत करना, 33. काव्य समस्या-पूर्ति, 34 बेंत की बुनाई 35. सूत बनाना, तुर्क कर्म, 36. बढ़ई गीरी, 37. वास्तुकला, 38. रत्न परीक्षा, 39. धातुकर्म, 40. रत्नों की रंग परीक्षा 41 आकर ज्ञान, 42. बागवानी, उपवन विनोद, 43. मेढ़ा, पक्षी आदि लड़वाना, 44. पक्षियों की बोली सिखाना, 45 मालिश करना, 46. केश-मार्जन-कौशल, 47. गुप्त-भाषा-ज्ञान 48. विदेशी कलाओं का ज्ञान, 49. देशी भाषाओं का ज्ञान, 50. भविष्य कथन, 51. कठपुतली नर्तन, 52. कठपुतली के खेल, 53. सुनकर दुहरा देना, 54. आशु-काव्य क्रिया, 55. भाव को उल्टा कर कहना, 56. धोखा धड़ी, छलिक योग, छलिक नृत्य 57. अभिधान कोश ज्ञान, 58. नकाब लगाना, 59. द्यूत विद्या, 60. रस्साकशी, आकर्षण कीड़ा, 61. बालक्रीडा कर्म, 62. शिष्टाचार, 63. मन जीतना (वशीकरण), 64. व्यायाम।

भीतर से उस अमूर्त्त सौंदर्य और अक्षय प्रेम की झाँकी देता है, जो समस्त दृश्यमान् वस्तुओं को एक सूत्र में ग्रथित करता है। इसीलिए कला में ही मनुष्य वस्तून्मुख जगत् और मानव स्वभाव की दुर्बलताओं एवं असंगतियों का अतिक्रमण करने में सफल होता है।'

देश की संस्कृति में कला का विशिष्ट स्थान है। प्रत्येक उत्कृष्ट संस्कार किसी न किसी रूप में सौंदर्य का प्रत्यय होता है। बाह्य व्यवहार में यह शारीरिक कौशल है मानसिक उपागम में यही ललित स्फुरण बन जाता है। इसी दृष्टि से बाह्य कलाएँ जिन्हें उपयोगी कलाएँ भी कहा जाता है प्राय: स्थूल या मूर्त्त होती हैं और उनके विपरीत मन के ललित स्फुरण से उत्सित होने वाली साधना जिसे ललित कलाएँ भी कहा गया है अपेक्षाकृत सूक्ष्म और अमूर्त्त होती हैं। उपयोगी कलाएँ जीवन के स्थूल उपकरणों को ऐन्द्रिय-सौन्दर्य प्रदान करती हैं जबकि ललित कलाएँ जीवन के सूक्ष्म उपकरणों में मार्मिक आकर्षण करती हैं क्योंकि मानव स्वभाव से ही सौंदर्य- प्रिय जीव है, इसलिए जीवन में कला-साधना सदैव एक महनीय लक्ष्य रहा है।

मध्यकाल में भारतीय इतिहास अकस्मात् दो विरोधी श्रेणियों में विभाजित हो गया। मुगल शासन जहाँ अकबर से शाहजहाँ तक कला को अधिकाधिक प्रश्रय देता रहा वहाँ औरंगजेब ने इसके जड़-मूल पर ही कुठाराघात किया। ललित में से यदि कुछ बचा भी, तो केवल स्थापत्य, जो अन्ततोगत्वा मस्जिदों की वास्तु तक ही सीमित रह गई अन्य ललित कलाएं राज्याश्रय के अभाव तथा विरोध में सिसकती रही... मूर्ति का तो विध्वंस करने की योजनाएं भी बनीं। नव-निर्माण तो क्या, पूर्व-निर्मित को भी छिन्न-मिन्न

करने के निरन्तर प्रयास होते रहे। सूक्ष्मतम कला काव्य थी, उस पर चोट पहुंचाना असम्भव-प्राय अत: शासन के अन्यायी हाथों की पहुंच से लुक-छिपकर इसकी साधना करते ही रहे। उत्तर मध्यकाल में विलासिता की ओट में जो सौन्दर्य दृष्टि जागृत हुई वह सम्भवत: मुगल शासन के उस घृणित कला-मर्दन-चक्र की ही प्रतिक्रिया थी।

पूर्व मध्यकाल अथवा भक्ति काल में गुरुओ, संतों, महात्माओं तथा सूफियों ने कला के मात्र-सूक्ष्म रूपों का ही समर्थन किया। उनकी सौंदर्य दृष्टि इतनी ललित अभिव्यंजना लेकर व्यक्त हुई कि वे अपने अन्त: सौन्दर्य को बाह्य स्थूल उपकरणों में देखने तथा भव्य-प्रसाद में रहने की कामना करने की अपेक्षा झोपड़ी में निवास कर उस परम सुन्दर के अनुभव-अवलोकन से सर्वस्व विस्मृत करक सूक्ष्म ध्वनि के माध्यम से अनुभूत सौंदर्य की अनिर्वचनीय यथार्थता के संकेत देने लगे। सगुण भक्तों ने राम और कृष्ण के नयनाभिराम पावन सौन्दर्य को चित्रित किया। उनका काव्य अन्तस्थ की गहराइयों से सीधे उभर कर व्यक्त हुआ था, इसलिए उसमें मर्मस्पर्शी सूक्ष्म-कलाओं का अभिवृत्त बना रहा, कला के शेष रूप स्वयंमेव तिरोहित होते गए। 'शब्द और 'स्वर ही कला के उपकरण बने।

उस युग में कला के अभाव का एक अन्य प्रमुख कारण निवृत्ति, विरक्त तथा निराकार उपासना का प्रभाव भी था। अधिकतर संत-महात्मा परिमित विरक्ति एव निवृत्त जीवन व्यतीत करते थे। उनका लक्ष्य निराकार ब्रह्मा से ऐक्य स्थापित करना था। ये सब बातें उन्हें निरन्तर स्थूल से दूर हटा रहीं थीं । उनकी सौन्दर्य-दृष्टि-अन्तर्मुखी हो गई थी । वे बाहर के जागतिक प्रपंचों से विरक्त रहकर अन्तर से ही परम सुंदर की गवेषणा, साधना करते थे। इस उपक्रम की प्रक्रिया में स्थूल कलाओं का ह्रास तो स्वाभाविक ही था, मूर्त्त उपकरणों के लाघव में वे अन्ततोगत्वा ललित कलाओं में से भी केवल काव्य को ही प्रश्रय दे पाए। बहुत सम्भव है कि अपने चिर-सुन्दर की प्रशस्ति एवं यशोगानार्थ ही उन्होंने काव्य का सम्बल ग्रहण किया हो। आशय यह है कि काव्य कला के समर्थक होने पर भी 'कला उनका मुख्य लक्ष्य नहीं था। वे अन्तर्मुखी रहकर निराकार ईश्वर में ही लीन थे । काव्य तो प्रिय के प्रति विमल हृदय के उच्छवास् प्रकट करने का साधन है, वह कला भी है यह उन महात्माओं के लिए मात्र आकस्मिकता ही थी। उनके लक्ष्य समाजो- दबोधन परमेश्वर से प्रेम तथा उसी में लीनता और मानव-प्रेम थे। गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित समस्त वाणीकार उपर्युक्त श्रेणी के विचारक कवि ही हैं। यद्यपि उनके काव्य में उच्च कोटि की अभिव्यंजना सरसता तथा वस्तुपरक परिमार्जन भी उपलब्ध है तथापि यह दावा झुठलाया नहीं जा सकता कि उनका प्रधान लक्ष्य काव्य-सृजन (अर्थात् कला) न होकर अध्यात्म-जीवन-लक्षी साधना एवं मनुजोचित उद्बोधन ही है। सम्भवत: यही कारण है कि उनकी रचना में 'कला' अथवा कला सम्बन्धी चिन्तन अनुपलब्ध है। भले ही उनके द्वारा कला की यह उपेक्षा संकल्पित और सुविचारित न हो, किन्तु यह निर्विवाद सत्य है कि गुरु ग्रंथ साहिब के वाणीकारों ने 'कला' पर कोई विशिष्ट ध्यान नहीं दिया। संस्कृति के इस विशेष अंग की निपट अवहेलना की गई है।

1. शब्दोपासना के कारण संगीत-

गुरु ग्रंथ साहिब के सभी रचना-दाता निर्गुण मतानुयायी संत थे। उन्होन अपने साधना-पक्ष में 'नाम-स्मरण तथा शब्द-श्रवण' पर विशेष बल दिया है। इस शब्द को 'नाद', 'अनाहत वाणी' अथवा शब्द-ब्रह्म' भी कहते है। योगियों की व्याख्यानुसार कुण्डलिनि को जागृत कर योगी लोग जब उद्बुद्ध कर लेते हैं तब वह ऊपर की ओर उठती है उसकी इस उर्ध्वगति से जो स्फोट होता है उसे नाद कहते है, यह नाद अनाहत रूप से सारे ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। यही पिंड में भी है पर इसे अज्ञानी नहीं सुन सकते, क्योंकि उनका सुषुम्ना-पथ बन्द है। जब यौगिक-क्रियाओं से उनका वह पथ खुल जाता है तो वे उस अनाहत ध्वनि को सुनने लगते हैं। अनुभवी साधकों ने उस ध्वनि को पहले समुद्र-गर्जन, मेघों की गड़गड़ाहट शंख-घंटे आदि की ध्वनि और अन्त में किंकिणी, वंशी, भ्रमर आदि की ध्वनि के समान बताया है। यही नाद वास्तव में उपाधियुक्त होकर सात स्वरों में विभाजित हो जाता है पर निरुपाधि रहकर प्रणव या ओंकार कहलाता है इसी को शब्द ब्रह्म कहते हैं।

नाद के उपाधियुक्त होने से सात स्वरों का पार्थक्य ज्ञान होता है, तात्पर्य यह कि नाद का अमूर्त्त संकल्प ही उपाधियुक्त होकर जिस सीमा तक सूक्ष्म से स्थूल की ओर बढ़ता है उसी सीमा के बीच संगीत-कला जन्म ले चुकी होती है। क्योंकि ध्वनि के बिना शब्द का अस्तित्व अधर में दोलायमान् रहता है इसलिए संतों को भी शब्दोपासना के कारण नाद-सौंदर्य को आकार देना पड़ा था। इसी संवेदना से संगीत कला का उदय हुआ।

स्पष्ट है कि पूर्व मध्यकालीन काव्य में संगीत का आगमन सहज तथा अमृत में शब्दब्रह्म की उपासना के कारण ही हुआ है। यह संगीत का तत्व सगुणापासकों में भी विद्यमान है। यद्यपि वे शब्दोपासक नहीं थे, तथापि उन्होंने नाम-स्मरण को अत्युच्च स्थान प्रदान किया था। महात्मा तुलसीदास सरीखे राम-भक्त ने भी 'ब्रह्म राम ते नाम बड़' कहकर नाम की महत्ता स्थापित की थी। नाम' निर्गुणी संतों में शब्द' और 'नाद' के पर्याय रूप में भी प्रयुक्त हुआ है। इससे सिद्ध है कि उस युग की दोनों भक्ति-धाराओं ने यों तो कला की उपेक्षा ही की थी, तो भी नाद से नित्य- सम्बन्ध का दावा करने के कारण वे संगीत को अपनाए बिना नहीं रह सके। सम्भवत: इसीलिए कबीर, सूर, तुलसी, मीरा, नानक, रविदास आदि संत-महात्मा तथा गुरुओं के पद विशुद्ध गेयात्मक एवं संगीत-नियमों के निष्कर्ष पर सानुकूल ठहरते हैं।।

2. गुरु ग्रथ साहिब में संगीत का महत्व तथा राग-रागनियाँ का ब्यौरा

गुरु ग्रंथ साहिब में संगीत-तत्व को विशेष स्थान दिया गया है। विद्वानों का कथन है, कि राग-बद्ध वाणी-गायन मन को अति प्रभावित करता है। इससे श्रोता की चतुर्दिक प्रसरित वृत्तियाँ एकात्र होती हैं. संभवत: इसीलिए स्वयं गुरु अर्जुन देव ने ही इस सटोपदेशमयी वाणी को रागालाप में गाने का विधान किया है। इसी क्रिया को पंथक दृष्टिकोण से कीर्तन कहा गया है। साथ ही गुरु अमरदास ने संगीत में कलात्मक रूप को इंगित करते हुए इस बात पर भी बल दिया है कि जिन गीतो के श्रवण से मन में विकार उत्पन्न होते हैं वे कला का सच्चा रूप नहीं हो सकते। यथा-

इकि गावत रहै मनि सादु न पाइ।
हउमै विचि गावहि बिरथा जाइ।
गावणि गावहि जिन नाम पिआरु।
साची बाणी सबद बीचारु।

1: 4: 24: गउडी 3. प. 158

कला के इस पक्ष को अपनाने से आनन्द, सुख, कल्याण आदि की

प्राप्ति भी गुरु ग्रेथ साहिद में मान्य है-

अनद सूख मँगल बने पेखत गुन गाउ ।1 ।रहाउ।
कथा कीरतनु राग नादु धुनि बनिओ सु आउ।

2: 6: 70, बिलावल, 5, पू. 818

सामान्यत: गुरु ग्रथ साहिब के संकलन-कर्त्ता ने संगीत को विशेष महत्व दिया प्रतीत होता है। यही कारण है कि सम्पूर्ण ग्रंथ की वाणी का सम्पादन भी विभिन्न राग-रागनियों के अन्तर्गत किया गया है। लोक-गीतों की ध्वनियों के विशेष निर्देश 'वारों' को गाने के लिए दिए गए हैं, लोक-गीतात्मक शैली के पदों का समावेश भी हुआ है अमूर्त कला होने के नाते संगीत-भारतीय संस्कृति का विशेष अंग भी है । आज तक, भारतीय जीवन में हर्ष-शोक की अभिव्यक्ति का एकमात्र माध्यम संगीत ही बना रहा है। हमारे यहाँ सुख एवं दु:ख की संवेदनाएं संगीत के ही द्वारा प्रकट होती रहीं। इसीलिए भारत में संगीत-शास्त्रीय-मान से विकसित होता हुआ क्रमश: लोक-जीवन और तत्पश्चात सामाजिक संगठन के प्रत्येक स्तर पर अवतरित हुआ। सम्मवत: यही कारण है कि गुरु ग्रंथ-सम्मत समाज में संगीत को सत्संगति का विशेष लक्षण मान लिया गया तथा समूची वाणी लोक-जीवन के विभिन्न स्तरों की संगीतात्मक शैलियों की संग्राहक बन गई।

लोक शैलियों की रचनाओं में सभी वारों, पहिरे (सिरी राग), पट्टी, (राग आसा), अलाहणियां (राग वडहंस), आरतियां (राग धनासरी), थिती (बिलावल), रहसा (तिलंग), कुचजी, सुचजी तथा गुणवंती (सूही), काफियां (सूही, माझ), बारह माहे, (तुखारी) वणजारा (माझ), करहले (गउड़ी), घोड़ियां (वडहंस), लावा (सूही), बिरहड़े (आसा), अंजुलीआं (मारु) आदि वाणियों का नाम लिया जा सकता है लोक गीतो में व्यक्त प्रेम-कथाओं की ही तरह इन सब में प्रेम का नाता प्रस्तुत किया गया है, किन्तु आध्यात्मिक पृष्ठभूमि के कारण यह नाता आत्मा एवं परमात्मा अथवा गुरु एवं शिष्य के बीच का है। 'करहले तथा कतिपय वारें मन को सम्बोधन करके गाई गई हैं, अन्य सब वाणियां लोक-गीतात्मक शैलियों, भौतिक-प्रेम के प्रतीकात्मक चित्रणों तथा आध्यात्मिक-स्तर के पराभौतिक नातों की सजग परिचायक है।

गुरु ग्रंथ साहिब में संगीत का महत्व इस बात से भी सिद्ध है कि ग्रंथ में स्थान- स्थान पर वाणी को गाने का आदेश भी मिलता है। इतना ही नहीं, सज्जनों की किसी भी सभा में वाणी का गाया जाना आध्यात्मिक सफलता का द्योतक माना गया है। गुरु नानक ने तो जीवन में संगीत का इतना अधिक महत्व स्वीकार किया कि इसे ही लोक-जीवन की वास्तविक सम्पत्ति घोषित कर दिया है। ढाढी (प्रभु का प्रशस्ति-गायक) का प्रभु-नैकट्य तथा वाणी को गाने मात्र के कारण ईश्वर-प्राप्ति के प्रसंग भी देखने में आए हैं। तात्पर्य यह कि गुरु ग्रंथ साहिब के दृष्टिकोणानुसार समाज में संगीत एक अति महत्वपूर्ण विद्या है, जो जीवन में राग-विराग, विषाद तथा भाव-भक्ति के प्रसरण में सहायक होती है। इतना ही नहीं गुरु ग्रंथ में नाम-श्रवण का जो विधान प्रस्तुत किया गया है वह भी ध्वनि-सिद्धान्त पर आधारित है और उसे ही मुक्ति का रहस्य स्वीकार किया है। अस्तु, भारतीय समाज में प्राचीनतम काल से स्वीकृत संगीत के महत्व का समर्थन गुरु ग्रंथ साहिब में भी उपलब्ध है।

गुरु ग्रंथ साहिब में राग की पकड़ बड़ी सबल है इसका वास्तविक मूल्याँकन निम्न बानगी विश्लेषण से स्पष्ट है -

राग टोड़ी (तोड़ी)
माई मेरे मन की प्रीति।
एहा करम धरम जप, एही राम नाम निरमल है रीति।। भाई मेरे मन
प्राण अधार जीवन धन मौरे। देखन कउ दरसन प्रभ नीति।
बाट घाट तोसा संगि मोर। मन अपने कउ मैं हरि सखा कीत।।1।।
संत प्रसादि भये मन निरमल करि किरपा अपुने करि लीत।
सिमर सिमरि नानक सुखु पाइआ।
आदि जुगादि भगतन के मीत।।2:2-2।।

राग टोड़ी. म. 5, पृ. 716।।

चारि मुकति चारे सिधि मिलि कै दूलह प्रभ की सरनि परिओ।
मुकति भइओ चऊंजुग जानिओ जसु कीरति माथै छत्र धरिओ।1।
राग मारू- वाणी नामदेव जी की
राजा राम जपत को को न तरिओ
गुर उपदेसि साध की संगति भगतु ताको नाम परिओ। रहाउ।
संख चक्र, माला तिलकु विराजित देखि प्रतापु जमु डरिओ।
निरभउ भए राम बाल गरजित जनम मरन संताप हिरिओ ।2।
अबरीक कउ दीओ अमै पदु राजु भभीखन अदिक करिओ।
नउ विडि ठाकुरि दई सुदाम धूअ अटलु अजहूं न टरिओ ।3।
भगत हेति मारिओ हरनाखसु नरसिंघ रूप होइ देह धरिओ।
नामा कहै भगति बसि केसव अजहूं बलि के दुआर खोर ।4:।

राग मारू, नामदेव, पृ. 1105

यहाँ एक उदाहरण 'पड़ताल' का दे देना भी अन्यथा न होगा। गुरु वाणी के रचनादाता जातीय एकता के समर्थक थे, इसलिए उन्होंने प्रत्येक सामाजिक क्षेत्र में साम्यता लाने का प्रयास किया है। यहाँ सगीत के क्षेत्र में भी उन्होंने उसी लक्ष्य को इंगित करते हुए पड़ताल' गान-शैली की कल्पना की है, जहाँ एक ही शब्द के पाठ में लोक-ध्वनियों, गायन के प्रत्येक पहलू एवं सब गायन शैलियों को एकत्रित कर दिया गया है। यह शब्द पड़ताल', पदताल या परत-ताल का द्योतक है, जिसका स्वाभाविक अर्थ ताल को फेर-फेर कर गाना होता है। राग कानडा, कल्याण, रामकली. बसंत सारंग, प्रभाती, मल्हार एवं धनासरी में यह विधा प्राप्त है।

राग कानडा

मन जापहु राम गुपाल।
हरि रतन जवेहर लाल। हरि गुरमुखि घड़ि टकसाल।
हरि हो हो हो किरपाल। रहाउ।
तुमरे गुन अगम अगोचर। एक जीह किआ कथै बिचारी।
राम राम राम राम लाल। तुमरी जी अकथ कथा।
तूं तूं तूं ही जानहि
हउ हरि जपि भई निहाल निहाल निहाल ।1।
हमरे हरि प्रान सखा सुआमी हरि मीता।
मेरे मनि तनि जीह। हरि हरे हरे राम।
मन राम नाम जनु माल।
जाको भागु तिनि लीओ री सुहागु।

हरि हरि हरे हरे गुन गावै गुरमति।
हउ बलि बले हउ बलि बलै।
जन नानक हरि जपि भई।
निहाल निहाल निहाल ।2:1:7।

राग कानडा,म. 4., पड़ताल, पृ. ।296।

गुरू ग्रंथ के मुंदावणी पदों के अनन्तर 'राग-माला' का संकलन संगीत के प्रति सम्पादक की अत्याधिक रूचि का ही प्ररिचारक है । इस नाते मुख्य राग, उनकी पत्नियों और पुत्रों, राग के भेदों, स्वरों, घरों, एवं स्वरों की अवस्थाओं का विशद परिचय यहाँ एक प्रश्न यह उठता है कि क्या वह 'रागमाला' स्वयं गुरु अर्जुन रचित थी, उन्होंने स्वयं सम्पादित की थी, अथवा बाद में जोडा विक्षिप्त अंश है। यहाँ कतिपय आधिकारी विद्वनों के विचार दे देना ही पर्याप्त है- कविवर भाई सतोख सिंह लिखते है:-

रागमाल सतिगुरु की क्रित नाहि।
है मुंदावणी लग गुरू-बन'।40।

डा. चरण सिंह वाणी-ब्यौरा' में लिखते हैं- 'यथा ततकरा वाणी के साथ सम्बद्ध न होते हुए भी उसी वाणी की सूची प्रस्तुत करता है, ठीक वैसे ही 'माला' वाणी से कोई सम्बन्ध नही रखती, तो भी वह है इसी वाणी का अंग।

दोनों मत पृथक हैं, जिनसे अनुमान होता है कि 'रागमाला' के सन्बन्ध में पंथक नेताओं में एक संघर्ष चल रहा है। 'रागमाला' किसने लिखी और ग्रंथ में किसने सम्मिलित की, विद्वानों के लिए ये इतनी महत्व की बातें नहीं, जितना कि इसकी उपस्थिति के माध्यम से सम्पादक का संगीत-कला सम्बन्धी प्रेम। यहाँ एक बात और कथनीय है कि यद्यपि राग-भेद से कोई राग मुख्य अथवा गौण, मंगल अथवा अमंगल हो सकता है-तथापि गुरु मतानुसार वही राग उत्तम है, जिसके द्वारा मन ईश्वर में स्थिर हो-

सभना रागा विचि सो भला भाई, जितु वसिआ मनि आइ।
रागु नादु सभु सचु है कीमति कही न जाइ ।

श्लोक वारां से वधीक 24, स. 4, प्. 1423

3. स्थूल से सूक्ष्म की ओर अन्य कला-बंध

ललित कलाओं के अन्तर्गत स्थूल से सूक्ष्म की ओर बढ़ते हुए पाँच मुख्य कलाएँ स्वीकार की गई हैं- स्थापत्य अथवा वास्तु, मूर्ति, चित्र संगीत तथा काव्य गुरू ग्रंथ साहिब में संगीत तथा काव्य (काव्यगत्त विशेषताओं) का वर्णन हम पीछे कर चुके हैं। चित्रकला का कोई वर्णन गुरू ग्रंथ में उपलब्ध नहीं। शिल्प अथवा मूर्ति के भी संकेत मात्र ही हैं। वास्तु कला का भी वर्णन तो नहीं. झौंपडी, प्रासाद, धर्मशाला या देवस्थान आदि के कतिपय चित्र उपलब्ध है। यहाँ उनके विवरण मात्र से ही हमें संतोष, करना होगा-

वास्तु

सभ्यता के विकास में वास्तु-कला का उदय भारत मे बहुत पहले से हो चुका था। उत्तर-मध्यकाल तक आते-आते भवन-निर्माण कला मुगलों का कौशल प्राप्त कर और भी निखर उठी। दुर्ग, मस्जिदें, मकबरे, देवालय तथा बड़े-बड़े निवास-भवन बनने लगे थे। अत: गुरू ग्रंथ-यूग में आवास-सम्बन्धी किसी विशेष सुझाव की सम्भवत: कोई आवश्यकता नहीं रह गई थी। अभाव एवं सम्पन्नता के बीच की दूरी अकिंचन झौपड़ी से भव्य प्रासाद तक के विभिन्न सोपानों से पटी हुई थी, आवास-सम्बन्धी भवनों के अनेक प्रकार अस्तित्व में आ चूके थे। अस्तु, गुरू ग्रंथ में महल, झौपडी, घर्मशाला, देवस्थान, मुकाम (मुस्लिम समाज में मस्जिद या फकीरी तकिए के लिए यह शब्द प्रयुक्त हो रहा था) आदि की पर्याप्त चर्चा हुई हैं। इन शब्दों के प्रयोग से विभिन्न स्थितियों का परिचय वाणींकारों ने ग्रंथ में दिया है। तथापि आध्यात्मिक पृष्ठभूमि के कारण सत्य, स्थायी एवं सम्पुष्ट स्थान की खोज को लक्ष्य किया गया है, तथा सृष्टि को पांच अवस्थाओं में विभाजित करके सर्वोच्च खण्ड को मुक्तात्मा का स्थायी आवास घोषित किया है। तात्पर्य यह कि पौराणिक पुरियों में मुख्य इन्द्रपुरी, ब्रह्मपुरी अथवा शिवपुरी को भी स्थायी नहीं माना' और उत्तमता की दृष्टि से क्रमानुसार घर्मखण्ड, ज्ञान खण्ड, सरम (श्रम) खण्ड, करम खण्ड तथा सचखण्ड का महत् विचार मुत ग्रंथ ने अनुयायी समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया। सचखण्ड को गुरूओं ने थाना, अनभउ (अनुभव) नगर, अनहत अखाड़ा, सूख महल, आनंद भवन आदि शब्दों से व्यक्त किया है, कबीर ने इसे सतलोक कहा है रविदास ने बेगमपुरा कहकर पुकारा है । कबीर ने भी 'बेगमपुरी' संज्ञा मुक्ति-धाम के लिए प्रयोग की है। यद्यपि उक्त आवास केवल मुक्तात्माओं का आधिभौतिक अथवा पराभौतिक ठिकाना है, सांसारिक जीवों का इसके साथ कोई सम्बन्ध नहीं, तथापि ग्रंथ-सम्मत समाज के सदस्यो से इसी को लक्ष्य करने की आशा की जाती है।

भौतिक स्तर पर जिन आवासों का वर्णन हुआ है, वह भी आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य में हुआ जा सकता है । उदाहरणार्थ महल झौंपड़ी की बात करते हुए यह कहना कि प्रभु गुणागान से गुंजित झौंपड़ी हरि-नाम-विस्मृत महल से कहीं उत्तम है। यथा-

भली सुहावी छापरी महि गुन गाए।
कितही कामि न धउलहर जितु हरि बिसराए।

1: 1: 41, सूही 5, पु. 745

इसी प्रकार धर्मशाला के वृत्त में सत्य एवं आध्यात्मिक शिक्षण की बात कही गई है। सिद्धों, योगियों, मुल्लाओं आदि के ठिकानों की चर्चा भी हुई है,' परन्तु इन सब स्थानों के अस्थायित्व तथा परिवर्तनशीलता से खिन्न होकर वाणीकारों ने निश्चलता को ही स्थान की उत्तमता का मान स्वीकार कर लिया है-

मुकामु कति धरि दैसणा निज चलणै की घोख ।
मुकामु ता परु जाणीअै जा रह निहजलु लोक।

1:17 अष्ट सिरी 1, तृ. 64

शिल्प-कला

गुरु ग्रंथ साहिब के कलागत मूल्यों में शिल्प को लगभग कोई स्थान नहीं दिया गया। वैसे बुनकर तथा स्वर्णकार आदि के व्यवसाय 'शिल्प' के उत्तम प्रकार हैं, तथापि इस शब्द की अर्वाचीन रूढ़िवादी ध्यनि-का ग्रंथ में अभाव है। ग्रंथ में अनेकानेक काव्य-प्रयोगों में भाव-बोध के साथ-साथ कला भी निखरी है। प्रभु को कुशलतम, कलाकार माना गया है, जो अति विस्मयजनक एवं अद्वितीय रचनाओं का कर्ता है। गुरु ग्रंथ में गुरुद्वारों की निर्माण कला का कोई संकेत उपलब्ध नहीं, तथापि गुरुद्वारों की बाह्य वास्तु का एक विशेष रूप है जो मस्जिदों के गुरुबद तथा मंदिरों के छत्र के बीच का आकार कहा जा सकता है। व्यावसायिक क्षेत्र में शिल्पियों के कतिपय संकेतो के अतिरिक्त शिल्प का भी कोई विशेष वर्णन ग्रंथ में नहीं मिलता।

सौन्दर्य- दृष्टि के रूप: नृत्य नाटक, रंग-तमाशे

मानव-मूल्यों में सौन्दर्य का विशेष स्थान है। पाँचों ललित कलाएं- वास्तु मूर्ति चित्र, संगीत एवं काव्य-मानव की सौन्दर्य-दृष्टि की भी पोषक हैं । निम्नतम कीट, क्षेद्र पक्षी, सामान्य पशु तथा मनुष्य भी, सभी सुराखों, घोंसलों, गारों तथा घरों में रहते हैं। सभी को सिर छिपाने एवं विश्राम करने के लिए सुरक्षित स्थान अपेक्षित है, और इसी धुन में प्रत्येक चेतन जीव-जन्तु अपने लिए घर ढूंढता या बनाता है। किन्तु मनुष्य केवल घर नही बनाता, वह सुन्दर घर बनाने में रूचि रखता है। उसकी सौन्दर्य- रूचि ही वास्तव में विमिन्न लालित्यपूर्ण कलाओं के जन्म का कारण है। सुन्दर भवनों, मुंह बोलती मूर्तियों आकर्षक-चित्रों, मनोहर संगीत एवं मार्मिक काव्य के दृश्य-श्रवण तथा पाठ से मानव की सौन्दर्य-भावना को तृप्ति मिलती है। वह जहाँ निर्माण में सौन्दर्य देखने की कल्पना करता है, वहां अपने तथा अपने प्रिय- पात्र के रूप-सौन्दर्य पर मोहित होने की भी उत्कट इच्छा रहती है। यही मानवीय सौन्दर्य-दृष्टि है।

मनुष्य की इसी सौन्दर्य-दृष्टि ने संगीत नृत्य तथा नाटक अथवा अन्य रंग-तमाशों को जन्म दिया है। भारत में नृत्य की सामाजिक प्राचीनता संगीत के ही साथ अंकित है। संगीत की मधुर ध्वनि कदाचित शारीरिक अंगों पर ऐसा चमत्कार दिखाती है कि वे स्वमेव मचल कर संचलित हो उठते है। इसीलिए राग गायन के समय लय-ताल के साथ भाव प्रकट करने वाली जो आंगिक-मुद्राएँ बनने लगती अथवा बनाई जाती है, वही नृत्य होता है। भारतीय संस्कृति में आस्तिकता के नाते नृत्य का महत्व प्राचीन समय से स्वीकार किया गया है। हमारा सामाजिक-इतिहास साक्षी है कि यहाँ पर्व-त्यौहारों से प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए संगीत एवं नृत्य सदा साथ रहे हैं। मन्दिरों में देव-पूजन के समय, विशेष देव-मूर्ति की स्थापना अथवा मान्यता-पूर्ति पर जहाँ घण्टे, शंख, मृदंग, तूती तथा ढोल का संगीत वायु मण्डल को गुंजरित कर देता है, वहां देव-दासियों की नुपूर-ध्वनि से समां बंध जाता था। भारतीय-पौराणिकता में नृत्य और संगीत का साकार रूप शिव में स्थापित किया गया है- शक्ति पार्वती के संग वे डमरू की संगीत ध्वनि में नृत्य मग्न रहते हैं, ऐसा चिन्तन उपलब्ध है। आरम्भ तथा कल्याण का देवता गणेश भी नृत्य-प्रिय है। यूनान में भी देवताओं के ही आश्रय नृत्य और संगीत पनपा है। मनुष्य की मानसिक स्थिति तथा ब्रतिचार नृत्य को जन्मजात वृत्ति सिद्ध करते हैं। आकस्मिक प्रसन्नता प्रदर्शन के लिए मनुष्य के लिए मनुष्य उछल पड़ता है, हाथ उठा कर किलकारी मारता है- ये दोनों प्रतिचार सर्वदेशीय एवं सर्वकालिक हैं और इन्हें नृत्य के पूर्वज भाव कहा जा सकता है।

भारत में नृत्य के तांडव तथा लास्य दो मुख्य प्रकार माने गए है। पुरुष द्वारा कठोर तथा वज्र-सम मुद्राओं में प्रस्तुत किया जाने वाला नृत्य तांडव एवं स्त्री द्वारा कोमल और रागात्मक मुद्राओं में प्रस्तुत नृत्य लास्य होता है। गुरु ग्रन्थ सम्मत समाज नृत्य का समर्थक है, किन्तु यहाँ नृत्य के प्रकार भिन्न माने गए हैं- 1. मायावी 2. भगवद्भावी। मायावी नृत्य वह है जो आडम्बर, कर्मकाण्ड अथवा छल-कपट का प्रतीक होता है। देवदासियों आदि का नृत्य भी इसी कोटि का हैं, क्योंकि उन्हें देवस्थान, में नृत्य के लिए बाध्य किया जाता है और वे पेट भरने के लिए नृत्य-विधान को स्वीकार करती है। यों भी आध्यात्मिक दृष्टिकोण होने के कारण ग्रंथ मतानुसार संसार में प्रसन्नता परिचायक, हर्ष-द्योतक समूचा नृत्य-गायन मायावी है। क्योंकि ये सब कर्म मायांध जीवों के द्वारा होते हैं, इसलिए इनमें सच्ची भक्ति अथवा वास्तविक लास्य मौजूद नहीं होता। यह तो मोह माया में बंधे जीव अपने स्वार्थों को लक्ष्य करते हुए घुंघरू बाँध देव-ध्वनि के बहाने संसार की आंखों में धूल झोंकते हैं । अत्त: भक्ति-भाव-रहित तथा वासना-प्रेरित सर्व- प्रकार के नृत्य अथवा उछल-कूद मायावी हैं, गुरु ग्रंथ उसे कोई विशेष महत्ता नहीं देता।

दूसरी प्रकार का नृत्य भगवद्भावी कहा जा सकता है। गुरु ग्रंथ में इसी प्रेम-भक्ति मिश्रित नृत्य को ही उत्तम माना गया है । विवेक के वादनों तथा भाव के पखावज की ध्वनि में भक्ति और आनन्द के चाव में मदमस्त डगमगाते चरणों से किया गया नृत्य ही ग्रंथ में भगवद्भावी-नृत्य कहा गया है।' दृढ़ भक्ति द्वारा मन को संयत तथा मोह-माया के बन्धनों को भंग करके शब्द-ध्वनि में किया जाने वाला नृत्य ही सच्चा ताल (चरण-संचालन तथा वादन ध्वनि में सामंजस्य स्थापना का अभ्यास) हैं वस्तुत: इसी का समर्थन गुरु ग्रंथ में किया गया है। अनाहत ध्वनि की संगति में सतिगुरु के सम्मुख नृत्य संलग्न होने को ही भगवद्भावी नृत्य कहा है।

नाटक तथा नाटकशाला अथवा रंगशाला के प्रसंग तो गुरु ग्रंथ में निस्संदेह प्राप्त है, परन्तु इन्हें गुरु ग्रंथ-चिंतन का समर्थन प्राप्त नहीं है। नाटक यद्यपि भारतीय संस्कृति में पंचम-वेद की उत्पत्ति रूप में स्वीकृत है, तथापि क्योंकि यह केवल अनुकरण है, अनुमानित अभिनय मात्र है, इसलिए ग्रंथ-वाणी में इसका औचित्य स्वीकार नहीं किया गया कला की दृष्टि से इसकी सत्ता निषिद्ध नहीं, केवल आध्यात्मिक-लक्ष्यों के सम्मुख नाटक- तमाशों की कोई सार्थकता नहीं। अपने-आप में ये रंग-तमाशे मन बहलावे का साधन अवश्य हैं, परन्तु लक्ष्य मन बहलाना न होकर, मन को संयमित करना है, अत: इनकी सार्थकता मानसिक-संतोष में न होकर विभिन्न मानसिक-विकारों को जन्म देने में ही बनी रह जाती है। अनेक प्रकार की नटशालाओं तथा अखाड़ों में चमत्कारों और तमाशों से प्रभावित हो मन विकृत होता है, 'नाम' के प्रति उसमें लग्न पैदा नहीं होती। संतों की दृष्टि में ऐसे सब स्थान, चाहे सांसारिक दृष्टि से वहाँ कंचन बरसता हो, नरक समान है। रंगशाला हो अथवा बंदीगृह, विनयी हो या अहंकारी, सब नाशवान् है, इसलिए नाटक, तमाशे आदि के अखाड़े गुरु ग्रंथ में अनावश्यक माने गए हैं। आधुनिक चिंतनानुसार नाटक भले ही शिक्षण का एवं सबल साधन हो, परन्तु आध्यात्मिक आधार-भूमि वाले ग्रंथ-सम्मत समाज में ये विकृति का कारण है, भगवद भजन का माध्यम नहीं बन सकता।

अन्य रूप

वादन-यन्त्र

रबाब, मृदग, बाजे, पखावज आदि वादन-यन्त्रों के प्रसंग भी गुरु ग्रंथ में दीख पड़ते हैं। गुरु नानक की यात्राओं में उनके साथी रबाब और सारंगी बजाते थे। तार- यन्त्रों में तन्त्रों (तंती) की चर्चा गुरु ग्रंथ में हुई है, जिससे तार के वादन-यन्त्रों का अस्तित्व तथा प्रयोग सिद्ध है । यों अकबरी युग के अमर संगीतकार बैजू तथा तानसेन, रूपमती, और बाज बहादुर ऐतिहासिक सत्य हैं: जिससे उत्तर मध्यकालीन समाज में संगीत, राग तथा वादन-यन्त्रों का अस्तित्व एवं महत्ता स्वप्रमाणित है ।

कठपुतली-नृत्य

कठपुतली नृत्य का प्रसंग गुरु ग्रंथ में आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य में उपलब्ध है । वाणीकारों द्वारा समूचे विश्व तथा उसके नियन्ता की समानता कठपुतली तथा उसके सूत्रधार के साथ अनुभव करने से यह प्रसंग ग्रंथ का विषय बना है। जैसे काठ की पुतलिका सूत्रधार की इच्छा पर सब कुछ करती दीख पड़ती है, ठीक वैसे ही संसार नियन्ता की इच्छा पर चल रहा है। तनिक-सा भी परिवर्तन उसकी इच्छा के विरुद्ध सम्भव नहीं है।

पुस्तक : गुरूग्रंथ साहिब एक सांस्कृतिक सर्वेक्षण से आभार (अंश)

■

रेडियो फीचर

अमृत-पुत्र नानक

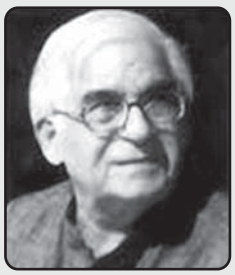

डॉ. देवेन्द्र दीपक

(सस्वर)
असतो मा सद्गमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्मामृतं गमय।

वाचक-1 **सतिगुरू नानक प्रगटिआ**
मिटी धुंध चानण होआ
बिजिऊँ कर सूरज निकलिआ
तारे छ्ये अंधेर पलोआ

वाचक-2 लाहौर के पास तलबंडी गांव ! सम्वत 1526का कार्तिक मास ! पिता कालूराम और माता तृप्ता ! खाता-पीता एक खत्री परिवार। इस परिवार में अवतार लिया अमृत-पुत्र नानक महाराज ने।

वाचक-1 उस दिन की तिथि ?

वाचक-2 पूर्णिमा। भारत में पूर्णिमा का बड़ा महत्व है।

वाचक-1 ऐसा क्या है ?

वाचक-2 कबीरदास का जन्म पूर्णिमा को, रैदास का जन्म पूर्णिमा को, वाल्मीकि का जन्म पूर्णिमा को। व्यास, बुद्ध, चैतन्य, दत्तात्रेय, हनुमान भी पूर्णिमा को जन्में। सबने अपने लिए अपनी पूर्णिमा चुन ली।

वाचक-1 जे.डब्ल्यू.यंगसन को अमृतसर में लिखी एक जन्म साखी मिली। इस साखी के अनुसार नानक देव जी महाराजा जनक के अवतार है। हुआ यह कि एक बार राजा जनक नर्क की यात्रा पर निकले। अपने पुण्य से उन्होंने सतयुग, त्रेता और द्वापर के पापियों का उद्धार किया। कलियुग के पापियों के उद्धार के लिए नानक देव जी जनक के रूप में अवतरित हुए।

वाचक-2 कलियुग बाबे तारिआ सत नाम पढ़ मंत्र सुनाया
कलितारण गुरू नानक आया।

संत याचक नहीं दाता होते है। दोनों हाथ से देना उनमुक्त मन से देना, यही तो उनका धर्म होता है। नानक देव बचपन से ही उदार, करूण और संवेदनशील थे। बड़ा अद्भूत था उनका बचपन।

(संगीत ध्वनि द्वारा दृश्य परिवर्तन)

कालूराम- 'तृप्ता ओ तृप्ता, देख मैं बाहर गांव जा रहा हूँ। खेत में पकी फसल खड़ी है। फसल की रखवाली जरूरी है। देख ध्यान रखना। समझी।

तृप्ता- हाँ, नानक के बापू, समझी लेकिन घर बार के काम से मुझे फुरसत ही कहाँ ? तुम्हारा नानक है, उसी से कहूँगी, वही देखेगा तो देखेगा।

कालूराम- मैं कुछ नहीं जानता, तू जान तेरा नानक जाने । मैं तो चला राम राम !

कालूराम के जाने की ध्वनि। नेपथ्य से नानक के गुनगुनाने की ध्वनि।

इस दम मैंनू कीबे भरोसा, आया आया न आया।
या संसार रैन दा सुपना, कहिं दीखा कहिं नाहिं दिखया।

नानक- मां परनाम !

तृप्ता- जुगजुग जीओ। नानक, तेरा बापू परदेस गया है। तू जा खेत की रखवाली कर पकी फसल और पकी उमर की चौकसी जरूरी है। तू जा, मैं खेत पर तेरी रोटी ले आऊंगी

नानक- ठीक है। मैं जाता हूँ।

(नानक के जाने की ध्वनि) (खेत में काम करने वालों की स्फुट ध्वनि बैल की घंटियों की ध्वनि चिड़ियोंकी स्फुट चहचहाट।)

नानक का स्वर-

राम की चिड़ियों राम का खेत, खालो चिड़ियों भर भर पेट।।
(चिड़ियों की आवाजे बढ़ती है।)
राम की चिड़ियों राम का खेत, खालो चिड़ियों भर भर पेट।।
(चिड़ियों की आवाजें और बढ़ती है।)
राम की चिड़ियों राम का खेत, खालो चिड़ियों भर भर पेट।।
(चिड़ियों की आवाजें और बढ़ती है।)

तृप्ता- अरे नानक, ओ नानक ! यह क्या ? यह कैसी रखवाली ? सारा खेत चिड़ियों को खिला दिया। तेरा बापू आयेगा, मेरी तौबा करेगा। अच्छा तुझे भेजा रखवाली करने।

नानक- 'क्या हुआ माँ ? हमारी ही तरह इन चिड़ियों को भी तो दाना चाहिए। आप मेरे लिए रोटियां लाई, इनके लिए कौन लायेगा ? धरती माँ के दानों में इनका भी तो हिस्सा है।

तृप्ता- ओह, मेरे बच्चे ! तू कहता तो सच है, लेकिन हम तो संसारी आदमी हैं।

(संगीत ध्वनि द्वारा दृश्य परिवर्तन)

वाचक-1 नानक नौ वष के हुए तो उनके यशोपवीत्त के लिए उनके कुल पुरोहित पंडित हरदयाल को बुलाया गया। पण्डित जी आए और विधिवत पूजन प्रारंम्भ हुआ।

वाचक-2 नानक जी ने पण्डित जी से कहा-अपना जनेऊ दिखए। पण्डित जी ने जनेऊ दिखाया।

वाचक-1 नानक महाराज ने कहा-पण्डित जी, मुझे ऐसा जनेऊ चाहिए जो दया की कपास, संतोष के सूत और संयम की गाँठवाला हो। यदि आपके पास ऐसा जनेऊ है तो मुझे पहना दीजिए। ऐसा जनेऊ न कभी टूटता है, न कभी मैला होता है, न कभी जलता है, न कभी नष्ट होता। आपके पास ऐसा जनेऊ है ?

वाचक-2 पण्डित जी अवाक ! नानक जी के प्रश्न के सामने एक दम निरूत्तर

(संगीत ध्वनि द्वारा दृश्य परिवर्तन। अनाज को तौलने की ध्वनियाँ)

कर्मचारी-1 नानक ! राज का अनाज तौलने का काम पूरा हुआ। अब तुम्हारी पारी है।

नानक- ठीक है। अभी तौलता हूँ-

एका है, एका है, एका है, एका है
दूजा है, दूजा है, दूजा है, दूजा है
तीजा है, तीजा है, तीजा है, तीजा है,

चौथा है, चौथा, पंचवा है पंचवा
छटवां है छटवां, सतवा है सतवा
अठवां है नौवां, नौवां है दसवां
दसवां है ग्यारवां, ग्यारवां है बारहवां है।
तेरा है तेरा, तेरा है तेरा, तेरा है तेरा

(तुलाई हो रही है, गिनती वही है)

तेरा है तेरा, तेरा है तेरा, तेरा है तेरा
तेरा है तेरा, तेरा है तेरा, तेरा है तेरा

कर्मचारी-1 ओ कालू दे पुत्तर। यह क्या है?

नानक- तेरा है तेरा, तेरा है तेरा, तेरा है तेरा
मेरा क्या है
सब तेरा है तेरा है, तेरा, तेरा है तेरा
(तौलना चालू रखते हुए)
सब तेरा है तेरा है, तेरा, तेरा है तेरा

कर्मचारी-2 नानक, बस करो। बड़ी सिफारिश के बाद तुम्हें मोदी खाने मे रखा था। यों तो दौलत खां बरबाद हो जाएगा। बंद करो। तुलाई फिर से करनी होगी।

(संगीत ध्वनि द्वारा दृश्य परिवर्तन)

वाचक-1 नानक अपने समय के महान घुमक्कड़ थे। पूरब-पश्चिम में उत्तर दक्षिण सभी दिशाओं की उन्होंने यात्राएं की। भारत से बाहर ईरान और अरब तक धावा मारा। योग की तरह धुमक्कड़ी भी तरह तरह की सिद्धियां देती ही हैं। निर्भीकता तो वह देती है।

वाचक-2 नानक मक्का गए। मक्का गए तो काबा की ओर पांव फैलाकर सो गए। मुल्लाओं ने आपत्ति की। एक मुल्ला ने गुस्से में आकर पैर पकड़कर दूसरी ओर करने चाहे।

वाचक-1 गजब हो गया वहाँ के लोग हैरत करने लगे। अजीब करिश्मा हुआ। जिस तरफमुल्ला पांव घुमाते काबा उसी ओर घूम जाता। इस करिश्में को देखकर वहाँ के लोग नानक देव के मुरीद हो गए।

वाचक-2 नानक जी यात्रा में हर किसी का आतिथ्य स्वीकार नहीं करते थे। वह यह मानते थे कि जैसा खाए अन्न, वैसा होए मन।

वाचक-1 नानक से एक दिन एक गांव मे ठहरे। इस गांव में नानक देव के दो शिष्य रहते थे। एक था लालो बढ़ई, दूसरा था भागो साहुकार। नानक देव जी ने लालो बढ़ई का आतिथ्य स्वीकार। भागो साहुकार ने बड़ा आग्रह किया। अपने निर्णय का औचित्य सिद्ध करने के लिए नानक जी ने लालो बढ़ई और भागो साहुकार के घर से रोटियां मंगवाई।

वाचक-2 भागो साहुकार के घर से आई गेहूं की पतली-पतली घी चुपड़ी रोटियाँ और लालो बढ़ई के घर से आए मिस्से आटे के मोटे-मोटे टिक्कड़! नानक जी ने भागो साहुकार की रोटियां को मुट्ठी में दबाकर निचोड़ा रोटियां से निकली खून की धारा!

वाचक-1 और लालो बढ़ई के टिक्कडो से निकली दूध की धारा! लालो बढ़ई की कमाई पसीने की सहज कमाई थी। पसीना कमाई को पवित्रता प्रदान करता है। ऐसी सहज कमाई की दूध की धारा से ही समाज का पोषण होता है। दौलत पाप के बिना आती नहीं, मरने के बाद साथ में जाती नहीं। मांगने या धोखा देकर एचातानी से धन कमाना भी क्या कोई कमाना है!

वाचक-2 कबीर जी यही तो कहते है-

सहज मिले तो दूध सम, मांगि मिले सो पानी।
कहे कबीर वह रकत सम जामें एचातानी।।

(संगीत ध्वनि द्वारा दृश्य परिवर्तन) (ध्वनि जनता की आपसी चर्चा)

स्वर-1 नानक हिन्दू है।

स्वर-2 नहीं, नानक मुसलमान है।

स्वर-3 नानक के माता-पिता हिन्दु है।

स्वर-1 होंगे, इससे क्या होता है? मुसलमानों की तरह नानक एकेश्वरवादी है।

स्वर-2 नानक हिन्दू है। कर्म और पुनर्जन्म में उनका विश्वास है।

स्वर-3 नानक के आत्मीय मरदाना का नाम सुना है? वह भी मिरासी है। मुसलमान था।

स्वर-1 मरदानों मुसलमान था, लेकिन उसकी इच्छा थी कि मृत्यु के बाद दफनाया न जाए, जलाया जाए। और अंत में उसी हिन्दू रीति से जलाया ही तो गया।

स्वर-2 उसके अधिकांश शिष्य तो हिन्दू है।

स्वर-3 नानक का बाना एक मुसलमान सूफियों जैसा है।

नानक - मैं नानक हूँ। यह क्या? यह झगड़ा किस लिए? हिन्दू और मुसलमान क्या एक ही ईश्वर बंदे नहीं हैं? हिन्दू होकर क्या मैं मुसलमानों के साथ नही रह सकता? मुसलमान होकर में हिन्दुओ का प्रेम क्यों नहीं पा सकता?

मैं न हिन्दू हूँ और न मुसलमान हूँ। मैं तो पंच तत्व का पुतला हूँ मैं सिर्फ नानक हूँ।

हिन्दू कहे तो मारिए, मुसलमान भी ना।
पंच तत्व दा पुतला, नानक मेरा ना।।

(संगीत ध्वनि द्वारा दृश्य परिवर्तन)

वाचक-1 उच्चवर्ग और उच्च जातियों द्वारा उपेक्षित और लांछित लोगों के बीच नानक गए। उन्होंने वंचितों की अपना समर्थन दिया और कहा-

नींचा अंदरि नीच जाति, नीची हूँ अतिनीच
नानक तिनके सभी साथ, बडियां सूं क्या रीस।

वाचक-2 नानक ने उच्चवर्ग को अपने मिथ्या जात्यामिभान को त्यागने का परामर्श दिया। वह मानते थे कि जात्यामिभान समाज की अनेक बुराइयों का जनक है। उन्होंने मिथ्या जातीय वर्ग को त्यागने की प्रेरणा दी।

जाति का गरब न कर मूरख गंवारा।
इस गरब ते चलई बहुत बिकारा।

वाचक-1 नानक ने ब्राह्मण शब्द को अपने ढ़ंग परिभाषित किया। ब्रहमण कुल में जन्म लेने से ही कोई ब्राह्मण नहीं हो जाता । ब्रह्म का विचार करने वाला ही नानक की दृष्टि में ब्राह्मण है-

जाति का गरब न करियहु कोई
ब्रहन बिंदे सो ब्राह्मण होई

अगर तू मुसलमान है तो सच्चा मुसलमान बन दया की मस्जिद बनाओ, श्रद्धा को मुसल्ला बनाओ। हक की कमाई का कुरान, लज्जा को सुन्नत और शील स्वाभाव को रोजा! तुम्हारी पाँच नमाज़ और उनके पाँच नाम याद रख, सच बोलना पहली नमाज़, हक की कमाई दूसरी नमाज़, ईश्वर से सबके हित की कामना तीसरी नमाज़, नीयत और मन को साफ रखना चौथी नमाज़। परमात्मा

के यश की प्रशांसा पाँचवी नमाज़। हराम के मांस में चतुराई का मसाला डालने से कोई हलाल नहीं हो जाता।

वाचक-2 मेरे लिए हिन्दू भाई भी सुने! तू सच्चा हिन्दू बन। सच्चा हिन्दू करूणा और सच्चाई का आचरण करता है। ईश्वर के पवित्र नाम में विश्वास करता है। तुम सूतक सूतक चिल्लते हो। बच्चा जन्में या किसी की मृत्यु हो, कुछ दिनों तक सूतक लगा रहता है। सूतक लगा तो सब कुछ अपवित्र!

वाचक-1 यदि सूतक मानना है तो सुन-मन का सूतक लोभ है, जीभ का सूतक झूठ है, आँख का सूतक परायाधन और परायी सुन्दर स्त्री का रूप है, कान का सूतक दूसरों की निंदा है। पवित्र वह है जो अपनी हक की कमाई से दूसरे जीवों की सेवा करता है।

वाचक-2 दुख विष है, हरि का नाम ही उसकी दवा है, मुश्ता है। संतोष ही सिल है और हाथों से दिया हुआ दान ही पीसना है।

दुख महुरा भारण हरि नाम।
सिल संतोष पीसण हथिदानु।।

वाचक-1 अहंकार मुनष्य का बड़ा शत्रु है। हमेशा तने-तने रहना। अपने को समय से ऊपर मानना।

वाचक-2 नानक विनय की मूर्ति थे। आंधी के समय बड़े पेड़ों की क्या हालत होती है? देखते हो!

नानक कहते हैं- हमें नन्हीं दूब की तरह रहना चाहिए।

नानक नन्हा हो रहो, जैसी नन्ही दूबा
पेड़ बड़े गिर जाएगे, दूब खूब की खूबा।

(ध्वनि द्वारा दृश्य परिवर्तन)

वाचक-1 कुछ संतो ने नारी को नर्क की खान कहा। कुछ ने नारी को प्रताड़ित करते रहने की आवश्यता बतलाई। कुछ ने नारी को काली नागिन कहा। नारी की झाई, अंधा होत भुजंग!

वाचक-2 लेकिन नानक देव की दृष्टि अधिक संयत ओर मानवीय है। नानक देव जी का तर्क था- बड़े-बडे राजाओं और महापुरूषों को जन्म देने वाली नारी को बुरा क्यों कहा जाए। **सो किऊ मंदा जिस जन्मे राजान'।**

वाचक-1 हरि का नाम हरि के बंदे की शोभा भी है और शक्ति भी दोनों के बीच का भेद एक भ्रम है।

वाचक-2 कुपनीर बिन धेनु छीर बिन मंदिर दीप बिना
जैसे तरूवर फल बिन हीना जैसे प्राणी हरी नाम बिना
देह नैन बिन, रैना चंद बिन, धरती मेह बिना
जैसे पण्डित वेद विहीना, वैसे प्राणी हरीनाम बिना।

वाचक-1 वीर भोग्या वसुन्धरा। लेकिन प्रश्न है कि शूरवीर कौन है?

वाचक-2 नहीं, नानक की शूरवीर की अपनी परिभाषा है।

सूरा एकन ऑखियन जो लड़नि दला में जाय
सूरे साई नानका जो मनणु हुकुम रजाय।

वाचक-1 जीवन संघर्ष में सफलता के लिए आवश्यक है संकल्प। दुविधा में सुविधा कहॉ? संशय युक्त आदमी विनाश को प्राप्त होता है। कैसी भी मुक्ति क्यों न हो उसके लिए आवश्यक है कि मन में लक्ष्य को लेकर कोई दुविधा न हो।

वाचक-2 नानक का मुक्तिमंत्र है-

मन की दुविधा ना मिटै, मुक्ति कहॉ ते होई।
कौड़ी बदले नानक जन्म चल्या जर खोई।

वाचक-1 नानक देव जी ने कहा- इस सांसर में दो प्रकार के लोग है एक **'गुरूमुख'** और दूसरे **'मनमुख'**। गुरूमुख व्यक्ति ईश्वर की सत्ता की और देखता है और मनमुख व्यक्ति सांसारिक होता है वह सदा अपने बारे में ही सोचता है।

वाचक-2 मन मुख व्यक्ति की मन:स्थिति के विषय में नानक का कहना है- **शरीर में बैठी कुबुद्धि तो डोमिनी है, निर्दयता कसायन है, परनिंदा मेहतरानी है और क्रोध चंडालिन है।** यदि ये एक साथ बैठी हो तो समझलों क्या हालत होगी।

(संगीत ध्वनि द्वारा दृश्य परिवर्तित)

वाचक-1 नानक देव जी का समय धार्मिक उत्पीड़न का समय था। अपने समय के ऐसे हालात के बारे में उन्होंने कुछ तो कहा होगा। वह समय निरपेक्ष नहीं हो सकते!

वाचक-2 'राग आसा' और **'राग तैलंग'** में रचित चार पद ऐसे हैं जिसमें बाबर की फौजों द्वारा पंजाब के लोगों पर किए गए अत्याचारों और भारतीय स्त्रियों के अपमान की नानक देव जी ने चर्चा की है। शासन करने का अधिकार केवल उन्हें है जो सार्वजनिक कल्याण के लिए कार्य करता है। सब के लिए समान भाव। बाबर जुल्म की बारात लेकर काबुल से चढ़ आया है और हिन्दू रूपी कन्या का दान मॉगना है। तत्कालीन राजा अपने रंग और तमाशों से डूबे हुए है। उन्हें अपने कर्तव्य का ध्यान नहीं रहा। वह न बाबर का डटकर मुकाबला कर सके और न अपनी प्रजा की रक्षा ही। बाबर की दुहाई मच गयी। आगजनी और लूटपाट! **खुरासना खसमाना कीआ हिन्दुसतान डराइआ आपु दोसु न देई करता जसु करि मुगल चढ़ाइयालु।** नानक देव जी इस उत्पीड़न के साक्षी थे। कहा जाता है कि एक हमले में उन्हें स्वयं बंदी बना लिया गया था और आक्रमणकारियों के लिए चक्की से अनाज पीसना पड़ा था।

(संगीत ध्वनि द्वारा दृश्य परिवर्तन)

वाचक-1 आज कल राजनीति में कीच मचा है। हर स्थापित नेता अपने बेटे बेटियों को अपना उत्ताराधिकारी बनाने में लगा है। कैसे भी हो मेरा बेटा या मेरी बेटी मेरे रहते मंत्री मुख्यमंत्री बन जाए।

वाचक-2 ऐसे लोगों को नानक देव जी से कुछ सीखना चाहिए। उत्तराधिकारी का आधार जन्म नहीं, योग्यता होना चहिए। नानक देवजी ने अपना अन्त समय जान अपने उत्तराधिकरी के विषय में सोचना शुरू किया। उनके सामने उनके दो पुत्र थे लक्ष्मीचंद और श्रीचंद। वह चाहते थे। वह उत्तराधिकरी बने। तीसरा व्यक्ति था एक भाई लहणा।

वाचक-1 नानक देव जी ने उत्तराधिकारी का चयन कैसे किया?

वाचक-2 अमावस की रात थी। अंधेरा ही अंधेरा, अंधेरा का मतलब भय। उन्होने अपने बेटे श्रीचंद से कहा-बेटा, यह कपड़ा लो और इस नदी में जाकर धो लाओ। श्रीचन्द ने कहा- अभी क्या जल्दी है। सुबह को धो लेंगे। यही प्रस्ताव उन्होने लक्ष्मीचंद से किया तो उसने भी आनाकानी की। अंत में नानक जी ने लहणा से कपड़ा धो लाने को कहा। लहणा तुरंत उठा। घाट पर गया और कपड़े धोकर ले आया। यह उत्तराधिकारी के चयन का पहला चरण था।

वाचक-1 और दूसरा चरण?

वाचक-2 एक दिन नानक देव इन तीनों के साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में एक

गंदा नाला पड़ा। नानक देव जी के हाथ का कटोरा गंदे नाले गिर गया। नानक देवजी ने कहा- श्रीचंद, बेटा यह कटोरा उठा लाओ। श्री चंद ने कहा-इस कटोरे में क्या रखा! कहिए, दूसरा कटोरा ला दूँ। कटोरा तो कटोरा! लक्ष्मीचंद से कहा-बेटा, जरा यह कटोरा उठा लाओ। लक्ष्मीचंद ने कहा-ठहरिए अभी कोई आने जाने वाला मिलेगा उससे निकलवा लेगे। अब यही प्रस्ताव लहणा के सामने रखा। लहणा ने आगा-पीछा कुछ नहीं सोचा। उसने गुरू महाराज को देखा और कूद कर गंदे नाले से कटोरा उठा लाया। लहणा ने अपने और कटोरे को साफकिया और कटोरा नानक देवजी को थमा दिया।

गुरूजी ने लहणा को अपना उत्तराधिकारी चुना। उसका नाम रखा अंगद। और प्रेम से उसे गद्दी पर बैठा दिया।

वाचक-1 इस प्रसंग से जुड़ी और भी किंवदंतियाँ है।

वाचक-2 हाँ, है। सोचने-समझने की बात यह कि उन्होने लहणा को अंगद नाम ही क्यों दिया।

वाचक-1 जरूर उनके मन में रावण के दरबार में अंगद के पांव रोकने का प्रसंग रहा होता।

वाचक-2 सो, तो हैं बड़ी व्यंजना है इस शब्द में।

(संगीत ध्वनि द्वारा दृश्य परिवर्तन)

वाचक-1 हम विघटन कारी और पृथ्कता वादी हैं।

वाचक-2 नानक देव समन्वय वादी और आत्मीय एकता के पक्षकार थे।

वाचक-1 नानक देव की वृति सार गृहिणी थी।

वाचक-2 लेकिन हम तो सार को निस्सार कर रहे हैं ?

वाचक-1 उनका रास्ता धर्म का था।

वाचक-2 लेकिन हम तो अधर्म की अंधेरी सुरंग में बढ़े जा रहे हैं।

वाचक-1 नानक देव हक की कमाई को सच्ची कमाई मानते है।

वाचक-2 लेकिन हमें तो धन चाहिए हमें कदाचार सदाचार से क्या लेना देना!

वाचक-1 हिंसा पर अहिंसा की विजय का नाम नानक है!

वाचक-2 श्रम और भक्ति दोनों की संयुक्ति नाम नानक है!

वाचक-1 सामाजिक समरसता का नाम नानक है!

वाचक-2 सामाजिक समरसता के लिए सामाजिक न्याय को वह जरूरी मानते थे।

वाचक-1 निर्भय और निरबैर का नाम नानक है!

वाचक-2 मेहनत से कमाना, संयम से खर्च करना और प्रेम से दान करना उनकी जीवन शैली का अंग था।

वाचक-1 नानक देव भारतीय समाज की अन्तर्वेदना और अन्तविरोध के विरूद्ध पहला मुखर स्वर था।

वाचक-2 नानक देव नारी सम्मान की रक्षा में उठी पहली आवाज थे।

वाचक-1 नानक दिव्य पुरूष थे।

वाचक-2 नानक अमृत पुत्र थे।

वाचक-1 जो उपगिया से बिगसिया परो आज कि काल
नानक हरिगुण गाय लै, छोड़ सकल जंजाल

वाचक-2 चिंता व की कीजिए जो अनहोनी होय,
यह मारग संसार में, नानक थिर नहीं कोय

दोनों वाचक- नानक नाम जहाज रे, चढ़े तो उतरे पार रे
नानक नाम जहाज रे, चढ़े तो उतरे पार रे

- डी-15 शालीमार गार्डन, कोलार रोड, भोपाल-42
मो. 9425679044

सम्मान

पं. सज्जन लाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग' को वर्ष 2019 का 'पुट्टराज गौरव' सम्मान

दिनाँक 10 दिसम्बर 2019 मंगलवार को शहीद भवन सभागार भोपाल में 58वें पंचाक्षर संगीत समारोह में पंचाक्षर वीरेश्वर पुण्याश्रम संस्था द्वारा वर्ष 2019 का 'पुट्टराज गौरव सम्मान से ग्वालियर घराने के सुविख्यात संगीतकार शास्त्रीय गायक पं. सज्जन लाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग' को प्रदान किया गया इस समारोह में यह सम्मान पं. सिद्धराम स्वामी कोरवार द्वारा दिया गया। इस अवसर पर कला समय के सम्पादक भंवरलाल श्रीवास सहित कला, संगीत के वरिष्ठ अथिति कलाकार गणमान्य, संगीत रसिक मौजूद थे। पं. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग' द्वारा सम्मान के उपरांत शास्त्रीय गायन की प्रस्तुति दी। इनके साथ तबले पर मनोज पाटीदार तथा हारमोनियम पर जमीर हुसैन ने संगत दी।

आलेख

प्रकाश के अजस्र गवाक्ष हैं - गुरु नानक देव

रामप्रकाश त्रिपाठी

जब भी देश की सामाजिक समरसता की बात होती है तो कहा जाता है कि यह नानको-कबीर का देश है। हम बचपन से अपने शिक्षकों से, नेताओं से यही सुनते आये हैं। गुरु नानक देव ने जो अपने शिष्य बनाये थे वे सामाजिक समरसता के प्रतीक बन गये। कालांतर में शिष्यों का धर्म ही सिख-धर्म हो गया। गुरु नानक साहब के पंथ से दस गुरु निकले जिन्होंने सामाजिक समरसता के लिए यौद्धा तैयार किये।

यह कहना शायद गलत होगा कि केवल सिक्ख ही गुरु नानक देव के अनुयायी हैं। जो भी सामाजिक भेद-भाव, ऊंच-नीच, जात-पांत, छुआ-छूत की जड़ताओं के विरूद्ध है, उसकी चेतना में अवश्य कहीं न कहीं गुरु नानक और उनकी शिक्षाओं का संस्कार है। जो संत गुरु नानक के शिष्य नहीं भी रहे लेकिन जिन्होंने दलितों कुचलों वंचितों के अधिकारों के लिए भूमि तैयार की वे गुरु नानक की परंपरा से विलग नहीं किये जा सकते। इनमें छत्तसीगढ़ के गुरु घसीदास के, महाराष्ट्र के बाबा गाडगे और सत्यसाईं के नाम लिए जा सकते हैं।

एक दौर था जब पंजाब अशांत था। कनाडा से पाकिस्तान तक में सिखों को आतंकवाद की ओर धकेलने की कोशिशें हो रही थी तब भोपाल में हम लोगों ने संगीत कला संगम की परम्परा श्रृंखला में 'गुरु ग्रंथ साहब पर्व' का सांगीतिक अनुष्ठान किया था। हमें उम्मीद थी इस आयोजन का व्यय-भार दानशीलता के लिए मशहूर सिख-भाईयों की सहायता से उठाया जा सकेगा। हम एक बड़े ट्रांसपोर्टर और रसूखदार सरदार साहेब के पास गये। हमने उनके सामने प्रस्ताव रखा और मदद चाही। तो वे क्रुद्ध हो गये और बोले - तुम लोगों कि हिम्मत कैसे हुई गुरु ग्रंथ साहब को हाथ लगाने की? कौन होते हो तुम? हमने तर्क रखे कि सिख धर्मावलंबियों की मांगें नाजायज नहीं हैं। उनके साथ अन्याय की बात भी गलत नहीं है। शासन से उनकी शिकायतें वाजिब हैं लेकिन उनको मनवाने का रास्ता आतंकवाद नहीं हो सकता। अपने सिद्धांतों मूल्यों के लिए योद्धा होना एक बात है और आतंक पैदा करके बातें मनवाने की कोशिश दूसरी। यह रास्ता गुरु नानक देव के उदार चरित सिख धर्म का रास्ता कैसे हो सकता है? हम कोई सिख धर्म के विशेषज्ञ तो थे नहीं, गुरु नानक देव, गुरु ग्रंथ साहब और सिख-पंथ के बारे में उतना ही जानते थे जितना हमने सुना था या कोर्स की किताबों में पढ़ा था। इसलिए हमें लगता था पृथक 'खालिस्तान' का हिंसक आंदोलन गुरु की शिक्षा के अनुरूप नहीं हो सकता।

सरदार साहब हम लोगों के तर्कों से खफा हुए और बोले कि तुम लोग जानते नहीं हो कि 'सिख मरजीवड़ों' की उम्र 14 साल हो गई है। इस के बाद तर्क की गुंजाइश नहीं बची थी। यों भी बात जिस स्तर पर पहुंच चुकी थी कि हमने वहां से निकलने में ही खैर समझी। बाद में हमें गुरुद्वारों के ग्रंथी साहिबान से बहुत मदद मिली, प्रोत्साहन भी। उसी बीच एक सिख मित्र का एक निमंत्रण मिला। उनके यहां गुरु ग्रंथ साहब का पाठ आयोजित था लेकिन आमंत्रण पत्र में पाठ शब्द का जिक्र नहीं था - लिखा था कि गुरु ग्रंथ साहब का प्रकाश होगा।

इस 'प्रकाश' का मतलब हमने समझने की कोशिश गुरु ग्रंथ साहब के प्रकाशोत्सव में समझी। वहां ग्रंथी पावन ग्रंथ साहब में संकलित पद उसी में निर्दिष्ट रागों के अनुसार गाते हैं। वहां शब्द-स्वर-साधना और संदेश का समागम होता है। प्रीतिकर आनंददायी अनुभूति के साथ उन पदों में अंतर्निहित सामाजिकता का संदेश भावक की आत्मा में ऐसे उतरता है जैसे मिठाई का स्वाद अनुभव का हिस्सा बनता है। किसी साहित्य या ग्रंथ के पाठ का यह ऐसा दार्शनिक पक्ष था जिसे हम इससे पहले नहीं जानते थे। बाद में जाना कि अमृतसर का स्वर्ण मंदिर के नाम से ख्यात हरमंदर साहब एक ऐसा तीर्थ है जिसमें सनातन धर्म के सभी संप्रदायों की शिक्षाओं का समुच्चय है। यह धर्म अपने मूल रूप में सावयवी और समावेशी धर्म है। 'गुरु ग्रंथ पर्व' की आयोजना का विचार इसी चिंतन भूमि से जन्मा था।

बहरहाल तीन दिवसीय समारोह हुआ। इसमें पं. जसराज, गुलाम मुस्तफा, डॉ. हफीज अहमद, बाल मुरली कृष्ण जैसे शीर्ष शास्त्रीय संगीत गायक आये। आयोजन की शर्त के मुताबिक उन्होंने अपनी अपनी शैली में अपनी-अपनी रूचि से चयन करके गुरु ग्रंथ साहब के पदों को निर्दिष्ट रागों में निबद्ध करके ही गाया। एक घटना पं. जसराज की प्रस्तुति के दौरान घटी। एक बेहद गरीब सिख जो बहुत बुजुर्ग थे, जो अपनी शारीरिक अशक्तता के बावजूद केवल अपने श्रम से ही उपार्जित धन से अपनी गुजर-बसर करते थे, गो कि उनका खानदान बहुत धन-समृद्ध था। वे घर-परिवार में उपेक्षित भी नहीं थे। सिद्धांत की बात यह थी कि वे केवल अपने श्रम से उपार्जित पैसे से ही अपना भरण-पोषण करेंगे। यह एक किस्म की आत्मनिर्भर और पवित्र जिद थी। इन सिख साहब ने रवीन्द्र भवन की पिछली सीट से उठकर ज़ारो-कतार आँसू बहाते हुए मंच की ओर प्रस्थान किया और वहां पहुंचकर अपनी टेंट में खुरसे हुए चार-पांच रूपयों के नोट निकाल कर गायक जसराज के चरणों में रख दिये। बुजुर्गवार सिख के आंसू जैसे जसराज जी के आंखों में प्रवेश कर गये उन्होंने गायन को अल्पविराम देकर उन रूपयों को माथे से लगाया और रुंधे कंठ से कहा कि इतना बड़ा पारिश्रमिक और इतना बड़ा सम्मान मुझे आज तक नहीं मिला। यह श्रद्धा भक्ति से भीगा सम्मान है। अब मुझे किसी पद्म विभूषण या भारत रत्न की दरकार नहीं है। इसके बाद रवीन्द्र भवन आनंदातिरेक और भावपूर्ण तालियों से देर तक गूंजता रहा। इससे प्रभावित एक और प्रसंग पंडित जसराज का और है जिसका जिक्र में आगे करूंगा।

इस गुरु ग्रंथ पर्व में सिक्खी परंपरा, आन्दोलन धर्मिता, सिख धर्म का इतिहास और हिंसावाद पर केंद्रित दो दिवसीय परिसंवाद भी हुआ। जिनमें सरदार जीवन सिंह उमरानेगल, इंदर कुमार गुजराल, डॉ. रमेश कुंतल मेघ, प्रभाष जोशी, राजेन्द्र माथुर आये और उन्होंने संदर्भित सभी बिन्दुओं पर विचारोत्तेजक व्याख्यान दिये। राजेश जोशी, राजेन्द्र कोठारी, रामप्रकाश, शशांक आदि ने बहस में हस्तक्षेप किया। इस पर्व में हुए विचार मंथन से समझ में आया कि ग्रंथ साहब में गुरुनानक वाणी के अतिरिक्त वे सभी महत्वपूर्ण भक्त कवियों का शुमार था जो अकादमिक साहित्य से जातिवादी कारणों से उपेक्षित थे। प्रमाणिक बृज भाषा का भी गुरु ग्रंथ साहब अनूठा दस्तावेज़ है। साहित्य-कला-संगीत और मानवीय धर्म करुणा का सर्व समावेशी धर्म का काव्यात्मक आख्यान।

अशांत पंजाब में शांति की कामना से पं. जसराज ने प्रस्ताव किया कि क्यों न पंजाब में एक सांगीतिक यात्रा निकाली जाये। न भाषण, न राजनीति, सिर्फ संगीत और ग्रंथ साहब का राग निबद्ध गायन। अशोक जैन भाभा ने मजाक किया कि पंडितजी वहां खतरा बहुत है। कहीं गोली वोली लग गयी तो? पंडित जसराज ने तुर्की-ब-तुर्की जवाब दिया – मैं बतौर गायक अमर हो जाऊं यह तो संभव नहीं लगता। एक गायक की कितनी उम्र होती है? उसका गाना कितने दिनों याद रखा जा सकता है? शहीद हुए तो गुरु चरणों में जगह मिलेगी और गुरुकृपा से इतिहास में हमेशा के लिए शहीदों की श्रेणी में नाम दर्ज़ हो जायेगा।

मुझे लगा बात मजाक की है, मगर पंडित जी ने एक बार मुंबई से फोन करके राजेन्द्र कोठारी से कहा कि रामप्रकाश से कहो कि वह पंजाब का कार्यक्रम करें। एक बार भोपाल से गुजरते हुए स्टेशन पर तलब कर कहा कि तुमने वादा किया था, पहल क्यों नहीं की। पंडित जी की गहरी दिलचस्पी देख में दिल्ली गया। वहां मैंने रंगकर्मी और सामाजिक कार्यकर्ता सफदर हाश्मी से बात की जो पंजाब में शांति प्रयासों के लिये सचेष्ठ थे। पं. जसराज का प्रस्ताव सुनकर वे उछल पड़े। उन्होंने तत्काल दो ट्रकों में मंच की ड्राइंग तैयार की और कहा कि यह सुसज्जित और चलित मंच होगा। इसमें यात्रा की सुविधाएँ भी होंगी, माइक लाइट की व्यवस्था भी। दो ट्रकों को जोड़ कर आधा घंटे में मंच तैयार हो जायेगा। इस योजना के बावत जब पंडित जी को बताया तो वे उत्साहित होकर बोले – हमें नानक देव जी के संदेश को प्रसारित करने और शांति में योगदान देने का मौका मिलेगा। मैं हरियाणा का हूं। पहले हम पंजाब ही थे। राजनीति ने पंजाब-हरियाणा कर दिया। गुरु साहिबान को तो नहीं बांटा जा सकता। वो तो सबके हैं। सर्वे भवन्तु सुखिन:! दुर्भाग्य से यह अभियान नहीं चल सका क्योंकि सफदर हाश्मी की साहिबाबाद में नुक्कड़ नाटक के समय नृशंस हत्या राजनैतिक माफिया ने कर दी। पं. जसराज को गुरु नानक का संदेश संगीत के माध्यम से प्रस्तुत करने और गुरु वाणी का संदेश देने का अवसर जाता रहा।

पं. जसराज गुरु नानक की महत्ता को न समझते हों ऐसा नहीं था। लेकिन उनसे संबंधित कार्यक्रम में शामिल होने का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे जीवन दांव पर लगाने को तैयार हो गये। यह एक उदाहरण मात्र है। उनसे प्रेरणा लेकर परमार्थ का काम करने वालों की फेहरिश्त लंबी है। मैं सिर्फ अपनी फेहरिश्त की बात कर रहा हूँ। बाकी दुनिया जहान की अनंत प्रेरणाओं की बात में नहीं कर सकता। मैं जनवाद में विश्वास रखता हूँ। मार्क्सवादी नेता का. हरकिशन सिंह सुरजीत के संपर्क में आया हूँ। यंगटर्क नाम से मशहूर सांसद शशिभूषण वाजपेयी ने स्वतंत्रता संग्राम का संस्मरण सुनाते हुए बताया कि जवाहर लाल नेहरू की सभा का आदेश ब्रिटिश सरकार ने अंतिम समय में रद्द कर दिया था। यह पंजाब की आन-बान-शान का मुद्दा बन गया था। तय हुआ कि सभा तो होगी। सुरजीत ने तब अपने खेत में जवाहर मंच बनवाया और खड़ी फसल बिछाकर लोगों के बैठने की व्यवस्था की। सरदार भगतसिंह से सरदार सुरजीत तक तमाम क्रांतिधर्मा लोगों के संस्कार में गुरु नानक की उत्सर्ग-कामी शिक्षा नहीं थी, यह हरगिज नहीं कहा जा सकता। सिख पंथ भी आखिर मोक्ष से अधिक मानव की मुक्ति की बात करता है।

अपने सामाजिक पत्रकारिक सरोकारों, वैचारिक आग्रहों और न्याय के प्रति संघर्षशील जज्बे के चलते जब भी मुझे दिल्ली जाने का अवसर मिलता है, मैं समय निकाल कर जंतर-मंतर की आंदोलन भूमि पर जरूर जाता हूं। यह पार्लियामेंट रोड़ के पास ऐसी जगह है जहां धरने-प्रदर्शन की स्थाई इजाजत है। यहाँ राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक सभी किस्म के आयोजन अपनी-अपनी आंदोलन धर्मिता के कारण चलते रहते हैं। वहां मैंने अक्सर देखा है कि लंच के वक्त बड़े-बड़े टिफिनों, डोंगों, भगोनों में खाना आता है और धरने पर बैठे लोगों में आदरपूर्वक बाँटा जाता है। इसमें जाति पांति, धर्म, राजनीति यानी कांग्रेस-कम्युनिस्ट-भाजपा में कोई फर्क नहीं किया जाता। एक किस्म का पंथ-निरपेक्ष, राजनीति-निरपेक्ष और मकसद-निरपेक्ष भोज होता है। मैंने पूछताछ की तो पता चला कि ये बंदे बंगला साहब गुरुद्वारे से आते हैं। उनका केवल एक ध्येय है कि दिल्ली में अपनी समस्याएं लेकर आये लोगों को न भोजन की तकलीफ हो, न भोजन के लिए भटकना पड़े।

एक बार एन.डी.टी.वी. पर प्राइम टाइम रिपोर्ट देखते हुए मैंने गौर किया कि कुछ नौजवान सिंह साहबान बांग्लादेश और म्यांमार और भारत की सीमा पर बौद्धों द्वारा पीड़ित विस्थापित किये जा रहे रोहिंग्या मुसलमानों को भोजन बांट रहे हैं। चैनल का संवाददाता पूछ रहा है कि इनको जब भारत में प्रवेश से सरकार रोक रही है और बांग्लादेश के दरवाजे भी कम-ओ-वेश बंद ही हैं तब आप क्यों इनकी सेवा में जुटे हैं। सिख नौजवान जवाब दे रहे हैं कि हम सेवा क्या करेंगे – हम तो वाहे गुरु के आदेश से गरीब, भूखे, बूढ़े-बच्चों, औरतों-मर्दों को भोजन करा रहे हैं। हमें लगता है और नानक देव की शिक्षा हमें सिखाती हैं कि भूखों की सहायता करो। तुम्हारे संज्ञान में भूखा आये तो कोशिश करो वह भूखा सो न पाये। उसे खाना मिले। पूछा गया वहां दिल्ली में तो यह सेवा समझ में आती है पर यहां इतनी दूर भारत के सीमांत पर? उन्होंने जवाब दिया कि हमने टी.वी. पर इनकी परेशानी देखी। पता चला ये कई-कई दिन से भूख के शिकार हैं तो गुरु ने प्रेरणा दी कि इनकी सेवा की जाये। एंकर ने याद दिलाया कि भारत विभाजन के वक्त सिखों-पंजाबियों ने पाकिस्तान परस्त मुस्लिम दंगाइयों के दिये गये दंश भी आपको याद नहीं है जो मुसलमानों की मदद को आ गये। सिख बंदों ने कहा हमें इतिहास की काली परछाइयों में नहीं रहना है हमें तो गुरु नानक साहेब द्वारा स्थापित सिक्खी परम्परा का पालन करना है और गुरु के हुक्म को मानना है कि कोई भूखा न रहे।

यहां प्रश्न यह नहीं है कि सिख धर्म या उसकी सेवाओं से भारत या दुनिया की भूख मिट पायेगी या नहीं। पर इतना तय है कि यह गुरु नानक की सेवा का 'भूख के विरूद्ध भात के लिए' किया जा रहा युद्ध है। मैं इस भावना इस जज्बे को सलाम करता हूं। आज जब कि धार्मिकता धर्मन्धता में तब्दील होती जा रही है और प्राय: अधिसंख्य धर्म अपनी दार्शनिक लीक छोड़कर कर्मकाण्ड में मुब्तिला हो रहे हैं और किस्म किस्म की सांप्रदायिकताओं, बेमनस्यताओं तथा तद्जनित हिंसाओं को जन्म दे रहे हों तब गुरु नानक के इन सेवा सैनिकों को सलाम करना तो बनता है। यह सलाम इनके मार्फत गुरु नानक साहब की शिक्षा को भी है।

एक बार मैं जनवादी लेखक संघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में गया हुआ था। रकाबगंज गुरुद्वारा के पास 15 ताल कटोरा आवास में ठहरा हुआ था, तब एक हादसा हुआ कि मेरे और मेरे एक साथी के बैग बदल गये। वे गलत बैग लेकर चले गये और उसमें मेरे कपड़े और मेरा पर्स भी चला गया जिसमें लौटने का रिजर्वेशन टिकिट भी था और पैसे भी। शाम को खाने का संकट था। मैंने छत्तीसगढ़ के साथी जितेन्द्र सिंह सोढ़ी को समस्या बताई। तो वे हंस कर बोले 'कोई गल नहीं,' चल। रकाब गंज चलते हैं। वहां जाकर लंगर में भरपेट भोजन किया। पता चला कि यह लंगर बिना भेदभाव के लोगों की सेवा के लिए है। मुझे लगा कि लंगर साहब की परम्परा भी सिक्खी की 'भूख के विरूद्ध भात' के लिए युद्ध से बावस्ता है। इन छोटी-छोटी बातों से मैंने गुरु नानक साहब के आदेश को, संदेश को, धर्म-शिक्षा को और परमार्थ की परम्परा के सातत्य को समझा जाना। मैं न सिख धर्म का ज्ञाता हूं और न सिख धर्म के इतिहास का गंभीर अध्येता। बस भूख की खिड़की से मैंने देखा और पाया कि सेवा के ज्ञान के प्रकाश के अजस्र गवाक्ष हैं – गुरु नानक देव।

– सहयोग, एम-17 निराला नगर, भदभदा रोड, भोपाल-462003
मो. 9753425445

आलेख

मानवता के प्रतीक श्री गुरू नानक देव जी

डॉ. चरनजीत कौर

इस विश्वभूमि पर सिख धर्म का अवतरण एक अनूठी घटना है जिसने आधुनिक सभ्यता, संस्कृति एवं इतिहास का सृजन किया है। सिख धर्म के संस्थापक श्री गुरू नानक देव जी, जो स्वयं साक्षात मानवीय धर्म के प्रतीक हैं, इसलिए उनके द्वारा स्थापित सिख धर्म केवल धार्मिक मूल्यों के निर्वहन तक सीमित नहीं है बल्कि मानवीय मूल्यों के सामाजिक जीवन मे निर्वहन का एक अनोखा उदाहरण भी है। सिक्ख धर्म मानव धर्म है, इस तथ्य से प्रत्येक लेखक, इतिहासकार एवं बुद्धिजीवी वर्ग सहमत होंगे। श्री गुरू नानक देव जी के उपदेश और सिद्धांत आधुनिक मानव जीवन पर आधारित है। गुरूजी ने आत्मिक क्रियाओं को आध्यात्म से जोड़ने तथा शारीरिक परिश्रम को कर्म से जोड़ने का सिद्धांत दिया है। इसलिए गुरू जी के सिखों के जीवन में धर्म, भक्ति एवं शक्ति का अदभुत मिश्रण परिलक्षित होता है। आपने निराकार परमात्मा (अकाल पुरख) का स्मरण स्वयं किया एवं मानव मात्र को भी प्रेरित किया परमात्मा के नाम का स्मरण भक्ति के लिए सर्वश्रेष्ठ माना। आपने प्रत्येक व्यक्ति को किरत करने, नाम जपने व वंड छकने के सिद्धांत ही नहीं दिए वरन् स्वयं भी उनका अपने जीवन में पालन किया।

घाल खाए किछ हथ्थो दे, नानक राह पछाणे से।

श्री गुरू नानक देव जी हिन्दुओं के गुरू और मुसलमानों के पीर के रूप में सत्कारित किए जाते हैं। भारतवर्ष में विभिन्न धर्म, जाति, सम्प्रदाय एवं मानव समूह श्री गुरू नानक देव जी के व्यक्तित्व तथा उनकी आलौकिक दिव्य क्षमता के प्रति आस्था रखते हैं। आपके उपदेश केवल सिख धर्म के अनुयाईयों तक ही सीमित नहीं है। अपितु मानवता में विश्वास रखने वाले प्रत्येक मानवमात्र के लिए अति महत्वपूर्ण हैं। उनके उपदेश एक व्यक्ति के मानववादी संकल्प से कहीं आगे विश्वव्यापी कहलाते हैं। संसार के सभी धर्म एक परमसत्ता की उपस्थिति को स्वीकारते हैं, तो भेदभाव कैसा? हम सभी एक ईश्वर की संतान हैं। उत्पत्ति, पालन और करने वाला सति है, नाम है और कामरूपी प्रपंच रचने वाला है। सृष्टि का करता है, पुरख है (प-रख) की रक्षा करने वाला है निरभऊ है, निरवैर है, समय की बंदिश से परे है और प्रत्येक कण में मूर्तिमान हैं, वह किसी भी योनि में नहीं आता, भाव उस का कोई माता-पिता नहीं। वह स्वयं ही प्रकाश पुंज है। श्री गुरू नानक साहिब जी कहते हैं:

आपीनै आपु साजिऔ आपीनै रचिऔ नाऊ।। श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी (अंग 463)

उसी एक का प्रकाश सभी में समाया है:

सभ महि जोति जोति है सोयि।। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी (अंग 13)

वह गुरू बड़ा है और प्रसादि किरपा स्वरूप है।

गुरु साहिब ने हमें नाम का जाप करने का आदेश दिया है। जो संसार की रचना से पहले भी था, जुगों-जुगों तक सत्य रहा है, अभी भी सत्य है। गुरू नानक साहिब ने दावे से कहा है कि आने वाले समय में भी सत्य होगा।

जब मनुष्य की आत्मा परमात्मा में अभेद होने लगती है तो उसकी दृष्टि में एक समानता की भावना जागृति होने लगती है। यही है अद्वैतवाद अर्थात विश्ववादी संकल्प है जिससे व्यक्ति, व्यक्ति से, समाज से और अंत में परमात्मा में अभेद हो जाता है। क्योंकि अकेला मनुष्य समाज से अलग रहकर विकास के उन आयामी को प्राप्त जिसके लिए, इस संसार में उसका प्रादुर्भाव हुआ है। प्राप्तियाँ वे शिष्टाचारक ही या मानसिक, वे समाज से जुड़ने पर ही करूणा, प्रेम, सदभाव का जन्म देती हैं। आप अपनी तर्कवादी शैली से अशांत मन वाले मनुष्य को शान्ति व आत्मिक प्रसन्नता प्राप्त करने का मार्ग बताते हुए फरमाते हैं-

जे रत्त लग्गे कपड़े, जामा होए पलीत।
जो रत्त पीवे माणसा तिन को निर्मल चीत।

श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी (अंग 140)

गुरु जी ने धर्म, भाषा, जाति, वेशभूषा या लिंग के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव कभी स्वीकार नहीं किया क्योंकि आपका उद्देश्य स्वकेन्द्रित न होकर मानव व समाज केन्द्रित था। भाषा मनुष्य द्वारा विकसित विचारों को प्रकट करने का साधन मात्र है, साहित्य उसमें प्रकट किए विचारों पर निर्भर करता है। आपने पंजाबी, हिन्दी, फारसी, संस्कृत, ब्रज भाषा आदि सभी भाषाओं में बाणी रचना सम्बन्धित विभिन्न भारतीय रागों में पिरोकर जनसाधारण के कल्याण हेतु गायन भी किया ताकि सर्वमानवता परमात्मा के प्रेम का रसास्वादन कर सकें।

इस्लामिक शब्दावली-

मिहर मसीत सिदक मुसला, हक हलाल कुराण।
सरम सुन्नत सील रोजा हो मुसलमान।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी (अंग 140)

हिन्दु शब्दावली (ब्राम्हण)-

दया कपा संतोख सूत, जत्त गंडी सत्त वट्ट।
एह जनेऊ जी का हई तां पाडे घत्त।

श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी (अंग 471)

तथा पोषाक या लिबास के आधार पर कोई अपना पराया नहीं हो सकता है, समझाते हुए फरमाया-

बाबा होर पैनण खुसी खुआर।
जित्त पैदे तन पीड़ीए मन में चले विकार।

श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी (अंग 16)

भोजन उपलब्धि, आदतें, समय, स्थान तथा सभ्यता संस्कृति पर आधारित होता है। यह किसी भी व्यक्ति के मानसिक व शारीरिक आवश्यकता पर निर्भर करता है, गुरू जी फरमाते हैं-

सभ रस मीठे, मन्निए सुणिए सालोणे।
खट तुरसी मुख बोलणा मारण नाद कीए।
छत्ती अमृत भाओ एक जा को नदर करे।
बाबा होर खाणा खुसी खुआर।
जित्त खादे तन पीड़ीए मन में चले विकार।

श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी (अंग 16)

श्री गुरू नानक देव जी भारतीय इतिहास की एक ऐसी शख्सियत हैं जिन्होंने भारतीय संस्कृति पर बहुत गहरा प्रभाव अंकित किया। आज भी वह वाणी संग्रह, जीव हृदयों पर रहिमत की वर्षा कर रही है। आपने जपु, आसा दी वार, माझ की वार, मल्हार की वार, कुचज्जी-सुचज्जी, थित्ती, दुखणी ओंकार, सिध गोस्ट, बारामाहा तुखारी, अलाहुणीआँ आदि स्वतंत्र बाणियों की रचना की। गुरू जी द्वारा भाव अभिव्यक्ति हेतु श्लोक काव्य रूप का प्रयोग बहुतायत से किया गया है। श्लोक संस्कृत भाषा का शब्द है, जिसका भाव भावार्थ है स्तुति करनी, सिफ्ट सलाह करनी। भाई कान सिंह नाभा के अनुसार: श्लोक के अर्थ हैं, प्रशंसा, स्तुति, तारीफ़ यशगीत आदि।

गुरूजी ने कुल 270 श्लोकों की रचना की है। गुरू जी द्वारा रचित श्लोकों में आध्यात्मिक, सामाजिक, नैतिक, राजनैतिक, तत्कालीन आदि पक्षों का अभूतपूर्व निरूपन हुआ है। लौकिक से लेकर परालौकिकता तक लगभग सभी विषयों को समाहित किया गया है। आपजी ने 19 रागों में 974 भजन (शबदों) का उच्चारण किया जो कि सिखों के वर्तमान गुरू श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी का अभिन्न अंग है। उन्होंने अपनी सुमधुर सरल वाणी से जनमानस के हृदय पर विजय प्राप्त कर ली। गुरू जी की वाणी अकाल पुरूख की स्तुति के साथ-साथ जीवन यापन के सर्वश्रेष्ठ ढंग को निरूपित करती है। परमात्मा की प्राप्ति हेतु सर्वप्रथम आपने ही शबद गुरू का सिद्धांत दिया। शबद के मार्गदर्शन तथा साधना से ही चित्त परमात्मा तक पहुँच सकती है। आपका कथन है-

पवन आरंभ सतगुर मत्त वेला, शबद गुरू सुरति धनु चेला।

श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी (अंग 943)

संसार की सबसे प्रबल हकीकत उसकी विभिन्नता है और इससे कोई भी इन्कार नहीं कर सकता है क्योंकि यह प्राकृतिक नियम है तथा यही संसार की भव्यता का रहस्य भी है। लेकिन यह विभिन्नता एक दूसरे को परस्पर प्रतिरोधी न बना दे, इसलिए जरूरी है आपसी संवाद का प्रतिपादन। संवाद के माध्यम से विभिन्न धर्म अनुयाइयों, सामाजिक इकाइयों के मध्य व्यापक साँझ स्थापित करने का कार्य करते हैं। इस संवाद के लिए गुरूजी ने संगत व पंगत का सिद्धांत दिया। इस संवाद में सद्गुणों को साँझा किया जाना चाहिए।

साँझ करीजे गुणह केरी, छोड़ अवगुण चलिए।

श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी (अंग 766)

अपने विचारों से अधिक दूसरे के विचारों को अधिक महत्व दिया जाना आवश्यक है। पहले सुनिए फिर कहिए।

जब लग दुनिया रहीए, नानक किछ सुणीए किछ कहिए।

श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी (अंग 661)

गुरूजी फरमाते हैं प्रकृति की विभिन्नता, सुन्दरता की सराहना किया जाना काबिले तारीफहै पर अज्ञानता और कलिख से गुरेज भी परवान नहीं क्योंकि यह अधंरा, अज्ञानता कब सुन्दरता को ढंक लेगी हमें पता भी नहीं लग पाएगा। गुरू जी ने अपने जीवन काल में यह बखूबी समझाया है वह सज्जन-ठग हो या वली कंधारी या मलिक भागो गुरूजी ने अपनी अमृतमयी वाणी से उनकी अज्ञानता रूपी मैल को धो डाला और शबद के माध्यम से आध्यात्म का सीधा सच्चा मार्ग प्रशस्त किया। गुरू जी आध्यात्मिक गुरू, समाज सुधारक, क्रांतिकारी होने के साथ-साथ वैज्ञानिक भी हैं। बल्कि वे वैज्ञानिकों के पितामह कहे जाते हैं। धर्म एवं विज्ञान दोनों का उद्देश्य प्राकृतिक रहस्यों का रहस्योद्घाटन करना है लेकिन जहाँ विज्ञान सक्षम नजर नहीं आता है वहाँ धर्म की शरण में जाने से ही जिज्ञासा की तृप्ति संभव है। गुरू जी ने 15वीं शताब्दी में समझा दिया कि ब्रह्माण्ड की रचना के पूर्व न चाँद था, न सूर्य था, न धरती थी, न नदियाँ, न सागर, केवल अंधेरा था, गैस थी धुँआ ही धुँआ था फिर जल और ब्रह्माण्ड की रचना हुई-

साचे ते पवना भया, पवन ते जल होई।
जल ते त्रिभुवन साजिया, घट-घट जोत समोई।

अकाल पुरख ब्रह्माण्ड के पूर्व भी था आदि काल में भी था आज भी है और प्रलय के पश्चात् जब कुछ भी शेष नहीं रहेगा तब भी मौजूद रहेंगे।
आपजी ने फरमाया-

पवन गुरु पानी पिता, माता धरत महत्त।

अर्थात् वायु गुरू है, जल पिता व धरती माता की महत्ता रखते हैं और इनके अभाव में जीवन की कल्पना मात्र भी असंभव है। आपने अपने जीवन में जीवन यापन के विभिन्न परिश्रमी कर्मों को अपनाया। बालपन में पुशओं को चराने से लेकर युवाकाल में नौकरी भी की तथा जीवन के उत्तारार्ध में किसान की तरह भी जीवन व्यतीत किया। गुरूजी ने एक व्यक्ति के दुनियावी या सांसारिक किसान होने के साथ-साथ आध्यात्मिक किसान होने का भेद स्पष्ट किया।

मन हाली किरमाणी करनी सरम पाणी तन खेत।
नाम बीज संतोख सुहागा रख गरीबी वेस।
भाओ करम कर जमसी से घर भागन देख।

श्री गुरू ग्रंथ साहिब जी (अंग 595)

जिस तरह मानव जीवन में विभिन्न कार्यों को अपनाया और समस्त जीवन अनुभव का अमूल्य खजाना एकत्रित कर मानवता के लिए बेशकीमती विचारों को बहुमूल्य हीरे जवाहरात वितरित किये। यह कार्य कोई साधारण मनुष्य के लिए संभव नहीं था अर्थात् आप उस परम पिता परमेश्वर के रूप थे जो मानव कल्याण हेतु अवतरित हुए थे। गुरू जी की शख्सियत कमाल की थी कि वे मानवता से कभी निराश नहीं हुए। जीवन पर्यन्त आशावादी रूची के धारणी रहें। जहाँ आपको अच्छाई पर पूर्ण विश्वास था वहीं बुराई करने वालों से कभी नफरत नहीं की। आपने समाज में व्याप्त पाखण्ड, आडम्बर, सामाजिक कुरुतियों एवं रूढ़िवादी विचारधारा के विरूद्ध लोगों को जागरूक किया। जब आपने उपदेश दिया 'न कोई हिन्दु न मुसलमान' तो दोनों वर्गों द्वारा आपके विरुद्ध प्रस्तुत चुनौती है को आपने अपने ज्ञान से ऐसी यर्थाथता प्रदान की कि सभी निरूत्तर होकर आपके चरणों में नतमस्तक हो, आपके अनुयायी हो गए। इन्सानी भाईचारे के लिए समाज के हर व्यक्ति को आदर सम्मान मिलना चाहिए। स्त्री भी समाज का अभिन्न अंग है। सिख धर्म में स्त्रियों को पुरूषों से अधिक आदर सत्कार प्रदान किया गया है। 16वीं शताब्दी में गुरू जी ने फरमाया-

'सो क्यों मंदा आखिए, जित् जम्मे राजान।'

गुरूजी ने समझाया कि यह संसार सच्चे पिता की धर्मशाला है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को एक कर्मयोगी की भांति विचरण हेतु भेजा गया है। हमें अपना सद्कर्म को पहचानते हुए पाखण्ड, आडम्बर, कर्मकाण्ड आदि से दूर रहकर गुरूजी द्वारा इन्कलाबी कदमों से प्रेरणा लेकर जीवन को सफल बनाना है। हर पल नाम स्मरण करते हुए, ईश्वर द्वारा प्रदत्त शक्तियों का सर्वाधिक उपयोग करते हुए ईमानदारी, श्रद्धा एवं अथक परिश्रम करते हुए कमाई करनी है और उसे नि:सहाय, निर्धन एवं गरीब जनों से सांझा करते हुए अपनी जीवनशैली को उत्तम से सर्वोत्तम बनाकर एक मिसाल प्रस्तुत करनी है।
आपकी जीवन फिलासाफी का गहन अध्ययन करने वाले एक पूर्व के शायर सर मोहम्मद इकबाल ने एक लम्बी नज़्म लिखकर अपनी श्रद्धा के फूल अर्पण किए हैं। जिसका अंतिम शेर इस प्रकार है-

'फिर उठी आखिर सदाए तौहीद की पंजाब से,
हिन्द को मर्द कामल ने जगाया ख्वाब से।'

- अध्यक्ष, म.प्र. एवं छत्तीसगढ़, केन्द्रिय सिख स्त्री सभा एवं प्राचार्य,
संत हिरदाराम कन्या महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)

■

आलेख

श्री गुरु नानक वाणी की युगीन प्रासंगिकता एवं विशद् अध्ययन की सम्भावना

डॉ. योगिता महेश शर्मा

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं
सृजाम्यहम्।। 4-7।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च
दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।
4-8।।

''भगवान श्री कृष्ण गीता में कहते हैं कि जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है तब-तब मैं (भगवान) अपने रूप को रचता हूँ साधु पुरूषों का उद्धार करने के लिए और दूषित कर्म करने वालों का नाश करने के लिए तथा धर्म की स्थापना करने के लिए युग-युग में प्रकट होता हूँ।''

उपर्युक्त कथन अक्षरश: सत्य है। भारतवर्ष की पावन धरा पर अनेकानेक संत-महात्मा, पीर-पैगम्बर, अवतार औलिए अवतरित होते रहे हैं। इस भूमि को बहुत से महापुरूषों के चरणों की पावन रज प्राप्त हुई हे। हमारा अहोभाग्य है कि हम उस देश के निवासी हैं जिसका कण-कण पवित्र आत्माओं के आशीर्वाद से ओत-प्रोत है। अनादि काल से महापुरूषों और महात्माओं की जन्मदात्री इस धरा पर भक्ति एवम् ज्ञान; अध्यात्म एवम् दर्शन की अनेकानेक धाराएँ समय-समय पर प्रवाहित हुई हैं।

'संत काव्य धारा' के सूत्रधारों के विषय में जब चर्चा होती है तो 'श्री गुरू नानक देव' जी का व्यक्तित्व एवम् कृतित्व हमें अपनी ओर आकृष्ट करता है। मानवता के अग्रदूत गुरू नानक प्रकाण्ड विद्वान, निर्भीक लोकनायक, आदर्श गृहस्थ, महान् पर्यटक, नारी-गरिमा के पोषक, अहिंसा पुजारी, शांति के प्रचारक, उच्चकोटि के संगीतज्ञ, महान् देश-भक्त, अद्वतीय शास्त्री, मौलिक धर्म के संस्थापक एवम् चिंतनशील महात्मा के अनुपम व्यक्तित्व की भाँति ही उनका काव्य (वाणी) भी उतनी ही भव्य एवं अतुलनीय है नानक वाणी अपनी गौरव-गरिमा, ज्ञान-क्षमता, संगीत-माधुर्य व सरसता-सरलता इत्यादि सभी दृष्टियों से पाठक वृन्द को अभिभूत करती है। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का उद्देश्य लेकर चलने वाले उस असाधारण महामानव की सम्पूर्ण जीवनयात्रा तथा वाणी अनुकरणीय हैं। वे अनुसंधाता और विधाता स्वीकारे गए हैं। अनेक व्यक्तित्व में हमें धार्मिक जीवन की पूर्णता नजर आती है। गुरू नानक महान दार्शनिक भी थे और पैगम्बर भी। समाज सुधारक भी और संत भी। क्रांतिकारी लोकनायक भी और शांत चित्त धर्म प्रचारक भी। उनमें परस्पर विरोधी गुणों का समावेश दिखाई पड़ता है। उन्होंने अन्याय, अत्याचार, नृशंसता, जुल्म के विरूद्ध आवाज उठाई तथा परमात्मा को भी नरसंहार के प्रति उलाहना दिया। वे जिस समाज में रह रहे थे, उसके प्रति पूर्णतय सजग थे। गुरू नानक ने जिन सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक कुण्ठाओं एवम् विसंगतियों का खंडन किया था; वे आज फिर हमारे समाज में कुलबुलाने लगी हैं। समाज को पतनोन्मुखी व शापित स्थिति से उबारने हेतु नानक वाणी आज भी हमारे लिए प्रकाश पुंज की भूमिका निभा रही हैं।

धार्मिक असहिष्णुता के कारण हम दूसरे धर्म व धर्मावलंबियों को नीचा दिखाने पर तुले हुए हैं। धार्मिक नेता भोली-भाली जनता को गुमराह करके अपना स्वार्थ सिद्ध करते है। धर्म के नाम पर मार-काट, लड़ाई-झगड़े, अन्याय, अत्याचार आज भी परिव्याप्त हैं। इस प्रकार के संघर्ष से समस्त परिवेश में कटुता और अशांति बढ़ती है। इस विषय में नानक वाणी आज भी सार्थक एवम् उपयोगी है जिसने मानव को 'एक परमेश्वर' की आराधना करने का संदेश दिया। जब हम सब का आराध्य एक होगा तो समस्त झगड़े समाप्त हो जाएँगे।

नानक का कथन है-

'साहिबु मेरा एको है। एको है भाई एको है।'

आधुनिक मानव भौतिकवादी एवम् नास्तिक हो रहा है। वैज्ञानिक आविष्कारों ने उसकी आस्तिकता को समाप्त कर दिया है। इसीलिए वह उदासीन, बेचैन, संतप्त, अभिशप्त जीवन जीने को विवश है। प्रभु के नाम से विमुख होकर वह शांति की तलाश में दर-दर भटक रहा है। श्रद्धा और विश्वास की डोरी टूट जाने से मानव सदैव चिंतित रहता है। मानव की इन्हीं परेशानियों का निवारण करने के लिए गुरू नानक देव लिखते हैं।

'जेता कीता तेता नाउ। विणु नावै नाही को थाउ।।'

मानव के हाथ में कुछ नहीं है। जो कुछ प्रभु को मंजूर होता है, वही होगा इसी संदेश को जपुजी की इन पंक्तियों द्वारा बयान किया गया है-

'जो तुधु भावैं साई भलीकार। तू सदा सलामत निरंकार।।'

मानव मात्र ईश्वर की शक्ति का पारावार नहीं पा सकता,

इसीलिए गुरू जी लिखते हैं-

'जेवुड भावै तेवड होइ। नानक जाणै सच्चा सोई।'

मनुष्य के विनाश का एक और कारण है- अहंकार। जब हम खुद को संचालक समझने की भूल करते हैं तो अहंकारी बन बैठते हैं। गुरू नानक ने प्रभु को 'कर्त्तापुरूष' कह कर उसे सर्वशक्तिमान व सब कार्यों को करने वाला बताते हुए हमारा अहंकार दूर करने का प्रयास किया है। गुरूजी लिखते हैं-

'तू करता पुरखु अगंमु है आपि सृसटि उपाति।'

राजनीतिक क्षेत्र में भी गुरूवाणी का बहुत अधिक महत्व है। आज

भी शासक सत्त लोलुप, अत्याचारी, क्रूर, नृशंस, बेईमान एवम् असत्यवादी हैं। ये लोग निरीह जनता का शोषण करते हैं। जनसाधारण पर जुल्म ढाते हैं। जनता की इसी तड़प को नानक ने उस समय भी अनुभव किया था जब बाबर ने भारतीय जनता पर अत्याचार किए थे। उन्होंने अपने आराध्य को इस नरसंहार के प्रति उलाहना देते हुए कहा था–

'एती मार पई कुरलाणै तै की दरदु न आइआ।'

गुरू नानक ने लोकतंत्र की स्थापना हेतु अपने दोनों पुत्रों को गुरू गद्दी प्रदान न करके अपने सुयोग्य शिष्य भाई लहना जी (गुरू अंगद देव जी) को यह उत्तरादायित्व सौंपा ताकि पंथ की रक्षा की जा सके। उनका यह सत्कर्म हमें संदेश देता है कि देशहित व जनहित के लिए सही उत्तराधिकारी नियुक्त करें तभी समाज का कल्याण होगा।

गुरूजी के मतानुसार इस संसार में जितने भी दुष्कर्म हो रहे हैं उनका एकमात्र कारण है कि मानव ने स्वयं को अमर समझ लिया है। वह इस क्षणभंगुर जीवन में पूरी तरह से रम गया है और उसने अपनी मृत्यु को भुला दिया हैं मौत का भय ही मानव को कुकृत्यों से बचा कर रख सकता है। जीवन का परम उद्देश्य मुक्ति है। भगवद् स्मरण से ही वह मुक्ति मार्ग हमें दिखाई देगा। उपनी मृत्यु को याद रखने तथा प्रभु का नाम जपने का संदेश देते हुए गुरू नानक ने कहा है–

खाणा पीणा हसणा सउणा विसरि गइआ है मरणा।
खसमु विसारि खुआरी कीनी धृगु जीवणु नहीं रहणा।।

हमारे देश में नारी सदैव गौरवपूर्ण पद की अधिकारिणी रही है। तभी तो वेदों 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:' कह कर नारी का गुणगान किया गया है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्वयं को सिद्ध कर दिखाने वाली स्त्री को अभी भी समाज के ठेकेदार नीचा दिखाने की कोशिश में है। कभी उसे दहेज की बली चढ़ाया जाता है तो काभी उसकी मान-मर्यादा से खिलवाड़ किया जाता है। कभी वह भ्रूण हत्या का सामना करती है तो कभी कुप्रथाओं की भेंट चढ़ती है। इन सभी कुकर्मों के विरोध में नानक वाणी एक शंखनाद की तरह गूँजती हुई समाज को सही मार्ग दिखाती है। नारी का महिमा गायन नानक ने इन पंक्तियों द्वारा किया है–

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान।।

श्री गुरू नानक क्रांतदर्शी महात्मा थे। संसार को एक सूत्र में पिरो ने के लिए नानक-वाणी 'वसुधैव कुटुंबकम' का उदार दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। आज हिन्दू और मुसलमान फिर से एक- दूसरे के दुश्मन बन बैठे हैं। भारत और पाकिस्तान की दुश्मनी इस का स्पष्ट प्रमाण है। गुरूनानक ने दोनों धर्मानुयायियों को सही दिशा-निर्देश देकर शांति की स्थापना की तभी तो लोग इन्हें गुरूनानक शाह फकीर; हिन्दू का गुरू मुसलमान का पीर कह कर संबोधित करते है। गुरूनानक के इस समन्वयात्मक दृष्टिकोण की आज भी उतनी ही आवश्यकता है जितनी शताब्दियों पहले थी। जलती-तपती मानवता के लिए नानक वाणी अमृत वर्षा है, यह कथन अक्षरश: सत्य है।

संत वह है जो मानव की पीड़ा को समझ कर उसे दूर करने का प्रयत्न करे। इस ओर गुरू नानक सदैव अग्रसर रहे। गुरूजी ने अपने शिष्यों को भक्ति के साथ-साथ कर्त्तव्यपरायणता का पाठ भी पढ़ाया। उनका संदेश 'किरत करो वंड छको, नाम जपो' अर्थात मेहनत करो, मेहनत की कमाई आपस में बाँट कर खाओ और अपने परमेश्वर की आराधना करो इसी वाक्य में सम्पूर्ण मानवीय जीवन का सार है। भक्ति की आड़ में मनुष्य आलसी व निठल्ला न बने; इसीलिए उन्होंने 'धर्म और कर्म' के समन्वय को ही साधना बताया है। साथ ही गुरूजी समाज में समान आर्थिक स्थिति का भी सुझाव देते हैं ताकि समाज में एकता, प्रसन्नता, सामीप्य व आनंद की अनुभूति हो।

जिस प्रकार मानव की सम्पूर्ण आत्मा एवम् शरीर के योग से होती है; ठीक उसी प्रकार काव्य में प्राण तत्व का संचार करने के लिए इसके भाव एवम् कला पक्ष का नियोजन अनिवार्य है। गुरू नानक वाणी का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि वे न केवल संत बल्कि उच्चकोटि के कवि भी हुए हैं। उनका काव्य बंधनहीन है जो मानव-मात्र के भवबंध काटने के लिए रचा गया। गुरू नानक द्वारा प्रयुक्त छंद, अलंकार, बिम्ब, प्रतीक, रस एवम् राग से उनकी वाणी का शैल्पिक पक्ष भी अत्यंत सुदृढ़, सशक्त एवम् प्रभावपूर्ण बन गया है। उपनी प्रकृति के अनुरूप ही अपने काव्य में भी गुरू नानक किसी प्रकार के बन्धन को स्वीकार नहीं करते। अत: उनका सारा काव्य मुक्तक काव्य ही स्वीकारा गया है। उनके असाधारण व्यक्तित्व की भांति उनकी भाषा भी बहुरूपिणी व सर्व सांझ की सूचक है। मुहावरे और लोकोक्तियाँ भाषा को और अधिक निखारते हैं। उनके कई वाक्य तो सूक्तियों के रूप में प्रसिद्धि पा चुके हैं यथा–

तिना सवारे नानका जिन कउ नदरि करे।।

गुरूजी कभी तो छायावादी कवियों की भाँति प्रकृति के अपासक दिखाई पड़ते हैं और कभी क्रांति भरे स्वर में प्रगतिवाद का शंखनाद करने प्रतीत होते हैं। सूत्रात्मकता नानक वाणी का प्रधान गुण है। उनकी एक-एक पंक्ति में हजारों पंक्तियों का सार है। जैसे मूल मंत्र- 'एक ओंकर, सतिनामु, करता पुरख, निरंभउ, निरवैरू, अकालमूरति, अजूनी सैभं, गुर प्रसादि।'

अर्थात- एक-एक शब्द की व्याख्या करें तो पूरी पुस्तक बन सकती है। नानक के शब्द-चयन व प्रस्तुतीकरण ने उनकी शैली में एक अनूठा कसाव ला दिया है। उनकी भाषा शैली में रागात्मकता, लयात्मकता, कोमलता, संगीतात्मकता एवम् छन्दात्मकता की अनुगूंज सुनाई पड़ती है और साथ ही माधुर्य, प्रसाद व ओज गुणों की सफल अभिव्यक्ति मिल जाती है।

निष्कर्षत: गुरू नानक वाणी अपने सार्वकालिक और सार्वभौमिक विचारों के कारण आधुनिक संदर्भ में भी अत्यंत प्रासंगिक तथा महत्वपूर्ण है। गुरू नानक की वैयक्तिक साधुता एवम् उदारता; ईश्वर के प्रीत सहज समर्पण एवम् मानवता के प्रति सहज संवेदनशीलता; समाज-परिवेश के प्रति सजगता एवम् रूढ़ि-मंजन की पुखरता; लोकतंत्रात्मक चिंतन एवम् समन्वयवादी दूरदर्शिता जैसी विशेषताएँ जहाँ एक ओर मानव-मात्र के मंगलमय एवम् स्वस्थ जीवन की राह प्रशस्त करती हैं तो दूसरी ओर उनके काव्य पक्ष की सहजता, भाषा की सक्षमता, संगीत की सरसता, भावों की ग्राहयता तथा वाणी की प्रवाहमयता आदि गुण आज भी कवियों-मनीषियों के लिए प्रेरणस्त्रोत बन सकते हैं। वस्तुत: नानक प्रत्येक पक्ष से एक युगांतकारी महामानव थे जो सदैव मानवता का मार्गदर्शन करने की क्षमता रखते हैं।

– 234, अर्बन इस्टेट, कपूरथला (144601) पंजाब।
मो.:- 9855608099

■

आलेख

गुरु ग्रंथ साहिब में सिक्ख गुरुओं से इतर संत कवि

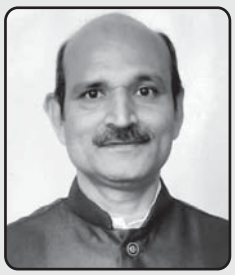

डॉ. मृगेन्द्र राय

भारतीय इतिहास का मध्यकाल अन्यान्य धार्मिक भावनाओं आडंबरों रूढ़ियों , पाखंडों और धार्मिक विद्विषों से आक्रान्त तमसाछन्न जातीय अस्मिता को आहत और दिग्भ्रमित करने वाला काल रहा है। इस्लामिक शासन प्रणाली भी भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना के विपरीत थी ऐसे भारतीय संतों ने मानवीय चेतना सम्पन्न अपनी पारंपरिक धार्मिक चेतना को परिष्कृत करके उसे पुनर्स्थापित करने का बीड़ा उठाया। इसके लिए उन्होंने एक तरफ तो शासन सत्ता से साहस पूर्व लड़ाई लड़ी और दूसरी ओर अपने समाज में प्रचलित रूढ़िओं अंधविश्वासों और तत्वहीन पाखंडों का निर्भीकता से विरोध किया। इस दिशा में गुरु नानकदेव का कार्य ऐतिहासिक महत्व रखता है। गुरु नानक देव के बाद सिक्ख गुरुओं ने उनके उदार और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को आगे बढ़ाते हुए उनसे प्राप्त ज्योतिपुंज का विस्तार किया। गुरु ग्रंथ साहिब का संकलन एक अभूतपूर्व कार्य था जिसमें सिक्ख गुरुओं के अतिरिक्त अन्य संतों की प्रेरक और प्रबोधनकारी रचनाओं को सम्मिलित किया गया। इस आलेख में सिक्ख गुरुओं के अतिरिक्त जिन महात्माओं की रचनाओं को आदरपूर्वक सम्मिलित किया गया है उन्हीं का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करना अभीष्ट है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिबजी का सम्पादन पांचवे गुरु अर्जुन देवजी ने किया। उस समय इसका प्रचलित नाम 'पोथी' था। इसे श्रध्दावश ' पोथी साहब ' कहा जाता था। धीरे -धीरे ग्रंथ शब्द प्रचलित हुआ। सिक्ख परंपरा में ग्रंथित प्रति को ' बीड़' कहनें का चलन है यद्यपि गुरुवाणी की रचना का कार्य गुरु नानक के समय से प्रारंभ हो गया था। इस ग्रंथ का सम्पादन कार्य 1604 में पूरा हुआ। इसे लिपिबध्द करने में भाई गुरुदास ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। भाई गुरुदास तीसरे गुरु , गुरु अमरदास के भतीजे थे।

उन्हें चार गुरुओं -गुरु अमरदास ,गुरू रामदास , गुरु अर्जुनदेव और गुरु हरि- गोबिन्द का सानिध्य प्राप्त हुआ था। भाई गुरदास सिख धर्म के पहले व्याख्याकार थे। गुरु अर्जुन देवजी ने जब आदिग्रंथ का सम्पादन किया था उसमें पाँच गुरुओं की वाणियाँ थी। एक सौ वर्ष बाद गुरु गोबिन्द सिंह जी ने अपने पिता गुरु तेग बहादुर की वाणी इसमें शामिल की और इसे अंतिम रूप दिया।

गुरुगोबिन्द सिंह ने देहधारी गुरु की परंपरा समाप्त कर दी। खालसा पंथ के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब को 'गुरु -पद' पर आसीन कर दिया। इसमें गुरु नानक देव जी 974 पद और श्लोक है। गुरु अंगददेव जी के 62 श्लोक , गुरु अमरदास जी के 907 पद और श्लोक, गुरु रामदास जी के 679 पद और श्लोक, गुरु अर्जुन देव जी के 2218पद और श्लोक, गुरु तेगबहादुर जी के 115 और श्लोक(जो गुरु तेगबहादुर के श्लोकों में ही सम्मिलित है।)

बाबा सुंदर जी के 6पद (पउड़ियां , सत्ताडूम और राय बलवंड (गुरु अर्जुन दरबार में विद्यमान) 8पद (पउड़ियाँ) जयदेव के 2 पद , शेख फरीद के 134 (4 शबद ,130 श्लोक) , त्रिलोचन के 4 पद , नामदेव के 61 पद , रामानन्द के 1 पद , सधना के 1 पद , बेणी के 3 पद

रविदास के 41 पद , कबीर के 292 पद और 249 श्लोक , धन्ना के 4 पद , पीपा के 1 पद , सेन के 1 पद ,परमानंद के 1 पद , सूरदास की एक पंक्ति , भीखन के 2 पद , इन वाणीकारों के अतिरिक्त गुरु दरबारों में भट्ट कवियों कलसहार ,जालप ,कीरत , भिक्खा ,सल्ह , भल्ल ,नल्ह , गयंद , मथुरा ,बल्ह , हरिबंस , के 123 सवैये संग्रहीत हैं। आदिग्रंथ में संग्रहीत इतर संत रचनाकार निम्नांकित हैं।

शेख फरीद -

इनका पूरा नाम फरीदुद्दीन मसूद था। इन्हें पंजाबी भाषा का आदि कवि कहा जाता है। ये जाति के मुसलमान थे। इनका जन्म पश्चिमी पंजाब के मुलतान जिले के खोतवाल गाँव में हुआ था । शेख फरीद ने 4 वर्ष की उम्र में ही इस्लामी विद्या शुरू की। इन्हें कुरआन सरीफ जल्द ही कंठस्थ हो गया। ये अरबी- फारसी भाषाओं के विद्वान थे । सूफियों के चिश्ती परंपरा के विद्वान दिल्ली के ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काजी के शिष्य थे। इन्होंने इस्लामी देशों की यात्राएँ की। अपनी काव्य रचना पंजाबी भाषा में की। गुरु ग्रंथ साहिब में इनके 4 शबद 118श्लोक (दोहे) संगृहीत हैं। आसा राग में शेख फरीद की वाणी को देखा जा सकता है -

बोलै शेख फरीद पिआरे अलह लगे।।
इहु तनु होसी खाकु निमाणी गोर घरे।।1।।
आजु मिलावा शेख फरीद टाकिम कुंजड़ीआ,
पनहु मचिन्दड़ीआ।।रहाउ।।
जे जाणा मरि जाईऐ , घुमि न आइऐ।।
झूठी दुनीआ लगि न आप पवईऐ।।2।।
बोलीऐ सच धरमु, झूठ न बोलीऐ।।
जो गुरु दसै वाट, मुरीदा जोलीऐ।।3।।
जयदेव-

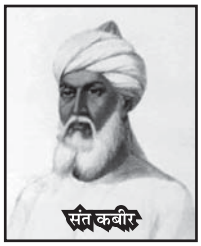

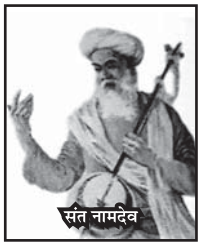

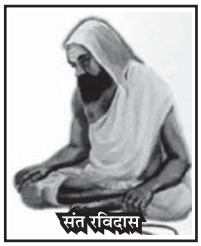

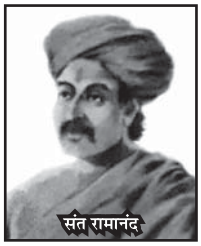

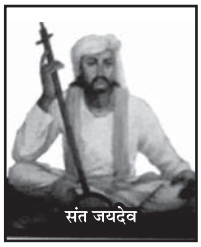

यद्यपि इनकी जन्म तिथि अज्ञात है। 'उत्तर भारत की संत परंपरा' में आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने तथ्य को स्वीकार किया है कि इनका जन्म स्थान उड़ीसा और कर्म स्थान बंगाल है। उनके अनुसार इनकी जन्मभूमि किन्दुवित्व नामक गाँव था प्रसिद्ध संस्कृत काव्य 'गीत गोविंद' के रचयिता जयदेव ही वह संत थे जिनके पद गुरु ग्रंथ साहिब में संग्रहीत हैं। आदि ग्रंथ में इनके दो पद क्रमश: गूजरी एवं मारू राग में है। इसकी भाषा संस्कृत प्रभाव युक्त अपभ्रंश है। राग गूजरी में प्रयुक्त पद–

परमादि पुरख, मनोपिभं सति आदि भावहतं।।
परम दुभतं, परक्रिति परं, जदि चिंति सरब गंत।।1।।
केवल राम नाम मनोरम।।बदि अमृत ततमइअं।।
न दनोति जस मरणे न जनम जराधि मरण भइअं ।।2।।
इधसि जमादि परा भयं, जसु स्वसति सुक्रित क्रितं ।।रहाउ।।

स्पष्ट है जयदेव के इन पदों की भाषा पर अपभ्रंश का प्रभाव है। कहा जाता है कि गुरु नानक देव ने इन पदों को अपनी बंगाल यात्रा के समय प्राप्त किया था। देश भर में जयदेव की ख्याति हो चुकी थी। संतों में उनका उल्लेख बड़े सम्मान के साथ किया है।

त्रिलोचन–

त्रिलोचन के जन्म का समय 1267 ई. माना गया है। ऐसा माना जाता है कि इनका जन्म ब्राह्मण परिवार में हुआ है। कुछ लोग इनका जन्म वैश्य परिवार में मानते हैं। इनका जन्म बारसी सोलापुर (महाराष्ट्र) माना जाता है। ये संत नामदेव के समकालीन है। इनके पद सिरी, मूजरी, धानसरी रागों में हैं। आदि ग्रंथ में इनके चार पद संग्रहीत है।

माइआ मोहमनि आगलड़ा, प्राणी जरा मरणु भउविसरि गाइआ।।
कुटुंब देखि बिगसहि कमला जिउ, पर घरि जोहहि कपट नरा।।1।।
दूजा आइउहि जमहि तणा।।तिन आगलड़ै मैं रहणु न जाइ।।
कोई कोई साजणु आई कहै।।मिलु बीठुला लै बाहड़ी वलाइ।।
मिल मेरे रमईआ मैं लेहि छडाइ।।रहाउ।।
भक्त नामदेव एवं त्रिलोचन में बड़ी निकटता थी।

सधना –

सधना का जन्म सिंध प्रांत में हुआ था। इनका जन्म 13 वीं सदी माना जाता है। ये कसाई का काम करते थे। साधू संत की संगति में आकर ये ईश्वर भक्त हो गये थे।

अनन्य भक्ति के कारण उन्हें व्यापक प्रसिद्धि प्राप्त हुई। आदिग्रंथ में संग्रहीत संत रविदास के एक पद में उनका उल्लेख इस प्रकार मिलता है–

नामदेव कबीर त्रिलोचन सधना सैन तरै।।
कहे रविदास सुहण रे संतहु हरि जिउते सभै सरे।।

बिलावन राग में एक शबद श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित है–

नृप कन्या के कारने, इकु भइआ भेखधारी।
कामारथी सुआरथी वा की पैज सवारी।।1।।
तव गुन कहा जगति गुरा, जउ करमु न नासै ।।
सिंघ सरन कत जाइऐ, जउ जम्बुकु ग्रासै ।।1।।रहाउ।।
एक बूंद जल कारने चात्रिकु दुख पावै।।
प्रान गये सागरु मिलै, फुनि कामि न आवै।।2।।

नामदेव –

नामदेव की वाणी आदि ग्रंथ में संग्रहीत है। नामदेव का जन्म 1270 ई. में महाराष्ट्र के सतारा जिले के नरसी बमनी गाँव में हुआ था। नामदेव जाति के दर्जी थे। इनके पिता कपड़े सीने का कम करते थे। एक बार की बात है अपने इष्टदेव विट्ठल के दर्शनार्थ मंदिर गये पुजारियों ने इन्हें छोटी जाति का समझकर मंदिर से निकालकर पिछवाड़े फिकवा दिया। वे वहीं बैठकर अपने आराध्य प्रभु का कीर्तन करने लगे। उनकी अनन्य भक्ति से मंदिर का द्वार घूम गया। इसका उल्लेख उन्होंने आदिग्रंथ में संग्रहीत एक पद में किया है–

हसत खेल तेरे देहुरे आइआ।
भगति करत नामा पकरि उठाइआ।।
हिनड़ी जाति मेरी जादम राइआ।
छीपे के जनमि काहे कउ आइआ।।

इसी पद में उन्होंने देहुरा के फिरने की बात भी कही है–

जिउ-जिउ नामा हरि गुण उचरै।।
भगत जना कउ देहुरा फिरै।।

गुरु ग्रंथ साहिब में इनके 61 पद संकलित हैं। इनके पद अट्ठारह रागों में– गउड़ी, आसा, गूजरी, सोरठ, धानसरी, टोडी, तिलंग, बिलावत, गोंड, रामकली, माली, गौड़ा, मारू, भैरउ, मल्हार, कानड़ा और प्रभाती है।

बेणी–

इनकी जन्म तिथि अज्ञात है मैकालिफ के अनुसार इनका जन्म स्थान कदाचित उत्तर प्रदेश है। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी के अनुसार इनकी जन्मभूमि व कर्म क्षेत्र का कोई संकेत नहीं मिलता, फिर भी इनके पदों के पंजाब की ओर प्रचलित होने से इन्हे हम किसी पश्चिमी प्रांत का निवासी कह सकते हैं। इन्हें नामदेव के समकालीन संतों में गिन सकते हैं। संत बेणी भी तत्कालीन संतों की भाँति कर्मकाण्ड का खंडन करते हैं तथा शुद्ध हृदय से ईश्वर भक्ति की ओर उन्मुख होने की प्रेरणा देते हैं। जहाँ वे नाथपंथी योगियों की शब्दावली को नये अर्थ देने का कार्य करते हैं। वहीं वैष्णवों के तिलक , माला , तीर्थाटन आदि की निरर्थकता को भी रेखांकित करते हैं। प्रभाती राग में बेणी का यह पद देखा जा सकता है–

तनि चंदनु मसतकि पाती।।
रिद अंतरि करतल काती।।

संत धन्ना

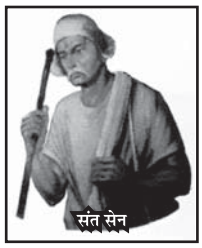
संत सेन

संत पीपा

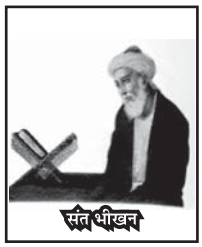
संत भीखन

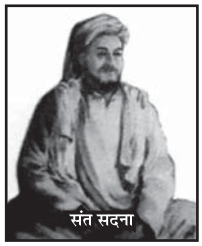
संत सदना

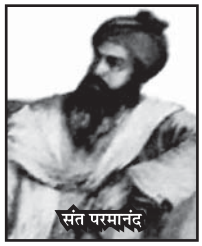
संत परमानंद

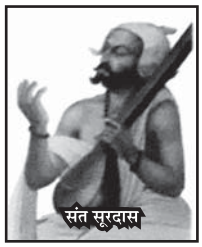
संत सूरदास

ठग दिसटि बगा लिव लागा।।देखि बैसनो प्रान मुख भागा।।
कलि भगवत बंद चिरामं।।कूर दिसटि रता निस बादं।।रहाउ।।1।।

बेणी ने भी तत्कालीन युग के सभी वैष्णवचारी बाह्याडंबरों की कटु आलोचना की है। आदिग्रंथ में इनके तीन शबद श्री राग, रामकली, प्रभाती, राग में सम्मिलित हैं।

रामानन्द–

रामानन्द की जन्म तिथि को लेकर विद्वानों में पर्याप्त मतभेद हैं – डॉ फरर्कुहर उनका जीवनकाल 1400 ई. से 1470 ई. के बीच मानते है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ईसा की 15वीं शती के पूर्वाध्द और 16वीं शती के प्रारम्भ में उनकी उपस्थिति मानते हैं। वे उत्तर भारत में रामानुजाचार्य की रामभक्ति के प्रथम प्रचारक माने जाते हैं। वे राम के उपासक होने के साथ राम के निर्गुण–सगुण दोनों रूपों को उचित बताते हैं। यही कारण है कि कबीर के राम सर्वव्यापी ब्रह्म हैं तो तुलसी के राम दशरथ पुत्र राम हैं विष्णु के अवतार और पूर्ण परमेश्वर हैं। रामानन्द ने जनभाषा को आधार बनाया जिसका परिणाम था भक्ति आंदोलन जन–जन में लोकप्रिय हो गया। रामानन्द के प्रमुख शिष्यों अनंतानन्द, नरहर्यानन्द, पीपा, भवानन्द, रैदास, धन्ना, सेन और सुरसुरी आदि थे। कहा जाता है कि रामानन्द गौड़ ब्राह्मण थे। उन्होंने निम्न समझी जाने वाली जतियों को अपना शिष्य बनाया जिनमें अनंतानन्द, सुखानन्द, नरहर्यानन्द योगानन्द ब्राह्मण थे, कबीर, जुलाहा, सेन नाई, धन्ना जाट और रविदास मोची थे। उन्होंने

पद्मावती और सुरसुरी नामक दो स्त्रियों को भी अपना शिष्य बनाया। उन्होंने भक्ति के द्वार स्त्री और शूद्र के लिए भी खोल दिया जिसके फलस्वरूप मध्ययुग में एक सबल उदार विचारधारा का जन्म हुआ। रामानन्द ने उदार भावना से हिन्दू और मुसलमानों को समीप लाने की भूमिका तैयार की। गुरुग्रंथ साहिब में उनका पद वसंत राग में मिलता है जिसमें रामभक्ति की अवतारपरक और कर्मकाण्डी भक्ति की अपेक्षा, प्रभु की सर्वव्यापकता तथा निर्गुण भक्ति की विचार शैली मार्ग की पुष्टि करती दीख पड़ती है–

कत जाईऐ रे घरि लागो रंगु।।
मेरा चितु न चले मन भइउ पंगु।।1।।रहाउ।।
एक दिवस मनि भई उमगं।।
घसि चन्दन चोआ बहु सुगंध।।
पूजन चाली ब्रह्म ठाइ।।
सो ब्रह्म बताइउ गुर मन ही माहि।।1।।

कबीर –

कबीर का आविभर्वाव 15 वीं शताब्दी उत्तरार्ध अर्थात संवत 1600 के आसपास माना जाता है। कबीर मुसलमान जुलाहा थे। काशी में रहते थे। वे रामानन्द के शिष्य थे। काशी में प्रवेश करने के बाद बादशाह सिकंदर लोधी ने उन पर अनेक अत्याचार किये। उनके अनेक आध्यात्मिक चमत्कारों का उल्लेख मिलता है। काशी में रहते हुए कट्टर ब्राह्मणों और मुसलमानों से जूझते रहे और उन्हे खरी खोटी सुनाते रहे। पारंपरिक मान्यता है कि काशी मोक्ष का द्वार है और मगहर नरक का। कबीर ने इस चुनौती को स्वीकार किया। जीवन भर काशी में रहने के बाद अंतिम समय में मगहर चले गये। आदि ग्रंथ में शामिल उनकी रचनाओं में ऐसे संकेत मिलते हैं–

अब कहु राम कवन गति मोरी।।
तजीले बनारस मति भई थोरी।।
सगल जनमु शिवपुरी गवाइआ।।
मरती बार मगहरि उठि आइआ।।2।।

कबीर ने रूढियों और बाह्याडंबरों का विरोध किया। आदि ग्रंथ में कबीर के 292 पद और 249 श्लोक श्री राग, राग गौड़, सोरठ, चैती, राग गौड़ी पूरबी, राग गूजरी, राग आसा, राग थिति, राग बिहागड़ा, राग सोरठ, राग धनासरी, राग तिलंग, राग सुही, राग बिलावलु, राग गोंद, राग मारू, राग रामकली, राग केदारा, राग भैरा, राग वसंत, राग सारंग, राग प्रभाती है। राग सुही ललित में मिलती हैं।

संत रविदास–

रविदास का जन्म समय 1518ई. (सं.1445 से 1575) के आस–पास रहा होगा। ये रामानन्द के शिष्य थे। काशी निवासी थे। कबीर के समकालीन माने जाते थे। जाति के मोची थे। संतनि में रविदास संत कह कर कबीर ने उनका महत्व स्वीकार किया। नाभादास, प्रियादास, मीराबाई आदि ने भी रैदास का सम्मानपूर्वक स्मरण किया है। संत रविदास ने एक पंथ चलाया जो रैदासी पंथ के नाम से प्रसिद्ध है। रविदास की विचारधारा संतमत परंपरा के अनुरूप ही है। आदि ग्रंथ में इनके 40 पद संग्रहीत हैं जो सिरी, गउड़ी, आसा, गूजरी, सोरठ, धनाश्री, जैतश्री, सूही, विलावल गोंड, रामकली, मारू, केदारा, भैरउ, बसंत, मलार रागों हैं। रविदास के पदों में विनम्रता और दीन भाव व्यक्त होता है। प्रभु से अभेदता की बात रविदास के अनेक पदों में देखा जा सकता है–

तोही मोही तोही अंतरू कैसा।।
कनक कटिक जल तरंग जैसा।।1।।
एक अन्य पद में वे कहते हैं–
जउ तुउ गिरिवर तउ हम मोरा।।
जउ तुम चंद तउ हम भये हैं चकोरा।।1।।

संत पीपा–

पीपा गागरौन गढ़ के खीची चौहान राजा थे। इनका जन्म 1425 ई. में हुआ था। आदि ग्रंथ में इनका एक पद राग धनासरी में सम्मिलित है। इनका यह पद बहिर्मुखी पूजा– पाठ की अपेक्षा अंतर्मुखी साधना की ओर प्रेरित करता हैं–

काइअउ देवा काइअउ देवल,
काइअउ जंगम जाती।।
काइअउ धूप दीप नईबेदा,

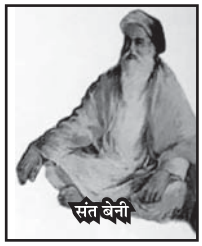
संत बेणी

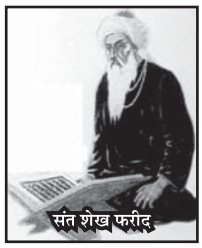
संत शेख फरीद

संत कल सहार

संत जालप

संत कीरत

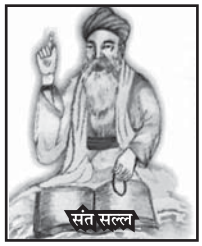
संत सल्ल

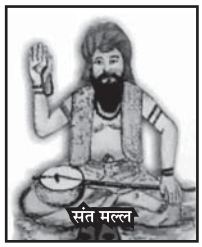
संत मल्ल

काइअउ पूजहु पाती ।।1 ।।
काइआ बहु खण्ड खोजते, नव निधि पाई ।।
ना कुछ आइबो, ना कछु जाइबो राम की दुहाई ।।रहाउ।।
जो ब्रमंडे सोई पिंडे, जो खोजै सो पावै ।।
पीपा प्रणवै परम ततु है, सतिगुरु होइ लखावै ।।2 ।।

संत सेन –

इनका जन्म 1448में हुआ। इनके संबंध में दो निम्न मत प्रचलित हैं। एक ये बीदर राजा के सेवक थे। दूसरा मत इन्हें बांधवगढ़ नरेश का नाई बताता है। इन्हें रामानन्द का शिष्य भी बताया गया है। सेन के संबंध में एक कथा प्रचलित हैं– एक रात वे संतों की सेवा में मग्न थे और राजा के पास नहीं जा सके। जब राजा के पास पहुंचे तब समय से न आ सकने के कारण क्षमा याचना करने लगे ,जब राजा ने कहा कि आप तो प्रात: आकर मेरी सेवा कर चुके हैं। जब रहस्य खुला तो पता चला कि स्वय ? भगवान सेन का रूप धारण कर राजा की सेवा कर आये थे। इससे सेन को बड़ी प्रसिद्धि मिली सेन की एक रचना आदिग्रंथ में संकलित है जो राग धनासरी में है।

यह पद आरती का पद है। जिसमें वे यह स्वीकार करते हैं कि रामानन्द से उन्होंने राम भक्ति का मार्ग प्राप्त किया है क्योंकि इसका रहस्य वे ही जानते हैं–

धूप दीप घृत साजि आरती ।।
वारने जाउ कमलापति ।।1 ।।
मंगला हरि मंगला ।।
नित मंगलु राजा के राम राइको ।।1 ।।रहाउ ।।

धन्ना–

ये जाति से जाट थे। इनका जन्म राजस्थान सं 1415 ई. में हुआ था। ये राजस्थान के (टोंक) में कृषि का कार्य करते थे। इनके सरल और गृहस्थ जीवन का परिचय इनके निम्नांकित पद में मिलता है जिसमें ये ईश्वर से प्रार्थना करते हैं जो राग धनासरी में है।

गोपाल तेरा आरता ।।
जो मन तुमरी भगति करंते तिनके काज सवारता ।।1 ।।रहाउ।।
दालि सीधा मागउ घीउ ।।हमरा खुसी करै नित जीउ।।
पनीआ आदनु नीका ।।अनाजु मागउ सत सीका ।।1 ।।

गुरु ग्रंथ साहिब में धन्ना के चार पद तीन राग आसा और एक राग धनासरी में संकलित हैं।

ये रामानन्द की शिष्य परंपरा में थे ।

संत भीखन –

फारसी के इतिहास लेखक बदान्यूनी ने भीखन के संबंध में लिखा है 'शेख भीखन लखनऊ के निकट काकोरी के निवासी थे , वे अपने समय के बहुत बड़े विद्वान थे कुरान मजीद के महान पंडित तथा पवित्र आचरण वाले व्यक्ति थे' इनका जन्म 1480 तथा मृत्यु 1573 अकबर के शासन काल के प्रारम्भिक काल में हुई। आदि ग्रंथ में इनके दो पद जो सोरठ राग में है संगृहीत हैं। उनके पदों में परमेश्वर नाम की महत्ता व्यक्त की गयी है–

नैनहु नीरू बहै तनु खीना, भए केस दूधवानी ।।
रूधा कण्ठु सबदु नहीं उचरै, अब किआ करहि परानी ।।1 ।।
माथै पीर सारीरि जलनि है, करक करेजे माही ।।
ऐसी बेदन उपजि खरी भई,
वा का अउखधु नाही ।।2 ।।

संत परमानंद–

इनके संबंध में सबसे अधिक स्वीकृत मत यह है कि ये महाराष्ट्र के पंढरपुर के उत्तर में बार्सी गाँव के निवासी थे। इनका जन्म सं 1389 ई. में हुआ था। आदि ग्रंथ में इनका एक पद शामिल किया गया है। इस पद में बाह्यडंबरों को महत्वहीन मानते हुए वे साधक से प्रश्न पूछते है यथा,

तै नर किआ पुरान सुनि कीना ।।
अन पावनि भगति नहीं की उपजी
भूखै दानु न दीना ।।1 ।।रहाउ।।
कामु न बिसरिउ,
क्रोध न बिसरिउ लोभन छूटियो देवा ।।
पर-निंदा मुंह से नही छूटी
निफल भई सब सेवा ।।1 ।।
बाट पारि घरू मूसि बिराने,
पेट भरे अपराधी ।।
जिह परलोक जाइ अपकीरति,
सोइ अबिदिआ साधी ।।2 ।।

सूरदास–

इनका जन्म 1483 ई. माना जाता है। आदि ग्रंथ में सूरदास के एक पद की केवल एक पंक्ति ली गई है–

छाडि मन हरि बिमुखन को संगु ।।

सामान्यत: हर पद के ऊपर राग का तथा भक्त का नाम लिखा प्राप्त होता है–

सारंग बाणी नामदेउ जी की

जब किसी गुरु विशेष की वाणी आती है तो महला लिखकर आगे एक , दो , तीन आदि लिखकर संकेत दिया जाता है कि यह किस गुरु की है। सूरदास के नाम से जो दूसरा पद आदि ग्रंथ में संगृहीत है उसके शीर्ष पर लिखा है सारंग महला 5 सूरदास 1 पद द्रष्टव्य है–

हरि के संग बसे हरि लोक ।।
तनु मनु आरपि सरबस सभु अरपिउ
अनद सहज धुनि लोक ।।1 ।रहाउ।।
दरसन पेखि भए निरबिखई,
पाये है सगले थोक ।।
आन बसतु सउ काजु न कछूऐ,
सुंदर बचन आलोक ।।1 ।।
सिआम सुंदर तजि आनु जु चाहत
जिउ कुसटी तनि जोक ।।

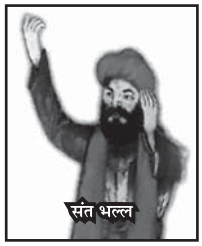
संत भल्ल

संत नल्ल

संत गयंध

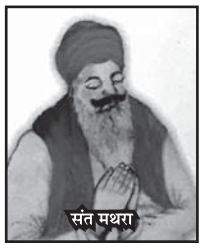
संत मथरा

संत भीखा

संत हरबंश

संत बलवंड

सूरदास मनु प्रभि हथि लीनो दीनो इहु परलोक ।।2।।

आदि ग्रंथ के अधिकांश व्याख्याकारों की सूरदास के पद की पंक्ति–

'छाडि मन हरि बिमुखन को संगु में व्यक्त धारणाओं के समानान्तर दूसरा विचार रखने के लिए पांचवे गुरु अर्जुन देव जी ने इस पद की रचना की क्योंकि पद के संदर्भ में उपर्युक्त पंक्ति सूरदास की थी इसलिए उन्हें समर्पित या संबोधित कर यह पद लिखा।

गुरु ग्रंथ साहिब में इन 15 कवियों के अतिरिक्त 13 अन्य कवियों की रचनाएँ संग्रहीत हैं– सुंदरदास, राइ बलवण्ड तथा सत्ता डूम, कलसहार, जालप, कीरत, भिक्खा, सल्ह, भल्ल, नल्ह, गयंद, मथुरा बल्ह, हरिबंस। जहाँ एक मत है कि ये रचनाएँ भाई मरदाना की हैं वहीं दूसरा मत यह है कि ये श्लोक स्वयं ? गुरु नानक ने भाई मरदाना की ओर से लिखे थे। सुंदरदास तीसरे गुरु अमरदास के पड़पोते थे । उनकी रचना सद नाम से तथा भट्ट कवियों के 123 सवैये श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संगृहीत है। भट्ट कवियों की एक लंबी परंपरा है। ये अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसा में रचनाएँ करते थे। भट्ट कवि एकत्र होकर कलसहार के नेतृत्व में गुरु अर्जुन जी के पास आये। यहाँ आकर उनकी जिज्ञासा शांत हुई भिक्खा भट्ट का कथन द्रष्टव्य है –

रहिउ संत हउ टोलि साथ बहुतेरे डिठ्ठे।।
संनिआसी तपसीअह मुखहु ए पंडित मीठे।।

भट्ट कवियों ने उस समय तक हो चुके पाँच गुरुओं के ऐतिहासिक स्वरूप में पुराण पुरूषों और अवतारों की कल्पना की। उनकी दृष्टि में सभी विष्णु के अवतार हैं साथ ही साथ प्रथम गुरु गुरु नानक की ज्योति के ही बाद के गुरुओं की संचरित होती रही है। भट्ट मथुरा का यह सवैया लक्षणीय है–

जोति रूपि हरि आपि गुरु नानक कहायहु।।
ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ।।

संत सत्ता

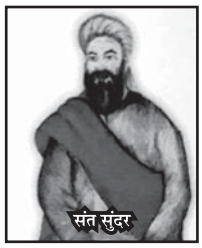
संत सुंदर

उपर्युक्त विमर्श से स्पष्ट होता है कि गुरु ग्रंथ साहिब एक व्यापक दृष्टिकोण से धर्माचार का स्वरूप निश्चित करने के लिए तैयार किया गया। गुरु नानक देव ने एक ऐसे सर्व समावेशी मत का प्रचार करना चाहा था जो भेद रहित समतामूलक समाज कि रचना कर सके। इसी प्रकार अनुष्ठान धर्मी रूढ़िओं और आडंबरों से अलग आत्मोत्थान के लिए सर्वशक्ति मान और सार्वव्याप्त परम तत्व के प्रति अटूट विश्वास रखने वाले सदाचारलक्षी धर्म की भावना हो सके। इसलिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संग्रहकर्ता ने जाति, वर्ण, धर्म, आदि की चिंता किये बिना ऐसे सभी संतों की रचनाओं का समावेश किया जिनकी रचनाओं से गुरु नानक देव के आदर्शों को समर्थन मिलता था। यह भी एक लक्षणीय बात है कि इनमें सम्मानित गुरूओं कि वाणी के साथ विभिन्न स्थानों जतियों और धर्म परंपराओं के लोगों की रचनाओं को सम्मिलित किया गया जिनसे गुरु नानक देव के विचारों को पुष्टि मिलती थी। इसी उदार दृष्टिकोण का शुभ परिणाम हुआ कि यह ग्रंथ देवत्व को प्राप्त करके पूज्य बन गया।

– असोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
गुरु नानक खालसा कॉलेज, माटुंगा (पूर्व), मुंबई –400019, मो.: 9869158885

सम्मान

वसंत राशिनकर स्मृति अखिल भारतीय समारोह में हुआ रचनात्मकता का सम्मान

इंदौर। शहर की प्रतिष्ठित संस्था आपले वाचनालय के संस्थापक संस्कृति पुरुष वसंत राशिनकर की स्मृति में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले अ. भा. सम्मान समारोह का गरिमापूर्ण आयोजन आपले वाचनालय सभागृह में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विद्वान डॉ. अनिल गजभिये एवं अतिथिद्वय नाशिक से आए प्रतिष्ठित साहित्यकार राजू देसले और सर्वोत्तम के संपादक अश्विन खरे ने अपने उद्‌बोधन में कवि, मूर्तिकार और समाजसेवी वसंत राशिनकर द्वारा आपले वाचनालय के माध्यम से समाज में किए गए वृहद रचनात्मक कार्यों की भूरी–भूरी प्रशंसा की। इसके पूर्व उपस्थित विद्वान प्रखर वक्ता डॉ. संजय जैन ने अपने आत्मीय और प्रभावी संबोधन में न सिर्फबसंतजी के कार्यों और समर्पण को शिद्दत से याद किया वरन उन्हें शहर की सांस्कृतिक धरोहर निरुपित किया।

रिपोर्ट –संदीप राशिनकर

'रोहमिश संगीत संध्या'– सुरों में सराबोर श्रोता

राज्य संग्रहालय, भोपाल के सभागार में दिनांक 17–12–2019 की शाम 'रोहमिश संगीत संध्या' कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। शुभारंभ प्रदेश के गौरव अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पुरातत्ववेत्ता डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। संगीत के क्षेत्र में 'रोहमिश वास्तविक जीवन में अमित शर्मा हैं। वे मूलत: कश्मीर से हैं और विगत बारह वर्षों से अमेरिका में रह रहे हैं। व्यवसाय से कम्प्यूटर इंजीनियर रोहमिश सूचना प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में कार्यरत हैं। झीलों की नगरी में उनकी यह प्रथम प्रस्तुति थी। उन्होंने लोकप्रिय गज़लें, कुछ स्वयं द्वारा स्वरबद्ध की गई गज़लें, शास्त्रीय संगीत, फिल्म संगीत और सूफी कलाम पेश किए। कार्यक्रम में उनके सहयोगी कलाकारों श्वेता नागदेव शर्मा और मोईन खान ने भी फिल्म जगत की श्रेष्ठ गज़लें प्रस्तुत कीं।

रिपार्ट– राजेन्द्र नागदेव

आलेख

गुरमति संगीतः दिलरूबा वाद्य के संदर्भ में

प्रभदीप सिंह

संगीत वह ललित कला है जिस के द्वारा संगीतकार अपने हृदय के सूक्ष्म भावो को स्वर व लय के माध्यम से साकार करता है। भारतीय संगीत विद्वानों ने संगीत की परिभाषा कुछ इस प्रकार दी है: ''**गीत वाद्य तथा नृत्य त्रंय संगीत मुचयते।**''

संगीत परम्परा भारत में प्राचीन काल से ही मानी जाती है। जैसे-जैसे मानव ने विकास का सफर तय किया, संगीत कला का भी विकास होता रहा। सदियों से भारतीय संगीत की अनेक विधाओं का प्रचलन होता आया है। जिन में से आज संगीत में उत्तरी व दक्षिण विधाएँ प्रचलित हैं।

इन्ही दोनों विधाओं के अन्तर्गत बहुत अनेक विधाओं का जन्म हुआ जैसे कि सूफी, भक्ति, ठुमरी, टप्पा, फिल्मी, दादरा और गुरमति संगीत। गुरमति संगीत की बात करें तो इसका प्रारम्भ गुरू नानक देव जी के जन्म उपरान्त हुआ। गुरू नानक देव जी ने अपनी बात जनसाधारण तक पहुँचाने के लिए संगीत को चुना। ''गुरू नानक के आगमन तक भारतीय संगीत दो रूपो में बाँटा जा चुका था भारतीय और कर्नाटकीय। इस समय भक्ति लहर, प्रभु भक्ति की एक लहर के रूप में प्रचारित हुई। इस परम्परा में अकाल पुरख के इलाही संदेशाधीन जनसाधारण के लिए भावपूर्ण में गाया गया।''

गुरमति संगीत का भाव है गुरू की मत से सिरजा गया संगीत। गुरमति संगीत का सिद्धांत श्री गुरू ग्रन्थ साहिब से प्राप्त होता है। श्री गुरू ग्रंथ साहिब में दर्ज वाणी रागों में निर्धारित है। गुरमति संगीत में इन्हीं रागों का गायन करते हुए शब्द कीर्तन किया जाता है। गुरमति संगीत सिक्ख धर्म की प्रभावित शब्द कीर्तन परम्परा है जिसको साधारण रूप में गुरवाणी संगीत, गुरवाणी कीर्तन आदि नामों से भी जाना जाता है। गुरू नानक ने शब्द कीर्तन करते हुए वाद्य का भी उपयोग किया। आपके साथ भाई मरदाना ने रबाब वाद्यय का वादन किया। इस तरह गुरू नानक देव जी ने एक नई और मौलिक कीर्तन परम्परा का आरम्भ किया और जिसका विकास समय-समय पर होता गया। रबाब से शुरू हुआ कीर्तन बाद में ताऊस, सारंदा, दिलरूबा, इसराज के साथ भी होने लगा। गुरमति संगीत में दिलरूबा वाद्य को गायन के अधीन ही रखा जाता है। रबाब के बाद दिलरूबा वाद्य गुरमति संगीत में अधिक प्रचलित है। यह एक गज वाद्य है किन्तु इसमें पर्दों का भी प्रयोग किया जाता है। गज से बजने वाले पर्दों से युक्त बहुत कम वाद्यय यंत्र हैं, दिलरूबा उनमें से एक वाद्य है।

दिलरूबा वाद्य का प्रचलन महाराजा रणजीत सिंह के समय से आरम्भ हुआ। ताऊस की बनावट मे कुछ परिवर्तन करने के बाद दिलरूबा वाद्य की उत्पत्ति हुई। यह वाद्य बंगाली वाद्य इसराज से काफी मिलता जुलता है। सन 1990 के आसपास सुप्रसिद्ध रबाबी भाई चाँद अपनी कीर्तन चौंकी के समय श्री हरिमन्दर साहिब मे दिलरूबा का उपयोग करते थे। उनके निधन के बाद उनके शागिरदों में से भाई गुरमुख सिंह, भाई हस्सा सिंह और भाई उत्तम सिंह दिलरूबा वाद्य के साथ श्री हरिमन्दिर साहिब में कीर्तन करते थे।

दिलरूबा फारसी भाषा का शब्द है। जिसका अर्थ है- प्यार, प्रीतम और मन को आन्नदित करने वाला। दिलरूबा का उल्लेख प्राचीन ग्रन्थों में नहीं मिलता। यह वाद्य इसराज के बाद प्रचलन मे आया। सैद्धांतिक तौर पर यह दोनो वाद्यों के रूप, आकार, वादन विधि आदि में अन्तर कम है। इसराज बंगाल में और दिलरूबा पंजाब की गुरमति संगीत शैली में उपयोग किया जाता है। गुरमति संगीत में दिलरूबा का प्रयोग

''भाई चतर सिंह ने ननकाना साहिब में 1945ई. से शुरू कर दिया था। 1947 ई. के बाद वह पटियाले के गुरूद्वारे में भाई गुरमुख सिंह, भाई सुरमुख सिंह फक्कर के जत्थे के साथ दिलरूबा की संगति करने लगे।'' पंजाब में दिलरूबा वाद्य का प्रचार व विकास का श्रेय गुरमति संगीत को जाता है। गुरमति संगीत मे चौकी प्रथा दौरान एक प्रमुख गायक के साथ दिलरूबा, रबाब, सरंदा वाद्यो का वादन किया जाता हैं। वर्तमान में भी श्री दरबार साहिब अमृतसर में भी सुबह शाम दिलरूबा की संगत कीर्तन के साथ सुनने को मिल जाती है। यह वाद्य आजकल कीर्तनकारों द्वारा अपनी शब्दो की रिकार्डिंग में भी उपयोग किया जाने लगा है। दिलरूबा वाद्य पूर्ण रूप से गुरमति संगीत को समर्पित है। गुरमति संगीत में दिलरूबा वाद्य अनेक राग दरबारों में सुनने को मिल रहा है। वर्ष 2019 में गुरू नानक देव जी के 550वें प्रकाश उत्सव के अवसर पर सुल्तानपुर लोधी (पंजाब) में तंती वाद्यो को लेकर नगर कीर्तन भी निकाला गया तांकि गुरमति संगीत मे तंती वाद्यो का प्रचार बढ़ सके। इस नगर कीर्तन में सैंकड़ो दिलरूबा, रबाब, संरदा, सारंगी, ताऊस वादको ने भाग लिया। सुल्तानपुर लोधी में गुरू ग्रन्थ साहिब में दर्ज रागो के आधार पर राग दरबार भी आयोजित किया गया जिसमे दिलरूबा वाद्यों की संगती सुनने को मिली। इस राग दरबार मे डॉ. गुरनाम सिंह (पटियाला), डॉ. अलंकार सिंह (पटियाला), डॉ. जसबीर कौर (पटियाला), प्रि. सुखवंत सिंह (जंडियाला गुरू), प्रो. करतार सिंह, भाई निर्मल सिंह आदि संगीतकारो ने रागो पर आधारित शब्द गायन किया।

यदि दिलरूबा वाद्य के शिक्षण की बात करें तो पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला के गुरमति संगीत विभाग में इस वाद्य की शिक्षा दी जा रही है। इसके इलावा संगीत विभाग में भी कई विद्यार्थी दिलरूबा वाद्य के साथ एम.ए कर रहे है। बड़ू साहिब (हिम. प्रदेश), जवदी टकसाल लुधियाना, श्री भैणी साहिब लुधियाना में भी दिलरूबा की तालिम दी जा रही है। अंत में हम कह सकते है कि दिलरूबा पूर्ण रूप में गुरमति संगीत को समर्पित है। हम सभी को प्रयास करना चाहिये कि दिलरूबा, रबाब, सरंदा जैसे गुरमति संगीत के वाद्यों को कॉलेज और विश्वविद्यालय मे सिखाया जाना चाहिए। ताकि गुरमति संगीत की विशाल परम्परा का जनसाधारण भी ज्ञान हासिल कर सके। आज की युवा पीढ़ी गिटार, हरमोनियम, की-बोर्ड जैसे पश्चिमी वाद्य जहाँ सीख रही हैं वहीं हमारे भारतीय तंत्र वाद्य दिलरूबा, रबाब, सारंदा, ताऊस, तार शहनाई जैसे मन को आनन्दित करने वाले वाद्यों को भी सीखना चाहिए।

- असिस्टेंट प्रोफेसर, संगीत विभाग, श्री गुरु अंगद देव कॉलेज, खंडूर साहिब

आलेख

अंतिम यात्रा

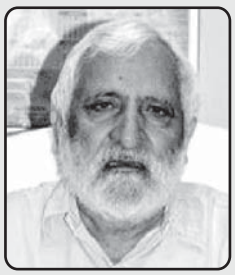

डॉ.कुलदीप चंद अग्निहोत्री

अपने जीवन के अंतिम वर्षों (1521-1539) में गुरू नानक देवजी को भारतीय इतिहास के रंगमंच पर उस अध्याय के प्रारंभिक पन्नों को अपनी आँखों के सामने खुलते हुए देखना था, जिसे बंद करने में उनके उत्तराधिकारियों को न जाने कितने बलिदान देने पड़े। यह अध्याय था 'बाबर का भारत पर आक्रमण'। उन्होंने 1521 में सैयदपुर में बाबर के अत्याचारों को अपनी आँखों से देखा था और अपनी आंतरिक व्यथा की अभिव्यक्ति बाबरवाणी में की भी थी। मध्य एशिया के उजबेकिस्तान का बाबर अपने पिता की ओर से तैमूर लंग का पाँचवाँ एवं माता की ओर से चंगेज खान का चौदहवाँ वंशज था। सैयदपुर में जब बाबर ने हमला किया था, तब नानक देवजी पच्चीस साल तक निरंतर पूरे जंबू द्वीप की यात्रा करने के बाद वापस पंजाब पहुँचे ही थे। कहा जाता है कि सैदयपुर हमले के समय गुरूजी को कुछ दिन बाबर की जेल में भी काटने पड़े थे। सैदयपुर से तलवंडी होते हुए वे रावी नदी के किनारे आ गए। नदी के किनारे एक स्थान उन्हें बहुत पसंद आया। उनके एक श्रद्धालु दुनी चंद ने इसके लिए आर्थिक सहायता उपलब्ध करवा दी। नानक देव ने इस नए स्थान का नाम 'करतारपुर' रखा। करतार यानी ईश्वर का घर।

लेकिन इन्हीं दिनों मानो नानक देवजी पर वज्रपात हुआ। उनकी बहन नानकी और जीजा जयराम का 1521 में देहांत हो गया। अगले ही वर्ष 1522 में उनके पिता कल्याण चंदजी और माता तृप्ताजी अपनी इहलीला समाप्त कर परलोकवासी हो गए। नानक जानते थे, यह शरीर तो पाँच तत्व का पुतला है, इसको तो एक दिन जाना ही हैं लेकिन माता-पिता का वियोग!

गुरू नानक देवजी ने अब स्थायी रूप से करतारपुर में ही रहने का निर्णय पर लिया था। भाई गुरदासजी ने नानक देवजी द्वारा करतारपुर बसाने और वहाँ स्थायी रूप से रहने के प्रसंग का अपनी वारों में उल्लेख किया। वे लिखते हैं-

फिरि बाबा आया करतारपुरि भेखु उदासी सगल उतारा।
पहिरि संसारी कपड़े मंजी बैठि कीआ अवतारा ।।

(गुरदास, 1-38)

गुरू नानक देवजी ने तो चौबीस साल की लम्बी यात्राओं के बाद अपना उदासी भेष त्याग दिया और पुन: गृहस्थ जीवन के वस्त्र धारण कर लिये। लेकिन अब ये उदासी भेष के कपड़े उनके बडे सुपुत्र श्रीचंद ने ग्रहण कर लिए। परिवार की परंपरा टूटने नहीं चाहिए। गुरू नानक अब गृहस्थ थे, उसी प्रकार की वेश-भूषा। सामान्य गृहस्थों जैसी श्रमजीवी दिनचर्या भी। उन्होंने अपना परिवार भी यहीं बुला लिया। दोनों सुपुत्र श्रीचंद और लक्ष्मी चंद वहीं आकर रहने लगे। सारा परिवार एक साथ रहने लगा। छोटा बेटा लक्ष्मी चंद कृषि कार्य में हाथ बँटाता। सुलक्खनी देवी घर का बाकी कार्य सँभालती। शिष्यों का आना-जाना निरंतर लगा ही रहता था। लंगर की देखभाल वही करती थीं। बड़ा बेटा श्रीचंद बचपन से ही उदासी वृत्ति का था। नानक देवजी की वाणी की व्याख्या करता और इसी नाम साधना में मगन रहता था। उनके जीवन के अंतिम काल में उनका निवास स्थान एक प्रकार का आश्रम ही बन गया था।

जन्मसाखियों के साक्ष्य से प्रो. हरबंस सिंह ने इसका चित्रण किया है- "This period witnessed the emergence of a growing fellowship of disciples around the person of the guru. Whoever came ate in the langar sitting in a row with the other signifying surrender of caste scruples, engaged in the seva or physical labour in the service of the community, listened to the guru's teaching and joined in reciting the holy hymns..."

उन्हें करतारपुर रहते हुए अभी बमुश्किल पाँच साल ही हुए थे कि 1526में बाबर ने भारत पर अंतिम और निर्णायक आक्रमण किया। 1921 में वह स्यालकोट को जीतता हुआ सैयदपुर पहुँच गया था। सैयदपुर में बाबर ने काफी तबाही मचाई थी। घर लूट लिए गए। अनेक लोग मार दिए गए। इसका उल्लेख गुरू नानक देव अपनी बाबरवाणी में पहले ही कर चुके थे। उसके बाद 1524 में बाबर ने लाहौर को जीतकर उसे तहस-नहस कर दिया। उसका अंतिम और स्थायी प्रभाव वाला हमला 21 अप्रैल, 1526में हुआ। बाबर को भारत पर आक्रमण करने का निमंत्रण पंजाब के शासक दौलत खान लोदी ने दिया था। पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल, 1526ई. को इब्राहिम लोदी और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई। दूसरा युद्ध खानवा में 17 मार्च, 1527 ई. में राणा सांगा और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई। चंदेरी का युद्ध 29 मार्च, 1528ई. में मेदनी राय और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई। पानीपत के युद्ध में लूटे गए धन को बाबर ने अपने सैनिक अधिकारियों, नौकरों एवं सगे-सम्बन्धियों में बाँट दिया। इस बँटवारे में हुमायूँ को वह कोहिनूर हीरा प्राप्त हुआ, जिसे ग्वालियर नरेश 'राजा विक्रमजीत' से छीना गया था। इस हीरे की कीमत के बारे में माना जाता है कि इस मूल्य द्वारा पूरे संसार का आधे दिन का खर्च पूरा किया जा सकता था। इस प्रकार भारत में मुगल वंश के शासन की स्थापना हुई। मुगल वंश के प्रारंभिक दौर के प्रत्यक्षदर्शी नानक देव भी थे।

एक बार करतारपुर में आ बसने के बाद नानक देवजी किसी लम्बी यात्रा पर नहीं गए। लेकिन पंजाब में आसपास के स्थानों पर यात्रा करते थे। इन यात्राओं में उनकी अचल बटाला की यात्रा की बहुत चर्चा होती रहती है। अचल वर्तमान बटाला के समीप ही है। बटाला में ही नानक देवजी का सुसराल था। अचल में उनकी शिवरात्रि के दिन सिद्धों योगियों से लम्बी गोष्ठियाँ हुई थीं। इसी प्रकार की एक यात्राओं में गुरू नानक देवजी की कत्थूनंगल में एक बालक

बुड्डा से भेंट हुई थी। बालक का नाम तो बुड्डा नहीं था, लेकिन छोटी उम्र में ही जिस बुद्धिमत्ता की बातें वह कर रहा था, उसके कारण गुरूजी ने कहा था कि तुम हो तो बालक, लेकिन बूढ़ों जैसी अक्लमंदी की बातें करते हो। इसी से उसे बुड्डा कहा जाने लगा और उसका वही नाम प्रचलित हो गया। वह युवक भी अपने माता-पिता से आज्ञा लेकर करतारपुर में ही आकर रहनें लगा। धीरे-धीरे, जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ती गई तो वह बुड्डा से भाई बुड्डा कहा जाने लगा। भाई बुड्डा एक बार गुरू नानक की धर्मशाला में आए तो वहीं के होकर रह गए। दशगुरू परंपरा में भाई बुड्डा का स्थान बहुत ऊँचा है। वे अपने मृत्युपर्यंत गुरू घर से जुड़े रहे। परंपरा के छठे गुरू श्री हरगोबिंदजी तक, सभी का गुरू गद्दी पर तिलक करने का सौभाग्य बुड्डाजी को ही प्राप्त हुआ।

नानक का निवास एक नया तीर्थ स्थान बन गया था, जहाँ आने से एक नई ऊर्जा मिलती थी। ईश्वर का गायन होता था, लेकिन इहलोक की समस्याओं की भी चर्चा होती थी। भारत के हर कोने से श्रद्धालु नानक देवजी के दर्शन और उनकी वाणी सुनने के लिए आते थे। इधर नानक देव एक साथ बाबर के अत्याचारों को तो देख ही रहे थे और भविष्य में उसके प्रभावों का भी आकलन कर रहे थे। उन्होंने भविष्यवाणी भी कर रखी थी कि ये हमलावर 'जावण सत्तानबे'। इसलिए उनकी इच्छा थी कि जो काम उन्होंने शुरू किया है, किया है, वह उनके देहावसान के बाद भी चलता रहना चाहिए।

इसे ईश्वरेच्छा ही समझना चाहिए कि करतारपुर में 1532 में भाई लहणा से उनकी मुलाकात हुई। लहणा खडूर साहिब का रहनेवाला था और वहाँ दुकान करता था। उसके पिता का नाम फेरूमल और माता का नाम सबराई था। दरअसल यह विस्थापित परिवार था, जो फिरोजपुर जिला के गाँव मत्ते की सराय से आकर खडूर साहिब में बस गया था। बाबर की तुर्की सेनाओं ने सारा गाँव उजाड़ दिया था और अनेक लोगों को मौत के घाट उतार दिया था। गाँव के लोग जिसको जिधर का रास्ता मिला, जान बचाने के लिए उधर ही भागे। फेरूमल की बहन खडूर साहिब में रहती थी। इसलिए वे अपने परिवार को लेकर वहीं आ गए। माता-पिता के स्वर्गवास के बाद लहणा फिर मत्ते की सराय गए ही नहीं और खडूर साहिब में ही दुकान करने लगे। भाई लहणा हर साल ज्वालामुखी की तीर्थ यात्रा पर जाते थे। अपने गाँव में उन्होंने नानक देवजी के इस नए स्थान की चर्चा ही नहीं सुनी थी, बल्कि गुरूजी के कुछ शिष्यों से गुरूवाणी का लयबद्ध स्वरों में गान भी सुना था।

इससे उनके मन में गुरू नानक देवजी से मिलने की इच्छा थी। एक बार जब वे अनेक श्रद्धालुयों सहित ज्वालामुखी जा रहे थे तो उन्होंने करतापुर में नानक देवजी से मिलकर जाने का निर्णय किया। वे उनमें मिलने के लिए आए, लेकिन एक बार आए तो फिर यहीं रम गए। कहा जाता है कि गुरूजी ने उससे पूछा, तुम कौन हो? लहणा ने उत्तर दिया, मैं लहणा हूँ। गुरूजी ने कहा, 'ठीक ही तो है, तुम लहणा यानी लेनदार हो और मैं देनदार हूँ।' लहणा उस समय 28वर्ष के युवा थे। वे उस रात वहीं रूके। कहा जाता है, वहीं दुर्गा ने उन्हें दर्शन दे दिए। उधर रावी नदी के किनारे उनके साथी उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। लेकिन लहणा की यात्रा तो समाप्त हो चुकी थी। उन्होंने अपने साथियों को यात्रा पर जाने के लिए कह दिया। वे स्वयं वापस खडूर साहिब आ गए। लेकिन अब दुकान में मन कहाँ लग रहा था। ध्यान तो रावी के किनारे नानक देव की धर्मशाला में हो रहे कीर्तन में लगा रहता था। उनकी पत्नी उनकी दुविधा को समझ गई। उसने कहा, आप मेरी और दुकान की चिंता मत करो। मैं दुकान सँभाल लूँगी। आप अपने गुरू को मिल आओ। लहणा फिर करतापुर आ गए। अब तो यह आना-जाना स्थायी रूप से शुरू हो गया था। लहणा ने एक प्रकार से गुरूजी के आगे समर्पण कर दिया था। एक अखंड विश्वास! गहरी निष्ठा!!

'गुरू नानक देवजी के सामने एक विशेष सामाजिक उद्देश्य था, जिसकी पूर्ति हेतु वे आध्यात्मिक और वस्तुज्ञान को इस प्रकार ढालना चाहते थे, ताकि इस ज्ञान से उस समाज को नई दिशा दी जा सके, जिसके वे स्वयं अंग थे। अपनी उदासियों के दौरान उन्होंने पूरे देश की तात्कालिक सामाजिक व्यवस्था को बखूबी देखा था। उन्होंने उन सभी समकालीन परंपराओं का अध्ययन कर, उन समस्याओं का गहराई से विशलेष्ण किया, जिनके कारण सामान्य जन आक्रमणकारियों एवं कर्मकांडियों के सामने कायर हो गए थे। उन्होंने अपने विचारों को सिलसिलेवार एक विशिष्ट ढाँचे में ढाला, जिसके दूरगामी परिणाम निकले। 'आसा की वार' में हम देखते हैं कि गुरूजी ने भारतीय समाज के सामाजिक-आध्यात्मिक जीवन का तकरीबन हर पक्ष से जायजा लिया था। भारत का सामाजिक ढाँचा ऐसा बन गया था, जिसमें मुगलों व पठानों की गुलामी में भारतीय विवशता में दोहरी जिंदगी जी रहे थे। वे अपने घर के भीतर तो हिंदुओं की तरह आचरण करते थे, लेकिन बादशाह के दरबार में मुसलमानों की तरह आचरण करते थे। अनेक शाताब्दियों के उपरांत गुरू नानक देव ने लोगों को उनकी अपनी भाषा पंजाबी में, सरल स्पष्ट विचार, बिंब, प्रतीक और अनुशासन की दीक्षा प्रदान की। अपने इन प्रयासों में वे तत्कालीन भक्ति आंदोलन, नाथपंथ और संत परंपरा से कहीं आगे निकल गए थे। उन्होंने सामान्य जन को व्यक्तिगत हित की बजाय सामाजिक कल्याण के लिए कार्य करने हेतु प्रेरित किया।' लेकिन उनका यह कार्य उनके बाद भी चलता रहे, इसकी व्यवस्था करना जरूरी था।

नानक देवजी के दोनों सुपुत्र श्रीचंद और लक्ष्मीचंद भी यहीं रहते थे। लक्ष्मीचंद का तो विवाह भी हुआ था, लेकिन श्रीचंद अविवाहित थे। उनका मन सांसारिक बातों में नही रमता था। उनका स्वाभाव और प्रकृति वैराग्य भाव वाली थी। नानक देवजी की आयु बढ़ती जा रही थी। नानक पंथियों की संख्या भी बढ़ती जा रही थी। उन्होंने संपूर्ण भारत का अविराम भ्रमण किया था। इसलिए उनके शिष्यों की संख्या भी देश के कोने-कोने में फैली हुई थी। उनको सुसंगठित करना, भविष्य के कार्यक्रम निर्धारित करना, इन सभी कामों के लिए किसी उत्तराधिकारी को नियुक्त करना अनिवार्य हो गया था।

अपनी लम्बी यात्राओं का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए नानक देव ने कहा भी था, हउं भालण चढिआ संसारा, जिसका उल्लेख भीई गुरदास भल्ला ने किया है। क्या उन्होंने संसार को 'भाल' लिया था? क्या उन्होंने 'कूड अमावस' के अंधकार को दूर करने का रास्ता खोज लिया था? क्या अन्याय व अत्याचार के प्रतिकार का मार्ग उन्हें मिल गया था? मार्ग उन्हें मिल गया था और उनकी यात्राओं का उद्देश्य भी पूरा हो गया था। नानक देव इतना तो जान ही गए थे कि भविष्य में जिस प्रकार की परिस्थितियाँ बनने वाली हैं, उनमें यह नया मार्ग कंटकाकीर्ण ही बनने वाला है। इन परिस्थितियों का सामना हिमालय की कंदराओं में बैठकर नहीं किया जा सकेगा, बल्कि इसके लिए खेतों में हल

चलाते हुए ही फौलाद बनना होगा। हल भी चलता रहे और सतनाम का जाप भी होता रहे। श्रीचंद का मन इलाके की एषणाओं में कहाँ लग पाता है? वे अपने ढंग से आध्यात्मिक साधना में लीन थे, लेकिन अपने पिता नानक देवजी की वाणी की व्याख्या व प्रचार भी करते रहते थें। श्रीचंद ने भी भ्रमण किया था। लोग उनके मार्ग को उदासी कहने लगे थे। फिर उन्होंने तो स्वयं पिता का उतारा हुआ 'भेष उदासी' स्वेच्छा से धारण किया था। शायद इसीलिए गुरू नानक देव की नजर लहणा पर टिक गई थी। वैसे भी लहणा को गुरू के आश्रम-निवास में रहते हुए अब सात साल हो गए थे।

गुरू नानक समझ गए, सोना पारस बन गया है। चौदह जून 1539 का दिन था। उन्होंने बाबा बुड्डा को बुलाया और सारी संगत के सामने लहणा के माथे पर केसर का तिलक लगा दिया। पाँच पैसे और नारियल उसके आगे रखकर लहणा के पैर छुए और उसे अपना उत्तराधिकारी नियत कर दिया। उन्होंने लहणा को वाणी की पोथी भी सँभाल दी। दशगुरू परंपरा की यह सबसे बहुमूल्य थाती थी। आज से भाई लहणा अंगद देव (1504-1552) हो गए। अंगद यानी नानक का ही अंग। भविष्य में भारत के इतिहास में एक नया स्वर्णिम अध्याय लिखने वाली दशगुरू परंपरा के द्वितीय गुरू।

भाई गुरदासजी लिखते हैं-

थापिआ लहिणा जींवदे गुरिआई सिरि छत्रु फिराइआ।
जोती जोति मिलाइ कै सतिगुर नानकि रूपु वटाइआ।
लखि न कोई सकई आचरजे आचरजु दिखाइआ।
काइआ पलटि सरूपु बणाइआ।।(गुरदास 1-45)

अर्थात् नानक देवजी ने अपने जीवन काल में ही गुरूता का छत्र लहणा के सिर पर धर दिया और अपनी ज्योति उसी में प्रवेश करवा दी। मानों नानक देव ने स्वयं ही नया रूप धारण कर लिया हो। यह रहस्य सामान्य जन की बुद्धि में नहीं आ सकता। सचमुच यह आश्चर्यजनक कार्य गुरू नानक देवजी ने कर दिखाया। मानो उन्होंने अपनी काया पलट कर नया स्वरूप धारण कर लिया हो। अब नानक का कार्य उनके चले जाने बाद भी गतिमान रहेगा। उन्होंने पूरे देश को एक मंत्र दे दिया था- **'एक ओंकार सतिनाम'** नाम का जाप करते रहो। नाम का निनाद सिद्धि देगा। यह नानक का रास्ता था। यह पलायन का रास्ता नहीं था। यह सामाना करने का रास्ता था। यह रास्ता खालसा पंथ की स्थापना की ओर जाता था। इसका संकेत नानक देव ने बाबरवाणी की रचना से कर दिया था। बाबरवाणी बाबर के आक्रमण के प्रतिकार के लिए की गई पहली सिंह गर्जना थी। अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करने के कुछ दिन बाद गुरू नानक देवजी स्वयं भी उस ब्रह्म ज्योति में लीन हो गए। इस अनंत यात्रा पर जाने से पहले गुरूजी ने सहज स्वाभाविक ढंग से परिवार के सदस्यों को ढांढस बँधाया। पाँच भूतों से निर्मित शरीर का नष्ट हो जाना ही धर्म है। संसार इसी धर्म से चलता है। सभी शिष्य समझ गए कि गुरूजी ने जाने की तैयारी कर ली है। अब तक बहुत से मुसलमान भी गुरूजी के शिष्य बन चुके थे। इन भारतीय मुसलमानों ने भी अरबों और तुर्कों की देखा-देखी मृत्यु के बाद शव को दफनाना शुरू कर दिया था। इसलिए उन्होंने कहना शुरू कर दिया कि नानक देवजी के निर्वाण के बाद उनके शव को दफनाया जाएगा। लेकिन शेष शिष्य इस बात को कैसे स्वीकार कर सकते थे? अत: उन्होंने कहा कि विधि के अनुसार गुरूजी के शरीर का दाह संस्कार ही किया जाएगा। विवाद की यह चर्चा गुरूजी तक भी पहुँची। उन्होंने दोनों को बुलाया और कहा, इस बात पर विवाद करने या झगड़ने की जरूरत नहीं हैं। मेरे श्वास समाप्त हो जाने के बाद मेरे शरीर पर फूल रख देना। दूसरे दिन देख लेना। जिस पक्ष के फूल ताजा रहें, उसी के अनुसार मेरे शरीर का अंतिम संस्कार किया जाए।

गुरूजी ने अपनी अंतिम यात्रा की तैयारी भी स्वयं ही की। यह यात्रा उनकी अन्य यात्राओं या उदासियों जैसी नहीं थी। उन यात्राओं से वापसी निश्चित थी। इस यात्रा की नावापसी निश्चित थी। गुरूजी ने धरती पर आसन बिछाया और उस पर लेट गए। शिष्यों का हृदय छटपटाने लगा।

गुरूजी ने उन्हें सांत्वना दी और गाया-

संवति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु।।
देहु सजण आसीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु।।
घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि।।
सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि।।

(राग गउडी, पूरबी दीपकी, शब्द, महला-1)

अर्थात् भगवान से मिलने का दिन और संवत् सब पहले से ही निश्चित रहता है। आओ सब मिलकर इस शुभ अवसर पर तेल चुबाइए और मुझे आशीर्वाद दो कि अब इतने अरसे बाद मेरा उस ईश्वर से मिलना हो रहा है, जिसका वियोग असह्य हो गया था। नानक का कहना है कि मृत्यु कोई आश्चर्य नहीं है। इसका संदेश तो घर आता ही रहता है। मृत्यु तो सभी की कभी-न-कभी आएगी ही। इसलिए सदा उस भगवान् का स्मरण करते रहें, जो पृथ्वी पर अपना बुलावा भेजता रहता है। इसलिए यह दु:ख का अवसर नहीं है, बल्कि यह तो खुशी का दिन है कि उस प्रियतम से भेंट हो रही है। वह 22 सिंतबर, 1539 का दिन था। ज्योति अनंत ज्योति में विलीन हो गई। शिष्यों के हृदय चीत्कार कर उठे।

श्रीअंगद देवजी के उद्‌गार फूट पड़े-

जिस पिआरे सिउ नेह।
धिगु जीवणु संसारि ता कै पाछै जीवणा।। (सिरी राग वार महला-2)

देहावसान के समय नानक देवजी की आयु सत्तर वर्ष, चार मास और तीन दिन थी। गुरूजी के आदेशानुसार ही उनके शव पर फूल चढ़ाकर चादर से ढक दिया गया। दूसरे दिन श्रद्धालुओं ने जब चादर उठाई तो गुरूजी का शरीर तो वहाँ नहीं था, लेकिन सभी फूल स्वच्छ एवं ताजे थे। रावी के ही तट पर पूरे विधान से फूलों को ही शरीर मानकर उनका दाह संस्कार कर दिया गया। लेकिन मुसलमान हो गए लोगों ने अपने फूलों को रावी के ही तट पर दबा दिया। रावी के उस तट पर श्रद्धालुओं ने दाह संस्कार के स्थान पर उनकी स्मृति में एक समाधि बना दी। जो मुसलमान उनके शिष्य हो गए थे, उन्होंने उनकी याद में एक कब्र बनाकर सिजदा किया। लोग वहाँ दर्शन करने भी जाते रहे। लेकिन रावी नदी की उत्ताल तरंगों ने एक दिन सभी को अपने उदर में समा लिया। न समाधि रही न कब्र। रावी फिर शांत होकर बहने लगी। नानक ने ही तो कहा था, मैंने जो कहा है, उस पर मनन करो। मेरे स्मारक मत बनाओ। रावी ने उनकी यह अंतिम इच्छा भी पूरी कर दी।

लेखक : हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्व विद्यालय धर्मशाला के कुलाधिपति हैं। पुस्तक लोक चेतना और आध्यात्मिक साधना के वाहक श्री गुरूनानक देव जी से साभार

■

आलेख

अमृत देश की दो अमृताएँ

डॉ. बिनय षडंगी राजाराम

गुरू ग्रंथ साहिब के रूप में अमर संत गुरू नानकदेव जी की देन तथा सिखों के दसवें गुरू अमरशहीद श्री गुरूगोविंद सिंह जी की लेखनी ने सिख धर्म की इमारत ही साहित्य की नींव पर खड़ी की है। सिख धर्म और साहित्य का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है।

पंजाब ने भारतीय इतिहास को कई मार्ग दिखाए हैं। शकों, हूणों, पठानों और मुगलों ने इसी रास्ते से भारत में प्रवेश किया था, इसीलिए यहाँ के लोगों के रक्त में ही युद्ध का बीज है। पंजाब की सिंधु नदी की घाटी में ही आर्यों की सभ्यता का विकास हुआ था। यही स्थान 'सप्तसिंधु' के नाम से जाना जाता रहा है। सप्त सिंधु अर्थात् सात सागरों का देश। यहीं पर अथाह जल-राशि के साथ 'सरस्वती' नदी बहती थी जो कालांतर में लुप्त हो गई। सिंधु नदी अब पाकिस्तान में है। बची रह गई पाँच नदियों के नाम से यह स्थान अब पंजाब कहलाता है। पंजाब में झेलम, चेनाब, राबी, व्यास और सतलज की अनवरत धारा की अथाह जल-राशि अपने अमृत जल-कण से पंजाब को हराभरा बना देती है। यही अमृत, अनाज बन कर सारे भारत को तृप्त करता है।

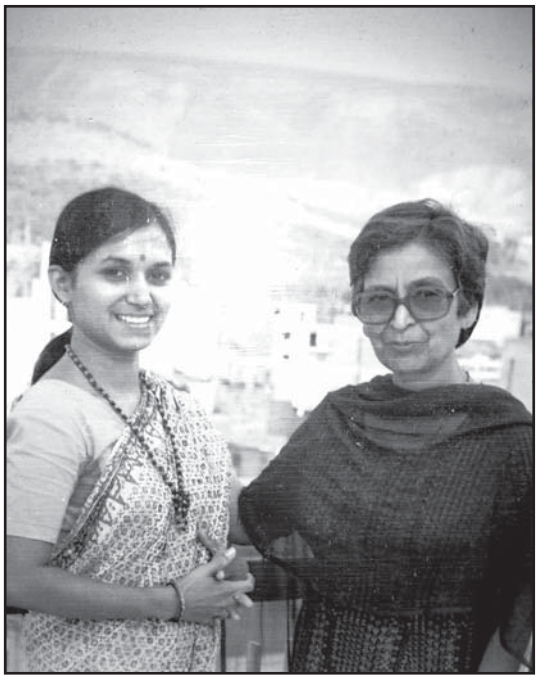

पंजाब के पंचनद की रेतीली कछारों में वहाँ की हरीतिमा में हीर-राँझा की अमर प्रेमकथा की गूँज आज भी सुनाई दे जाती है। वहाँ के लोक गीतों में प्रेम की पीर के भीगे-भीगे स्वरों के शास्वत स्वर हवा में तेरते महसूस किए जा सकते है। पंजाब के पंचनदों के झर-झराते झरने 'भाँगड़ा और 'गिद्दे' में ठसक भरते हैं।

ऐसे अमृत-देश मेरे भारत की दो अमर 'अमृताओं' को यहाँ याद करने का मन हुआ है। एक है कलाओं की ललना अमृता शेरगिल और दूसरी है साहित्य की सरिता अमृता प्रीतम। अपने अपने क्षेत्र में दोनों बेजोड़ हैं। दोनों ने भारत विभाजन के पूर्व की संत्रास को स्वयं भोगा, देखा और उनको रंगों-रेखाओं से या फिर शब्दों-स्वभावों से सजीव कर दिया।

अमृता शेरगिल का जन्म 30 जनवरी 1913 को बूडापेस्ट, हंगेरी में हुआ था। संस्कृत तथा परशियन भाषा के पंडित श्री उमराव सिंह शेरगिल पिता तथा हंगेरियन माता एंटोनी की खूब सूरत संतान थी अमृता। छोटी उम्र से ही कला के प्रति गहरी रूझान थी। अविभाजित भारत के पंजाब प्रांत में 1921 में वे अपने परिवार के साथ शिमला आ कर रहने लगीं।

हंगरी के साथ-साथ टर्की और फ्राँस में भी उन्होंने अपने प्रारंभिक वर्ष व्यतीत किए थे। उनकी छोटी बहन इंदिरा से वे बहुत स्नेह करती थीं। दोनों बहनों ने एक साथ थिएटर भी किए थे। अमृता स्वयं अच्छी पिआनो वादिका भी थी। अनेक कलाओं में रूचि रखने वाली अमृता की ख्याति एक चित्रकार के रूप में हुई। अमृता की माँ उनके चित्रकार रूप को अधिक निखारने के लिए उन्हें इटली लेकर गई जहाँ पश्चिमी 'रियलिस्टिक' कला की जानकारी हासिल करने के पश्चात उन्होंने अपनी स्वयं की निजी पहचाने बनाई और भारत आकर बीसवीं शताब्दी की प्रसिद्ध 'अवाँगार्द' आधुनिक चित्रकार के रूप में भारतीय कला जगत में आज भी याद की जाती है। बंगाल स्कूल के पुनर्जागरण के दौर में अमृता ने अपनी खास शैली और स्वतंत्रता पूर्व की भारतीय परिवेश, भारतीय नर-नारियों की जो तसवीर बनाई वे न केवल भारत में अपितु विदेशों में भी खूब लोकप्रिय हुई।

अत्यंत कम उम्र में एक सशक्त कलाकार की असमय मृत्यु ने भारतीय कला-जगत के उस नगीने को छीन लिया और 5 दिसंबर 1941 में उनकी मृत्यु हो गई।

अमृता शेरगिल का छोटा-सा जीवन भी बहुत सारा उजाला बिखेर कर भारतीय कला-इतिहास में अमर बन गया।

हमारी दूसरी अमृता हैं जानी-मानी पंजाबी लेखिका अमृता प्रीतम।

अमृता प्रीतम का जन्म 31 अगस्त 1919 को गुजराँवाला, पंजाब में हुआ था जो अविभाज्य भारत का एक खुशहाल छोटा शहर था। पंजाब के इस खुशहाल शहर के करतार सिंह हितकरी के घर अमृता जी का जन्म हुआ। विभाजन पूर्व का पंजाब और विभाजन बाद के पंजाब को अपनी आँखों से देखा, मन पर भोगा और वही सबकुछ चिरंतन सत्य बन कर उनके हृदय में, नस-नस में ऐसा रच, बस गया कि उनकी लेखनी से स्याही बन कर वही सब कुछ बहता रहा। लगभग 100 से अधिक पुस्तकों की रचयिता अमृता प्रीतम ने कविताएँ लिखीं, कहानियाँ लिखी, उपन्यास लिखे और निबन्ध भी खूब लिखे। लिखने में उनके पत्रों का लेखन भी खूब चलता रहा, प्रसिद्ध भी रहा।

18वीं शताब्दी के पंजाबी कवि वारिस शाह पर लिखी उनकी कविता 'अज्ज आखाँ वारिस शाह नूँ' उनकी प्रथम अति प्रसिद्ध कविता के रूप

में आज भी कही-पढ़ी जाती है। अमृता जी के ''पिंजर'' उपन्यास को पढ़ते हुए ऐसा लगता है जैसे हम स्वयं उस उपन्यास की वह नायिका बन जाते हैं जो भारत पाक विभाजन के बाद आधी भारत में और पूरी पाकिस्तान चली जाती है लगता है स्वयं लेखिका का ही पिंजर की भी नायिका है जिनका मन भारत में तो तन पाकिस्तान चला गया है। अन्यंत मार्मिक कथानक को लेखनी से साकार कागज पर उकेर दिया है लेखिका ने। अमृता जी का विवाह प्रीतम सिंह जी के साथ हुआ था, इस नाते वे अमृता प्रीतम के रूप में ख्यात हुई। किन्तु उनका हृदय एक पंछी के समान था। आजाद और ऊँची-ऊँची उड़ाने भरने वाला, नए-नए स्थान, नए-नए रूपों को देख कर नया-नया बहुत कुछ चाहने वाला, देने वाला और लेने वाला भी। अमृताजी के मधुर सम्बन्ध साहिर जी के साथ लम्बे अरसे तक बने रहे। बाद के लगभग 40 वर्ष वे कलाकार, प्रशंसक तथा उनको बेपनाह चाहने वाले इमरोज के साथ बनी रहीं। इमरोज को लिखे गए उनके पत्र पढ़कर अमृताजी के हृदय की गहराइयों में छुपे अपार स्नेह और प्रेम को केवल अनुभव किया जा सकता है, उसे छूना या पाना तो स्वयं इमरोज के बस में भी नहीं रहा होगा। प्रेम को समंदर करूणा का दरिया और स्नेह का आकाश थीं अमृता जी। वास्तव में साहित्य की अमृत थीं वे। उनके साथ अपने ग्रीस प्रवास के अवसर पर एथेंस में कुछ समय बिताना मेरे लिए उस अमृत की कुछ बूँदें प्राप्त करने के समान ही है। ऐसे अमर भारत पंजाब की दोनों अमर अमृताओं को मेरा शत्-शत् नमन।

- 8, सप्तवर्णी सूर्या कॉलोनी, सर्वधर्म, भोपाल म.प्र.
मो. 9826215072

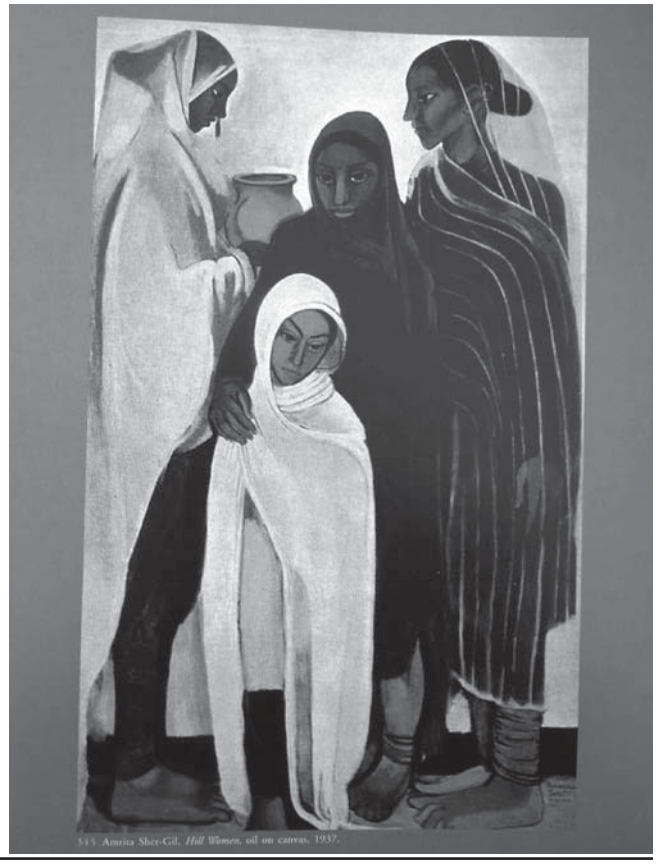

गीता और पर्यावरण विषय पर व्याख्यानमाला सम्पन्न

माहेश्वरी सत्संग मंडल त्रिलंगा और स्वामी प्रणवानंद सरस्वती भारतीय साहित्य न्यास के संयुक्त तत्वावधान में गीता और पर्यावरण विषय पर सम्पन्न समारोह में वरिष्ठ शिक्षाविद् साहित्यकार व चिंतक डॉ. प्रेम भारती ने अपने व्याख्यान में यह बात कही। आपने सम्यक विकास के लिए जीवन शैली और आचरण पर बल दिया है। विख्यात साहित्यकार

डॉ. देवेन्द्र दीपक ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि आज पर्यावरण विषय पर समग्रता से विचार करने की आवश्यकता है। पर्यावरण की रक्षा करना ईश्वरीय कार्य है। महर्षि अगस्त्य वैदिक संस्थानम् भोपाल के अध्यक्ष प्रभुदयाल मिश्र ने कहा कि गीता के सातवें अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण ने अष्टधा प्रकृति को बताया है।

रिपोर्ट - श्रीराम माहेश्वरी

भीम बैठका का रहस्य

भोपाल, दिनांक 29 दिसम्बर, 2019 भोपाल की अग्रणी संस्था सारांश रंग शिविर द्वारा दृश्यम् भीम बैठका के रहस्य का आयोजन पुरातत्व संग्रहालय के सभागार में पद्मश्री डॉ. विष्णु वाकणकर जी की जन्म शताब्दी के अवसर पर किया जिसकी अध्यक्षता डॉ. महावीर प्रसाद मोदी ने की। प्रमुख वक्तव्य देने वाले वक्ता डॉ. नारायण व्यास, श्री राजेन्द्र नागदेव, श्री बसंत निरगुणे और शशिकांत लिमये के साथ श्रीमती रेखा भटनागर थी। कार्यक्रम में विशेष वक्तव्य श्री राजकुमार गुता पत्रकार का था जो समीक्षक के रूप में उपस्थित थे। राजेन्द्र नागदेव जी ने बताया कि अपनी घुमक्कड़ प्रवृत्ति के कारण ही डॉ. वाकणकर ने भीम बैठका का जैसे अद्भुत शैल चित्रों की खोज की।

रिपोर्ट - शशिकान्त लिमये

स्मृति शेष

सुप्रसिद्ध ठुमरी गायिका विदुषी सविता देवी को श्रद्धांजलि

गान गायक का नहीं व्यापार उसकी विकलता है

पं. विजयशंकर मिश्र

जन्म- 7 जुलाई 1940
मृत्यु- 20 दिसम्बर 2019

पूरब अंग के ठुमरी गायन की सशक्त हस्ताक्षर, विश्वप्रसिद्ध गायिका विदुषी सविता देवी नहीं रहीं। वर्ष 2019 ने जाते-जाते एक और धक्का दिया और 20 दिसम्बर की सुबह लगभग सवा ग्यारह बजे विदुषी सविता देवी को हमसे छीन लिया। अभी ध्रुवपद के जाज्वल्यमान नक्षत्र प. रमाकांत गुंदेचा का मृत्यु गीत थमा भी नहीं था कि क्रूर काल ने एक बार फिर हाथ में कलम थमा दिया... एक और मृत्यु गीत लिखने के लिये... एक और मृत्यु गीत गाने के लिये। सविता देवी स्वयं तो सुर सागर में विलीन हो गईं... लेकिन, हमें सागर तट पर अकेला छोड़ गईं रोने-विलखने के लिए। मृत्यु का पर्व मनाने के लिये।

सविता देवी अंतरराष्ट्रीय ख्याति की गायिका थीं। स्वभाव से सहज सरल और आत्मीय भी। इसलिए देश-विदेश में उन पर काफी कुछ लिखा गया है... काफी कुछ छापा गया है। लेकिन, फिर भी उनकी कुछ बातें ऐसी हैं, जिन्हें लिखने और छापने का कार्य अभी भी शेष है। मुझे उनके साथ दर्जनों बार औपचारिक भेंटवार्तायें करने का सुअवसर मिला है, जबकि पचासों बार हमने अनौपचारिक भेंटवार्ताये की हैं, जो प्राय: अप्रकाशित ही रहीं।

सविता देवी का जिस समय (7 जुलाई 1940) जन्म हुआ, वह समय आजादी की लड़ाई का लगभग अंतिम दौर था। आंदोलन तो जोरों पर था ही, लेकिन लोगों की आँखों में सुनहरे सपने भी झिलमिलाने लगे थे कुछ ऐसे ही सपने सविता की माँ ठुमरी साम्राज्ञी सिद्धेश्वरी देवी की आँखों में भी झिलमिला रहे थे। एक संगीत व्यावसायी परिवार में जन्मी सिद्धेश्वरी देवी अपने जमाने की स्थापित गायिका थीं। आफताब-ए-मौसिकी उस्ताद फैयाज खाँ और विदुषी केसरबाई केरकर उन्हें ठुमरी की रानी कहकर पुकारते थे। केसरबाई केरकर मंच से कहती थीं कि जिस महफिल में सिद्धेश्वरी उपस्थित हों, उस महफिल में मैं ठुमरी गाने की हिम्मत नहीं कर सकती। लेकिन, इन सबके बावजूद सिद्धेश्वरी देवी की सामाजिक हैसियत बहुत अच्छी नहीं थी। सिद्धेश्वरी देवी को अपने जन्म से ही अभावों की भट्ठी में तपना पड़ा था, संघर्षों की पथरीली राहों पर नंगे पाँव चलना पड़ा था। अच्छा ही नहीं, बहुत अच्छा गाने के बावजूद अपनी प्रतिभा को बार-बार सिद्ध करना पड़ा था। ऐसे में जब 32 वर्ष की उम्र में उनकी गोद में नन्ही सविता ने आँखे खोलीं तो सिद्धेश्वरी देवी ने तय कर लिया कि बेटी को संगीत से दूर रखूँगी और पढ़ा लिखाकर बड़ा आदमी बनाऊँगी, ताकि उसे मेरी जैसी कठिनाइयाँ न झेलनी पड़े। कुछ बड़ी होने पर उन्होंने सविता को पढ़ने के लिए स्कूल भेजना भी शुरु कर दिया। लेकिन, सविता की नसों में तो रक्त की जगह सुर और लय, राग और ताल दौड़ रहे थे। उस अबोध बच्ची ने स्कूल में ही गाना सीखना शुरु कर दिया, ध्रुपद, खयाल और भजन भी सीखा। स्कूल के कार्यक्रमों में भाग भी लेने लगी।

बच्ची की प्रतिभा को देखकर अध्यापकों ने नृत्य सीखने के लिये भी प्रेरित करना शुरु कर दिया। इसके लिये ज्यादा कुछ करने की जरुरत भी नहीं थी। स्कूल में ही नृत्य अध्यापक थे, अत: नृत्य भी शुरु हो गया। एक दिन स्कूल के वार्षिकोत्सव में भाग लेकर जब सविता ने प्रथम पुरस्कार जीता, तो दर्शक दीर्घा में बैठी सिद्धेश्वरी देवी चौंक पड़ी। यह क्या हो रहा है ? मैं इसे जिस दुनिया से दूर रखना चाह रह हूँ नियति इसे उसी ओर लिये जा रही है। वे चिंतित हो उठी, फिर बेटी को सलाह दिया- 'यह नाचना-गाना छोड़ो और पढ़ाई पर ध्यान दो। संगीत अगर इतना ही पसंद है तो सितार सीखो और सविता सितार सीखने लगी। सविता के जीवन का विरोधाभास देखिए कि अंतरराष्ट्रीय स्तर की एक सुविख्यात गायिका अपनी बेटी को गाना सीखने से मना करके सितार सीखने के लिए कहती है और बेटी सहज भाव से मान भी जाती है। यह एक विडम्बना ही तो थी।

सविता ने सितार विषय के साथ स्नातक तक की पढ़ाई पूरी करने के बाद काशी हिंदू विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया परास्तानक के लिये। तब तक सितार काफी अच्छा बजाने लगी थी। नृत्य तो छूट गया था, किंतु गायन छूटते-छूटते भी नहीं छूटा। घर में माँ को जब गाते हुए, रियाज करते हुए सुनती तो खुद भी गुनगुना उठती। लेकिन, ध्यान सितार पर ही था। सितार की उच्चस्तरीय शिक्षा के लिए इन्हें भारत सरकार से छात्रवृति भी मिली, युवा महोत्सव में स्वर्ण पदक और कक्षा में सर्वोच्च स्थान हेतु भी स्वर्ण पदक। सविता का घर बनारस के कबीर चौरा मुहल्ले में था, इसी मुहल्ले में किशन महाराज भी रहते थे। किशन महाराज का सविता के घर आना-जाना था। वे सिद्धेश्वरी देवी के साथ संगति किया करते थे। यद्यपि किशन महाराज उम्र में सविता से 17 वर्ष बड़े थे,

विवाहित थे और दो बच्चों के पिता भी। फिर भी जब उन्होंने सविता को देखा तो उनका शायराना मन मचल उठा। किशन महाराज अत्यंत आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी थे। उस समय उनकी कला पूरे निखार पर थी।

हिंदुस्तान के सभी बड़े संगीतकारो के साथ वे बजा रहे थे, फिर भी सविता को रियाज़ कराने के लिए समय निकाल लेते थे। उनके माध्यम से ही सविता को पं. रविशंकर से सीखने का भी सुयोग मिला और कुछ एक शुरुआती कार्यक्रम भी। फिर तो सविता एक सितार वादिका के रुप में लोकप्रिय होती चली गई उनके साथ तबले पर पं. किशन महाराज ही होते थे। धीरे-धीरे कार्यक्रमों का सिलसिला भी बढ़ता चला गया और दोनों के मन में एक दूसरे के प्रति आकर्षण का भाव भी और फिर सविता देवी पं. किशन महाराज की दूसरी पत्नी बनकर सविता महाराज हो गईं। भाग्य किस तरह सविता देवी के साथ छल कर रहा था, उसे यहाँ सहज ही महसूस किया जा सकता है। एक पढ़ी-लिखी, विवेकशील, सुंदर युवा और प्रतिभाशाली कलाकार एक ऐसे पुरुष का स्वेच्छा से वरण करती है, जो पहले से शादी-शुदा भी है और दो बच्चों का पिता भी। सविता, सविता महाराज बनकर खुश थीं, किशन महाराज भी खुश थे, लेकिन नियति नहीं खुश थी। जल्द ही सविता दो सुंदर पुत्रों की माँ बन गई, अपने घर-परिवार में व्यस्त हो गई लेकिन समय के शतरंज पर नियति अपनी चाल चलती रही और पति-पत्नी में धीरे-धीरे में अनबन की खबरें आने लगीं और फिर एक दिन सविता अपने बच्चों को साथ लेकर पति से अलग हो गई। बिना किसी कटुता, बिना किसी द्वेष के।

अब सविता देवी की जिंदगी में एक नया मोड़ आ चुका था। दो बच्चों की युवा माँ जिंदगी के सफर पर अकेली चलने को तैयार थी। लेकिन, अब उसे अपना एक-एक कदम फूंक-फूंक कर, सोच-विचार कर रखना था। क्योंकि उसका एक भी गलत कदम, एक भी गलत निर्णय उसके बच्चों की जिंदगी बर्बाद कर सकता था। इन सारी समस्याओं से लड़ते-लड़ते उनका सितार का अभ्यास भी छूट गया था और वे मंच से भी दूर हो गई थीं। अब उन्हें जीवन को एक नए सिरे से शुरु करना था और इसके लिए उन्होंने एक बार फिर से गाना को चुना। वे दिल्ली आ गई अपनी माँ के पास। यहाँ उन्हें पं. दिलीप चंद्र वेदी और पं. मणि प्रसाद जैसे धुरंधर शास्त्रीय गायकों का सान्निध्य और मार्गदर्शन मिला, लेकिन उनका मन तो ठुमरी में रमता था, दादरा में बसता था, कजरी के संग बरसता था और फिर माँ-बेटी ने सिद्धेश्वरी देवी और सविता देवी ने मिलकर फैसला किया कि अपनी ही लीक पर चला जाये। राग, ताल, स्वर, लय सबकी जानकारी पहले से ही थी। बचपन से ही माँ को सुनते-सुनते और प्राय: उनके पीछे बैठकर तानपुरा बजाते हुए काफी कुछ याद भी हो ही गया था। अत: सविता देवी इसी रास्ते पर आगे बढ़ चलीं और एक बार जब उन्होंने चलना शुरु किया तो फिर आजीवन चलती रही... कभी रुकी नहीं... कभी झुकी नहीं।

वे दिन सविता देवी के लिए काफी कठिनाइयों भरे थे। एक तरह से विद्रोह करके किये गए प्रेम विवाह का टूटना और दो नन्हें बच्चों के समुचित लालन-पालन की जिम्मेदारी आसान काम नहीं था। कैसे होगा यह सब कुछ? कई बार खुली आँखों से छत को निहारते हुए पूरी-पूरी रात बीत जाती थी, तो कई बार रात में घबड़ाकर नींद खुल जाती थी और फिर पूरी रात... 'रतिया कटत मोरी तारे गिन-गिन।' यद्यपि गायन के क्षेत्र में सविता की लोकप्रियता बढ़ रही थी, तथापि सविता यह समझ रही थीं कि महीने में मिलने वाले इक्के-दुक्के कार्यक्रमों के द्वारा वे अपनी भारी जिम्मेदारियों का पूरी तरह निर्वहन नहीं कर पायेंगी... अपने सपनों को पूरा नहीं कर पायेंगी... अपने बच्चों की शिक्षा-दीक्षा की पूरी व्यवस्था नहीं कर पायेंगी। इन सबके लिए उन्हें आय का एक निश्चित और नियमित स्त्रोत चाहिए था और वह कोई नौकरी ही हो सकती थी। तभी दिल्ली के दौलत राम महिला महाविद्यालय में एक सितार अध्यापिका के लिए विज्ञापन निकला, सविता ने आवेदन किया और प्रवक्ता पद पर उनकी नियुक्ति हो गई विडम्बना देखिये, सविता देवी देश-विदेश के मंचों पर गा रही थीं। कुछ लोगों को सिखा भी रही थीं, लेकिन चूँकि उनके पास गाने की डिग्री नहीं थी इसलिये उनकी उस सर्वविदित और सर्वज्ञात योग्यता को नहीं माना गया और वे सितार अध्यापिका के रुप में ही कार्य करती रहीं। यह अलग बात है कि इस महाविद्यालय में उनके साथ काम करने वाली अध्यापिकाओं सहित कई दूसरे लोग भी उनके पास सीखने के लिए आते रहे। उनके शिष्याओं की बड़ी सूची है और उनमें से कई अच्छा गा भी रहीं हैं। इन्हीं दिनों एक भयानक सड़क दुर्घटना में उन्होंने अपने एक पुत्र को भी खोया।

अपना लगभग सारा जीवन झंझाबातों में गुजारने वाली सविता देवी का जीवन कई अध्यायों में बँटा हुआ था। युवावस्था में उनका पूरा ध्यान सितार पर था। बाद में कॉलेज की नौकरी उनका बहुत समय ले लेता था। घर-परिवार की जिम्मेदारी थी ही। अपने अंतिम समय में उनकी माँ सिद्धेश्वरी देवी भी लकवाग्रस्त होकर बिस्तर पर पड़ गई थीं। उनकी देखभाल भी वे ही करती थी। लेकिन, यह सब करते हुए भी उन्होंने ठुमरी गायन के क्षेत्र में न केवल अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया, बल्कि अपना वर्चस्व भी स्थापित किया वे चाहे संयोग श्रृंगार की ठुमरी गातीं, चाहे वियोग श्रृंगार की- उसका स्थायी भाव भक्ति और करुणा ही होता था। उनके कहन और पुकार का अंदाज बिल्कुल अलग और अनूठा था। वे अपनी माँ को माँ और गुरु, दोनों ही रुपों में बहुत मानती थीं। शायद यही कारण था कि वे अपने अन्य गुरुओं के प्रति श्रद्धा का वह भाव नहीं रख पाती थीं जो अपनी माँ के प्रति रखती थीं। एक बार मेरे पूछने पर उन्होंने कह भी दिया था कि- 'मैं अब न तो सितार बजा रहीं हूँ और न तो खयाल गा रहीं हूँ। मैं ठुमरी-दादरा गा रहीं हूँ और इसे मैं ने अपनी माँ से ही सीखा है। इसलिए उनको ही श्रेय देती हूँ।'

वे अपने कार्यक्रमों का शुभारम्भ गुरु वंदना से ही करती थीं। उनकी इस रीत को उनकी शिष्याओं ने भी इसे अपनाया। 'माँ' के प्रति उनके मन में श्रद्धा का अपार भाव भरा हुआ था, जो किसी पहाड़ी झरने सा कहीं भी फूट पड़ता था। दिल्ली का एक कार्यक्रम याद आ रहा है। इंडिया हैबीटेट सेंटर में वे गा रही थीं। सब कुछ सहज और सामान्य था कि अचानक उनके मुंह से 'हे माँ' शब्द निकल गया। एक बार उस 'हे माँ' के बाद तो अलग-अलग जगह से, अलग-अलग अंदाज में, अलग-अलग सुरों में उन्होंने जब माँ को पुकारना शुरु किया तो न केवल उनकी आँखों से आँसू निकल पड़े, बल्कि श्रोताओं की आँखें भी भींग गई। ठुमरी की अठखेलियाँ करती रुमानी लहरें माँ की भक्ति सागर में आकर समाहित हो गई थीं। सभी भाव विह्वल हो उठे। उनके रुकने के बाद भी जैसे कोई ताली बजाने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था और जब तालियाँ बजनी शुरु हुई तो फिर रुकने का नाम नहीं ले रही थी।

मेरा और उनका एक प्रकार का सांगीतिक सम्बन्ध था। मेरे पितामह

संगीत नायक पं. दरगाही मिश्रजी के प्रमुख शिष्य पं. सियाजी मिश्र से ही सिद्धेश्वरी देवी ने गायन सीखा था और उन्होंने ही उनका नामकरण सिद्धेश्वरी किया था। इस दृष्टि से मुझे गुरु घराने का मानकर वे मेरे प्रति स्नेह का एक अतिरिक्त भाव रखती थीं। आकाशवाणी के लिए मैंने कई बार उनका साक्षात्कार लिया, यहाँ तक कि मृत्यु के कुछ महीने पहले भी आकाशवाणी की उर्दू सर्विस के लिए मैंने उनसे बातचीत की थी। एक बार तो यहाँ तक हुआ कि आकाशवाणी के अधिकारियों ने मेरे नाम पर असहमति जताते हुए जब उनसे कहा कि- 'पंडितजी, इस महीने में एक रिकॉर्डिंग कर चुके हैं और हम एक महीने में किसी की दो रिकॉर्डे नहीं कर सकते हैं तो सविता देवी का सीधा और सपाट जवाब था- 'इतनी जल्दी भी क्या है, अगले महीने कर लेना मेरी रिकॉर्डिंग और वह रिकॉर्डिंग अगले महीने मेरे साथ ही हुई।

इसी तरह की एक घटना इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कलाकेंद्र में भी घटी। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कलाकेंद्र सविता देवी पर एक अलबम बनाना चाहता था। उनके यहाँ का नियम है कि अलबम के साथ लगभग 3,000 शब्दों की एक लघु पुस्तिका भी होती है। जिसमें कलाकार, उनकी परम्परा और उनकी कला के विषय में बताया जाता है। उस समय इस कार्य को देख रहीं सुप्रसिद्ध गायिका विदुषी मीता पंडित ने जब इस विषय में सविता देवी से बात की तो अपने विषय में लिखने के लिये मेरा नाम सुझाते हुए वे बोलीं- 'वे बनारस के ही हैं, खुद अच्छे कलाकार हैं और वहाँ की संगीत परम्परा के विषय में बहुत अच्छी तरह से जानते हैं, इसलिए उनसे कहो लिखने के लिये। लेकिन, मीता का फोन जब मेरे पास आया तो मैंने मना करते हुए कहा- 'चूँकि आप लोगों का काम सिर्फ अंग्रेजी में होता है और मैं सिर्फहिन्दी में लिखता हूँ। इसलिए यह सम्भव नहीं है। मीता ने सविता देवी को फोन करके जब किसी अन्य का नाम बताने को कहा, तो वे बोलीं कि- 'मेरा तो वे ही लिखेंगे। अब तुम लोग देख लो कि कैसे क्या करोगी ?' अब तक सविता देवी अंतरराष्ट्रीय ख्याति की गायिका बन चुकी थीं। उनकी बात टालने की हिम्मत अब लोगों में नहीं थी। अंतत: यह तय हुआ कि मैं हिन्दी में लिख दूँगा और कोई उसका अंग्रेजी में अनुवाद कर देगा। मैंने लिख दिया लेकिन, जब मेरा लेख वहाँ पहुँचा और उसका अनुवाद करने के पूर्व उसे पढ़ा गया तो सबने एक स्वर में कहा कि- 'जितना स्तरीय यह लेखन कार्य है, उतना स्तरीय अनुवाद संभव नहीं है। इसलिये इसे हिंदी में प्रकाशित करना ही उचित होगा' और वह पुस्तिका हिंदी में ही प्रकाशित हुई।

सविता देवी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कलानेत्री थीं। अगर नियति उन्हें समय देती तो उनकी प्रतिभा की किरणें कई अन्य दिशाओं को भी रोशन करतीं। वे निर्विवाद रुप से बहुत अच्छी गायिका थीं, साथ ही बहुत अच्छी लेखिका भी थीं उन्होंने कई प्राचीन ठुमरी और दादरा आदि के स्थायी को स्थायी रखते हुए अपने मनोनोरुप अंतरों का लेखन किया है। कई नई रचनायें भी लिखी हैं। साथ ही अपनी दिवंगत माँ ठुमरी साम्राज्ञी सिद्धेश्वरी देवी पर अंग्रेजी में एक अत्यन्त मर्मस्पर्शी किताब भी- 'माँ सिद्धेश्वरी' नाम से लिखी है। इसे मौलि प्रकाशन ने प्रकाशित किया है।

सविता देवी को देश-विदेश से कई मान-सम्मान मिले थे। उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी सम्मान और फिर अकादमी की रत्न सदस्यता भी उन्हें मिली थी। बैजू बावरा संगीत समिति ने उन्हें स्वरविभूषण सम्मान से सम्मानित किया था तो सुर सिंगार संसद ने रसेश्वर सम्मान से। मध्य प्रदेश सरकार का प्रतिष्ठित तानसेन सम्मान भी उन्हें मिला था। लेकिन क्या सविता देवी सिर्फ इतने के ही अधिकारी थीं? अगर उनकी शिष्या सदृश युवा कलाकारों का केंद्रीय संगीत नाटक अकादेमी सम्मान और पद्मश्री का अलंकरण मिल सकता है, तो सविता देवी जैसी प्रतिष्ठित, अनुभवी और 80 वर्षीय बुजूर्ग गायिका को क्यों नहीं? ये घटनायें जहाँ एक ओर यह संकेत करती हैं कि सविता देवी को सहजता और सरलता से कुछ भी नहीं मिला, वहीं दूसरी ओर पुरस्कारों की चयन प्रक्रिया पर गंभीर प्रश्न चिन्ह भी लगाती है। सविता देवी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर उत्कर्ष नामक एक वृत चित्र भी बना है।

सविता देवी ने एक अच्छे और उदार गुरु के रुप में भी अपनी पुख्ता पहचान स्थापित की थी। उनकी दर्जनों शिष्याएँ संगीत के क्षेत्र में सक्रिय हैं। वे उनके साथ प्राय: दोस्ताना अंदाज में पेश आती थी। कठोर गुरु नहीं, स्नेहिल बड़ी बहन जैसा व्यवहार करती थीं। वे अपने साथ मंच पर भी और दूरदर्शन आदि के कार्यक्रमों में भी कई-कई शिष्याओं को लेकर बैठती थी भले ही उन शिष्याओं की भूमिका नगण्य होती थी। एक बार मेरे पूछने पर बोली- 'इससे उन्हें पहचान और स्वीकृति मिलती है। लेकिन, जब मैंने एक बार पूछ लिया कि 'जब आप सीखती थीं तब, और आज जब आप सिखा रही हैं तो तब के गुरु शिष्य परंपरा में आप क्या अंतर अनुभव करती हैं? तब जैसे उनका दर्द छलक आया। वे अपनापे के स्वर में बोली- मत पूछ भैया, सब कुछ बदल गएल हौ। आकाश-पाताल का अंतर आ गएल हौ। उन्होंने आगे बताया कि जब मैं सीखती थीं तब गुरुओं का कुछ और ही मान-सम्मान हुआ करता था। हम लोगों को डाँट भी सुननी पड़ती थी, कभी-कभी पिटाई भी हो जाती थी। लेकिन, आज की शिष्यायें जो थोड़ी बहुत धनराशि देती हैं, वे समझती हैं कि उससे उन्होंने गुरु और उसकी कला, दोनों को ही खरीद लिया है। मैं अगर एक दिन इन्हें जोर से डाँट दूँ तो पता चलेगा कि अगले सप्ताह मैं इनका इन्तजार कर रहीं हूँ और ये किसी दूसरे गुरु के पास बैठी सीख रहीं हैं।'

सविता देवी ने अपनी माँ सिद्धेश्वरी देवी के नाम पर 'सिद्धेश्वरी देवी अकादमी ऑफइंडियन म्यूजिक' नामक एक संस्था बनाकर संगीत का काफी प्रचार-प्रसार किया था। इस संस्था के माध्यम से वे विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों और उच्चस्तरीय सेमिनार आदि का आयोजन करती थीं। कई उच्चस्तरीय कलाकारों को स्वर सिद्धि सम्मान से भी सम्मानित करती थी। उनके सुयोग्य और मातृभक्त पुत्र अजेय महाराज से यह आशा की जाती है कि वे इसका प्रबंधन संभालेंगे और इसकी गतिविधियों को जारी रखेंगे। सविता देवी की लम्बी बीमारी के दौरान अजेय और उनकी पत्नी अंजना ने जिस भक्तिभाव से उनकी देखभाल और सेवा की वह सविता देवी द्वारा दिए गए संस्कारों का परिचायक है। सविता देवी ने भी इसी तरह, इतनी ही भक्ति भाव से अपनी माँ की सेवा की थी।

पिछले एक डेढ़ वर्ष से सविता देवी लगातार बीमार चल रही थीं। ठीक होतीं... फिर बीमार हो जातीं, फिर ठीक होतीं और फिर बीमार... वस्तुत: वे थक गई थीं। आकाशवाणी के अपने अंतिम कार्यक्रम के लिये भी सारी तैयारी हो जाने के बाद भी उन्होंने दो बार मना कर दिया, यह कहकर कि इतनी देर मैं बैठ नहीं पाऊँगी। अंतत: मेरे बहुत समझाने पर वे तीसरी बार आईं। उनसे बातचीत करने का सुयोग मुझे ही मिला था। आम्लान मजूमदार नीलम पांडेय और भोलानाथ मिश्र के सहयोग से उनका वह कार्यक्रम बहुत अच्छा हो गया था। मैं जब भी उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करने के उददेश्य से उनसे बड़ी उम्र के

संगीतकारों का उल्लेख करते हुए उनसे कहता कि- आप हिम्मत से काम लीजिए। देखिये ये आपसे बड़े हैं। फिर भी सक्रिय हैं। तो वे मुझे प्यार से झिड़क देती थीं-'अरे भैया! उनके रहन-सहन और जीवन शैली में तथा मेरे रहन-सहन और जीवन शैली में बहुत अंतर रहा है। मेरे जितना संघर्ष इन लोगों ने नहीं किया है।

फिर मुझसे कहती- 'अपनी वह कविता एक बार फिर से सुना दो तो और तब मैं उन्हें फिर से याद दिलाता कि वह मेरी नहीं- स्व. हरिवंश राय बच्चनजी की कविता है- **गान गायन का नहीं व्यापार उसकी विकलता है। राग वीणा की नहीं झनकार उसकी विकलता है। भावनाओं का मधुर आधार साँसो के विनिर्मित गीत कवि उर का नहीं उपहार उसकी विकलता है।'**

मुझे देर रात तक जागकर काम करने की आदत है। ऐसे में कई बार रात को दो-ढाई बजे मुझे 'ऑन लाईन' देखकर व्हाट्सएप पर उनका मैसेज आ जाता था- 'रात बहुत हो गई है। अब सो जाओ। मैं भी मजाकिया लहजे में जवाब देता- 'आप भी तो जाग रहीं है और तब उनका फोन आ जाता। वे कहती- 'भैया मेरी बात अलग है। मैं बीमार हूँ। रात-रात भर नींद नहीं आती है। लेकिन, कई बार दिन में भी सो जाती हूँ। शाम को भी सो जाती हूँ। जबकि, तुम्हारे पास दिन में सोने का समय नहीं होता है। इसलिए, अब सो जाओ।' और मैं उनकी आज्ञा का पालन करते हुए मोबाईल ऑफ करके, कागज-कलम लेकर बैठ जाता था लिखने के लिये।

79 वर्ष की होते-होते सविता देवी थक गई थीं- शरीर से ही नहीं, मन से भी। और, शायद इसी थकावट से उबरने के लिए 20 दिसम्बर 2019 को दिन में सवा ग्यारह बजे वे चिर निद्रा में लीन हो गईं। उस समय मैं जयपुर में था, नहीं तो जरुर एक बार उनके कानों में गुनगुना देता- गान गायक का नहीं व्यापार उसकी विकलता है। अगले दिन 21 दिसम्बर को संगीत के स्वरों के साथ उनका दाह संस्कार किया गया। दाह संस्कार के समय उनकी शिष्याओं ने समवेत स्वरों में गुरु वंदना और उनके प्रिय भजन- 'शिव-शिव के मन शरण हो, तब प्राण तन से निकले', का भावपूर्ण गायन करके अपनी स्वरांजलियों के साथ उन्हें अंतिम विदाई दी।

ऐसा लगता है कि विदुषी सविता देवी के निधन के साथ ही ठुमरी साम्राज्ञी विदुषी सिद्धेश्वरी देवी की संगीत परम्परा का भी दुखद पटाक्षेप हो गया है। उनके पुत्र अजेय महाराज उच्च पदाधिकारी है। कुछ शिष्याएँ जरुर ठीक ठाक गा रहीं हैं, लेकिन एक निष्ठ भावना और पूर्ण समर्पण के अभाव में वे भी इस परम्परा को अधिक दूर तक ले जाने में असमर्थ ही दिख रहीं हैं। फिर भी सविता देवी जीवित रहेंगी अपनी गायकी में। उनके जैसे कलाकार मरते भी नहीं हैं, वे अमर होते हैं। बहुत पहले स्वयं अपने लिए लिखि गई एक पंक्ति आज भारी मन से उन्हें समर्पित कर रहा हूँ-

यूं ही नहीं मरने पे कोई याद किया करता है,
ता उम्र मरता रहा, मरकर जीने के लिए।

- शंकरा' 705 - डी/21 सी, वार्ड न. 3, महरौली, नई दिल्ली -110030
दूरभाष-09810517945

कला समय
आगामी
अंक
150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA
फरवरी-मार्च 2020
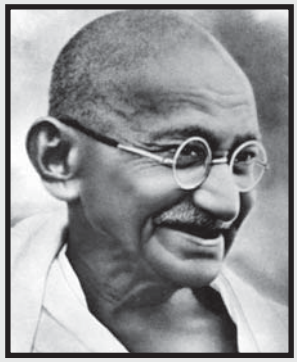
महात्मा गांधी - स्मरण विशेषांक

श्रद्धांजलि

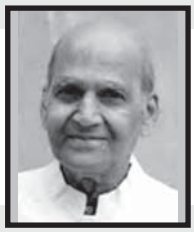

स्वयंप्रकाश
वरिष्ठ हिन्दी कथाकार
जन्म : 20 जनवरी, 1947 निधन : 07 दिसम्बर, 2019

सविता देवी
बनारस घराने की मशहूर शास्त्रीय गायिका
जन्म : 07 जुलाई, 1940 निधन : 20 दिसम्बर, 2019

प्रख्यात चित्रकार पद्मभूषण
अबकर पद्मसी
जन्म : 12 अप्रैल, 1928 निधन : 06 जनवरी, 2020

'कला समय' परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि...

स्मृति शेष: डॉ. धर्मवीर भारती

डॉ. विभा सिंह

डॉ. धर्मवीर भारती आधुनिक हिन्दी साहित्य के ऐसे रचनाकार हैं जिन्होंने अपनी 'अभिव्यक्ति का माध्यम' साहित्य की लगभग सभी विधाओं को बनाया। मुख्य रूप से उन्होंने कहानी, उपन्यास, कविता, निबंध, यात्रा-साहित्य, रिपोर्ताज, आदि लिखा है। इसके साथ ही वे एक पत्रकार और अनुवादक के रूप में भी जाने जाते हैं। चिन्तन और संवेदनशीलता के साथ कल्पना-प्रभावी समावेश भारती साहित्य का महत्वपूर्ण पक्ष है। भारती के व्यक्तित्व एवं जीवन से सम्बन्धित, विभिन्न बातों, घटनाओं का जिक्र उनके अनेक मित्रों-आलोचकों के द्वारा उनके बारे में लिखे संस्मरणों, लेखों, पत्रों में उपलब्ध है, परन्तु भारती के जीवन एवं परिवार से सम्बन्धित जानकारी स्वयं उनके द्वारा लिखित एक पत्र के रूप में उपलब्ध है, जिसे भारती ने किसी शोधकर्ता के अनुरोध पर लिखा था।

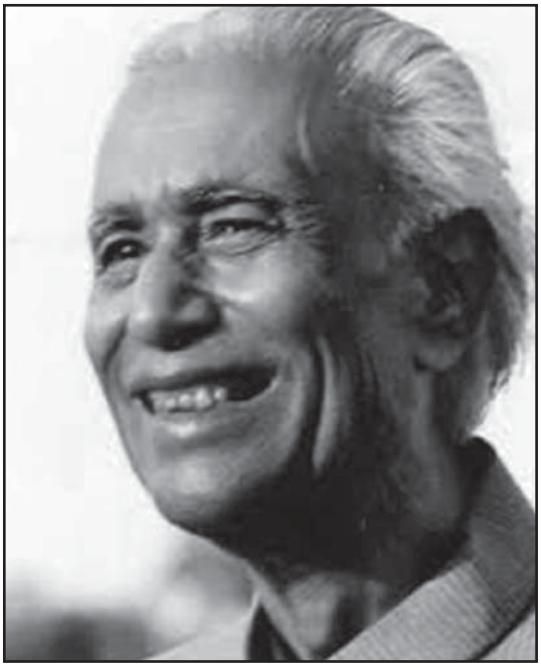

भारती का जन्म इलाहाबाद में, 25 दिसम्बर 1926को अतरसुइया मुहल्ले के मकान में हुआ। इनकी माँ का नाम श्रीमती चंदा देवी और पिता का नाम श्री चिरंजीव लाल वर्मा था। भारती का वंश मूलत: शाहजहाँपुर जिले के खुदांगज कस्बे का निवासी था। उनके बाबा एवज राय एक धनी दबंग जमींदार थे। भारती के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ा उनके पिता का। भारती के पिता चिरंजीव लाल वर्मा अपने परिवार के सामन्ती जमींदारी परम्परा के विरोधी थे। भारती लिखते हैं- मैंने होश संभाला तो अतरसुइया की गली और माँ-बाप के आर्य-समाजी वातावरण में। माँ कट्टर आर्य समाजी थी... पिता समझदार आर्य समाजी थे। वे मुझे हर तरह की किताबें पढ़ने को देते, जिनसे माँ परहेज करती थीं। एक बार उनके पिता ने कहा- 'अब तुम परियों की कहानियाँ' और 'बाल सखा छोड़'। उन्होंने 'चन्द्रकान्ता सन्तति', 'भूतनाथ', 'रक्त मण्डल', 'चाँद' का फाँसी अंक, 'भारत में अंग्रेज राज', 'महात्मा गाँधी की आत्मकथा', 'चन्द्रशेखर आजाद और भगत सिंह की जीवनियाँ,' पढ़ने को दी। भारती के साहित्य, उनकी पत्रकारिता पर ये प्रभाव देखे जा सकते हैं, जिसकी नींव बचपन में ही उनके पिता के द्वारा डाली गई थी। भारती अपने पिता को याद करते हुए कहते हैं- 'पिताजी विद्रोही वृत्ति के थे और सुधारवादी भी। उनकी दृष्टि व्यापक थी। उनके व्यक्तित्व से मैं अभिभूत था। उनके होते हुए हमारे घर में साधु-सत्पुरुषों, विद्वज्जनों का निरन्तर ताँता लगा रहता था। आत्मा-परमात्मा, सृजन-विनाश आदि गहन विषयों पर बहसें हुआ करती थीं। ये सभी संस्कार अनायास ही विरासत में मुझे मिले।'

भारती के बचपन के दो वर्ष मऊनाथ भंजन में बीते थे, जहाँ उनके पिता नोटिफाईड एरिया के दफ्तर में ओवरसियर हो गए थे। अपने पिता के सम्बन्ध में एक और घटना का जिक्र करते हुए भारती कहते हैं कि उन्हीं दिनों गाँधी जी ने इक्कीस दिन का उपवास किया था। वैसे तो उनके पिता चरखे और खद्दर के बजाय भगत सिंह और आजाद के प्रशसंक थे, परन्तु राष्ट्रीय संस्कार एवं गाँधी जी के प्रति आदर होने के कारण उन्होंने भी इक्कीस दिन तक केवल एक वक्त का ही खाना खाया और गाँधी जी की पुकार पर सरकारी नौकरी से इस्तीफा देकर इलाहाबाद लौट आए। यहीं से भारती के गरीबी के दुर्दिन शुरू हुए। पिता ठेकेदारों वगैरह के लिए नक्शे-वक्शे का काम करते रहते थे, पर उससे खर्च पूरा नहीं पड़ता था। पिता ने माँ के बचे-खुचे गहने वगैरह बेचकर कुछ कर्ज लेकर दो घर बनवाए कि ये कुछ काम आएँगे। इसी बीच उनकी माँ दो साल तक सख्त बीमार पड़ी। कर्ज और माँ की बीमारी ने उन्हें तोड़ दिया और वे स्वयं बीमार पड़ गए। नवम्बर 1939 में उनकी मृत्यु हो गई। भारती की उम्र उस समय तेरह वर्ष की थी और वे आठवीं या नौवें दर्जे में पढ़ रहे थे। पिता का देहान्त भारती के जीवन की पहली महत्वपूर्ण घटना थी। इसके बाद मध्यवर्गीय भारती का परिवार निम्न मध्यवर्गीय स्तर पर आ गया।

भारती के जीवन की परिस्थितियों ने उन पर विशेष प्रभाव डाला। बचपन से लेकर उनके पिता की मृत्यु तक की अवस्था को यदि देखें तो उनका परिवार उच्च मध्यवर्ग से निम्न मध्यवर्ग के आर्थिक स्तर तक पहुँच चुका था। विभिन्न कठिनाइयों से भरा, संघर्षपूर्ण जीवन आगे पड़ा था; जिसे भारती ने चुनौती के रूप में स्वीकार किया। इसे हम भारती पर उनके पिता का प्रभाव, शिक्षा और संस्कार कह सकते हैं, जिसे भारती अपना 'नायक' कहते हैं। भारती के पिता ने आरंभ से ही उन्हें हर प्रकार की पुस्तकें लाकर पढ़ने को दिया जिससे 'अध्ययन' की आदत और लगन उनमें पनपी। भारती के पिता ने गाँधी जी के आह्वान पर सरकारी नौकरी से इस्तीफा देकर उनमें राष्ट्रीयता का बीज बोया।

उन्होंने अपने नाम के पीछे से 'वर्मा' हटाकर 'भारतीय' लगा लिया था जो आगे चलकर भारती' हो गया। इसे हम उन पर आर्य समाज के प्रभाव और पिता की शिक्षा के रूप में भी देख सकते हैं।

पद्मा सचदेव ने अपने लेख 'जीवे मेरा भाई' में भारती के पिता के सम्बन्ध में अनेक छोटी-छोटी घटनाओं का जिक्र किया है। जिसमें एक घटना उनके यज्ञोपवीत के समय की है, जब सारे रिश्तेदारों के होते हुए भी भारती के पिता ने पहली भिक्षा अपने मुस्लिम मित्र से डलवाई। जबकि उनकी माता की इच्छा थी कि पहली भीख उनका देवर डाले। आर्य समाजी पंडित भी विरोध कर रहे थे परन्तु भारती के पिता का कहना था कि 'मेरे भाइयों ने बेशक मेरे साथ दगा की हो, पर मित्रों ने कभी नहीं की, इसलिए पहली भीख यही डालेंगे।'

भारती के व्यक्तित्व निर्माण में साहित्यिक संस्था 'परिमल' और उनकी साहित्यिक मित्र-मंडली का बहुत बड़ा योगदान रहा। इलाहाबाद के लगभग सभी नए-पुराने लेखक-कवि उसमें भाग लेते थे। भारती के निर्भीक व्यक्तित्व निर्माण में उनके पिता के साथ उनके गुरु डॉ. धीरेन्द्र वर्मा का प्रभाव रहा। जिनसे बहुत सहारा, निर्देशन और प्रोत्साहन मिला उनमें वे माखनलाल चतुर्वेदी और ताराशंकर बन्धोपाध्याय का नाम लेते हैं। कशोर्य में वे ऑस्कर वाइल्ड से प्रभावित होते हैं परन्तु पाँच-छह साल में वह 'इन्फेचुएशन' खत्म हो जाता है। वे शरतचन्द्र से भी प्रभावित रहे। भारती लिखते हैं- 'एक और लेखक जिससे हम सभी अपने कशोर्य में बहुत प्रभावित रहे हैं, वह थे शरतचन्द्र।' भारती ने ऑस्कर वाइल्ड की कहानियों का अनुवाद भी किया है। साहित्यिक दृष्टि से वे अपना झुकाव जयशंकर प्रसाद और टाल्सटाय के प्रति मानते हैं। भारती लिखते हैं कि 'उपनिषदों से लेकर मार्क्सवाद तक की जो यात्रा थी, उसमें जो सन्देह उठते थे, बहुधा इन लेखकों से उनका समाधान हुआ करता था।' भारती का मानना है कि जीवन के मूल्यों को निर्धारित करने के लिए धर्म, समाज और जो सामाजिक नियम है, उनसे भी अधिक साहित्य एक चेतना देता है, मनुष्य जीवन को अनेकानेक रूपों में, उसके विरोधाभासों, उसके संकट, उसके दु:ख-सुख में, गहराई से समझने की दृष्टि; जो साहित्य देता है वह कहीं से नहीं मिलती।

जहाँ तक भारती के व्यक्तित्व के बाह्य-पक्ष अर्थात् उनका शारीरिक डील-डौल, वेशभूषा आदि का प्रश्न है उसके बारे में संकेत करते हुए अजीत कुमार ने लिखा है- 'भारती जी में गजब की मिठास थी। खुशदिली, गर्मजोशी, दुबली-लम्बी साँवली काया, हँसी में फव्वारे, इत्मीनान, गपशप, मित्र वत्सलता- याद नहीं आता कि उन दिनों भारती जी में ऐसी क्या चीज थी जो मोहित नहीं करती थी... पहली मुलाकात में ही दूसरों को अपना बना लेने की कला में प्रवीण थे।' भारती को याद करते राजीव सक्सेना लिखते हैं- 'मामा जी बहुत लम्बे थे, रंग साँवला था। उनकी हँसी हम सबको अच्छी तरह से याद है। बहुत जोर से ठहाका मारकर हँसते थे।'

भारती को दो चीजों का बेहद शौक रहा- एक किताबों का, दूसरा घूमने का। वे लिखते हैं कि- 'दो चीजों की बेहद प्यास है। एक तो नई-नई किताबों की और दूसरे अज्ञात दिशाओं को जाती हुई लम्बी, निर्जन छायादार सड़कों की। सुविधा मिले तो जिन्दगी-भर धरती की परिक्रमा देता जाऊँ।' संभवत: यही यायावरी, अज्ञात दिशाओं को जाती हुई लम्बी, निर्जन छायादार सड़कों के प्रति प्यास थी कि उन्होंने साहित्य के अध्ययन और सृजन की राहों के अन्वेषी के रूप में 'ठेले पर हिमालय' और 'कुर्मांचल में कुछ दिन' जैसे लेखों में हिमालय की पगडण्डियों की खोज प्रस्तुत की। जहाँ तक धरती की परिक्रमा देने की बात है, तो उसके बारे में भारती स्वयं लिखते हैं कि 'हूँ धुनी, धुन में आने की बात है। हौसले तो पहाड़ों को उलट देने के हैं।' अत: धुन के धनी भारती ने भारत के कोने-कोने में ही नहीं अपितु विदेशों की भी अनेक यात्राएँ कीं।

पढ़ाई और यात्रा के समान ही भारती को फूलों से बेहद लगाव रहा। लगाव ही नहीं फूल उनकी काव्यानुभूति और जीवनानुभूति के मुख्य स्रोत भी हैं। पुष्पा भारती उनके इस प्रेम के सम्बन्ध में लिखती हैं। 'भारती जी को पेड़ों से बहुत लगाव था, उनकी मृत्यु के बाद हमारे घर के कदम्ब के पेड़ों ने फूल देना बन्द कर दिया है।'

भारती को अपने शहर इलाहाबाद से भी बेहद प्रेम था। 'गुनाहों का देवता' उपन्यास का आरंभ ही वे इलाहाबाद शहर की बनावट, वहाँ की जिन्दगी, रहन-सहन के साथ ही उसके प्राकृतिक सौन्दर्य के वर्णन से करते हैं और अपने 'शब्दिता' निबंध संग्रह में उन्होंने 'इलाहाबाद की गर्मियों की सृजनात्मकता पर निबंध ही लिख डाला है, जिसमें उन्होंने पूरे इलाहाबादी वातावरण और इलाहाबादी खास व्यक्तित्व को उभारा है। एक साक्षात्कार में 'जिन्दगी में कोई अफसोस हुआ' के प्रश्न का उत्तर उन्होंने दिया 'इलाहाबाद में अपना मोहल्ला छोड़ने पर।' और अगर पुनर्जन्म लेना हो तो किस रूप में लेना चाहेंगे ? का उत्तर भी उतनी ही तत्परता से देते हुए उनका कहना था कि- 'अपने मोहल्ले में, उसी रूप में, उन्हीं सब लोगों के बीच, सब वैसा ही हो।'

इन सभी के अलावा भारती को एक और चीज से प्रेम था- वह है हिन्दी भाषा और साहित्य। उन्होंने हिन्दी भाषा के सम्मान को सदा ऊपर रखने के लिए हर प्रकार का काम किया। इलाहाबाद में 'परिमल' साहित्यिक संस्था के सक्रिय सदस्य रहे तो मुम्बई जैसे अहिन्दी भाषी क्षेत्र में रहते हुए उन्होंने हिन्दी के सम्मान के प्रश्न पर कभी कोई समझौता नहीं किया। धर्मयुग के माध्यम से अंग्रेजी की प्रभुता का विरोध निरन्तर करते रहे।

भारती को उनके साहित्यिक अवदान के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, परन्तु भारती की राय में पुरस्कार की राशि से किसी लेखक का मूल्याँकन नहीं किया जा सकता। उसका मूल्याँकन तो उसके कृतित्व के आधार पर ही होना चाहिए। वे पुरस्कारों की राजनीति पर चोट करते हुए कहते हैं कि क्यों ऐसा होता है कि जब आप बहुत श्रेष्ठ लिख रहे होते हैं, उस समय ध्यान नहीं जाता और पुरस्कार तब मिलते हैं, जब आप नहीं लिख रहे होते।' मृत्यु- सन् 1987 में 'धर्मयुग' से अवकाश ग्रहण करने के बाद वे अस्वस्थ रहने लगे और 1989 में हृदय रोग से गम्भीर रूप से बीमार हो गए। 4 सितम्बर 1997 में उनका मुम्बई में देहावसान हो गया। डाक्टरों ने कहा कि नींद में ही चार-साढ़े चार बजे के आस-पास मृत्यु हुई और 'अंतत: उनकी अस्थियाँ इलाहाबाद के संगम में विसर्जित हुईं। गंगा जमुना की विशाल जलराशि में वह अस्थियाँ ऐसे विलिप्त हो गई जैसे कि भारतीय परम्परा और संस्कृति में भारती जी का हृदय।'

- एस.-119, विवेकानंद अपार्टमेंट, प्लॉट-2, सैक्टर-5, द्वारका, नई दिल्ली-110075
मो.-9910152771

■

सम द्वारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी: संगीत, प्रकृति एवं पर्यावरण

सोसाइटी फॉर एक्शन थ्रू म्यूजिक (सम) द्वारा संगीत नायक पं. दरगाही मिश्रजी की स्मृति में प्रत्येक वर्ष एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित किया जाता है। इस वर्ष यह संगोष्ठी गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभागार में संपन्न हुई। संगोष्ठी का मुख्य विषय था 'संगीत प्रकृति एवं पर्यावरण। यह संगोष्ठी इस वर्ष विश्वविख्यात गायिका विदुषी सविता देवी को समर्पित किया गया जिनका 20 दिसम्बर 2019 को निधन हुआ है। विदुषी सविता देवीजी 'सम' के साथ एक शुभचिंतक एवं मार्गदर्शक के रूप में वर्षों से जुड़ी थीं। सेमिनार की अध्यक्षता पद्मश्री विदुषी सुमित्रा गुहा ने की। मंच से युवा कलाकारों, श्रोताओं और गुणीजनों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा- 'मात्र टेक्नोलॉजी ही हमारे पर्यावरण और प्रकृति को प्रदूषित नहीं कर रही हैं, अपितु हमारे अंदर समाई कलुष भावनाएँ ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, अहंकार, अशिक्षा भी संगीत, प्रकृति एवं पर्यावरण को प्रदूषित कर रही है। आवश्यकता है मनुष्य को शिक्षित होने की, सुसंस्कृत होने की ताकि वह अपने अंतर्मन के साथ-साथ बाह्य जगत को भी सौंदर्यपूर्ण सौहार्दपूर्ण बना सकें। सम के संस्थापक, संगीताचार्य, लेखक, चिंतक पं. विजयशंकर मिश्र जी जो संगोष्ठी के सूत्रधार एवं आयोजक तो थे ही मंच संचालक की भी भूमिका निभा रहे थे। सुश्री कुसुम शाह एवं सुश्री रंगम्माजी ने माँ सरस्वती एवं सविता देवी के चित्र पर माल्यार्पण करके संगोष्ठी का शुभारम्भ किया। इसके बाद डॉ. अंशुमति शर्मा ने राग हंसध्वनि में सरस्वती वंदना 'वर दे वीणा वादिनी वर दे' की सुमधुर प्रस्तुति की। इसके पश्चात् सुश्री आकांक्षा सिंह ने 'प्रकृति एवं लोक संगीत की पूर्णता विषय पर व्याख्यान सह प्रदर्शन दिया। इनके प्रपत्र का मुख्य बिन्दु था कि संगीत की सजीवता प्रकृति की गोद में ही संभव है। प्रकृति की गूंज लोक गीतों के माध्यम से मुखरित होती है। प्रकृति की मादक खुशबू, आवो हवा लोक संगीत में स्पष्टत: अनुभव की जा सकती है।

सुमधुर कजरी 'धिर आई है कारी बदरिया, राधे बिन लागे ना मोरा जिया' एवं होरी आँखन भरत गुलाल रसिया ना माने रे के माध्यम से सुश्री आकांक्षा ने अपने विषय को गंभीरता के साथ प्रस्तुत किया उनका आकर्षक गायन भी काफी पसंद किया गया। डॉ. नूपुर सिंह ने 'प्रकृति से निकला संगीत विषय पर व्याख्यान सह प्रदर्शन प्रस्तुत किया। इन्होंने प्रकृति से निकली ध्वनियों और लय को संगीत का प्रेरणास्त्रोत बताया जिसमें प्रकृतिपरक काव्य का अनूठा संगम प्राप्त होता है। सांगीतिक बंदिशों में प्रकृति चित्रण को डॉ. नूपुर ने राग बागेश्री की बंदिश 'ऋतु बसंत को अपने उमंग सो' द्वारा व्यक्त किया। इसके पश्चात डॉ. अंबिका कश्यप ने 'संगीत, प्रकृति एवं प्रदूषण' विषय पर अपना प्रपत्र प्रस्तुत किया जहाँ एक ओर संगीत प्रकृति से प्रेरित और प्रकृति के सौंदर्य को संप्रेषित करने का माध्यम है वहीं दूसरी ओर पर्यावरण में बढ़ते प्रदूषण का प्रभाव संगीत एवं संगीतकारों के लिए गंभीर चिंता का विषय बना हुआ है। सुश्री तनुश्री कश्यप ने राग मारु बिहाग में विलंबित एकताल में 'नई ऋतु फैली नई कलिपन को नयो रस' एवं द्रत तीनताल में 'सकल बन बोले रे कोयलिया' बंदिशें प्रस्तुत कर संगीत में प्रकृति चित्रण को स्पष्ट किया तनुश्री का गायन उनके उज्जवल भविष्य का परिचायक है। उनके साथ तबले पर उनके छोटे भाई दिनेश कश्यप ने सूझबूझयुक्त संगति की।

प्रो. दीप्ति बंसल ने एक चैती गाकर अपनी गुरु विदुषी सविता देवी को स्वरांजलि देते हुए संगीत' प्रकृति एवं पर्यावरण- एक चिंतन विषय पर व्याख्यान दिया जिसमें उन्होंने ऋतुपरक जैसे- मेघमल्हार, वसंत आदि कई रागों में प्रकृतिपरक बंदिशें गाकर सुनाई। इसी श्रृंखला में कथक नृत्याँगना रक्षा सिंह डेविड ने कथक नृत्य में प्रकृति चित्रण पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। वाजिद अली शाह 'अख्तर पिया' की कई रचनाएँ जो प्रकृति से प्रेरित हैं उन रचनाओं की चर्चा अपने प्रपत्र में करते हुए संगीत का प्रकृति के साथ निकट सम्बन्ध इन्होंने अपने नृत्य की दो प्रस्तुतियों से और भी अधिक स्पष्ट किया। प्रथम प्रस्तुति अपने गुरु पं. बिरजू महाराज की शरद ऋतु पर आधारित रचना- 'चंद्र को प्रकाश गगन छायो मन भायो है' थी एवं द्वितीय प्रस्तुति मीराबाई के पद 'बदरा रे तू जल भर लायो रही।' संगीत एवं नृत्य संरचना स्वयं रक्षा सिंह डेविड की थी। ऋतुपरक रचना एवं अभिनय का सुंदर सामंजस्य रक्षाजी के व्याख्यान एवं सम्मोहक नृत्य में दिखा। अगला व्याख्यान डॉ. अंशुमति शर्मा का 'संगीत का मनोवैज्ञानिक एवं प्राकृतिक सामंजस्य' विषय पर था। संगीत का साहित्य के साथ अटूट सम्बन्ध शुरु से ही रहा है। जहाँ संगीत होता है वहाँ साहित्य की चर्चा अनायास ही हो जाती है। इस संगोष्ठी में भी साहित्यकार श्री हरिशंकर राढ़ी के व्याख्यान ने उनके संगीत प्रेम और गूढ़ मनन-चिन्तन को स्पष्टत: प्रकट किया

'संगीत एवं प्रकृति का अंतर्सत्बन्ध' विषय पर राढ़ीजी का व्याख्यान एक सूक्ष्म अवलोकन के रूप में श्रोताओं के समक्ष आया। प्रकृति के साहचर्य से निकला हुआ है लोकसंगीत। प्रकृति में व्याप्त ध्वनि को साधारण कानों से श्रुति योग्य बनाने के लिए ही संगीत की उत्पत्ति हुई है ऐसा विचार श्री हरिशंकर राढ़ी ने अपने व्याख्यान में प्रस्तुत किया। अंत में एक ग़ज़ल 'झूठ तो अपने पैरों पर खड़ा होता है, सत्य तो लंका में भी अंगद सा अड़ा होता है सुनाकर अपने व्याख्यान को विराम दिया। श्री गीतेश मिश्र के गायन ने प्रकृति के सुमधुर, सुकोमल सौंदर्य की अनुभूति कराई। राग शुद्ध बसंत में 'आयो ऋतु बसंत' चहुं दिन बन बहार- मध्यलय झपताल तथा 'गइली-गइली द्रुत तीनताल की दो रचनाओं को इन्होंने बड़ी ही सुंदरता के साथ प्रस्तुत किया। तानों, तिहाइयों से भरी एवं स्वरों की पारदर्शिता ने श्री गीतेशजी के गायन को आकर्षण का केंद्र बना दिया। प्रो. भावना ग्रोवर दुआ ने 'कथक नृत्य में रायगढ़ घराने की बंदिशों में प्रकृति चित्रण' विषय पर बड़ा ही सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया राजा भूप सिंह 'नन्हें उस्ताद' का संगीत एवं कथक नृत्य के प्रति प्रेम एवं प्रकृति प्रधान, प्राणी प्रधान, वनस्पति प्रधान, पशु-पक्षियों के हाव-भाव, चाल-ढाल से प्रेरित रचनाओं की चर्चा प्रो. भावना ग्रोवर ने अपने व्याख्यान में की। उदाहरणस्वरुप कई परनें और कवित्त भी इन्होंने सुनाया जो रायगढ़ घराने को कथक के अन्य घरानों से अलग और विशेष स्थान देते हैं। इस व्याख्यान से एक नई बात सामने आई कि हमारे संगीतकारों ने ना सिर्फसाहित्य के माध्यम से प्रकृति चित्रण की भिन्न-भिन्न छटाओं को प्रदर्शित किया है। बल्कि मेघ की गड़गड़ाहट, बिजली की चमक, मोर की चाल, दो पछियों का वार्तालाप जैसी सूक्ष्म मधुर क्रियाओं को लय और ताल के माध्यम से भी प्रकट किया है। कार्यक्रम का समापन मुंबई से आई रीना माथुर के प्रभावशाली शास्त्रीय गायन से हुआ। तबले पर श्री सुभाष कान्ति दास एवं हारमोनियम पर जाकिर धोलपुरी ने कलाकारों की सुंदर संगति की यह एक महत्वपूर्ण और कठिन कार्य था। रीना माथुर ने राग पूरिया कल्याण में विलम्बित एकताल की रचना 'बीता जाए मधुमास' एवं द्रुत तीनताल में 'मोरे घर आ जा की सुंदर एवं भावप्रवण प्रस्तुति की और अंत में संगोष्ठी के विषयानुरुप प्रकृति से जुड़ा एक सुंदर गीत भी सुनाया। रीना के गायन में उनका सौंदर्यबोध स्पष्ट झलक रहा था।

रिपोर्ट - डॉ. श्रद्धा गुप्ता

गायन एवं पखावज प्रस्तुति से झूमे श्रोता

गांधी हिंदुस्तानी साहित्य सभा, दिल्ली की एक ऐसी गांधीवादी संस्था है जो पिछले पन्द्रह वर्षों से प्रतिमाह संगीत समारोह का आयोजन करती आ रही हैं तथा नए-नए उभरते हुए कलाकारों को मंच प्रदान करने के लिए कृतसंकल्प है। यह संस्था मूर्धन्य साहित्यकार पद्मभूषण आचार्य काका साहब कालेलकर के सत प्रयासों से सन 1950 में स्थापित की गई। कार्यक्रम की पहली प्रस्तुति थी डॉक्टर सोनल सक्सेना का शास्त्रीय गायन। डॉ. सोनल सक्सेना ने सर्वप्रथम राग बागेश्री की अवतारणा करते हुए एकताल में निबद्ध बड़ा ख्याल 'कौन गत भाई मोरा पिया नहीं पूछे बात' दूसरी बंदिश झपताल में 'विनती सुनो मोरी अवधपुर के बसैया' और आपने अपने गायन का समापन पंडित ज्ञान प्रकाश घोष द्वारा रचित राग भैरवी में दादरा 'साँवरिया चितचोर रे रोकत गैल कर बर जोरी' प्रस्तुत किया सोनल का स्वर लगाव, बंदिश की बढ़त, आकर्षक स्वर आलाप तथा तानें श्रोताओं को खूब मन भाई। प्रस्तुति अच्छी रही। आपके साथ तबले पर दिल्ली के सुप्रसिद्ध तबला वादक पंडित सुभाष कांति दास और हारमोनियम पर युवा गायक एवं हारमोनियम वादक श्री कौशिक मित्रा ने कुशलता से की। आप दोनों की कुशल संगत ने गायन प्रस्तुति

में खास रंग भर दिया। दूसरी प्रस्तुति थी दिल्ली के किशोर पखावज वादक श्री आदिनारायण पति की। आदि नारायण पति सुप्रसिद्ध पखावज वादक पंडित हरीश चंद्र पति के सुपुत्र हैं। आदि नारायण पति ने चारताल की कुशल प्रस्तुति करते हुए दुकड़े, परन, चक्रदार, झाला आदि कुशलता से प्रस्तुत किया आपके साथ हारमोनियम पर साथ दे रहे थे आपके पिता एवं गुरु पंडित हरीश चंद्र पति। प्रस्तुति सराहनीय रही।

कार्यक्रम की अंतिम प्रस्तुति थी दिल्ली घराने के खलीफ उस्ताद इकबाल अहमद खान साहब की सुयोग्य शिष्य श्री सौरभ मिश्रा की। श्री सौरभ मिश्रा ने अपने गायन का शुभारभ राग झिंझोटी में एकताल में निबद्ध बड़ा ख्याल 'कवन ढंग कीनो श्याम' तीन ताल में निबद्ध छोटा ख्याल 'ए माने नहीं आज बतिया', इसके बाद मिश्र कीरवानी में भजन 'सिया संग झूले राम ललना' और आपने अपनी प्रस्तुति का समापन मिश्र कीरवानी में ही 'दीवाना किए श्याम क्या जादू डाला' से किया। श्री सौरभ मिश्रा का स्वर लगाव, ताल पर पकड़, बंदिश की कहन आदि अच्छी रही। आपके साथ तबले पर श्री सुसमय मिश्रा और हारमोनियम पर सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ पंडित देवेंद्र वर्मा ने कुशल संगत की। प्रस्तुति सराहनीय रही। कार्यक्रम के अंत में सभी कलाकारों को गांधी हिंदुस्तानी साहित्य सभा की ओर से 'संगीत साधक सम्मान 2019' से सम्मानित किया गया।

रिपोर्ट - पंडित देवेन्द्र वर्मा

संगीत सरिता ने मनाया पंडित जगदीश मोहन स्मृति संगीत समारोह

भारत के संगीत जगत को समृद्ध बनाने में अनेकों विद्वानों की भूमिका रही है जिन्होंने अपनी विशिष्ट प्रतिभा, संगीत साधना एवं शिक्षा-दीक्षा से संगीत अध्येताओं, रसिकजनों एवं जिज्ञासओं को रससिक्त किया है। उनकी इसी विशेष साधना ने भारतीय संगीत को विश्व पटल पर स्थापित ही नहीं किया बल्कि आला दर्जे की पहचान भी दिलाई है। ऐसे महान तपस्वीयों में से एक किराना घराने के मूर्धन्य गायक पंडित जगदीश मोहन जी का नाम आता है। पंडित जगदीश मोहन जी एक कुशल गायक, रचनाकार, तबलाविद एवं संगीत चिंतक थे। जो संगीत युग पुरुष पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी की परम्परा के परम अनुयायी थे तथा गांधर्व महाविद्यालय, दिल्ली में दीर्घकाल तक अपनी संगीत सेवा करते रहे। ऐसी विभूति की पावन स्मृति में दिनांक 24 नवंबर 2019 को संगीत के प्रचार-प्रसार में संलग्न अग्रणी संस्था संगीत सरिता में सनातन धर्म मंदिर में उनके सुयोग्य शिष्य एवं उनकी टीम ने पंडित जगदीश मोहन स्मृति संगीत समारोह का आयोजन किया जिसमें अनेकों कलाकारों, मूर्धन्य विद्वानों, श्रोताओं, विद्यार्थियों और उनके परिजनों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम में पुणे की युवा गायिका सुश्री सानिका गोरेगांवकर शास्त्रीय गायन एवं पंडित कैलाश शर्मा का सुश्राव्य बाँसुरी वादन सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सुविख्यात संगीतज्ञ पंडित देवेन्द्र वर्मा जी उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथि के नाते प्रसिद्ध कवियित्री श्रीमती ऋतु गोयल जी रहीं । अंत में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पंडित देवेन्द्र वर्मा ने पंडित जगदीश मोहन जी की स्मृतियों को याद किया एवं संगीत सरिता को अपनी शुभकामनाएँ भी दीं। संगीत सरिता अध्यक्ष श्री राजेन्द्र शर्मा ने कलाकारों, अतिथियों, श्रोताओं एवं सहयोगियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

रिपोर्ट - राजेन्द्र शर्मा

विश्व हिन्दी दिवस पर साहित्यकार सम्मान, पुस्तक लोकार्पण एवं काव्यगोष्ठी

दिनांक 11 जनवरी 2020 को ''विश्व हिंदी दिवस'' के उपलक्ष में ''संस्कृति साहित्य रचनालय 'संसार' देवास के संयोजन में श्री दिलीप जी मांडलिक के निवास पर ''साहित्यकार सम्मान पुस्तक लोकार्पण एवं काव्य गोष्ठी'' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता देवास नगर के सुप्रसिद्ध कवि श्री देव कृष्ण व्यास ने की । मुख्य अतिथि डॉ. रघुनाथ मिश्र 'सहज' (वरिष्ठ साहित्यकार) कोटा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री बंशीधर 'बन्धु' (प्रसिद्ध मालवी गीतकार एवं संयोजक मालवा लोक साहित्य समिति शुजालपुर), तथा कवि श्री राम प्रसाद 'सहज' शुजालपुर उपस्थित थे। सर्वप्रथम अध्यक्ष महोदय एवं मंचासीन अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती के चित्र पर पूजन अर्चना एवं दीप प्रज्जवलन किया गया। अतिथि परिचय के पश्चात संस्था संयोजक श्री प्रभाकर शर्मा, महासचिव श्री सुरेन्द्र राजपूत 'हमसफर' उपाध्यक्ष श्री दिलीप मांडलिक द्वारा सभी अतिथियों का शॉल, श्रीफल, पुष्पहार एवं डायरी भेंटकर सम्मानित किया गया। प्रभाकर शर्मा द्वारा दिये गए संस्था परिचय व स्वागत भाषण के पश्चात भँवरलाल श्रीवास भोपाल द्वारा सम्पादित कला, संस्कृति और विचार की द्वैमासिक पत्रिका ''कला समय'' का विमोचन किया गया। पत्रिका कला समय के सांस्कृतिक प्रतिनिध श्री बंशीधर बन्धु द्वारा पत्रिका से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। राधेश्याम जी पांचाल द्वारा माँ सरस्वती की सुन्दर वन्दना के साथ ही काव्य गोष्ठी का शुभारंभ हुआ। मालवी कवि बंशीधर जी बंधु के मालवी गीतों पर पूरा सदन मस्ती से झूम उठा देवकृष्ण जी व्यास के हिन्दी की महत्ता को बनाने वाले गीत 'बारहखड़ी' ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। डॉ. रधुनाथ मिश्र 'सहज' श्री प्रभाकर शर्मा बन्धु, राम प्रसाद 'सहज', ओंकारेश्वर जी गेहलोत, विश्वनाथ मांडलिक, अज़ीज़ रोशन, सलाउद्दीन:सलिस', सुरेन्द्र हमसफर', दिलीप मांडलिक, राधेश्याम पांचाल, विजय जोशी, रोजश चौधरी, डॉ. इकबाल मोदी, आदि कवि शायरों ने अपनी एक से बढ़कर एक उत्कृष्ट रचनाओं से काव्य गोष्ठी को यादगार बना दिया। कार्यक्रम का सफल संचालन सुरेन्द्र सिंह राजपूत 'हमसफर' ने किया। आभार दिलीप मांडलिक ने माना।

रिपार्ट - सुरेन्द्र सिंह राजपूत 'हमसफर

तेरा कीआ मीठा लागै। हरि नामु पदारथु नानकु मांगै।।
- गुरु नानक देव

आपके पत्र

पत्रिका के बहाने

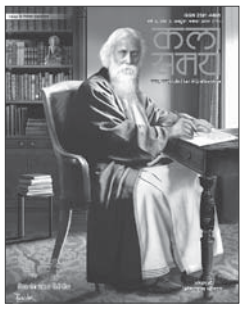

कला समय का बहुत पुराना पाठक भी हूँ और लेखक भी। लेकिन विगत कुछ ही दिनों में आपके सम्पादन में कला समय ने अपना जो आकार गढ़ा है, जिन आयोमों को स्पर्श किया है वह निश्चय ही प्रशंसनीय और अभिनन्द्नीय है। पिछले अंक में प्रकाशित आशुतोष राणा, अमोल पालेकर और सन्तोष चौबे के साथ भी बातचीत ने उन्हें अच्छी तरह से समझने का अवसर प्रदान किया। साथ ही यह भी स्पष्ट हुआ है ये लोग मात्र निर्देशक के इशारे पर अभिनय करने वाले अभिनेता मात्र ही नहीं हैं, ये स्वयं अच्छे चिन्तक और विचारक भी हैं। शेष सभी लेख और कवितायें भी पठनीय और सराहनीय हैं। इसके लिए लेखकगण तो बधाई के पात्र हैं हीं आप भी अभिनन्दन के पात्र हैं क्योंकि पत्रिका को यह कलेवर प्रदान करने में आपका अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान है। मुझे खुशी है कि यदा कदा मेरी रचनाएँ भी कला समय में स्थान पा जाती हैं। व्यस्तता के कारण पढ़ने में थोड़ा समय जरूर लग जाता है। फिर भी कला समय में प्रकाशित हर रचना को पढ़ने की कोशिश करता हूँ। पूरे कला समय परिवार को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें। मंगल स्वरों के साथ.... आपका अपना ही

– पं. विजय शंकर मिश्र, दिल्ली
वरिष्ठ संगीतज्ञ, कला समीक्षक

पत्रिका ही नहीं, एक रचनात्मक अनुष्ठान

पत्रिका मुफ्त मांग कर, कृपया हमारे अनुष्ठान को आघात न पहुँचाएं

'कला समय' के सदस्य बनें– ❍ पत्रिका की वार्षिक/द्वैवार्षिक /आजीवन सदस्यता ग्रहण करें। सदस्यता शुल्क मनीआर्डर, ड्राफ्ट, ऑनलाइन अथवा व्यक्तिगत रूप से भुगतान किया जा सकता है।

'कला समय' की एजेंसी के नियम– ❍ आपके गांव, कस्बे, शहर में सांस्कृतिक पत्रिका 'कला समय' की एजेन्सी के लिए सम्पर्क करें। ❍ कम से कम दस प्रतियों से एजेन्सी शुरू की जायेगी। ❍ पत्रिका कुरियर अथवा रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से भेजी जायेगी। डाक खर्च एजेन्सी को वहन करना होगा। ❍ कमीशन, प्रतियों की संख्या के आधार पर।

स्थायी तथा सम्पादकीय पता और दूरभाष क्रमांक के साथ सम्पर्क करें– जे–191, मंगल भवन, महावीर नगर, ई–6, अरेरा कॉलोनी, भोपाल– 462016 Email : bhanwarlalshrivas@gmail.com मो. 9425678058, 0755–2562294

लेखकों/कलाकारों से ❍ कला, संस्कृति और विचार के अछूते पहलुओं पर सृजनात्मक, शोधात्मक और सूचनात्मक आलेख, टिप्पणियां, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, ललित निबंध, कविताएँ, छायाचित्र, रेखांकन तथा शोध आमंत्रित हैं। ❍ रचनाएँ कागज के एक ओर टाइप की हुई तथा मौलिकता का प्रमाण पत्र संलग्न हो। कृपया रचना के साथ पर्याप्त डाक टिकिट लगा लिफाफा भी संलग्न करें। रचनाएँ और चित्र ई–मेल से भी भेजे जा सकते है।

प्राथमिकता के साथ : Chanakya फोंट / वर्ड फाइल / PDF फॉर्मेट में ही भेजें।

अनुरोध : वे सदस्य जिनका वार्षिक / द्विवार्षिक सदस्यता शुल्क समाप्त हो रहा है, कृपया अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करायें। सदस्यों को पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है। नहीं मिलने की स्थिति में सदस्यता शुल्क के साथ ₹ 120/– का प्रतिवर्षानुसार रजिस्टर्ड डाक शुल्क अतिरिक्त भेजा जाना होगा।

–संपादक

जब हम अच्छा खाने, अच्छा पहनने और अच्छा दिखने में खर्च करते हैं
तो अच्छा पढ़ने-लिखने और सोचने-समझने की खुराक में खर्च क्यों न करें !

कला समय

प्रबंध संपादक

सम्पर्क– जे–191, मंगल भवन, महावीर नगर, ई–6, अरेरा कॉलोनी, भोपाल– 462016 फोन : 0755–2562294, मो.–94256 78058
ई–मेल : kalasamaymagazine@gmail.com / bhanwarlalshrivas@gmail.com

कला समय के 101 वाँ अंक का भोपाल एवं देवास में लोकार्पण

दुष्यन्त कुमार स्मारक पाण्डुलिपि संग्रहालय, भोपाल में दिनांक 30 दिसम्बर, 2019 को रबिन्द्रनाथ टैगोर वि.वि. के कुलाधिपति संतोष चौबे द्वारा कला समय के 101 वाँ अंक का लोकार्पण। साथ में है लीलाधर मंडलोई, मुकेश वर्मा, डॉ. शरद पगारे, पद्मश्री बाबुलाल दाहिया एवं कला समय पत्रिका के संपादक भँवरलाल श्रीवास।

राज्य संग्रहालय, भोपाल में दिनांक 17 दिसम्बर, 2019 को रोहमिश (अमित शर्मा) द्वारा कला समय के 101 वें अंक का लोकार्पण। साथ में है श्वेता नागदेव शर्मा, कला समय के संपादक भँवरलाल श्रीवास, हीरालाल नागर, राजेन्द्र नागदेव, जहीर कुरैशी एवं डॉ. नारायण व्यास।

11 जनवरी, 2020 को देवास में कला समय के 101 वाँ अंक का लोकार्पण करते हुए श्री देवकृष्ण व्यास, डॉ. रघुनाथ मिश्र 'सहज', श्री बंशीधर 'बंधु', प्रभाकर शर्मा, सुरेंद्र शर्मा 'हमसफर', दिलीप मांडलिक।

प्रमुख गुरुद्वारे

श्री हरिमंदिर साहिब, अमृतसर

पटना साहिब गुरुद्वारा, पटना

ननकाना साहिब, पाकिस्तान

बंगला साहिब गुरुद्वारा, नई दिल्ली

गुरु अर्जुन देव गुरुद्वारा, तारण तरण

शीशगंज गुरुद्वारा, नई दिल्ली

हुजुर साहिब गुरुद्वारा, नांदेड़

आनंदपुर साहिब गुरुद्वारा

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा दृष्टि ऑफसेट, 36-37, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन नं-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक-भँवरलाल श्रीवास